



**कमलेश्वर तथा कुरंतुलऐन हैदर के उपन्यासों  
का तुलनात्मक अध्ययन  
(‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’  
के विशेष सन्दर्भ में)**

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की  
पी-एच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत  
**शोध-प्रबन्ध**

निर्देशक

**डॉ. तसनीम सुहेल**

एसोशिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग  
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

शोधार्थी

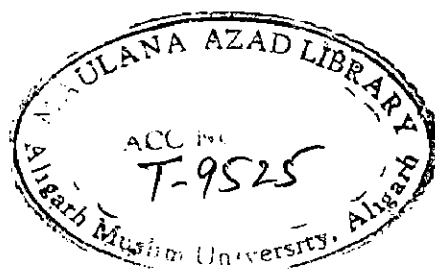
**दरख़शाँ बी**

हिन्दी विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उ०प्र०) भारत

2014

THESIS



14 DEC 2015



T9525

Certified that Ms. Darakhashan Bee, En. No. GC-5943, a candidate admitted to Ph.D. course in the Department of Hindi, AMU, Aligarh on January 10, 2009 has completed two years residency period with required percentage of attendance upto January 09, 2011. She has submitted her thesis for the Degree of Doctor of Philosophy in Hindi under the supervision of Dr. (Ms.) Tasneem Suhail, Associate Professor, Department of Hindi, Aligarh Muslim University, Aligarh on 22.05.2014.

Arif Nazir  
(Prof. Arif Nazir)  
Chairman  
Department of Hindi  
Aligarh Muslim University  
Aligarh  
22/5/14

Dr. Tasneem Suhail  
Associate Professor  
(M.Phil., Ph.D.)



Department of Hindi  
Aligarh Muslim University  
Aligarh-202002(INDIA)

Dated..22/05/14

## Certificate

This is to certify that the thesis entitled 'कमलेश्वर तथा कुरतुलऐन हैदर के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन / (कितने पाकिस्तान तथा 'आग का दरिया' के विशेष सन्दर्भ में) has been written by **Ms. Darakhshan Bee** under my supervision. It is an original research work and is suitable for submission for the award of Ph.D. Degree in Hindi.

She has fulfilled all the condition laid down in the ordinances of Aligarh Muslim University, Aligarh.

A handwritten signature in black ink, appearing to read 'Bhail'.

(Dr. Tasneem Suhail)

Supervisor

## विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ सं०

प्रस्तावना

i- vi

प्रथम अध्याय (क) प्रगतिशील आंदोलन और हिन्दी उर्दू  
उपन्यास

1-67

- (1) प्रगतिशील आंदोलन की सामाजिक एवं  
आर्थिक परिस्थितियाँ
- (2) प्रगतिशील आंदोलन की राजनीतिक परिस्थितियाँ
- (3) प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना
- (4) प्रगतिशील लेखक संघ के विभिन्न अधिवेशन
- (5) प्रगतिशील हिन्दी उपन्यास
- (6) प्रगतिशील उर्दू उपन्यास
- (7) निष्कर्ष

(ख) कमलेश्वर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- (1) व्यक्तित्व  
जन्म, परिवार, शिक्षा, परिस्थितियाँ एवं परिवेश,  
सम्मान एवं पुरस्कार
- (2) कृतित्व  
कहानी संग्रह  
नाटक एवं नाट्य रूपांतर  
आलोचना  
यात्रा वृत्तान्त  
संपादित पुस्तकें  
सिनेमा पटकथा लेखन  
संस्मरण  
निबंध  
उपन्यास

(ग) कुर्रतुलऐन हैदर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(1) व्यक्तित्व

जन्म, परिवार, शिक्षा, परिस्थितियाँ एवं परिवेश  
सम्मान एवं पुरस्कार

(2) कृतित्व

कहानी संग्रह

नॉवलेट

उपन्यास

रिपोर्ताज

रेखाचित्र एवं लेख

संपादित पुस्तकें

अनुवाद

अँग्रेजी व अन्य भाषाओं से उर्दू में

उर्दू से अँग्रेजी में

अपनी किताबों का उर्दू से अँग्रेजी में

बच्चों की कहानियों का अँग्रेजी से उर्दू में

द्वितीय अध्याय (क) कमलेश्वर का उपन्यास 'कितने पाकिस्तान'  
का परिचयात्मक अध्ययन

68—103

(ख) कुर्रतुलऐन हैदर का उपन्यास 'आग का  
दरिया' का परिचयात्मक अध्ययन

तृतीय अध्याय 'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' का  
तुलनात्मक अध्ययन

104—179

(क) सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से  
तुलनात्मक अध्ययन

(ख) राजनीतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन

चतुर्थ अध्याय	‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ के शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन	180—235
	(क) कथ्य की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन	
	(ख) पात्र की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन	
	(ग) भाषा की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन	
पंचम अध्याय	उपसंहार	236—245
षष्ठ अध्याय	परिशिष्ट	246—256
	सन्दर्भ ग्रंथ सूची	
	आधार ग्रंथ (हिन्दी)	
	आधार ग्रंथ (उर्दू)	
	सहायक ग्रंथ (हिन्दी)	
	सहायक ग्रंथ (उर्दू)	
	पत्रिकाएँ (हिन्दी)	
	पत्रिकाएँ (उर्दू)	
	अँग्रेजी ग्रंथ	
	शब्दकोश / कोश	





## प्रस्तावना

आधुनिक जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करने के लिए ही उपन्यास साहित्य का जन्म हुआ और यह गद्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा बन गई। इसका कैनवास विस्तृत होता है और इसमें राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को समेटा जा सकता है। उपन्यासकार अपने अनुभव और साहित्यिक योग्यताओं के कारण उपन्यास की कथा में मनुष्य के जीवन की समस्याओं के साथ-साथ पात्रों की संवेदनाओं और एहसासों का शुद्धिकरण (katharsis) भी करता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि प्रत्येक उपन्यास अपने युग का एक आईना होता है और उस आईने में किसी विशेष युग के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को बखूबी देखा जा सकता है।

भारत में हिन्दी-उर्दू हिन्दुस्तानी भाषा की दो शैलियों के रूप में स्वतन्त्र रूप से विकसित हुई हैं। दोनों भाषाओं पर भारत की राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों तथा परिवेश के विघटन का लगभग समान रूप से प्रभाव पड़ा। यही कारण है कि हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाओं के साहित्यिक क्षितिज पर उपन्यास का प्रस्फुटन लगभग एक ही समय में हुआ और दोनों भाषाओं के साहित्य में उपन्यास एक स्वतन्त्र और सशक्त विषय के रूप में उभर कर सामने आया।

हिन्दी उपन्यास पर अँग्रेजी के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं यथा—मराठी, बंगला तथा उर्दू का बहुत कुछ प्रभाव लक्षित होता है। मराठी और बंगला उपन्यासों के साथ हिन्दी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन जैसे विषय पर तो उल्लेखनीय कार्य हो चुके हैं और हिन्दी-उर्दू कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर भी कुछ कार्य हुए हैं इनमें रमेशचन्द्र शर्मा तिवारी द्वारा 'हिन्दी तथा उर्दू कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन बीसवीं सदी में', शर्मा ख़ातून द्वारा 'आधुनिक उर्दू और हिन्दी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन' तथा डॉ. एहतिशाम जुबैरी द्वारा 'साठोत्तरी हिन्दी उर्दू उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन तथा डॉ. तसनीम सुहेल द्वारा 'पूर्व प्रेमचन्द युगीन हिन्दी-उर्दू उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन' जैसे विषयों पर कार्य हुए हैं। उर्दू भाषा में मोहम्मद तारिक (छतारी) का 'जदीद अफ़साना उर्दू

हिन्दी जैसे विषय पर भी कार्य हुए हैं, लेकिन कमलेश्वर एवं कुर्रतुलऐन हैदर के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन' जैसे विषय पर कार्य नहीं हुआ है। इसलिए मैंने 'कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन' ('कितने पाकिस्तान तथा 'आग का दरिया' के विशेष सन्दर्भ में) जैसे विषय का चयन किया है।

विवेच्य विषय का महत्व स्वीकारते हुए अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी पड़ी क्योंकि उर्दू उपन्यासकार अपने साथ जिस परिवेश को लेकर आया है तथा उसके पात्र जिस पृष्ठभूमि में विकसित हुए हैं वह भी भारतीय जीवन और विशेषकर हिन्दी प्रदेश का यथार्थ है, अतः इस यथार्थ को समझे बिना किसी भी साहित्य को पूर्ण रूप से नहीं समझा जा सकता। यह अध्ययन अनेक ऐसे पहलुओं को उजागर करेगा जिन पर सामान्य हिन्दी पाठकों के साथ शोधार्थी की दृष्टि भी जाने से रह गयी है। मुझे विश्वास है कि इस अध्ययन के प्रकाश में अनेक ऐसे मुद्दों पर भी विचार किया जा सकेगा, जिन पर विचार करने की अपेक्षा अब भी बनी हुई है।

प्रस्तुत विषय 'कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन' ('कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' के विशेष सन्दर्भ में) विभाजन की त्रासदी, सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास तथा पीड़ा और दुख को रेखांकित करता है। साथ ही साथ दुख की गहनता के भीतर छुपे सुख के प्रति एक आशा तथा मनुष्य की अदम्य लालसा, जिज्ञासा तथा परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति का बोध भी कराया गया है। प्रस्तुत विषय का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके माध्यम से हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं के उपन्यासकारों पर तत्कालीन परिस्थितियों के प्रभाव, संस्कृतियों के विभाजन का दुख, उनकी सोच, उनके विचार आदि का मूल्यांकन तथा आकलन यथोचित ढंग से किया जा सकता है।

कमलेश्वर एवं कुर्रतुलऐन हैदर ने उपन्यास लेखन की परम्परा से अलग हटकर नवीन परम्परा को अपनाया। इन दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों में 'समय की नवीन कल्पना' सामने आती है। कमलेश्वर ने अपनी मानसिक कशमकश और आंतरिक घुटन को प्रस्तुत करने के लिए उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में फैंटेसी का

प्रयोग किया है। कुर्रतुलऐन हैदर ने गुज़रे हुए समय को प्रस्तुत करने के लिए पश्चिमी तकनीक 'शऊर की रौ' का प्रयोग किया है।

कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर दोनों ने अपने उपन्यासों में हिन्दुस्तान के विभाजन के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली पीड़ा और दुख को अभिव्यक्त किया है। 'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' दोनों ही उपन्यासों में 'समय' का जिस रूप में प्रयोग किया गया है, वह अद्वितीय है।

प्रत्येक विषय के अध्ययन की अनेक दिशाएँ होती हैं लेकिन उसके शोधपरक आलोचनात्मक अध्ययन के लिए, कतिपय सीमान्त निश्चित कर लेना अध्येता शोधार्थी के लिए अत्यन्त ही आवश्यक सा प्रतीत होता है, जिसकी सहायता से एक निश्चित परिप्रेक्ष्य में प्राप्त तथ्यों के माध्यम से अपने प्रतिपाद्य तक पहुँचा जा सके। अतएव प्रस्तुत विषय के अन्तर्गत प्रगतिशील आंदोलन एवं हिन्दी-उर्दू उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन तथा 'कितने पाकिस्तान एवं आग का दरिया' का कथ्य और शिल्प की दृष्टि से शोधपरक, आलोचनात्मक तथा तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को सुस्पष्ट तथा सरल बनाने के लिए पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है, जो इस प्रकार है—

प्रथम अध्याय को तीन खण्डों में विभाजित किया गया है—सर्वप्रथम 'प्रगतिशील आंदोलन और हिन्दी-उर्दू उपन्यास' के अन्तर्गत प्रगतिशील आंदोलन की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। इसके पश्चात् प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना, उसके अधिवेशन तथा प्रगतिशील हिन्दी-उर्दू उपन्यासों का विवेचनात्मक अध्ययन करने के साथ-साथ अन्त में निष्कर्ष दिया गया है।

द्वितीय खण्ड में 'कमलेश्वर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' के अन्तर्गत उनका जन्म, परिवार, शिक्षा, परिस्थितियाँ एवं परिवेश तथा नौकरी अथवा जीवन यापन के लिए उनके संघर्ष पर प्रकाश डाला गया है। उनके कृतित्व में कहानी संग्रह, नाटक

एवं नाट्य रूपांतर, आलोचना, यात्रा वृत्तान्त, संपादित पुस्तकें, सिनेमा स्क्रिप्ट लेखन, संस्मरण, निबंध तथा उपन्यासों का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है।

तृतीय खण्ड में 'कुर्रतुलऐन हैदर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' के अन्तर्गत उनका जन्म, परिवार, शिक्षा, परिस्थियाँ एवं परिवेश, नौकरी तथा साहित्यिक सेवा के लिए उन्हें दिये गये सम्मान एवं पुरस्कार पर प्रकाश डाला गया है। उनके कृतित्व में कहानी संग्रह, नॉवलेट, उपन्यास, रिपोर्टाज, रेखाचित्र तथा लेख, संपादित पुस्तकें तथा उनके द्वारा विभिन्न भाषाओं में किये गए अनुवाद का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में 'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' का परिचयात्मक अध्ययन' उपन्यास के तत्वों के आधार पर किया गया है।

तृतीय अध्याय 'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' का तुलनात्मक अध्ययन में दोनों उपन्यासों का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में 'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' के शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन' के अन्तर्गत 'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' उपन्यासों का कथ्य, पात्र तथा भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत 'उपसंहार' को लिया गया है जिसमें सम्पूर्ण विषय का विश्लेषण कर उपसंहार प्रस्तुत किया गया है। अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत शोध कार्य में सहायक ग्रंथों एवं पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गई है।

मेरा यह शोध कार्य डॉ. तसनीम सुहेल, एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। उनके कुशल निर्देशन, दृष्टि की व्यापकता तथा बहुमूल्य सुझावों से विषय को समझने तथा शोध कार्य को पूर्ण करने में मुझे विशेष सहायता मिली। उनका स्नेह भाव मेरे लिए सदा स्मरणीय रहेगा। उनके प्रति आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

शोध कार्य के दौरान जिन गुरुजनों से मुझे सहायता मिली उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। जिनमें विशेष रूप से प्रो. आरिफ़ नज़ीर, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, प्रो. कृष्ण मुरारी मिश्रा, प्रो. प्रदीप सक्सेना, डॉ० भरत सिंह, प्रो. एहतिशाम जुबैरी, प्रो० अब्दुल अलीम, डॉ० आशिक अली, डॉ० आर. एन. शुक्ल, डॉ० शम्भूनाथ, डॉ० वेद प्रकाश, डॉ० मेराज अहमद, श्री अजय बिसारिया, डॉ० इफ़्फ़त असगर, डॉ० रेशमा बेगम, डॉ० शाहुल हमीद तथा सभी गुरुजनों के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनका मार्गदर्शन मुझे शोध कार्य के लिए प्रेरित करता रहा। इनके अतिरिक्त प्रो. आशुतोष कुमार (हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय), प्रो. सगीर अफ़राहीम, प्रो. तारिक़ छतारी (उर्दू विभाग, ए. एम. यू. अलीगढ़), प्रो. ए. आर. फ़तीही (भाषा विज्ञान विभाग, ए. एम. यू. अलीगढ़) के प्रति आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिनका मार्गदर्शन मुझे समय-समय पर मिलता रहा।

हिन्दी विभाग में कार्यरत सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करना भी मेरा कर्तव्य है। शोध संबंधी सामग्री को सुलभ कराने में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के मौलाना आज़ाद पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पुस्तकालय में कार्यरत श्री पीर मोहम्मद, श्री अकरम, श्री बाकर, श्री मोहसिन, श्री जावेद के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करती हूँ। शोध कार्य के दौरान जिन साथियों ने मुझे स्नेह और सहयोग दिया, उनमें डॉ० हुमायूँ, डॉ० निज़ामुद्दीन ख़ान, डॉ० फ़ातिमा ज़ेहरा, ज़ीशान अहमद, आज़र ख़ान, फ़रहीन, सबा, अदीबा के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरी दादी श्रीमती फ़ातिमा बेगम, श्रद्धेय माता-पिता श्रीमती कफ़ीला बेगम और डॉ० मोहम्मद असलम के आशीर्वाद का प्रतिफल यह शोध प्रबंध है। मैं अपने भाईयों डॉ० मोहम्मद अरशद, श्री मोहम्मद अजमल, मोहम्मद अकमल एवं बहनों डॉ० ज़ाहिदा बी, डॉ० कहकशाँ, चाँद बीबी के प्रति बहुत शुक्रगुज़ार हूँ, इनका प्रेम, स्नेह हमेशा मेरे साथ रहा। इनके साथ-साथ मेरे बहनोई डॉ० अब्दुल ग़फ़ार, श्री शफ़ीक़ अहमद, भाभी श्रीमती अर्शी फ़तिमा और प्यारे भाँजे-भाँजि शहज़ादी बुशरा नाज़, अहमद फ़राज़, अब्दुल्लाह निहाल अहमद, हिबा उल्लाह, मुबशशरा नाज़ और भतीजा अब्दुल्लाह सलाहउद्दीन मुक़दस की दुआओं ने मुझे कामयाब किया।

अन्त में उन विद्वानों का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिनकी पुस्तकों से मुझे शोध कार्य में सहायता मिली और उनसे लाभान्वित हुई।

मैं आशा करती हूँ कि मेरा यह शोध कार्य, शोध की दिशा में कुछ नई कड़ियाँ जोड़ने में अवश्य सफल होगा।

दिनांक - 22.05.2014

शोधार्थी  
*Darakhshan*  
दरख़शाँ बी  
हिन्दी विभाग  
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय  
अलीगढ़

## प्रथम अध्याय

- (क) प्रगतिशील आंदोलन और हिन्दी-उर्दू उपन्यास
- (ख) कमलेश्वर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- (ग) कुर्रतुलऐन हैदर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

## (क) प्रगतिशील आंदोलन और हिन्दी-उर्दू उपन्यास :-

संसार की विभिन्न भाषाओं के साहित्य का सम्बन्ध किसी न किसी आन्दोलन से अवश्य रहा है। इनमें कुछ का प्रभाव अधिक और किसी का नगण्य रहा। परन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि हर आंदोलन से साहित्य को लाभ हुआ है। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य का सम्बन्ध भी कई आंदोलनों से रहा। इनमें प्रगतिशील आंदोलन का बड़ा महत्त्व है। इस आंदोलन के प्रभाव से प्रगतिशील साहित्य अस्तित्व में आया। इस आन्दोलन ने साहित्य की सभी विधाओं को प्रभावित किया। कहानी, उपन्यास एवं गद्य तथा अन्य विधाओं पर भी इसका प्रभाव पड़ा। साहित्य ने मानव एवं समाज दोनों को प्रभावित किया।

हिन्दी साहित्य में इस आंदोलन की एक गौरवशाली सामाजिक परम्परा है, एक चेतना है, इस चेतना की जड़ में समाजवाद एवं समाजवादी दृष्टिकोण निहित है। युगीन स्थितियों के संदर्भ में कहा जा सकता है कि प्रगतिवाद की इस चेतना व दृष्टिकोण में सदैव से कुछ नवीन तत्व जुड़ते रहे हैं। जिसके कारण यह एक जीवंत परम्परा के रूप में अपनी निरन्तरता को विकसित करती रही। विभिन्न काव्य ग्रंथों एवं गद्य-विधाओं में अपना परिचय भी देती रही है।

ऐसे प्रभावशाली आंदोलन तथा उसके फलस्वरूप उत्पन्न 'वाद' अर्थात् प्रगतिवाद का परिचय, उस पर टिप्पणी अथवा सर्वेक्षण प्रस्तुत करने से पूर्व यह उचित है कि आरम्भ में ही 'प्रगतिवाद' एवं 'आंदोलन' शब्द की व्याख्या कर ली जाए। जिससे प्रगतिशील आंदोलन को भली-भाँति समझा जा सके। आधुनिक हिन्दी साहित्य में 'प्रगतिवाद' शब्द का प्रयोग व्यापक रूप से हुआ है। यह शब्द अंग्रेजी के 'प्रोग्रेस' और संस्कृत के 'प्रागमन्' शब्द से मिलता जुलता है। जिसका अर्थ है—'आगे की ओर बढ़ना' उन्नति, विकास एवं सुधार आदि।

सामान्यतः प्रगति का अर्थ साहित्य में सही दिशा में मानव जीवन के सर्वांगीण विकास से लिया जाता है। साहित्य को मानव जीवन से जोड़ने वाले मुंशी प्रेमचंद भी प्रगति को उन्नति के विशेष अर्थ में देखते हुए कहते हैं—



“उन्नति से हमारा तात्पर्य है जिससे हमें अपने दुखावस्था की अनुभूति हो, हम देखें कि किन-किन अन्तः बाह्य कारणों से हम इस निर्जीव और ह्रास की अवस्था को पहुँच गए और उन्हें दूर करने की कोशिश करें।”<sup>1</sup>

रामधारी सिंह दिनकर ‘प्रगति’ की व्याख्या इसी अर्थ में करते हैं। उनके अनुसार —

“प्रगति का जो अर्थ मैं समझ सका हूँ वह साम्यवादी नहीं बल्कि नवीनता का पर्याय है और इसके दायरे में उन सभी लेखकों का स्थान है जो चर्चित चवर्ण पुरातन विजृम्भण और गतानुगतिकता के खिलाफ है। वे सभी लेखक प्रगतिशील हैं जो किसी प्रकार अनुकरणशील नहीं कहे जा सकते।”<sup>2</sup>

आंदोलन को उर्दू साहित्य में ‘तहरीक’ कहा जाता है। इस संबंध में मंज़र आजमी लिखते हैं —

“आंदोलन का संबंध किसी विशेष चिन्तन अथवा साहित्यिक व्यवहार के प्रचार-प्रसार से है। यद्यपि व्यवस्था इसके लिए आवश्यक नहीं किन्तु इसमें एक दुर्बल या ढीली-ढाली व्यवस्था होती है। कुछ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कार्यकर्ता भी हर आंदोलन की पृष्ठभूमि में रहते हैं। आंदोलन की धारा बड़ी प्रबल एवं ध्वनित होती है।”<sup>3</sup>

‘प्रगति’ तथा ‘आंदोलन’ शब्द को समझने के पश्चात् प्रगतिशील आंदोलन की प्रेरक परिस्थितियों एवं पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालना लाभप्रद होगा। जिनके फलस्वरूप यह आंदोलन अपने अस्तित्व में आया तथा हिन्दी साहित्य को प्रभावित किया। साहित्यिक कारणों के अतिरिक्त प्रगतिशील आंदोलन के मुख्य कारण आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक भी हैं। यहाँ हम इन कारणों पर सूक्ष्म दृष्टि डालने का प्रयास करेंगे।

### सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ :-

स्वतन्त्रता से पूर्व भारतीय गाँवों का आर्थिक ढाँचा अपरिवर्तनशील तथा स्थिर था। गाँव के लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रत्येक वस्तु का निर्माण गाँव में ही करते थे। प्रत्येक जाति का अपना अलग-अलग कार्य था। यह सुदृढ़ तथा सुनिश्चित कार्य विभाजन प्रणाली भारतीय जीवन को स्थिरता और संतुलन

प्रदान करने में सहायक थी। इस प्रणाली को सभी इतिहासकारों ने एक मत से स्वीकार किया है।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के साथ ही अनेक सामाजिक संगठनों में विघटन और परिवर्तन प्रारम्भ हो गया। इसके परिणामस्वरूप भारत की अर्थव्यवस्था की नींव हिल गई तथा भारतीय जीवन असंतुलित हो गया। ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने 19वीं सदी के अंत में भारत में सामंतवादी व्यवस्था को तोड़ने का एक प्रगतिशील कार्य किया। सन् 1793 ई० में लार्ड कार्नवालिस ने बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में जो ज़मींदारी प्रथा लागू की, बाद में उसे बंबई, उत्तर-प्रदेश तथा मध्यप्रदेश आदि में लागू किया तथा टॉमस मुनरो ने इस्तमरारी बंदोबस्त लागू करके ज़मीन को व्यक्तिगत सम्पत्ति के रूप में बदल दिया। ब्रिटिश साम्राज्य ने सन् 1857 ई० के बाद अपनी नीति बदल दी और अपने औद्योगिक विकास के लिए एक नवीन ज़मींदार वर्ग को जन्म दिया। इस प्रथा से व्यक्तिगत सम्पत्ति की धारणा और प्रबल हो गई।

प्रथम विश्वयुद्ध ने विश्वस्तर पर साम्राज्यवादी व्यवस्था को प्रभावित किया। अँग्रेज़ों ने भारतीय जनता और उनकी सम्पत्ति का पूरा प्रयोग किया। पूँजीपति तथा ज़मींदार वर्ग के द्वारा लगातार शोषण एवं निरन्तर निर्यात के कारण जनसाधारण की स्थिति दयनीय होती जा रही थी। यह स्थिति बिहार, उड़ीसा, हैदराबाद, मध्यप्रदेश, पंजाब, बंबई और मैसूर के राज्यों में अधिक थी। कारीगर आद्यौगीकरण के कारण अपनी पुश्तैनी कला कौशल से वंचित हो गए और खेती की तरफ़ बढ़े। इससे भूमि पर अत्यधिक दबाव के कारण भूमिहीन किसान की समस्या पैदा हुई। यहाँ रजनी पामदत्त ने इस समस्या का यह आँकड़ा प्रस्तुत किया है —

“मद्रास में 1901 से 1925 के बीच खेत में काम करने वाले भू-स्वामियों की संख्या 19 प्रति सहस्र से बढ़कर 49 प्रति सहस्र हो गई। किशमी जोत ने वाले किसानों की संख्या इसी समय 157 प्रति हजार से 225 प्रति हजार तक पहुँच गई है। संयुक्त प्रदेश में 1819 से 1921 के बीच में 46 प्रतिशत की वृद्धि हुई। पंजाब में जहाँ 1911 में यह संख्या 6,26,000 थी, 1921 में 10,08,000 हो गई, पंजाब की जनगणना रिपोर्ट में इसका पता चलता है।”<sup>4</sup>

इधर पूँजीवाद अपने निर्मम शोषण चक्र को लिए हुए लगातार आगे बढ़ता जा रहा था। उसकी नीतियाँ आर्थिक शोषण की प्रक्रिया को तेज़ कर रही थीं तथा मनुष्य और उसके बीच स्थित सभी प्रकार के सामाजिक संबंधों की जड़ों में अर्थ की प्रतिष्ठा कर उनके पारस्परिक सहयोग की भूमिका को भी लगभग समाप्त कर रही थीं। इस नीति के परिणामस्वरूप इस वर्ग विशेष को उत्पादन के सारे साधनों पर अपना एकाधिकार प्राप्त था। इसीलिए यह वर्ग देश की समस्त पूँजी को अपने अधीन करता हुआ पूँजी के साम्राज्य का निर्माण कर रहा था। दूसरी ओर साधारण जनता की स्थिति उसके शोषण चक्र से लगातार दयनीय होती जा रही थी। भारतीय समाज में पूँजीवाद ने ही छोटे-बड़े अनेक वर्गों को जन्म दिया और इस प्रकार समाज की संश्लिष्ट इकाई को तोड़ दिया। समाज में मुख्य रूप से तीन वर्ग समाने आए।

प्रथम — उच्च वर्ग, जो पूँजीपतियों तथा ज़मींदारों का वर्ग था।

द्वितीय — मध्यवर्ग, जिसमें समाज का अधिकांश शिक्षित जन समुदाय सम्मिलित था।

तृतीय — निम्नवर्ग, जिसके अन्तर्गत किसान, मज़दूर अथवा इसी स्तर के अन्य लोग थे। यह सभी वर्ग देश के पूँजीपतियों, सामंतवादियों एवं साम्राज्यवादियों के प्रहार झेल रहे थे।

### राजनीतिक परिस्थितियाँ :-

19वीं शताब्दी के अंत तक आते-आते भारत के सामाजिक जीवन में भारतीय औद्योगिक पूँजीपति वर्ग नामक एक नये वर्ग का विकास होने लगा। भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस और पूँजीपति वर्ग ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व अपने हाथों में ले लिया।

रूस में 1917 ई० में हुए क्रान्तिकारी आंदोलन की सफलता और वहाँ साम्राज्यवाद तथा पूँजीवाद से संघर्ष करती हुई जनता ने भारतीय जनता को पर्याप्त प्रेरणा दी तथा उनके हृदय में समाजवादी विचारधारा के लिए एक तीव्र आकर्षण को जाग्रत कर दिया। भारतीय आर्थिक एवं राजनीतिक इतिहास में पहली बार किसान

और मजदूर आंदोलनों का प्रारम्भ हुआ। यही कारण है कि रूसी समाजवादी विचारधारा का प्रभाव बुद्धिजीवियों से लेकर जन सामान्य तक गहराई से पड़ा। लगभग 1918-20 ई० तक भारत में मार्क्सवाद का सूत्रपात हो गया था। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में देश में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में कुछ विशिष्ट घटनाएँ घटित हुईं, जिससे देश की राजनीतिक अवस्था में विशेष रूप से परिवर्तन हुआ। जिनमें प्रमुख रूप से लार्ड कर्जन की योजना के अन्तर्गत 16 अक्टूबर 1905 में बंगाल का विभाजन हुआ। इसके अतिरिक्त बंगाल को हिन्दू बाहुल तथा मुस्लिम बाहुल हिस्सों में विभाजित करके लार्ड कर्जन ने भारत विभाजन की नींव डाल दी।

सन् 1906 ई० में काँग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में दादा भाई नौरोजी ने एक नया कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसी समय सर्वप्रथम यह घोषणा की गई थी कि काँग्रेस का लक्ष्य स्वराज्य प्राप्त करना है। सरकार के प्रोत्साहन से सन् 1907 ई० में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। सन् 1908 ई० में बाल गंगाधर तिलक को एक भड़काऊ लेख लिखने के अपराध में छः साल की कैद हुई, उसके विरोध में भारत में पहली बार बंबई में राजनीतिक कारणों से मजदूरों ने छः दिन की आम हड़ताल की। इसी समय राजद्रोही सभाओं पर रोक लगाने का कानून बना।

“भारत का मजदूर वर्ग भी स्वतंत्र समाजवादी भारत के अपने सपने को पूरा करने के लिए लगातार संघर्षरत रहा। सन् 1918-20 के बीच मजदूरों द्वारा की गई ऐतिहासिक हड़तालों ने पूरे देश को अपने में जकड़ लिया। लाखों मजदूरों ने सन् 1920 में पूरे देश में लगभग दो सौ हड़तालों कीं। किसान और मजदूर आंदोलनों ने सन् 1929 तक आते-आते राष्ट्रीय आंदोलन की मूल भूमिका को बहुत अधिक प्रभावित किया। फलस्वरूप राजनीतिक आकांक्षा तथा आर्थिक दासता से मुक्ति पाने की कामना भी इस युग की मजदूर चेतना का अविभाज्य अंग बन गई।”<sup>5</sup>

ब्रिटिश सरकार के द्वारा मार्च 1919 में रौलेट एक्ट पास किया गया। अप्रैल 1919 ई० में इस एक्ट के विरुद्ध देश व्यापी सत्याग्रह आरम्भ हुआ। सन् 1920 ई० में असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव स्वीकार हुआ। अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन काँग्रेस का पहला अधिवेशन लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में 30 अक्टूबर 1920 ई० को बंबई में हुआ। सन् 1921 ई० को श्रीपाद अमृत डांगे ने ‘गाँधी बनाम लेनिन’

पुस्तक प्रकाशित कराई और 1922 ई० में उन्होंने 'सोशलिस्ट' पत्र भी निकाला। भारत के औद्योगिक केन्द्रों बंबई, कलकत्ता, मद्रास, कानपुर और लाहौर में 1922-23 ई० तक साम्यवादी समूह तैयार होने लगे। ब्रिटिश सरकार ने भारत के शासन विधान की जाँच करने के उद्देश्य से नवम्बर 1927 ई० को एक आयोग साइमन कमीशन भेजा, जिसका पूरे भारत में विरोध किया गया।

सन् 1929-30 ई० को पूरे देश में पूर्ण स्वराज्य मनाने का निश्चय किया गया। पहली बार काँग्रेस के द्वारा किसानों तथा मज़दूरों के लिए सन् 1931 ई० के कराची अधिवेशन में अनेक प्रकार की सुविधाओं की माँग की गई। इसके बाद अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना हुई। जिसका प्रथम अधिवेशन दिसम्बर 1936 ई० में हुआ। किसानों के अतिरिक्त मज़दूर वर्ग के हितों की सुरक्षा के लिए अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन काँग्रेस की स्थापना भी की गई। सन् 1934 ई० में काँग्रेस समाजवादी दल और किसान मज़दूर संगठनों ने संयुक्त रूप से साम्राज्यवाद विरोधी प्रदर्शनों का आयोजन किया।

ब्रिटिश सरकार ने सन् 1935 ई० में गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया एक्ट के नाम से एक नया कानून बनाया, जिसके आधार पर काँग्रेस ने चुनाव लड़ने का निश्चय किया। इसके पीछे स्वराज्य प्राप्ति का निश्चय भी था। इस चुनाव में काँग्रेस की जीत हुई तथा सात प्रान्तों में काँग्रेस मंत्रीमण्डल का निर्माण हुआ।

सन् 1936 ई० में पंडित नेहरू ने लखनऊ में होने वाले काँग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष पद से स्पष्ट शब्दों में घोषित किया :

“चाहे समाजवादी सरकार की स्थापना सुदूर भविष्य की ही बात क्यों न हो और हम में से बहुत लोग उसे अपने जीवन में भले ही न देख पाएँ लेकिन समाजवाद वर्तमान में वह प्रकाश है, जो हमारे पथ को आलोकित करता है।”<sup>6</sup>

अंग्रेजों द्वारा कांग्रेस की माँग को अस्वीकार किये जाने के विरोध में 1939 ई० में नेहरू जी ने त्यागपत्र दे दिया।

मार्च 1942 ई० में 'क्रिप्स मिशन' भारत भेजा गया, जो पूर्णता असफल हो गया। अगस्त 1942 ई० में कांग्रेस के बंबई अधिवेशन में भारत छोड़ो का ऐतिहासिक

प्रस्ताव पारित हुआ। जिसमें पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग भी की गई। इसके कारण काँग्रेस के नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके विरोध में भारत भर में तोड़-फोड़ की घटनाएँ हुई। इस क्रान्ति की आग ज्वालामुखी के रूप में फरवरी सन् 1946 ई० में प्रकट हुई। जिसके परिणाम स्वरूप अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा तथा 15 अगस्त 1947 ई० को भारत स्वतंत्र हो गया।

प्रगतिशील आंदोलन से पूर्व साहित्य का संबंध जीवन तथा समाज से लगातार कटता जा रहा था। जीवन और समाज की वास्तविकताएँ धुँधली होती जा रही थीं। साहित्य दिशा हीन हो रहा था। यही कारण है कि हमारे साहित्य में विलासिता, स्थिरता एवं काहिली के चिन्ह विद्यमान थे। साहित्य को इस स्थिति से उबारने में प्रगतिशील आंदोलन ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

प्रगतिशील आंदोलन की उत्पत्ति के उपर्युक्त आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक अनेक कारणों की विवेचना के बाद यह बताना भी आवश्यक है कि अमेरीका की स्वाधीनता तथा फ्राँस व रूस की क्रान्ति ने युवाओं में सामाजिक व राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न की। जर्मनी में हिटलर के फासीवाद ने पूरे यूरोप को राजनीतिक रूप से प्रभावित किया। हिटलर ने लेखकों, कवियों, शिक्षा विदों और वैज्ञानिकों को बन्दी बनाया अथवा देश से निकाल दिया तथा उन पर अनेक अत्याचार भी किए। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् विभिन्न देशों में बेचैनी पैदा हो गई। इसका प्रभाव भारत के उन विद्यार्थियों पर विशेष रूप से पड़ा जो उस समय लंदन में शिक्षारत थे।

ऐसे विद्यार्थियों ने एक संगठन बनाया और इसका नाम “भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ” रखा गया। इस कार्य में सज्जाद ज़हीर, मुल्क राज आनंद, डॉ० ज्योति घोष, प्रमोद सेन, डॉ० एम० सिन्हा और डॉ० एम० डी० तासीर सम्मिलित थे। इन सबके मस्तिष्क में भारतीय लेखकों का एक संघ बनाने का विचार आया। आरम्भ में ये युवक लंदन में सज्जाद ज़हीर के कमरे पर बैठक करते थे, जो स्टडी सर्किल के रूप में थी। कुछ दिनों बाद प्रगतिशील लेखक संघ के लिए एक मेनीफैस्टो तैयार किया गया और इस संस्था का प्रथम अधिवेशन लंदन के नानकिंग रेस्तरा में हुआ जहाँ इस संस्था का प्रगतिशील लेखक संघ के रूप में नामकरण

किया गया। जिसका अध्यक्ष मुल्कराज आनंद को चुना गया। लंदन में इस संस्था की नियमित बैठकें, जल्से, अधिवेशन होने लगे।

“कला तथा साहित्य की अन्य अनेक प्रवृत्तियों की भाँति प्रगतिवाद को भी जन्म के साथ ही विरोध तथा समर्थन दोनों प्राप्त हुए।”<sup>7</sup>

अपने प्रारम्भिक रूप में यह आंदोलन कुछ क्रान्तिकारी छात्रों तक सीमित था। कुछ दिनों बाद जुलाई 1935 ई० में पेरिस में विश्व लेखकों का एक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। जिसमें संस्कृति की सुरक्षा पर बल दिया गया। यह पहला अवसर था कि प्रगतिशील विचारों के लेखक संगठित हुए और उन्होंने यह निश्चय किया कि लेखक एवं कवि अपने व्यक्तिगत जीवन से निकलकर मानव के सामूहिक लाभ और सम्यता एवं संस्कृति की रक्षा के लिए कट्टरवादी शक्तियों से मुकाबला करें तथा मानव की सेवा का संकल्प लें।

इससे प्रभावित होकर सज्जाद ज़हीर ने भारत में आकर अपनी स्कीम को क्रियान्वित किया और इलाहाबाद में उर्दू-हिन्दी के विभिन्न लेखकों व कवियों को सहमत कर लिया और अपनी स्कीम पर उनसे हस्ताक्षर भी करा लिए। इस प्रकार इलाहाबाद में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना भी कर दी। सज्जाद ज़हीर के प्रयत्नों से देश के दूसरे नगरों में भी प्रगतिशील लेखक संघ की शाखाएँ स्थापित की गईं।

तीन चार महीनों में इस आंदोलन ने इतनी लोकप्रियता प्राप्त की, कि विदेश में चारों ओर से इसकी पुष्टि होने लगी। इसमें न केवल हिन्दी के वरन भारत की दूसरी भाषाओं, विशेषकर उर्दू के लेखक भी सम्मिलित थे। ऐसी सफलता मिलने पर सज्जाद ज़हीर ने प्रथम विधिवत् आंदोलन लखनऊ में सम्पन्न करके प्रगतिशील आंदोलन की नींव डाल दी।

9 और 10 अप्रैल सन् 1936 ई० में लखनऊ में उसका प्रथम अधिवेशन प्रसिद्ध उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद की अध्यक्षता में हुआ। इस अधिवेशन में कई महत्वपूर्ण लेखकों ने भाग लिया। जिनमें सुमित्रा नंदन पंत, हीरेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, यशपाल, फैज अहमद फैज, सज्जाद ज़हीर, रशीद जहाँ, अहमद अली महमूद उज्जफर, मौलाना हसरत मोहानी, जय प्रकाश नारायण, कमला देवी चट्टोपाध्याय,

इफितखार उददीन, युसूफ़ महर अली, इंदूलाल, जितेन्द्र प्रसाद तथा लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले अली जब्बाद जैदी थे। इनके अतिरिक्त महाराष्ट्र, मद्रास तथा गुजरात के लेखकों ने भी भाग लिया।

प्रगतिशील लेखक संघ का यह अधिवेशन कई दृष्टि से महत्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक था। सर्वप्रथम यह कि साहित्य के इतिहास में यह पहला चरण था, जब पूरे हिन्दुस्तान की विभिन्न भाषाओं के लेखक एक मंच पर एकत्रित हुए।

द्वितीय इस अधिवेशन में इस विचार को पहली बार तर्क संगत रूप से स्थापित किया गया कि साहित्य जीवन में अलग नहीं है बल्कि वह एक ऐसा सामाजिक उत्पादन है जो सामाजिक जीवन तथा परिवेश को प्रभावित करता है। तीसरे इसमें प्रगतिशील लेखकों की अपनी परम्परा को स्वीकारते हुए उसका दावेदार साबित किया गया है। अंत में लेखकों की एकता का आह्वान किया गया और यह कहा गया कि समस्याओं पर अपनी अलग-अलग राय रखते हुए भी कुछ आधारभूत मुद्दों पर लेखकों का एक मत होना आवश्यक है। प्रेमचंद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य की महत्ता एवं श्रेष्ठता का मानदण्ड प्रस्तुत करते हुए कहा—

“हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य सार हो, सृजन की आत्मा हो जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति और संघर्ष की बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं क्योंकि अब ज़्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।”<sup>8</sup>

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि प्रेमचंद ने कुंठित सौंदर्य दृष्टि, साहित्यिक रूढ़िवाद तथा व्यक्तिवाद आदि पर प्रहार किया। उन्होंने साहित्यकारों से कहा कि साहित्य की नींव सत्य, सौन्दर्य, स्वतन्त्रता तथा मनुष्य मित्रता है। वो उसे सामाजिक यथार्थवाद तथा क्रान्तिकारी रोमांटिसिज़्म की तरफ़ बढ़ाएँ।

प्रगतिशील लेखक संघ का दूसरा अधिवेशन 24-25 दिसम्बर 1938 ई० में रविन्द्रनाथ ठाकुर की अध्यक्षता में कलकत्ता के आशुतोष मेमोरियल हाल में आयोजित किया गया, लेकिन उनकी बीमारी के कारण मुल्कराज आनंद ने उसकी अध्यक्षता की, लेकिन रविन्द्रनाथ ठाकुर ने एक लिखित संदेश भेजा जिसमें मुस्तफा



कमालपाशा के निधन को एक बड़ी क्षति बताया गया। इसमें कई लेखकों में सज्जाद ज़हीर, अहमद अली, डॉ० अब्दुल अलीम, कृष्ण चन्द्र, मजाज़ और सरदार जाफ़री आदि सम्मिलित हुए।

इनके अतिरिक्त बंगाली भाषा के कई लेखक तथा कवि भी शामिल हुए। डॉ० अब्दुल अलीम को इस अधिवेशन में लेखक संघ का जनरल सेक्रेटरी चुना गया। दो तीन वर्ष में ही प्रगतिशील आंदोलन ने भारत की विभिन्न भाषाओं में प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। टैगोर, इक़बाल, प्रेमचंद, अब्दुल हक़, नेहरू तथा सरोजनी नायडू, आचार्य नरेन्द्र देव, जय प्रकाश नारायण जैसे विद्वान लेखकों तथा राजनीतिज्ञों ने उसका स्वागत किया और उनकी प्रशंसा भी की। कुछ ही दिन पश्चात् प्रगतिशील लेखकों ने अपनी पत्रिका 'नया साहित्य' को लखनऊ से आरम्भ किया और उसका पहला प्रकाशन 1939 ई० में हुआ। इसी समय प्रेमचंद द्वारा संपादित 'हंस' तथा भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा प्रकाशित 'नया साहित्य' जैसे समाजवादी मासिक पत्रों ने भारतीय साहित्य में प्रगतिशील भावना के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ का तृतीय अधिवेशन मई 1942 ई० में दिल्ली में आयोजित हुआ। इसमें हिन्दी भाषा के सभी लेखकों को निमंत्रित किया गया। इस अधिवेशन में जिस प्रस्ताव को पास किया गया उसे अखिल भारतीय फ़ासीवाद विरोधी लेखक सम्मेलन के घोषणा पत्र के रूप में प्रचारित किया गया। इस अधिवेशन के घोषणा पत्र का अंश शिवदान सिंह चौहान के अनुसार इस प्रकार है —

“हम हिन्दुस्तान के महान और बहुमूल्य सांस्कृतिक उत्तराधिकार के प्रहरी हैं। फ़ासिज़्म लुटेरों से उसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। अपनी रचनाओं द्वारा फ़ासिज़्म के खिलाफ़ अपने को दिमागी तौर पर मज़बूत बनाने में हमें जनता की मदद करनी चाहिए। किताबों और पैम्फ़लेटों, रेडियो और सिनेमा गानों और रंगमंच के ज़रिये हमें विशाल जनता के पास पहुँचना चाहिए। अपनी मातृ भूमि के आह्वान पर आगे आना और मुक्ति तथा संस्कृति की दीपशिखा को प्रज्वलित रखना हमारा कर्तव्य है।”<sup>9</sup>

इस अधिवेशन के कुछ समय बाद सितम्बर, 1942 ई० में बनारस में प्रगतिशील लेखक संघ की काशी शाखा ने स्थानीय साहित्यकारों तथा बुद्धिजीवियों का एक सम्मेलन हुआ तथा इलाहाबाद प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से अक्टूबर 1942 ई० के हंस में फ़ासिज़्म और दमन के विरोध की अपील प्रकाशित की गयी। इसी समय बंगाल के लेखकों और कलाकारों ने एक साथ मिलकर फ़ासीवाद के विरोध में दिसम्बर, 1942 ई० में बंगाल में ही एक सम्मेलन किया। प्रगतिशील लेखक संघ के इन सभी विभिन्न अधिवेशनों का एक ही मुख्य उद्देश्य, देश को फ़ासिज़्म के भयावह खतरे से बचाना था।

22 से 25 मई, 1943 ई० में बंबई में प्रगतिशील लेखक संघ का चतुर्थ अखिल भारतीय अधिवेशन श्रीपाद अमृत डाँगे की अध्यक्षता में हुआ। इस अधिवेशन में 1943 ई० तक की प्रगतिशील आंदोलन की, गतिविधियों की समीक्षा की गई। श्रीपाद अमृत डाँगे ने अपने भाषण 'जन जीवन और साहित्य' के आरंभ में देश में व्याप्त गम्भीर संकट तथा देश का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों के संबंध में कहा कि —

“साथियों और मित्रों आज हम ऐसे अवसर पर मिल रहे हैं जब समस्त मानवता भीषण संहारी विश्वयुद्ध की विभीषिका से संतुलित है। चाहें आप मोर्चे पर हों अथवा घर की चहार दीवारी के अंदर, प्रत्येक व्यक्ति का जीवन स्त्री, पुरुष, बाल, वृद्ध युवा सभी का जीवन इस भयावह विश्वयुद्ध से आन्दोलित या प्रभावित हो रहा है।”<sup>10</sup>

इस अधिवेशन में सिद्धान्तों और कर्तव्यों के अतिरिक्त रचनात्मक कार्यों की तरफ भी लेखकों का ध्यान आकृष्ट किया गया। इसी समय अक्टूबर 1945 ई० में हैदराबाद में उर्दू के प्रगतिशील लेखकों का एक अधिवेशन सरोजनी नायडू के उद्घाटन से हुआ। इस अधिवेशन में उर्दू के कई लेखकों ने भाग लिया, जिनमें कृष्ण चन्द्र और ख्वाजा अहमद अब्बास मुख्य रूप से थे। इसका मुख्य उद्देश्य सोवियत रूस और चीन के प्रति मित्रता तथा फ़ासीवाद का विरोध करना था।

प्रगतिशील लेखक संघ का पाँचवा अधिवेशन मार्च 1953 ई० में दिल्ली में हुआ। इसके महामंत्री पद पर कृष्णचन्द्र को प्रतिष्ठित किया गया। इस अधिवेशन के

घोषणा पत्र में प्रगतिशील आंदोलन को व्यापक एवं विस्तृत आधार देने की कोशिश की गई और कहा गया कि—

“हमारी जनता अपने लिए उन्मुक्त और समृद्ध जीवन रचने के प्रयास कर रही है। वह विश्व के सभी राष्ट्रों के साथ शांति और मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करके रखना चाहती है। हमें अपने साहित्य को मानवतावाद की भावना, जीवन में आस्था और आलोकपूर्ण भविष्य की आशा से परिपूर्ण करना है।”<sup>11</sup>

इस घोषणा पत्र में उस साहित्य पर बल दिया गया जिसमें मानवतावाद की भावना हो, आशावादी दृष्टि हो तथा जीवन में आस्था का भाव हो।

इस आंदोलन ने जीवन के प्रति एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है तथा साहित्यकारों को कल्पना से निकालकर यथार्थ के समक्ष खड़ा कर दिया। निराशा, घुटन, संत्रास, पराजय तथा अनास्था के स्थान पर सप्राण, सजीव, आशावादी साहित्य का निर्माण करने का आह्वान किया गया।

“प्रगतिवाद वस्तुतः समाजवादी चेतना के समानान्तर, उसकी साहित्यिक प्रतिच्छाया बनकर सामने आया था। यही कारण है कि उसके समूचे परिपार्श्व को देखने समझने के पश्चात ही उसकी साहित्यिक भूमिका का विवेचन युक्तिसंगत बन सकता था।”<sup>12</sup>

प्रगतिशील साहित्यकारों ने ही सर्वप्रथम ‘साहित्य किसके लिए’ जैसे प्रश्नों को उठाया तथा उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया। प्रगतिवादी आंदोलन ने पारम्परिक नायकों के स्थान पर जनसाधारण को नायकत्व प्रदान किया। इसके साथ-साथ लोक संस्कृति तथा जन जीवन के पुनरुद्धार का कार्य भी किया। हिन्दी साहित्य का आँचलिक उपन्यास भी प्रगतिशील आंदोलन के परिणाम स्वरूप अस्तित्व में आया। इस आंदोलन के प्रभाव से देश भर की विभिन्न भाषाओं में अनेक प्रगतिशील पत्र भी निकलने लगे। जिनमें हिन्दी में ‘नया साहित्य’, उर्दू में ‘नया अदब’, बंगला में ‘परिचय’, गुजराती में ‘संस्कार’, और तेलगू में ‘अभ्युदय’ आदि मुख्य हैं।

सन् 1936 ई० के बाद के समय को प्रगतिशील आंदोलन का उत्कर्ष काल कह सकते हैं। इस बीच कला और साहित्य के अतिरिक्त, सांस्कृतिक जीवन में

विशेष रूप से लोक संस्कृति के धरातल पर नया स्वरूप परिलक्षित हुआ। अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रगतिशील आंदोलन का विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार किया गया तथा उसके लिए कई नई समीतियाँ बनाईं। इन समीतियों का कार्य अपने क्षेत्र में व्यापक साहित्यिक सांस्कृतिक उपलब्धि कराना था।

हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी विचारधारा का प्रभाव भारतेन्दु युग से पूर्व हो चुका था। पूर्व भारतेन्दु युग में देश में फैले रूढ़िवाद, असमानता, अव्यवस्था, अन्याय तथा अत्यचार आदि के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए कुछ उच्च विचारों वाले भारतीयों के द्वारा कुछ सुधारवादी एवं धार्मिक आंदोलन अथवा संस्थाओं की स्थापना हुई। जिनमें –

1. राजा राम मोहन राय का 'ब्रह्म समाज' (1828 ई०)
2. स्वामी दयानंद सरस्वती का 'आर्य समाज' (1875 ई०)
3. रामकृष्ण परमहंस का 'रामकृष्ण मिशन'
4. भारत की 'थियोसोफिकल सोसाइटी' आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इन संस्थाओं ने भारतीय समाज के सुधार के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए।

भारतेन्दु युग में पत्रकारिता को भी एक महत्वपूर्ण स्थान मिला। भारतेन्दु ने कई पत्रिकाओं का संपादन किया, जिसमें 'कविवचन सुधा' (1868 ई०) तथा 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' (1873 ई०) प्रमुख थीं। इसके अतिरिक्त बालकृष्ण भट्ट की 'हिन्दी-प्रदीप' (1877), बद्री नारायण प्रेमघन की 'आनंद कादम्बिनी' (1881 ई०), श्रीनिवास दास की 'सदादर्श' (1877 ई०), तोताराम की 'भारतबन्धु' (1881) आदि पत्रिकाओं को इस युग में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

### प्रगतिशील हिन्दी उपन्यास :-

प्रगतिशील आंदोलन ने भारतीय साहित्यकारों को एक नयी दिशा प्रदान की। सन् 1935 ई० में इसी उद्देश्य से लंदन के नैनकिंग होटल में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यासकार इ० एम०

फोर्स्टर ने की थी। इसके अन्य प्रमुख सदस्यों में सज्जाद ज़हीर, डॉ० मुल्कराज आनंद, डॉ० सय्यद एजाज़ हुसैन थे। इन्हीं लेखकों के प्रयत्न एवं प्रेरणा से भारतीय साहित्य में एक स्वतंत्र आंदोलन का प्रारंभ हुआ। जिसका उद्देश्य सामंतवादियों, पूँजीपतियों तथा अप्रगतिशील वर्गों से साहित्य को मुक्त कराकर उसे जन सामान्य के निकट लाना था।

प्रगतिशील साहित्यकारों का यथार्थवाद से गहरा संबंध है। उन लेखकों ने अपनी रचनाओं में छोटी-छोटी घटनाओं तथा साधारण चरित्रों का वर्णन किया है। प्रगतिशील लेखक अपनी रचनाओं में मर्म स्पर्शिता, संतुलित जीवन दृष्टि तथा प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति से जीवन का समन्वित चित्रण करता है। इस चित्रण से लेखक के विचारों की जागरूकता तथा उसकी कलात्मकता का परिचय मिलता है।

हिन्दी के प्रगतिशील उपन्यासकारों में यशपाल, रांगेय राघव, नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु, राहुल सांकृत्यायन, भैरव प्रसाद गुप्त, भीष्म साहनी, अमृतराय तथा सतीश जमाली के नाम प्रमुख हैं। इसके बाद के युग में प्रगतिवादी चेतना ने अन्य कथाकारों को भी अपनी ओर आकर्षित किया। जिनमें मुख्य रूप से कमलेश्वर का नाम लिया जा सकता है। इन लेखकों का प्रमुख वैशिष्ट्य यह है कि इन्होंने यथार्थवाद को केवल ग्रहण ही नहीं किया, बल्कि उसे एक जीवंत विचार दर्शन के संदर्भ में सफलता, सम्पन्नता तथा समृद्धि की नई दिशाओं तक पहुँचाया है।

प्रगतिशील कथाकारों ने अपनी कृतियों में समसामयिकता को उतारा। उन्होंने युग जीवन को एक तटस्थ दृष्टि के रूप में देखा, भोगा तथा उसकी प्रतिक्रियाओं और संवेदनाओं के साथ उसका सबसे परिचय भी कराया। उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यापक सामाजिक परिदृश्य, युग जीवन के कटुतम यथार्थ, पूँजीवादी, सामन्तवादी व्यवस्था तथा इनके शोषण का शिकार मध्यवर्गीय जीवन, रूढ़िवादी मनोवृत्ति का शिकार भारतीय नारी, जातिवादी व्यवस्था आदि का चित्रण बड़ी सजीवता के साथ किया है। प्रगतिशील उपन्यासकार के संबंध में डॉ० सुषमा धवन लिखती हैं—

“प्रगतिवादी उपन्यासकार का उद्देश्य परिस्थितियों तथा चरित्रों में उस विकासोन्मुख चेतना को पकड़ना तथा स्वरित करना है जो समाजवादी व्यवस्था की प्रतिष्ठापना में योग दे।”<sup>13</sup>

प्रगतिवादी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में प्रगतिशील तत्वों की प्रेरक परिस्थितियों तथा समाज का यथार्थ चित्रण किया है। यहाँ प्रमुख प्रगतिशील उपन्यासों का संक्षेप में उल्लेख करना समीचीन होगा।

**यशपाल :**

यशपाल का नाम हिन्दी के प्रगतिशील उपन्यासकारों के रूप में मुख्य रूप से आता है। यह सर्जनात्मक ऊर्जा और रचनात्मक शक्ति से समन्वित व्यक्तित्व के रूप में उभरे समाजवादी एवं प्रगतिवादी उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यास शोषित वर्ग के साक्षी बनकर आए। डा० सुषमा धवन यशपाल की विचारधारा के संबंध में लिखती हैं—

“यशपाल की विचारधारा मार्क्सवादी अथवा समाजवादी सिद्धांतों से प्रभावित हैं वह एक ओर मध्यवर्ग के व्यक्तिवादी संस्कारों को अपनाए हुए हैं और दूसरी ओर मार्क्सवादी जीवन दर्शन से प्रभावित हैं। उनका रोमांटिक दृष्टिकोण व्यक्तिवादी जीवन—दर्शन का परिणाम है और उनका साम्यवादी सिद्धांतों का प्रतिपादन समाजवादी चेतना का प्रभाव है। वह क्रान्तिकारी दल के भी सदस्य रह चुके हैं।”<sup>14</sup>

यशपाल समाजवाद तथा मार्क्सवाद से प्रभावित है। उन्होंने समाज का यथार्थ चित्रण मार्क्सवादी दृष्टि से किया है। इनके उपन्यासों में प्रमुख रूप से ‘दादा कामरेड’ (1941), ‘देशद्रोही’ (1943), ‘दिव्या’, ‘पार्टीकामरेड’ (1946) ‘मनुष्य के रूप’ (1949), ‘झूठा सच’ (1958) आते हैं जिनमें प्रगतिशीलता के तत्व विद्यमान हैं। उनके उपन्यासों का विवरण इस प्रकार है—

**‘दादा कामरेड’ (1941 ई०)**

यशपाल का यह उपन्यास राजनीतिक धारणाओं तथा सामाजिक मान्यताओं को चुनौती देने वाला तथा नवीन चेतना को अभिव्यक्त करने वाला पहला उपन्यास है। लेखक ने इसमें परम्परावाद तथा अराजकतावाद का विरोध कर दोनों में सामंजस्य की आवश्यकता पर बल दिया है।

**‘देशद्रोही’ (1943 ई०)**

इस उपन्यास में यशपाल ने डा० खन्ना के माध्यम से सर्वतोन्मुखी जीवन में प्रगतिवादी चेतना को उभारा तथा उसे परिपुष्ट किया है।

**‘दिव्या’ (1946 ई०)**

इस उपन्यास में सामंतवादी समाज व्यवस्था की समस्त समस्याओं को उठाया गया है। नारी की दयनीय स्थिति तथा उपन्यास की प्रमुख पात्र दिव्या शोषित भारतीय नारी का प्रतीक है, जिसका परम्परागत सामाजिक रूढ़ियाँ तथा सामंती समाज निम्न कुल के पृथु सेन से प्रेम करने की अनुमति नहीं देता है।

यशपाल इस उपन्यास के अन्य पात्र ‘धर्मस्य’ के माध्यम से यह बताने का प्रयास करते हैं कि कोई भी मनुष्य सामंती परिवेश में रहकर भी प्रगतिशील तथा न्यायप्रिय हो सकता है।

**‘पार्टी कामरेड’ (1946 ई०)**

यह उपन्यास मजदूरों की आर्थिक समस्याओं को लेकर लिखा गया है। ‘गीता’ भारतीय जन जीवन का मूल्यांकन मार्क्सवादी दर्शन की रोशनी में करती है।

**‘झूठा सच’ (1958 ई०)**

इस उपन्यास में यशपाल ने विभाजन के पूर्व तथा बाद के जन जीवन की समस्याओं तथा संघर्ष का वर्णन किया है तथा देश के राजनीतिक सामाजिक यथार्थ का प्रगतिशील दृष्टि से चित्रण किया है। इस उपन्यास में सांप्रदायिकता के कारणों की खोज तथा सांप्रदायिकता की आग में जलती हुई हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की जनता का मार्मिक चित्रण किया गया है।

**रांगेय राघव :**

रांगेय राघव भी प्रगतिशीलता से जुड़े हुए उपन्यासकार हैं। अतः उनके उपन्यासों में भी कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में प्रगतिशीलता के तत्व पाये जाते हैं। उनके उपन्यासों में ‘घरौंदे’ (1946), ‘विषाद मठ’, (1951), ‘कब तक

पुकारूँ', (1954) आदि प्रमुख हैं। उनके उपन्यासों में समाजवादी चेतना का आभास मिलता है, परन्तु इस चेतना को पात्रों तथा घटनाओं पर आरोपित किया गया है।

### **‘घरौंदे’ (1946 ई०)**

रांगेय राघव ने इस उपन्यास में कॉलेज के वातावरण को विद्यार्थी वर्ग को लेकर उसकी समस्याओं तथा जीवन का विशद निरूपण किया है।

### **‘विषाद मठ’ (1955 ई०)**

इस उपन्यास में उपन्यासकार ने समाज में व्याप्त उत्पीड़न शोषण एवं अन्याय का चित्रण बंगाल के भीषण दुर्भिक्ष को पृष्ठभूमि के रूप में ग्रहण करते हुए किया है। इस वातावरण का चित्रण सहज ही हृदय द्रावक हो गया है।

### **‘कब तक पुकारूँ’ (1957 ई०)**

इस उपन्यास में लेखक ने नटों की एक उपजाति—विशेष के जीवन का मार्मिक चित्रण किया है, जो अपनी आर्थिक विपन्नता तथा समाज की रूढ़िवादी व्यवस्था के कारण उत्पीड़ित तथा शोषित है। लेखक ने इस उपन्यास में पात्र सुखराम की मनःस्थितियों तथा प्रतिक्रियाओं का अंकन मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है।

### **नागार्जुन :**

नागार्जुन समाजवादी यथार्थवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक हैं उन्होंने अपनी रचनाओं में सीधे लोक जीवन से रस ग्रहण किया है। और मिथिला भूमि के वासियों को सजीव रूप दिया है। उनके उपन्यासों में ‘रतिनाथ की चाची’ (1948), बलचनमा (1952), ‘नई पौध’ (1953), ‘बाबा बटेसर नाथ’ (1954), ‘दुखमोचन’ (1954), ‘वरुण के बेटे’ (1957) प्रमुख हैं।

### **‘रतिनाथ की चाची’ (1948 ई०)**

यह उपन्यास एक सामंत वर्गीय कुलीन ब्राह्मण समाज की भारतीय विधवा नारी की कहानी है। इस उपन्यास के माध्यम से नागार्जुन ने अनेक सामाजिक रूढ़ियों, अप्रगतिशील विचारों व मान्यताओं का यथार्थ वर्णन किया है। इसमें गाँव के



जीवन उनके रीति-रिवाज, रहन-सहन, तीज-त्यौहार, वेश भूषा, खान-पान स्थानीय शब्दों का प्रयोग तथा वहाँ की प्रकृति का सहज-स्वाभाविक चित्रण हुआ है। जिससे मिथिला अंचल जीवंत हो उठा है।

### **‘बलचनमा’ (1952 ई०)**

यह उपन्यास एक गरीब, साधनहीन, परिश्रमी एवं ईमानदार किसान के जीवन की गाथा है। जमींदारों द्वारा किसानों पर किए जाने वाले शोषण उनकी समस्याओं तथा किसानों की उभरती हुई विकासोन्मुख चेतना को पात्र बलचनमा के माध्यम से चित्रित किया है

### **‘नई पौध’ (1953 ई०)**

इस उपन्यास में असंगत विवाह की समस्या को उठाकर उसका नूतन ढंग से निरूपण किया गया है। यह क्रान्तिकारी प्रयत्न रूढ़िवादी समाज की जड़ता को तोड़ने वाला प्रगतिशील चेतना का परिचायक है।

### **‘बाबा बटेसर नाथ’ (1954 ई०)**

इस उपन्यास में कथा शिल्प संबंधी नवीन प्रयोग किए गए हैं। लेखक वर्तमान शासन व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है। वह समाजवादी शासन व्यवस्था को आदर्श मानता है। इसमें जमींदारों की निरकुंशता राजनीतिक आंदोलनों, कांग्रेस शासन का इतिहास आदि का सफल चित्रण हुआ है।

### **‘दुखमोचन’ (1954 ई०)**

यह उपन्यास एक ऐसे व्यक्ति दुखमोचन की कहानी है जिसकी प्रगतिवादी विचारधारा शोषित, पीड़ित एवं निर्धन व्यक्तियों आदि को नवचेतना तथा स्फूर्ति प्रदान करती है।

### **भैरव प्रसाद गुप्त :**

प्रगतिशील उपन्यासकार भैरव प्रसाद गुप्त के उपन्यास मार्क्सवादी विचारधारा के आधार पर समाजवादी रचनाओं की परंपरा में आते हैं। उनके उपन्यासों में

‘मशाल’ (1951), ‘गंगा मैया’ (1953), ‘जंजीरे और नया आदमी’ (1956), ‘सत्ती मैया का चौरा’ (1959) एवं धरती प्रमुख हैं।

#### ‘मशाल’ (1951 ई०)

इस उपन्यास में मजदूर वर्ग के कष्ट, दयनीय स्थिति तथा उनके संघर्ष को चित्रित किया गया है। यह उपन्यास उद्देश्य की दृष्टि से सफल उपन्यास है।

#### ‘गंगा मैया’ (1953 ई०)

इस उपन्यास में किसानों के जीवन की समस्याओं, उनके संघर्ष तथा मध्यवर्गीय हिंदू परिवार की एक विधवा की अवस्था का निरूपण प्रगतिवादी दृष्टि से किया गया है।

#### ‘सत्ती मैया का चौरा’ (1959 ई०)

इस उपन्यास में भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, सांप्रदायिक रूढ़ियों, रूढ़िवादी समाज की समस्याओं तथा विसंगतियों को चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा उनकी मित्रता को मुन्नी तथा मन्ने नामक दो पात्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। लेखक ने प्रगतिवादी दृष्टि से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक इतिहास को दृष्टि में रखकर उन परिस्थितियों की व्याख्या तथा विश्लेषण किया है।

#### राहुल सांकृत्यायन :

प्रगतिशील उपन्यासकार राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में मार्क्सवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव है। उन्होंने भारतीय जन-जीवन को निकट से देखा तथा अनुभव किया। और इसके आधार पर उनके जीवन के यथार्थ सत्य को अभिव्यक्त किया है। उनके उपन्यासों में ‘जीने के लिए’ (1942), ‘सिंह सेनापति’, ‘भागो नहीं दुनिया बदलो’, प्रमुख हैं।

#### ‘जीने के लिए’ (1942 ई०)

इस उपन्यास में दोषपूर्ण अर्थव्यवस्था, भारतीय जन-जीवन के शोषण की सफल अभिव्यक्ति है। इसके पात्र मोहन लाल, बाबू राम तथा देवराज सामाजिक

शासन व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है। लेखक ने पात्रों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों के प्रति रोष व्यक्त किया है।

### **‘सिंह सेनापति’ (1944 ई०)**

इस उपन्यास में लेखक ने बुद्ध कालीन पाँच सौ वर्ष ई०पू० गणराज्यों में सामान्य जन की स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें लेखक सामाजिक जीवन का चित्रण ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में करते हुए मुख्यरूप से दास प्रथा, दासता की भावना वर्ण एवं जाति प्रथा, आर्थिक विषमता, स्त्री समस्या, हिंसा—अहिंसा तथा राजनीतिक समस्या आदि को चित्रित करने का सफल प्रयास करता है।

### **‘भागो नहीं दुनिया बदलो’ (1944 ई०)**

इस उपन्यास में लेखक ने गाँव के गरीब भूमिहीन मजदूरों को आधार बनाकर उनका यथार्थवादी चित्रण किया है। इस उपन्यास में लेखक के मार्क्सवादी विचारों का विस्तृत रूप देखने को मिलता है।

### **फणीश्वर नाथ रेणु :**

प्रगतिशील उपन्यासकार फणीश्वर नाथ रेणु ने अपनी कृतियों में जनवादी विचारधाराओं की सर्वत्र सफल व्यंजना की है। उन्होंने दुखी आम जनता के लिए अपनी कुशल लेखनी चलाई। उनके उपन्यास ‘मैला आँचल’ और ‘परती परिकथा’ प्रमुख प्रगतिशील उपन्यास हैं।

### **‘मैला आँचल’ (1954)**

इस उपन्यास में बिहार के पूर्णिया ज़िले के एक पिछड़े गाँव मेरीगंज की कथा है। इसमें आज़ादी के पहले के दो तीन वर्षों की मैली गंवई जिन्दगी की सारी कशमकश का जीवन्त चित्रण करने के साथ-साथ ग्रामीण जीवन की समस्याओं को उठाया गया है। मैला आँचल के साथ हिन्दी में पहली बार किसी आँचल विशेष के उपेक्षित जीवन की समस्त छवि और गाँव की विवशता को अत्यंत संवेदनशीलता और सूक्ष्मता से उभारा गया है।

### ‘परती परिकथा’ (1957 ई०)

इस उपन्यास में भी ग्रामीण किसानों और निम्न वर्गीय समाज की कहानी है। इसमें पूर्णियाँ अँचल की वीरान, पतिता, बन्ध्या, परती धरती की कथा है, जो उत्तर में नेपाल से शुरू होकर दक्षिण में गंगा तट तक लाखों एकड़ में फैली हुई विस्तृत भूमि है। परानपुर गाँव की यह धरती भारतीय अविकसित जनजीवन तथा शोषित उपेक्षित जनता का प्रतीक है।

### भीष्म साहनी :

प्रगतिशील उपन्यासकार भीष्म साहनी ने अपनी रचनाओं में पूरी जीवन्तता और गतिमयता के साथ जीवन को अंकित किया। ‘तमस’ उनका प्रमुख प्रगतिशील उपन्यास है।

### ‘तमस’ (1973 ई०)

विभाजन की त्रासदी पर लिखे गए उपन्यासों में ‘तमस’ अपनी अलग पहचान रखता है। दो खण्डों में लिखित यह उपन्यास भारतीय समाज की साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता और असहिष्णुता से विस्फोटित होने वाले बारूदी धुएँ से भरे हुए वातावरण का अँधकार है, जिसमें सामान्यजन की घुटन और मार्मिक पीड़ा का चित्रण किया गया है। लेखक ने भारतीय विभाजनकालीन परिस्थितियों और साम्प्रदायिक उपद्रवों को सामाजिक और राजनीतिक विचारों के सन्दर्भ में देखने का प्रयत्न किया है।

### सतीश जमाली :

प्रगतिशील उपन्यासकारों में सतीश जमाली का नाम भी महत्वपूर्ण है। इनके उपन्यास ‘छप्पर टोला’ और ‘प्रतिबद्ध’ प्रगतिशीलता का स्पष्ट बोध कराते हैं।

### ‘प्रतिबद्ध’ (1974 ई०)

इस उपन्यास में सतीश जमाली ने फैक्ट्री मालिकों के शोषण और मजदूरों की हड़ताल की कथा को आधार बनाया है। पूँजीपति मिल मालिक मजदूरों का तरह तरह से शोषण करते हैं और जब मजदूर विरोध करते हैं तो फैक्ट्री का मालिक

गुण्डों के द्वारा हड़ताली मजदूरों को मौत के घाट उतरवा देता है। लेखक ने इन सभी तथ्यों का यथार्थवादी ढंग से चित्रण किया है।

### ‘छप्पर टोला’ (1982 ई0)

इस उपन्यास में कूड़ा बीनने वाले गरीब निम्नवर्गीय निरीह इंसान हैं, जिनकी विद्रोह की भावना कृण्ठित हो जाती है। ये लोग टूटे छप्परों में रहकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इस प्रकार हिन्दी के प्रगतिशील उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में सामाजिक विषमताओं, विभाजन की त्रासदी और शोषण की चक्की में पिसते हुए दुखी और निरीह समाज का यथार्थ चित्रण किया है।

### प्रगतिशील उर्दू उपन्यास :-

उर्दू के प्रगतिशील उपन्यासकारों में सज्जाद ज़हीर, इस्मत चुगताई, कृष्ण चंद्र, इब्राहीम जलीस, ख्वाजा अहमद अब्बास, बलवंत सिंह, महेन्द्र नाथ, अज़ीज अहमद, खदीजा मस्तूर तथा जीलानी बानों आदि प्रमुख हैं। इन उपन्यासकारों ने समाज को निकट से देखा, उसकी समस्याओं को समझने का प्रयास किया और उसका यथार्थ चित्रण किया।

### सज्जाद ज़हीर :

सज्जाद ज़हीर प्रगतिशील लेखक संघ की बुनियाद डालने वाले लेखकों में से एक हैं। अतः इस दृष्टि से ‘लंदन की एक रात’ उपन्यास को प्रगतिशील दृष्टि से लिखा जाने वाला प्रथम उपन्यास कहा जा सकता है। यह पूर्ण रूपेण चेतना प्रवाह शैली में लिखा गया उर्दू का सर्वप्रथम उपन्यास है।

### ‘लंदन की एक रात’ (1938 ई0)

सज्जाद ज़हीर का यह उपन्यास उच्च वर्ग से संबंध रखने वाले भारतीय नवयुवकों के मानसिक उद्वेलन और बिखराव की कथा है। जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से लंदन में अध्ययनरत हैं। नईम, राव, आजम, शीला, एहसान और करीमा बेगम आदि इस उपन्यास के मुख्य पात्र हैं। युसुफ़ सरमस्त इस उपन्यास के सम्बन्ध में लिखते हैं —

“लंदन की एक रात उर्दू नाविल निगारी में मील के पत्थर की योग्यता रखता है क्योंकि अंतर्वस्तु और बनावट की दृष्टि से यह उस युग की नाविल निगारी की प्रवृत्ति को पेश करता है।”<sup>15</sup>

‘लंदन की एक रात’ एक प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि में लिखा गया उपन्यास है। जब देश में अत्याचार और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई जा रही थी। इसी के परिणाम स्वरूप यह उपन्यास अस्तित्व में आया। इस उपन्यास का हर पात्र किसी न किसी रूप में चिंतित दिखाई देता है। इन पात्रों के माध्यम से लेखक ने लंदन में अध्ययनरत भारतीय विद्यार्थियों के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है।

### इस्मत चुगताई :

प्रगतिशील उपन्यासकार इस्मत चुगताई ने यथार्थवाद और मनोविज्ञान के मेल से ‘टेढ़ी लकीर’ जैसे जीते जागते उपन्यास की रचना की। इनके उपन्यासों में फ्रायड और मार्क्स की चिंतन पद्धति का प्रभाव परिलक्षित होता है।

#### ‘जिद्दी’ (1940 ई0)

इस्मत चुगताई का यह उपन्यास एक रोमांटिक ट्रेजेडी है। इसका मुख्य पात्र पूरन उच्च वर्ग का है जिसे निम्न वर्ग की आशा से प्रेम हो जाता है। लेकिन सामाजिक रूढ़ियाँ तथा जातिवाद उन्हें कभी मिलने नहीं देता। अंत में दोनों की मृत्यु हो जाती है। इस तरह उपन्यास का दुखद अंत होता है।

#### ‘टेढ़ी लकीर’ (1945 ई0)

चुगताई का यह उपन्यास स्वतंत्रता से पहले प्रकाशित हो चुका था। यह एक जीवनी परक उपन्यास है। इसमें फ्रायड के चिंतन का प्रभाव दृष्टिगत होता है। इस उपन्यास की पात्र शमन अपनी बेबाकी और यौन व्यवहार में आज़ाद विचारों के कारण अपना एक अलग स्थान रखती है। इस उपन्यास में मनोवैज्ञानिक और सामाजिक समस्या का भी चित्रण मिलता है।

## कृष्ण चंद्र :

कृष्ण चंद्र प्रगतिशीलता के उद्घोषक हैं। इनके उपन्यासों में 'प्रगतिशीलता' उद्देश्य बन कर उभरी है। 'शिकस्त', 'जब खेत जागे', 'तूफान की कलियाँ', आदि इनके प्रमुख प्रगतिशील उपन्यास हैं। इनके उपन्यासों में यथार्थवाद, अंतर्द्वन्द्व तथा यौन प्रवृत्ति सब कुछ आपस में मिले जुले दिखाई देते हैं।

### 'शिकस्त' (1943 ई०)

यह उपन्यास जागीरदारी समाज के अन्तर्द्वन्द्व पर लिखा गया सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास है। इसमें एक ब्राह्मण परिवार का युवक श्याम एक दलित कन्या चन्द्र से प्रेम करता है। लेकिन जातिवाद और धर्म की दीवार के कारण दोनों एक दूसरे से कभी मिल नहीं पाते हैं और उपन्यास का दुखद अंत होता है। इसमें कश्मीर के प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन, नए और पुराने मूल्यों का चित्रण उपन्यास को सफल बनाता है।

### 'जब खेत जागे' (1952 ई०)

इस उपन्यास में कृष्ण चंद्र ने भूख, गरीबी, बीमारी और बेईमानी को विषय बनाया और किसानों की जागरूकता पर जोर दिया। इस उपन्यास की कहानी राघव राव की दर्द भरी जिन्दगी है। इस उपन्यास का केन्द्रिय पात्र भी राघव राव ही है। जब वह अपने अधिकार के लिये आवाज़ उठाता है तो उसको जेल भेज दिया जाता है। वह एक गरीब किसान का बेटा है उसे कदम कदम पर गरीबी का एहसास होता है और उसके दिल में उच्च वर्ग के विरुद्ध घृणा पैदा हो जाती है। वह अन्याय को समाप्त करने और न्याय प्राप्त करने के लिए किसानों को इकट्ठा करता है जिस के द्वारा कृष्ण चन्द्र ने साम्यवादी विचारों को दिखाने का प्रयत्न किया है।

### तूफान की कलियाँ (1954 ई०)

इस उपन्यास में कश्मीर के डोगरा शाही अत्याचारियों की कथा को प्रस्तुत किया गया है। उपन्यासकार ने उच्च वर्ग के द्वारा निम्न वर्ग पर निरंतर अत्याचार

और अन्याय का चित्रण किया है कि किस प्रकार गरीब किसान और मजदूर जो खेत में मेहनत करते हैं उन्हें भरपेट खाने के लिए रोटी भी नसीब नहीं होती है। वह मजबूर और बेकस हैं। गोपी चन्द नारंग उनके संबंध में लिखते हैं—

“उनके उपन्यासों की बढ़ी हुई आदर्श पसंदी और रुमानियत ने फ़न के आईने को धुँधला कर दिया है।”<sup>16</sup>

**अजीज़ अहमद :**

उर्दू के प्रगतिशील उपन्यासकार अजीज़ अहमद ने शहर के पेचीदह वर्गीय जीवन के भावनात्मक और मानसिक बिखराव, संघर्ष तथा परिवर्तित होते हुए मध्यवर्ग के मनोविज्ञान को बड़ी सुन्दरता के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने ‘हवस’ (1932), ‘गुरेज़’ (1942), ‘ऐसी बुलंदी ऐसी पस्ती’, और ‘आग’ (1945) आदि उपन्यासों की रचना की।

**‘हवस’ (1932 ई0)**

यह अजीज़ अहमद का आरम्भिक उपन्यास है। इसका विषय यौन और रोमानी प्रवृत्ति है। इसकी शैली पारंपरिक रोमांटिक उपन्यासों की तरह है। ‘हवस’ में अजीज़ अहमद ने पर्दा प्रथा का विरोध किया है।

**‘गुरेज़’ (1943 ई0)**

इस उपन्यास में अजीज़ अहमद ने प्रेम की विभिन्न अवस्थाओं का चित्रण किया है। इसका केन्द्रिय पात्र नईम है जो बिल्कीस से प्रेम करता है। इस उपन्यास में नईम की विभिन्न मानसिक उलझनों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उपन्यासकार ने नईम के द्वारा 1936 ई0 से 1942 ई0 तक की राजनीतिक, सामाजिक एवं मानसिक प्रवृत्तियों का चित्रण किया है इसके साथ ही देश प्रेम को भी दिखाया गया है। यूसुफ़ सरमस्त ‘गुरेज़’ के सम्बन्ध में लिखते हैं—

“गुरेज़ जिदंगी से गुरेज़ है। जीवन के कड़वे यथार्थ से गुरेज़ है। हद यह है कि मुहब्बत, प्रेम की बुरी स्थिति से भी उपन्यास का हीरो नईम गुरेज़ करता है। नईम उपन्यास का मुख्य पात्र है। यह पात्र बीसवीं शताब्दी की बहुत सी प्रमुख प्रवृत्तियों और रुचियों का दर्पण है।”<sup>17</sup>



### ‘ऐसी बुलंदी ऐसी पस्ती’ (1947 ई0)

इस उपन्यास में अजीज़ अहमद ने विस्तृत कैनवास पर हैदराबाद की संस्कृति एवं सभ्यता के परिवर्तनों को कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें उच्च एवं अमीर वर्ग के साथ साथ अनेक वर्गों का जीवन भी सामने आ जाता है। सुल्तान हुसैन, खुरशीद ज़मानी, बेगम नूरजहाँ, न्याज़ी, सरताज़, असगर और दिल अफ़रोज़ आदि इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं।

### ‘आग’ (1946 ई0)

इस उपन्यास में कश्मीर के प्राकृतिक दृश्य में सांस्कृतिक जीवन को प्रस्तुत किया गया है। अजीज़ अहमद ने इस उपन्यास में कश्मीरी समाज के राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक अधिकारों को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में वह अपने आंतरिक अनुभवों और मानसिक स्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।

### हयात उल्लाह अंसारी :

प्रगतिशील उर्दू उपन्यासकारों में हयात उल्लाह अंसारी का स्थान भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कई उपन्यास लिखे हैं। जिनमें ‘लहू के फूल’ को बहुत प्रसिद्धि मिली। इसके अतिरिक्त ‘मदार’ और ‘घरौंदा भी प्रसिद्ध उपन्यास हैं। हयात उल्लाह अंसारी ने अपने उपन्यासों में मुख्य रूप से पूँजीपतियों, ज़मींदारों और सामंतों के द्वारा किसानों और ग़रीबों के शोषण का यथार्थवादी चित्रण किया है।

### ‘लहू के फूल’ (1969 ई0)

यह उपन्यास पाँच जिल्लों पर आधारित विस्तृत उपन्यास है। इसमें स्वतन्त्रता की लड़ाई और हिन्दुस्तान के बँटवारे के बाद के वातावरण को बड़ी विशिष्टता से उभारा गया है। यह उपन्यास 1911 ई0 से लेकर भारत की पहली पंचवर्षीय योजना पर आधारित है। इसके मुख्य पात्रों में किसान ‘अमर’ चीता और राहत रसूल हैं। इन पात्रों के माध्यम से गाँधी जी की नीति शिल्पकारी का युग और किस प्रकार मज़दूरों को कारखाने से निकाल दिया जाता है। उनका शोषण आदि का

यथार्थवादी चित्रण किया है। इस उपन्यास में मुख्य रूप से पूँजीपतियों, सामंतों और जमींदारों के द्वारा किसानों के शोषण, उन पर हो रहे अत्याचारों में हिन्दुस्तान का बँटवारा, स्वदेश त्याग और साम्प्रदायिक दंगों को विशेष रूप से प्रस्तुत किया है।

### ‘मदार’ (1981 ई०)

यह एक अलग प्रकार का और बहुत ही महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसमें भाषायी समस्या को प्राकृतिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में तिब्बत की लड़की और यू० पी० के फौजी अफसर के प्रेम और उन दोनों के बीच में होने वाली भाषायी समस्या को प्रस्तुत किया गया है। भाषायी समस्या के कारण वह लड़की उस फौजी अफसर को छोड़कर चली जाती है। इस उपन्यास में भाषायी समस्या को एक अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

### ‘घरौंदा’ (1983 ई०)

इस उपन्यास में हयात उल्लाह अंसारी ने एक ज़मींदार परिवार के युवक शहाब और बंजारन लड़की रंगीली के प्रेम की कथा प्रस्तुत की है। शहाब अपनी प्रेमिका के साथ उसके कबीले में शामिल हो जाता है। कबीले का सरदार दोनों का विवाह करा देता है। लेकिन कुछ दिनों के बाद शहाब का वहाँ दिल नहीं लगता है और वह वापस अपने घर चलने को रंगीली से कहता है। रंगीली स्वतंत्र विचारों वाली लड़की है। वह उस नए घर के वातावरण के बारे में सोच कर ही रास्ते से अपने घर वापस चली जाती है। लेखक ने इस उपन्यास में वर्गीय और सांस्कृतिक अन्तर के कारण उत्पन्न होने वाली समस्या को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

### जीलानी बानों :

प्रगतिशील उपन्यासकारों में जीलानी बानों का नाम भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी साहित्यिक पहचान इस्मत चुगताई और कुर्रतुलऐन हैदर के बाद एक बड़ी महिला कहानीकारों के रूप में होती है। कहानी लेखन के साथ-साथ अच्छे उपन्यासों की भी रचना उन्होंने की है। जीलानी बानों की साहित्यिक यात्रा हैदराबाद से प्रारम्भ हुई और यहीं से उन्होंने अपनी शिक्षा ग्रहण की। हैदराबाद की

जागीरदारी व्यवस्था का युग तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पुलिस एक्शन के द्वारा उसका अन्त भी देखा। उन्होंने 'ऐवाने गज़ल' और 'बारिशे संग' जैसे महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना की।

### 'ऐवाने गज़ल' (1976 ई०)

यह उपन्यास हैदराबाद के प्रमुख राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण में लिखा गया है। डॉ० ख़ालिद अशरफ 'ऐवाने गज़ल' का परीक्षण करते हुए लिखते हैं—

“यह हैदराबाद की जागीरदारी व्यवस्था के अन्त की कथा है लेखिका राजनीतिक दृष्टि से कम्यूनिज़्म हैं और यही कम्यूनिज़्म यथार्थवादी रूप में उनके उपन्यासों में दिखाई देता है। इसमें दूसरे विश्वयुद्ध से लेकर हैदराबाद के कब्जे से निकलने तक के युग को विषय बनाया गया है।”<sup>18</sup>

### 'बारिशे संग' (1985 ई०)

इस उपन्यास में जीलानी बानो ने जागीरदारी और ज़मींदारी व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाई है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र सलीम है। इसके अतिरिक्त मस्तान, मुराद, वैकट रेडी, नूरारत्ना, रंगा रेडी, मलीशम और शब्बीर अली विशेष है। इस उपन्यास में स्वतंत्रता से पूर्व की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। इसके साथ ही उन्होंने ज़मींदारों के अत्याचारों को दिखाया है। इस उपन्यास में लेखिका ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी मज़दूर और किसान गुलाम बने हुए हैं उनकी स्थिति आज भी वही है। जीलानी बानों ने मज़दूर किसान तथा निम्नवर्ग का यथार्थवादी चित्रण किया है।

### ख़दीजा मस्तूर :

ख़दीजा मस्तूर का नाम प्रमुख प्रगतिशील उर्दू उपन्यासकारों में आता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में मुख्य रूप से मुस्लिम मध्यवर्गीय परिवारों को केन्द्र बिन्दु बनाया है। 'आँगन' और 'ज़मीन' उनके प्रमुख उपन्यास हैं।

### ‘आँगन’ (1962 ई0)

इस उपन्यास में उत्तर प्रदेश के एक मुस्लिम जागीरदारी परिवार की कथा प्रस्तुत की गई है। यह कहानी 1932 से प्रारम्भ होकर बँटवारे के कुछ वर्ष बाद के समय पर आधारित है। इस उपन्यास में एक मध्यवर्गीय परिवार के सन्दर्भ में सम्पूर्ण मुस्लिम समाज स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने वाले व्यक्तियों और विभिन्न परिवारों की त्रासदी को जीवित रूप प्रदान किया है। इस उपन्यास में एक ही आँगन की कहानी है। जिसमें विभिन्न चिंतन और विचारों के व्यक्ति रहते हैं। बड़े चचा काँग्रेसी है जिसके जवाब में छम्मी मुस्लिम लीग में सम्मिलित हो जाती है, आलिया की माँ काँग्रेस की पक्षधर है और सफ़दर कम्युनिज़्म की प्रगति के लिए प्रयासरत रहता है लेकिन बाद में वह भोग-विलास की ओर प्रवृत्त हो जाता है। इस प्रकार उस आँगन में एक दूसरे पर व्यंग्य तथा नारेबाजी का वातावरण छाया रहता है। इस उपन्यास के अन्य पात्रों में जमील, इसरार मियाँ, कुसुम करीमन बुआ तथा तहमीना मुख्य रूप से उभरकर सामने आते हैं। आँगन एक सामाजिक उपन्यास है लेकिन उसके साथ-साथ उसमें राजनीतिक असमंजस तथा काँग्रेस और मुस्लिम लीग के दृष्टिकोण की व्याख्या भी है।

### ‘जमीन’ (1984 ई0)

इस उपन्यास का प्रारंभ शरणार्थियों के कैम्प से होता है। इसमें यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि जिन लोगों को उच्च पद प्राप्त होते हैं वह किस प्रकार अत्याचार तथा झूठ के द्वारा सम्पत्ति प्राप्त करते हैं। इस उपन्यास में बँटवारे के बाद पाकिस्तान में शरणार्थियों की समस्याओं को यथार्थ व सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है। इसके मुख्य पात्रों में साजिदा, सलमा, नाज़िमा, काज़िमा और मालिक हैं। ‘जमीन’ पर ख़दीजा मस्तूर के पिछले उपन्यास ‘आँगन’ का बहुत अधिक प्रभाव दिखाई देता है। इसलिए इस उपन्यास को वह स्थान प्राप्त नहीं हुआ जो ‘आँगन’ को हुआ।

## ख्वाजा अहमद अब्बास :

प्रगतिशील उर्दू उपन्यासकारों में ख्वाजा अहमद अब्बास का नाम भी प्रमुख रूप से लिया जाता है। इनके उपन्यासों में 'इन्किलाब', 'दो बूँद पानी' तथा 'सात हिन्दुस्तानी' आदि प्रमुख हैं।

### 'इन्किलाब' (1975 ई0)

इस उपन्यास को चार भागों में बाँटा गया है। पहला भाग — 'बादल घर आते हैं', दूसरा— 'तूफान की आमद-आमद' तीसरा भाग— 'बादल की गरज-बिजली की कड़क' और चौथा भाग— 'तूफान और तूफान के बाद' के नाम से हैं। इसका मुख्य पात्र अनवर देशभक्त है। जो गाँधी जी की नीति, उनके दृष्टिकोण से प्रभावित है। वह विभिन्न स्थितियों से गुज़रता हुआ सोशलिज़्म की ओर कदम बढ़ाता हुआ स्वतंत्रता आंदोलन में कम्युनिज़्म के दृष्टिकोण के साथ सम्मिलित होता है। वह अँग्रेजों से घृणा करता है। उसे एक दिन अपने पिता के बड़े भाई के द्वारा पता चलता है कि वह काफ़िर के घर पैदा हुआ है। अनवर अपने पिता से पूछता है तो वह कोई जवाब नहीं दे पाता है। अनवर सोचता है —

“वह एक हिन्दू का बेटा था, जो सब से बदनसीब, घृणा करने योग्य औरत की कोख से पैदा हुआ था और उसकी परवरिश एक मुस्लिम परिवार में एक मुस्लिम प्रणाली से हुई थी। वह एकता की अनोखी निशानी था। इंसानियत का एक ऐसा संगम जिसमें खून और संस्कृति की कई धाराएँ आकर मिली थीं।”<sup>19</sup>

उपर्युक्त उद्धरण से अनवर की मानसिक स्थिति का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। इस उपन्यास में ख्वाजा अहमद अब्बास ने हिन्दू मुस्लिम एकता की ओर इशारा किया है।

### 'सात हिन्दुस्तानी' (1969 ई0)

इस उपन्यास को ज़्यादा प्रसिद्धि नहीं मिली। मारिया इस उपन्यास की केन्द्रीय पात्र है जो अपने देश से प्रेम करती है और उसको स्वतन्त्र कराने के लिए छः नवयुवकों के साथ खुद भी फौजी वर्दी पहन लेती है। इस प्रकार 'सात हिन्दुस्तानी' के द्वारा लेखक ने देश प्रेम की भावना को दिखाया है।

### ‘दो बूँद पानी’ (1972 ई0)

इस उपन्यास में लेखक ने समाज में स्त्रियों की स्थिति को दिखाया है कि किस प्रकार महिलाओं पर अत्याचार हो रहा है। मंगल किस प्रकार गंगा सिंह की बहन सोनकी का बलात्कार कर देता है और सोनकी उसको गोली मार देती है। इस प्रकार निम्न वर्ग की चौरी देवी के साथ सनपूरन सिंह ज़बरदस्ती करता है तो वह उसके उत्तर में अपनी ज़बान खोलती है और उसका सर भी फोड़ देती है।

ख्वाजा अहमद अब्बास ने ऐसी स्त्रियों का चित्रण किया है जो शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाती हैं। वह स्वतंत्रता तथा साम्यवाद के लिए हमेशा प्रयासरत रहे।

### निष्कर्ष:

बीसवीं शताब्दी का प्रगतिशील आंदोलन हिन्दी एवं उर्दू साहित्य का एक प्रमुख आंदोलन था। मार्क्स के सिद्धान्त तथा उससे प्रभावित विश्व राजनीतिक साहित्य को दृष्टि में रखने वाले लेखक प्रगतिवादी कहलाए। इस युग के अधिकतर कवि और लेखक इस आंदोलन से प्रभावित हुए। इस आंदोलन ने रचना एवं आलोचना में विचारात्मक रूप में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रगतिवादी उपन्यासकारों ने भारतीय जनजीवन को बहुत करीब से देखा। इनका मुख्य उद्देश्य साहित्य को सामंतवादियों से मुक्त कराकर उसे जन सामान्य तक पहुँचाना था।

प्रगतिशील उपन्यासकारों का मुख्य लक्ष्य शोषण तथा उत्पीड़न की शिकार भारतीय जनता की वेदना को प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करना तथा सर्वहारा की चेतना को उद्बुद्ध करना था। हिन्दी तथा उर्दू के प्रगतिशील उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में समाजवादी यथार्थ को मुक्त भाव से अभिव्यक्त किया। इन उपन्यासकारों ने अत्यंत नगण्य समझे जाने वाले चरित्रों को अपने उपन्यासों का पात्र बनाया। उन्होंने किसान, मज़दूर तथा कठिन परिश्रम करने वाले जीवन को अपना विषय बनाया और उनके द्वारा पूँजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाई।

प्रगतिशील उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में प्रगतिशील तत्वों की प्रेरक परिस्थितियों का चित्रण किया है। उस समय समाज में सामन्त, महाजन, पूँजीपति, ज़मींदार, किसान आपस में टकरा रहे थे। मज़दूरों का शोषण हो रहा था। किसान और मज़दूर महाजनी ऋण की समस्या से ग्रस्त थे। इसके अतिरिक्त आपसी मतभेद, दरिद्रता, अशिक्षा इस स्थिति में वृद्धि कर रही थी। प्रगतिशील उपन्यासकारों ने भारतीय जनता को इस स्थिति से उबारने का कार्य किया और न केवल सर्वहारा वर्ग के आर्थिक वैषम्य तथा उनकी दयनीय स्थिति का चित्रण किया बल्कि उनकी वर्ग संघर्ष की चेतना को भी मुखर रूप प्रदान किया। प्रगतिशील उपन्यासकारों ने जातिवाद के विरुद्ध आवाज़ उठायी तथा विभाजन की त्रासदी का मार्मिक चित्रण करके पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के विभाजन से उत्पन्न अनेक समस्याओं को चित्रित किया। इतना ही नहीं इन उपन्यासकारों ने विभाजन के कारणों की तह तक पहुँचने का भी प्रयास किया।

### (ख) कमलेश्वर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

कमलेश्वर का जन्म 6 जनवरी 1931 ई० में कटरा मुहल्ला, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनका बचपन मैनपुरी के अपने बड़े से मकान में व्यतीत हुआ। उनका परिवार ज़मींदार परिवार था लेकिन आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। उनके घर का खर्च मकानों के किराए के दो तीन रूपयों के आधार पर चलता था।

कमलेश्वर के पिता जगदंबा प्रसाद सक्सेना पुराने ज़मींदार तथा माँ शांति देवी विशेषतः वैष्णव धर्म व संस्कारों का पालन करती थीं। कमलेश्वर अपने सात भाइयों में सबसे छोटे थे। बचपन में ही उनके पिता की हृदयगति रुक जाने से मृत्यु हो गई थी। किशोरावस्था में उनके बड़े भाई सिद्धार्थ की भी असमय मृत्यु हो गई।

जीवन भर उन्हें अपने पिता की कमी खलती रही उसके साथ सबसे बड़ा दुख बड़े भाई की मृत्यु का था जिसने उन्हें झकझोर कर रख दिया था। कमलेश्वर शुरू से ही अपनी माँ के ज्यादा करीब थे। उनको सबसे ज्यादा प्रभावित उनकी माँ ने ही किया। उन्होंने उनके विचार उनके संस्कार अपने जीवन में उतार लिए।

उनके लेखन पर माँ की तार्किक शक्ति का गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी माँ ने बड़े त्याग, समझबूझ से उनकी परवरिश की। उन्होंने अपने कर्तव्यपालन से ज़मींदार परिवार की प्रतिष्ठा व नाम को बरकरार रखा।

कमलेश्वर का बचपन अपने पिता के अभाव तथा आर्थिक तनावों में गुज़रा। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के ही स्कूल में हुई। पढ़ने के लिए उनके पास पर्याप्त किताबें भी नहीं होती थी।

1946 ई० में हाईस्कूल की परीक्षा पास करने के पश्चात उनकी माँ ने उन्हें आगे की शिक्षा के लिए बाहर भेज दिया। माँ ने अपने खर्चे की कटौती करके कमलेश्वर की शिक्षा को जारी रखा।

किशोरावस्था में उनका परिचय मैनपुरी में ही 'क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी' से हुआ। इस पार्टी से जुड़कर उनकी विद्रोही प्रवृत्ति जो कि बचपन में वैष्णव संस्कारों से दब गई थी, को दिशा मिली। बाल्यवस्था के एकाकीपन और संघर्षों ने उन्हें संकोची और अन्तर्मुखी बना दिया। इस क्रान्तिकारी पार्टी के अखबार 1946-48 के 'जनक्रान्ति' में वे क्रान्तिकारियों की जीवन गाथाएँ लिखते रहे। भारतीय क्रान्तिकारियों पर लिखा उनका सर्वप्रथम लेख 'कामागातामारू' था। इस पार्टी के सदस्य विभाजन के पश्चात कमलेश्वर को छोड़कर दूसरे दलों में चले गए। इससे उनको गहरा धक्का लगा। उनके आदर्श उनकी प्रारंभिक कहानियों में मुख्यरूप से उभरकर सामने आए। किशोरावस्था में पार्टी के कारण कुछ दिनों के लिए उन्हें जेल भी जाना पड़ा।

युवावस्था में भी कमलेश्वर को काफी संघर्ष करना पड़ा। इलाहाबाद में उन्होंने ट्यूशन आदि पढ़ाकर अपनी शिक्षा को जारी रखा। बी० ए० में पढ़ते समय कमलेश्वर ने इलाहाबाद से निकलने वाली पत्रिका 'बहार' में 50 रुपये महीने पर संपादन कार्य किया। इसके अतिरिक्त अन्य छिटपुट कार्य जैसे मैनपुरी में 'प्रकाश प्रेस' में प्रूफ़ रीडिंग, राजा साइन आर्ट (इलाहाबाद) में 1946-47 में साइन बोर्ड की पेंटिंग 'शहनाज़ आर्ट' (1948 ई०) साइन बोर्ड की पेंटिंग से लेकर चौकीदारी करके भी उन्होंने गुज़ारा किया।



सन् 1953 ई० में कमलेश्वर ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एम० ए० में प्रवेश लिया। साहित्य के क्षेत्र में भी कमलेश्वर को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। उन्होंने सर्वप्रथम 'सीखचे' कहानी लिखी। जिसको साहित्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठा नहीं मिली। उन्हें अपनी कहानी 'राजा निरबंसिया' से प्रतिष्ठा मिली। सन् 1954 ई० के पश्चात उन्होंने अनेक छोटे-मोटे कार्य किए। जैसे 1952-57 तक सेंट जोसेफ मिशनरी स्कूल में 125 रु० महीने पर पढ़ाना तथा 'कहानी' (1954) पत्रिका में 100 रुपये महीने पर संपादन कार्य किया। 'नई कहानी' आंदोलन को स्थापित करने में भी कमलेश्वर ने मोहन राकेश तथा राजेन्द्र यादव के साथ सहयोग दिया।

सन् 1957 ई० में कमलेश्वर ने इलाहाबाद के रेडियो (आकाशवाणी) पर स्क्रिप्ट लेखन का कार्य प्रारंभ किया। इसी वर्ष के अंत तक उनका स्थानान्तरण दिल्ली दूरदर्शन में हो गया। उन्होंने 1961 तक दूरदर्शन की नौकरी की। उन्होंने सदैव यथार्थ पर अपनी लेखनी चलाई। इसी समय उन्होंने 'जार्ज पंचम की नाक' जैसी कहानी लिखकर सरकार के असली चेहरे का उद्घाटन किया। जिसके दण्ड के रूप में उन्हें अपनी 250 रुपये महीने की नौकरी छोड़नी पड़ी। आर्थिक तंगी के कारण वह अपनी बेटी के जन्म पर उसे देखने तक ना जा पाए। इसी बीच उसकी मृत्यु हो गई। इस घटना ने उनको हिलाकर रख दिया। इन्हीं घटनाओं और समस्याओं से उनके मन में कुंठा, निराशा की भावना पैदा हो गई। इसी कुंठा, एकाकीपन और अजनबीपन में उन्होंने 'पराया शहर', 'खोई हुई दिशाएँ', दूसरे तथा 'नीली झील' जैसी प्रमुख कहानियों की रचना की। इसी समय में उन्होंने 'डाक बंगला', 'लौटे हुए मुसाफिर' जैसे उपन्यास भी लिखे। जीविकोपार्जन के लिए 1961 ई० में कमलेश्वर ने बहुत संघर्ष किया उन्होंने गुजर बसर करने के लिए निबंधों का संकलन समीक्षा लेखन, गाइडनुमा पुस्तक तथा होनसांग और फाहियान जैसी कहानियाँ आदि लिखीं। इसके अतिरिक्त दो रुपये पेज पर अनुवाद भी किया।

सन् 1963-65 ई० तक उनके जीवन में थोड़ा सुधार आया। इसी वर्ष उन्हें दिल्ली में 'नई कहानियाँ' पत्रिका का सम्पादन कार्य मिला। इसके साथ-साथ टेलीविजन के ऑफर भी मिले। इसी समय उन्होंने 'नई कहानी की भूमिका'

लिखकर नई कहानी आंदोलन को प्रतिष्ठा दी। इसी समय उनकी दूसरी बेटी 'मानू' ने जन्म लिया।

सन् 1966 ई० में कमलेश्वर ने दिल्ली से 'नई कहानियाँ' पत्रिका का संपादन कार्य छोड़कर 1967 ई० में बंबई में 'सारिका' मासिक पत्रिका का संपादन कार्य संभाल लिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने टी०वी० के संचालन का कार्य, फिल्मों में संवाद लेखन तथा समांतर कहानी के प्रणेता के रूप में कार्य किया। बंबई ने उन्हें आर्थिक रूप से मज़बूत बना दिया। सन् 1978 ई० तक वे 'सारिका' से जुड़े रहे। लेकिन 'समांतर आंदोलन' से जुड़ने के बाद सत्ता के खिलाफ लिखने के कारण उन्हें 'सारिका' को छोड़ना पड़ा।

'सारिका' पत्रिका को छोड़ने के बाद सन् 1978 से 1980 ई० तक बंबई में कमलेश्वर ने 'श्रीवर्षा' तथा 'कथा यात्रा' आदि पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया। भारत सरकार ने 1980 ई० में उन्हें दूरदर्शन (दिल्ली) में संयुक्त महानिदेशक के रूप में चुनकर एक बार फिर मौका दिया। वह इस पद पर 1982 ई० तक आसीन रहे।

सन् 1987 ई० तक आते-आते कमलेश्वर फिल्मी लेखन से जुड़ गए। इसके अतिरिक्त इसी समय कमलेश्वर दिल्ली से निकलने वाली पत्रिका 'गंगा' के संपादक सलाहकार के रूप में कार्यरत रहे। दस बारह साल के अंतराल के बाद कमलेश्वर ने एक बार फिर कहानी तथा उपन्यास लेखन, कहानी संग्रह 'इतने अच्छे दिन' तथा उपन्यास 'रेगिस्तान' के प्रकाशन से प्रारंभ किया।

कमलेश्वर जुलाई 1990 से फरवरी 1991 तक दिल्ली से निकलने वाले पत्र 'दैनिक जागरण' में संपादक के रूप में कार्यरत रहे। कमलेश्वर ने जीवन के हर रूप को, उतार चढ़ाव को बहुत नज़दीक से देखा परखा जाना। वे साहित्य और पत्रकारिता से लगातार जुड़े रहे। इसके अतिरिक्त दूरदर्शन पर साहित्यिक कार्यक्रम 'पत्रिका' का आयोजन किया। आकाशवाणी के लिए लगभग 700 पटकथा तथा दूरदर्शन के लिए 250 पटकथा लिखीं। दूरदर्शन के लिए पहली फिल्म 'पंद्रह अगस्त' का निर्माण कार्य बखूबी निभाया। 27 जनवरी, 2007 को कमलेश्वर का निधन हो गया।

“जब हम कमलेश्वर का नाम लेते हैं तो हमारे ज़हन में एक ऐसे इंसान का व्यक्तित्व आता है जो असाधारण होते हुए भी बिल्कुल साधारण है। हिन्दी साहित्य में कमलेश्वर को अनेक नाम, विशेषणों, उपनामों, उपाधियों से विभूषित किया जाता रहा है। जैसे —

“मामूली आदमी’ व ‘गैर मामूली फन्कार’ (आलमशाह), ‘कलम का मज़दूर’ (धूमकेतु), ‘हिन्दी साहित्य का मसीहा’, ‘अच्छा दार्शनिक’, ‘बढ़िया संयोजक’, सभाओं का उस्ताद’, ‘कस्बे का आदमी’, ‘फिल्मी आदमी’, ‘किस्सा गो’, ‘शेर भी लोमड़ी भी’ (दामोदर सदन), ‘कलम का खुदा’ (ओमस्वामी), ‘प्रेरणा-पुंज’ (ओमस्वामी)।”<sup>20</sup>

कमलेश्वर नाम एक ऐसे व्यक्तित्व का है जो बहुत ही प्रभावी है, जो लोगों को अपनी यथार्थवादी कहानियों से मोहित करता है, अपने प्रभावपूर्ण संवादों से आकर्षित करता है। तेज़ तर्रार लेख और संपादकीय से अपनी तरफ़ जोड़ता है तथा आत्म विश्वास उनके व्यक्तित्व में निखार लाता है। राजेन्द्र यादव कमलेश्वर के संबंध में लिखते हैं —

“मूलतः कमलेश्वर गुण्डा नहीं, दुष्ट-यानी मिस्त्रीवियस— अधिक है। शीन—काफ़ से दुरुस्त तलफ़फ़ुज़, साफ़ और तराशी हुई संतुलित आवाज़, बात को निहायत प्रभावशाली तरीके से कहने की कला, पतले—पतले होंठ, तीखे और फोटोजेनिक नक्श सांवला रंग और शातिर आँखें... लगता है जैसे आप सचमुच किसी समझदार आदमी से बातें कर रहे हैं — एक हाथ की उगलियाँ खोल—खोल कर मेज़ पर हाथ पटक—पटक कर वह आपको घण्टों किसी ऐसी किताब, फिल्म, घटना, कहानी या चीज़ के बारे में सविस्तार पूर्ण आत्मविश्वास से बताता रहेगा, जिसे न उसने पढ़ा है, न देखा है.... और न उसके बारे में उसे कोई जानकारी है।”<sup>21</sup>

कमलेश्वर बहुत खुशमिज़ाज व्यक्ति थे, लेकिन उनके स्वभाव में विद्रोह और निर्भीकता का स्वर बचपन से ही था। बाल्यावस्था में समाज के पक्षपात पूर्ण व्यवहार के कारण उनमें विद्रोही प्रवृत्ति का बीजवपन हो गया था। उनकी वही विद्रोही प्रवृत्ति, आगे चलकर उनकी लेखनी में हर तरफ़ देखने को मिलती है। गायत्री कमलेश्वर, कमलेश्वर की एक विशेषता बताते हुए कहती हैं —

“कमलेश्वर जी अपनी तकलीफ़ों के बारे में हमेशा ख़ामोश रहते थे, इनका दर्द बहुत देर में पता लगता है।”<sup>22</sup>

सन् 1961 ई० में दूरदर्शन (दिल्ली) में कार्यरत रहते हुए उन्होंने सत्ता पर व्यंग्य करते हुए 'जॉर्ज पंचम की नाक नामक एक कहानी लिखी। सत्ता को यह कहानी पसंद नहीं आई। इसके जवाब में कमलेश्वर ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। उनके निर्भीक व विद्रोही स्वभाव के कारण शासन व्यवस्था के खिलाफ लिखे गए लेखों ने उन्हें एक बार फिर इस्तीफा देने पर मजबूर कर दिया। और उन्होंने मुंबई से निकलने वाली पत्रिका 'सारिका' के संपादक पद से इस्तीफा दे दिया।

कमलेश्वर हरफनमौला थे। टी० वी० तथा रेडियो पर कार्यक्रम चलाते थे। उन्होंने अनेक पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया। वह एक सफल लेखक, आलोचक, वक्ता, आंदोलनकर्ता, युवा पीढ़ी के प्रेरणा स्रोत तथा सरकारी गैर सरकारी संस्थानों के सदस्य रह चुके हैं उन्होंने हर क्षेत्र में अपना हाथ आजमाया।

जीवन जीने के लिए व्यक्ति को अपने जीवन में संघर्ष करना पड़ता है। यह संघर्ष हर व्यक्ति के अपने जीवन से जुड़ा होता है। प्रत्येक व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए अपने-अपने स्तर का संघर्ष करना पड़ता है। एक मजदूर जीविकोपार्जन के लिए मजदूरी करता है। वह अपनी मजदूरी पाने के लिए संघर्ष करता है। एक लेखक अपने जीवन में जीविकोपार्जन के लिए कलम का सहारा लेता है। उस कलम के साथ वह जीवन भर संघर्ष करता रहता है।

इस प्रकार कलमेश्वर के व्यक्तित्व की विशेषताएँ परत-दर-परत खुलती रहती हैं। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। वह परिश्रमी, संघर्षशील, खुशमिजाज विनोदप्रिय मिलनसार, निडर, हरफनमौला तथा विद्रोही प्रवृत्ति के व्यक्ति थे।

### सम्मान एवं पुरस्कार :

सन् 1995 ई० में कमलेश्वर को पद्मभूषण की उपाधि प्रदान की गयी तथा 2003 में 'कितने पाकिस्तान' (उपन्यास) के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

## कमलेश्वर का कृतित्व :

कमलेश्वर बीसवीं शती के सबसे सशक्त लेखकों में से एक माने जाते हैं। उपन्यास कहानी, पत्रकारिता, स्तंभ लेखन, फिल्म पटकथा जैसी अनेक विधाओं में उन्होंने अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय दिया। कमलेश्वर ने गम्भीर साहित्य पर ही लेखनी नहीं चलाई वरन् साहित्य के हर क्षेत्र में लेखन कार्य किया। कमलेश्वर की साहित्यिक सेवाओं का दायरा बहुत व्यापक है। उनकी कृतियों का परिचयात्मक विवरण इस प्रकार है—

कमलेश्वर का कहानी लेखन 1951 से प्रारम्भ होता है। सर्वप्रथम उन्होंने 'कामरेड' कहानी लिखी। परन्तु उनकी 'सीखचे' कहानी पहले प्रकाशित हुई। उनकी कहानियाँ नौ संकलनों में संकलित हैं। कुछ कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में उपलब्ध हैं। उनके कहानी संग्रहों का विवरण निम्नलिखित है—

### 'राजा निरबंसिया' (1956-57 ई०)

इस संग्रह में 'देवा की माँ', 'धूल उड़ जाती है', 'मुर्दों की दुनिया', 'सुबह का सपना', 'आत्मा की आवाज़' और राजा निरबंसिया शीर्षक से कुल मिलाकर 7 कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। इन कहानियों का कथ्य कस्बे का जीवन है। इनमें मैनपुरी के जीवन की प्राण प्रतिष्ठा हुई है।

### 'कस्बे का आदमी' (1957 ई०)

इस संकलन में 'तीन दिन पहले की रात', 'गर्मियों के दिन', 'भटके हुए लोग', 'चायघर', 'सीखचे', 'इंसान और हैवान', 'गाय की चोरी', 'नौकरी पेशा', 'सच और झूठ', 'बेकार आदमी', 'थानेदार साहब' एवं 'कस्बे का आदमी' शीर्षक से कुल बारह कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों में भी मैनपुरी का चित्रण ही दिखाई देता है।

### 'खोई हुई दिशाएँ' (1961-62 ई०)

इस संग्रह में 'एक अश्लील कहानी', 'प्रेमिका', 'खोई हुई दिशाएँ', 'जॉर्ज पंचम की नाक', 'पीला गुलाब', 'दिल्ली में एक मौत', 'एक थी विमला', 'सॉप', 'एक

रुकी हुई जिन्दगी', 'दुखभरी दुनिया' तथा 'पराया शहर' शीर्षक से कहानियाँ संग्रहीत हैं। इस संग्रह में कमलेश्वर के कहानी लेखन का केन्द्र बिन्दु कस्बा न होकर महानगर का जीवन है। लेखक कमलेश्वर के मानस पर दिल्ली नगर से जुड़ने के पश्चात् उसका प्रभाव इन कहानियों पर परिलक्षित होता है।

### **'माँस का दरिया' (1964-65 ई0)**

इस संग्रह में 'युद्ध', 'तलाश', 'माँस का दरिया', 'दुखों के रास्ते', 'ऊपर उठता हुआ मकान', 'जो लिखा नहीं जाता', 'दूसरे', 'कुछ नहीं कोई नहीं', 'दिल्ली में एक और मौत', 'फालतू आदमी', 'नीली झील' और 'बदनाम गली' शीर्षक से कहानियाँ लिखी गई हैं। इस संग्रह का कथ्य भी मध्यवर्ग के पात्रों के इर्द-गिर्द घूमता है, जो महानगर का जटिल जीवन जीते हैं।

### **'जिंदा मुर्दे' (1969 ई0)**

यह संग्रह सन् 1967-68 ई0 के उपरान्त छपा। इसमें 'जार्ज पंचम की नाक' जो इससे पहले के संग्रह 'खोई हुई दिशाएँ' में भी सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त 'स्मारक', 'नाच', 'शरीफ आदमी', 'आत्मा अमर है', 'ब्रांच लाइन का सफ़र', 'अपने देश के लोग', 'नया किसान', 'मरे-पूरे-अधूरे', 'अपने अजनबी देश में', 'तथा जिंदा मुर्दे' हैं। इन कहानियों का स्वर व्यंग्यात्मक दिखाई देता है। कमलेश्वर ने यह कहानियाँ अपने दिल्ली आवास के दौरान लिखी हैं।

### **'बयान एवं कहानियाँ' (1972 ई0)**

सन् 1968-69 ई0 के समय की लिखी गई कहानियाँ इस संग्रह में सम्मिलित की गई हैं। यह कहानियाँ कमलेश्वर के बंबई शहर में रहने के पश्चात् की हैं। इस संग्रह में लगभग बीस कहानियाँ इस प्रकार हैं — 'नागमणि', 'लाश', 'या कुछ और', 'अकाल', 'मेरी प्रेमिका', 'जोखिम बयान', 'भूखे और नंगे लोग', 'फैसला', 'आसक्ति', 'रातें', 'अब और नहीं', 'मैं', 'लहर-लौट गई', 'अपना एकान्त', 'फटेपाल की नाव', 'लड़ाई', 'अजनबी', 'दुनिया बहुत बड़ी है' एवं 'उस रात वह मुझे ब्रीच कैंडी पर मिली थी और ताज्जुब की बात यह है कि दूसरी सुबह सूरज पश्चिम में

निकला था।” इन कहानियों में कमलेश्वर की बदलती हुई वैचारिकता को देखा जा सकता है। विद्वान वर्ग इसे समान्तर सोच से भी जोड़ते हैं।

### ‘इतने अच्छे दिन’ (1989 ई0)

‘इतने अच्छे दिन’ कहानी बंबई से निकलने वाली पत्रिका ‘सारिका’ में सन् 1976-77 ई0 में छपी थी। इस संग्रह में कुल दस कहानियाँ संग्रहीत हैं — ‘अच्छा ठीक है’ (1986 ई0), ‘जामातलाशी’ (1987), ‘इंतजार’ (1989) इसके बाद ‘शोक समारोह’, ‘मेरा भारत महान’, ‘चार महानगरों का तापमान’, ‘दालचीनी के जंगल’, ‘स्टोरी’ और ‘चप्पल’ का लेखन भी 1989 में ही हुआ है। उन कहानियों का स्वर भी सामयिक संदर्भ है।

### ‘मेरी प्रिय कहानियाँ’ (1972 ई0)

कमलेश्वर की प्रिय कहानियों का संकलन “मेरी प्रिय कहानियाँ” नाम से निकला। कमलेश्वर की लेखन यात्रा को समझने के लिए इस पुस्तक की भूमिका काफी सहायक है। इस संग्रह में कमलेश्वर ने अपने अन्य संग्रहों में से कुछ प्रिय कहानियाँ संग्रहीत की हैं। जो इस प्रकार हैं— ‘राजा निरबंसिया’ (राजा निरबंसिया), ‘खोई हुई दिशाएँ’ (खोई हुई दिशाएँ), ‘गर्मियों के दिन’ (कस्बे का आदमी), ‘बयान’ (बयान), ‘माँस का दरिया’, ‘नीली झील’ (माँस का दरिया), ‘नागमणि’ (बयान) ‘तलाश’ (माँस का दरिया) एवं ‘आसक्ति’ (बयान)।

### ‘कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ’ (1976 ई0)

इस संग्रह की भूमिका राजेन्द्र यादव ने लिखी है। इसमें उनका संस्मरण ‘मेरा हमदम मेरा दोस्त’ पुस्तक के प्रारंभ में दिया है। इस संग्रह में कुल नौ कहानियाँ हैं, जो इस प्रकार हैं—‘देवा की माँ’, (राजा निरबंसिया), ‘राजा निरबंसिया’ (राजा निरबंसिया), ‘नीली झील’ (माँस का दरिया), ‘खोई हुई दिशाएँ’, ‘जॉर्ज पंचम की नाक’ (खोई हुई दिशाएँ), ‘तलाश’, ‘माँस का दरिया’ (माँस का दरिया), ‘जोखिम’ तथा ‘राते’ (बयान) उपर्युक्त कहानियों के अतिरिक्त कमलेश्वर की कुछ कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपती रही हैं। जिनमें उपलब्ध कहानियाँ इस प्रकार हैं — ‘आधी दुनिया’ (कथा कहानी, अक्टूबर, दिसम्बर 1972)।

‘मान सरोवर के हंस’ (‘सारिका’, अप्रैल 1972)।

‘साँप’ (पुस्तक ‘कमलेश्वर’ संपादन मधुकर सिंह 1970)।

‘अजित’ (इंद्रप्रस्थ भारती’ पत्रिका, जून 1990)।

कमलेश्वर ने कहानी के अतिरिक्त उपन्यास नाटक एवं नाट्य रूपान्तर आलोचना, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण तथा निबंध लगभग कथा साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। इसके अतिरिक्त पुस्तकों का संपादन तथा सिनेमा स्क्रिप्ट लेखन भी किया जिसका यहाँ संक्षिप्त विवरण देना उपयुक्त होगा—

**नाटक एवं नाट्य रूपान्तर :**

‘अधूरी आवाज़’ नाम से कमलेश्वर ने नाटक लिखा है तथा रविन्द्रनाथ ठाकुर के ‘नष्टनीड़’ का रूपान्तर ‘चारुलता’ शीर्षक से किया जिसका प्रकाशन ‘शब्दकार’ दिल्ली से हुआ। प्रेमचंद के उपन्यासों ‘गोदान’, ‘निर्मला’ तथा ‘गबन’ आदि के नाट्य रूपान्तर किए। ‘बाल नाटक’ के चार संग्रहों का प्रकाशन ‘आत्माराम’ दिल्ली से हुआ।

**आलोचना :**

कमलेश्वर ने पत्रिकाओं में “नई कहानी” आंदोलन के उपरान्त उभरने वाले आंदोलनों पर आलोचनाएं लिखीं। वे आलोचनाएँ सन् 1965-66 में धर्म युग के चार अंकों में छपी थीं। इसके अतिरिक्त उनकी दो आलोचनात्मक पुस्तकें— “नई कहानी की भूमिका” तथा ‘मेरा पन्ना’ हैं, जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी कहानी में आए परिवर्तनों को स्पष्ट करती हैं।

**‘नई कहानी की भूमिका’**

इस पुस्तक में कमलेश्वर ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी कहानी में उभरे ‘नई कहानी’ आन्दोलन को स्पष्ट किया है। इसमें 21 समीक्षात्मक लेख हैं। यह पुस्तक कमलेश्वर की ‘नई कहानी’ एवं हिन्दी कहानी संबंधी तत्कालीन मान्यताओं को व्यक्त करती है। इस पुस्तक में सन् 1963 से 1965 तक कमलेश्वर की ‘नई कहानियाँ’ दिल्ली पत्रिका के संपादन के समय लिखे संपादकीयों को एकत्रित किया गया है। इस पुस्तक के प्रारंभ में ही लेखन का कारण स्पष्ट कर दिया गया है —



‘आज कहानीकार व उपन्यासकार होने के बावजूद भी लेखक के पास कहने को बहुत कुछ रह जाता है।’ कमलेश्वर एक तरफ ‘नई कहानी’ से संबंधित आधुनिकता, प्रामाणिकता, शाश्वतता, यथार्थ तथा उसकी शैलिक विशेषताओं को प्रस्तुत करते हैं और दूसरी तरफ पुरानी कहानी की जड़ता व असमर्थता के बिन्दुओं को रेखांकित करते हैं।

### ‘मैरा पन्ना’

यह पुस्तक भी ‘नई कहानी की भूमिका’ की तरह ‘सारिका’ पत्रिका में लिखे गए संपादकीयों का सम्मिलित रूप है। इसमें दो खण्ड हैं द्वितीय खण्ड पहले और प्रथम खण्ड बाद में छापा गया है प्रथम खण्ड में मार्च 1974 ई० से जुलाई 1975 ई० तक के संपादकीय प्रस्तुत किए गए हैं। इसमें ‘समान्तर आन्दोलन के कई आयामों को रेखांकित करता है। द्वितीय खण्ड में मार्च 1977 ई० से फरवरी 1978 ई० तक के संपादकीयों को सम्मिलित किया गया है। जो सामाजिक समस्याओं से अवगत कराते हैं। तथा उसमें अन्याय, अत्याचार एवं शोषण के विरुद्ध आवाज़ बुलन्द की गई है।

### ‘यात्रा वृत्तान्त’ :

कमलेश्वर का यात्रा वृत्तान्त ‘खण्डित यात्राएँ’ नाम से है। जिसका प्रथम संस्करण 1975 ई० में प्रकाशित हुआ। इस वृत्तान्त में कमलेश्वर ने मोहन राकेश एवं उपेन्द्रनाथ ‘अश्व’ के साथ कश्मीर में बिताए हुए कुछ दहशताना अनुभवों को प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर ने कश्मीर के जर्जर मनुष्य तथा वहाँ की वादी के जीवन को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है।

### संपादित पुस्तकें :-

#### गर्दिश के दिन :

कमलेश्वर द्वारा सम्पादित पुस्तकों में ‘गर्दिश के दिन’ महत्वपूर्ण है, जिसका प्रकाशन ‘सारिका’ पत्रिका के संपादन के समय किया था। उसी को सन् 1980 में पुस्तक का रूप दिया है। इसमें लेखक के तनाव सुख-दुख संत्रास तथा उसके

अनुभवों को प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में 12 भारतीय लेखकों मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, वासुदेव नायर, कृष्ण प्रसाद मिश्र, शिव प्रसाद सिंह, चंद्रकांत बक्षी, हरिशंकर परसाई, फिक्र तौंसवी, राही मासूम रज़ा तथा कमलेश्वर के आत्मकथ्य हैं।

#### ‘मेरा हमदम मेरा दोस्त’ :

सन् 1975 ई० में यह पुस्तक कमलेश्वर के संपादकत्व में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में दोस्तों के द्वारा दोस्तों पर लिखे गए संस्मरण हैं। मोहन राकेश ने राजेन्द्र यादव पर, राजेन्द्र यादव ने कमलेश्वर पर तथा कमलेश्वर ने मोहन राकेश पर संस्मरण लिखे हैं। इसी तरह भारती जी, मन्नू भण्डारी, लक्ष्मी नारायण लाल, राजेन्द्र सिंह बेदी, कृष्णचंद्र, इस्मत चुगताई तथा अमृता प्रीतम आदि ने आपस में एक दूसरे के संस्मरण लिखे हैं। इन संस्मरणों में उन साहित्यकारों के अंतरंग जीवन की पहचान उनके हमदम व दोस्तों ने व्यक्त की है।

#### ‘समांतर — 1’ :

इसका प्रथम संस्करण सन् 1972 ई० में प्रकाशित हुआ। इसमें ‘समांतर कहानी’ पर हुई चर्चा का विवरण ‘समांतर — 1’ के प्रारंभ में दिया है। जून, 1971 ई० को इस आंदोलन का आरंभ हुआ। इस पुस्तक का केन्द्र बिन्दु आम आदमी की समस्याओं से आज के लेखक की सम्बद्धता है। इसमें आशीष सिन्हा, जिते माटिया, कामतानाथ तथा मधुकर सिंह आदि लेखकों की कहानियाँ हैं जो आम आदमी की समस्याओं उनके सुख-दुख को प्रस्तुत करती हैं।

#### ‘पहली कहानी’:

इसका प्रथम संस्करण सन् 1985 ई० में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक में भारत की विभिन्न भाषाओं की ‘पहली कहानी’ को स्थान दिया गया है। ‘विवादास्पद होने के कारण एक से अधिक कहानियाँ भी छपी गई हैं। हिन्दी के अतिरिक्त डोगरी, पंजाबी, उर्दू तथा आसामी आदि भाषाओं की पहली कहानी को छापा गया है। इन प्रमुख भाषाओं के लेखकों के परिचय एवं विवेचना भी प्रस्तुत की गई है।

### ‘भारतीय शिखर कथा कोश’ :

यह कथाकोश 1990 से 30 खण्डों में प्रकाशित हुआ। इसमें कमलेश्वर ने संविधान सम्मत भारतीय भाषाओं तथा लोक सम्मत भाषाओं, उपभाषाओं गोंडी, हल्वी, डूगड़ी, चिंताली, निमाडी, खासी, जयंती लाखी आदि की आधुनिक, अद्वितीय और चर्चित कहानियों का अप्रतिम आयोजन किया है। कमलेश्वर भारतीय कहानी को भाषाई अवरोधों से ऊपर उठाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने भारतीय भाषाओं की कहानियों का अनुवाद प्रस्तुत करके भारतीय मानस को एकसूत्रता में पिरोने का कार्य किया है।

### ‘सिनेमा पटकथा लेखन’ :

कमलेश्वर का टेलीजगत में प्रसिद्धि का कारण कार्यक्रम ‘परिक्रमा’ है। लेकिन वह पहले ही टेलीविजन के लिए लगभग 250 पटकथा लिख चुके थे। सन् 1986 ई० में उन्होंने ‘दर्पण’ पटकथा लिखी जो विशेष रूप से दृश्य माध्यम के लिए लिखी गई। कमलेश्वर अपनी कृति ‘उसके बाद’ को सिने रचना कहते हैं। इसमें शब्दों के माध्यम से दृश्य क्षमता को उभारा गया है। कमलेश्वर ने लगभग 40 फिल्मों के लिए कहानी, पटकथा तथा संवाद लेखन किया। जिनमें कुछ चर्चित फिल्में इस प्रकार हैं— ‘आँधी’, ‘बदनाम गली’, ‘फिर भी’, ‘साजन बिना सुहागन’, ‘सौतन’ ‘मौसम’, ‘आनंद आश्रम’, ‘राम बलराम’, ‘डाक बंगला’, पति-पत्नी और वह’, ‘द बर्निंग ट्रेन’, ‘तुम्हारी कसम’, ‘अमानुष’ आदि।

### ‘संस्मरण’ :

#### (क) ‘आधार शिलाएँ’

जनवरी 1990 ई० से कमलेश्वर ने दिल्ली से प्रकाशित होने वाली ‘संडे मेल’ नामक साप्ताहिक पत्रिका में अपने अनुभवों को प्रकाशन के लिए दिया। कमलेश्वर के जीवन के यह संस्मरण लगभग 50 अंको में प्रकाशित हुए हैं। कमलेश्वर के जीवन के यह संस्मरण लगभग 50 अंको में प्रकाशित हुए हैं। वे अपने मैनपुरी, इलाहाबाद, दिल्ली तथा बंबई के अनुभवों को अपनी आधार शिलाएँ मानते हैं।

### (ख) 'अपनी निगाह में' (1982 ई0)

इस पुस्तक में कमलेश्वर ने अपनी निगाह से कुछ साहित्यकारों व मित्रों मोहन राकेश, फणीश्वर नाथ रेणु, रांगेय राघव, इन्द्र नाथ मदान, नागार्जुन, यशपाल तथा दीनानाथ नादिम आदि की यादों तथा उनके जीवन की अंतरंग झाँकियों को प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर ने स्वयं को भी अपनी निगाह से चित्रित किया है। इसमें दुष्यंत कुमार की निगाह में एक संस्मरण कमलेश्वर पर भी सम्मिलित किया गया है।

#### 'निबंध' :

कमलेश्वर ने दिल्ली आवास के समय राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली से सन् 1996 ई0 में दो सौ नए निबंधों का संग्रह प्रस्तुत किया। इसका समर्पण उन्होंने अपने अनाम सहयोगियों के नाम किया है। इस संग्रह के निबंधों के विविध विषय हैं जैसे — "हिन्दी के निर्माता साहित्यकार, 'साहित्यिक प्रसंग', 'संस्कृति और कला', राष्ट्रीय समस्याएँ', 'आर्थिक राजनीति शिक्षा', 'विज्ञान और खेलकूद' आदि के अतिरिक्त मुहावरे तथा टिप्पणी आदि का भी समावेश है।

#### कमलेश्वर के प्रमुख उपन्यास :—

कमलेश्वर ने अनेक उपन्यासों की रचना की। उनके उपन्यासों के संबंध में गोपाल राय अपनी पुस्तक हिन्दी उपन्यास का इतिहास में लिखते हैं—

"कमलेश्वर अपने उपन्यासों में अधिकतर मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को विषय के रूप में चुनते हैं।"<sup>23</sup>

उनके प्रमुख उपन्यासों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

#### 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' (1982 ई0) :

कमलेश्वर का यह उपन्यास राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। यह उनका प्रथम उपन्यास है, जो बदनाम गली नाम से प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास को आधार बनाकर 'बदनाम' शीर्षक से फिल्म बनी है। अमृतराय ने इसे सबसे पहले 'हंस' पत्रिका में छापा था। कमलेश्वर ने उपन्यास की पृष्ठभूमि में कस्बे

को रखा है। इसका विषय 'लीला-नौटंकी' करके जीविकोपार्जन करने वाले, समाज में बदनाम स्त्री-पुरुषों तथा उनसे जुड़े अपराध कर्मियों का जीवन यथार्थ प्रस्तुत करना है।

#### **'तीसरा आदमी' (1984 ई0) :**

यह उपन्यास राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित हुआ। कमलेश्वर ने इस उपन्यास में मध्यवर्गीय दम्पति के बीच में 'तीसरे आदमी' के प्रवेश की कहानी को लिया है। महानगरीय परिस्थितियों में आर्थिक दबाव के कारण 'तीसरे' आदमी के प्रवेश से पति-पत्नि के संबंधों में किस प्रकार दरारें पड़ने लगती हैं और पति ही किस प्रकार 'तीसरा आदमी' बन जाता है, इस कचोटने वाली स्थिति का अंकन कमलेश्वर ने किया है।

#### **'डाक बंगला' (1985 ई0) :**

यह उपन्यास राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का केन्द्र बिन्दु इरा नामक युवती है। उसके जीवन में कई पुरुष का आना जाना लगा रहता है लेकिन वह कभी भी किसी के साथ संतुष्ट नहीं हो पाती। उसका जीवन 'डाक बंगला' की भाँति अस्थिर प्रतीत होता है जैसे उस बंगले में मुसाफिर थोड़े समय के लिए आते हैं। कमलेश्वर ने इरा के माध्यम से नारी की मनोवैज्ञानिक स्थिति चित्रित की है। उपन्यास में रुमानियत उभरकर आई है।

#### **'समुंद्र में खोया हुआ आदमी' (1982 ई0) :**

राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित इस उपन्यास में मध्यवर्ग की आशा और आकांक्षाओं का चित्रण है। उपन्यास में परिवार के टूटते बिखरते संदर्भों तथा उनकी स्थिति का प्रभावशाली ढंग से चित्रण किया गया है। किस प्रकार मध्यवर्ग का आदमी आधुनिक सभ्यता की दौड़ में अपनी अर्थवत्ता खोता जा रहा है, उसका सफल चित्रण किया गया है।

### ‘लौटे हुए मुसाफिर’ (1982 ई0) :

यह उपन्यास ‘राजपाल एंड संस’ द्वारा प्रकाशित हुआ। कमलेश्वर ने यह उपन्यास एक बार फिर कस्बे को केन्द्र में रखकर लिखा है इस उपन्यास में उन लोगों की स्थिति को चित्रित किया गया है जो 1947 ई0 के विभाजन के समय अपने कस्बे से उखड़ गए थे न तो वह पाकिस्तान पहुँच पाते हैं और न ही वापस लौटकर उस कस्बे में आ पाते हैं। इस उपन्यास के संबंध में गोपाल राय लिखते हैं—

“इस उपन्यास में साम्प्रदायिक समस्या और पाकिस्तान के नाम पर छले गए मुसलमानों के मोहभंग तथा उनके वापस लौटने की विवशता को विषय बनाया गया है।”<sup>24</sup>

### ‘काली आँधी’ (1981 ई0) :

यह उपन्यास राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के आधार पर ‘आँधी’ नाम से फिल्म भी बनी थी। इसकी प्रेरणा उन्हें राजस्थान के दौरे पर चुनावों के समय महारानी गायत्री को देखकर मिली थी। उपन्यास में महत्वाकांक्षी स्त्री मालती की मनोवैज्ञानिक स्थिति को सूक्ष्मता से उभारा गया है। राजनीति में प्रवेश करने वाली मध्यवर्गीय भारतीय स्त्री के राजनीतिक और पारिवारिक दायित्वों के द्वन्द्व का चित्रण किया गया है। इसके साथ ही राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा रिश्वतखोरी का यथार्थवादी चित्रण भी किया गया है तथा देश की वर्तमान स्थिति का जायज़ा लिया गया है।

### ‘आगामी अतीत’ (2004 ई0) :

राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस उपन्यास का कथ्य भी लगभग ‘काली आँधी’ की तरह ही है। इसका मुख्य पात्र धन तथा महत्वाकांक्षा के लालच में पड़कर अपने आत्मीय संबंधों को कुर्बान कर देता है। महत्वाकांक्षा तथा समृद्धि के नशे में पड़कर उसको अपने संबंधों के टूटने की कीमत चुकानी पड़ती है। वह वापस लौटकर उस रास्ते पर नहीं आ पाता। अर्थात् जीवन में आगे बढ़ने के पश्चात् पीछे लौटना नामुमकिन है।

**‘वही बात’ (2006 ई0) :**

राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस उपन्यास में कमलेश्वर ने ‘आगामी अतीत’ की तरह एक महत्वाकांक्षी पुरुष प्रशान्त का चित्रण किया है। जो अपने भविष्य को संवारने की इच्छा में अपनी पत्नी समीरा से दूर हो जाता है और समीरा की जिंदगी में दूसरा आदमी नकुल आ जाता है। इसमें एक मध्यवर्गीय पत्नि के अपने व्यस्त इंजीनियर पति से ऊबकर अपने बॉस से संबंध बढ़ाने और फिर उससे भी ऊबकर पति की ओर लौटने की कहानी कही गयी है।

**‘सुबह.....दोपहर.....शाम’ (1982 ई0) :**

राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित इस उपन्यास में आज़ादी से पहले के भारत का चित्रण है। इस उपन्यास में भारतीय स्वाधीनता संग्राम में क्रान्तिकारी दल की भूमिका को विषय बनाया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारतीयों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लिया। इसका मूल कथ्य राष्ट्र प्रेम है। इसमें ग्राम्य संस्कृति व संस्कारों का बहुत सुन्दर ढंग से चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में बड़ी दादी, जसवंत की माँ ये तीनों महिलाएँ एक ओर परम्परा व संस्कारों से बँधी हैं तो दूसरी ओर देशभक्त हैं। इसका मुख्य स्वर स्वतन्त्रता पूर्व की पीढ़ी का आदर्शों के प्रति रुझान है।

**‘रेगिस्तान’ (1988 ई0) :**

राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित कमलेश्वर का यह एक अद्यतन उपन्यास है इस उपन्यास का मूल कथ्य स्वतन्त्रता के बाद भारत को कामयाबी की बुलंदी तक ले जाने का अधूरा सपना है जो कभी पूरा नहीं हो पाता। जो मूल्य स्वतंत्रता के पहले थे वह स्वतन्त्रता के बाद लुप्त हो गए। इस कमी ने उन भारतीयों के जीवन को रेगिस्तान बना दिया जो आदर्शों को लेकर चले थे।

**‘कितने पाकिस्तान’ (2000 ई0) :**

राजपाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित इस उपन्यास को कमलेश्वर ने भारत तथा पाकिस्तान के विभाजन की त्रासदी को आधार बनाकर लिखा है। उपन्यास का

अनूठापन इस बात में है कि भारत विभाजन को आधार बनाकर लिखे गए अब तक के उपन्यासों से बिल्कुल भिन्न है। 'पाकिस्तान' शब्द इस उपन्यास में अलगाववाद का प्रतीकात्मक अर्थ रखता है। कथ्य और कला दोनों की दृष्टि से उपन्यास परम्परागत उपन्यास रचना से अलग है।

'कितने पाकिस्तान' की पृष्ठभूमि में लगभग पाँच हजार वर्ष के समय को लिया गया है यह उपन्यास हड़प्पा-मोहन जोदड़ो, दजला-फरात, बेबीलोन, मेसोपोटामिया, डैन्यूब, हित्ती सभ्यता का गिलगमेश, प्राचीन सुमेरी तथा चीनी सभ्यताओं से लेकर मुगल सल्तनत, भारत विभाजन, बाबरी मस्जिद विध्वंस आदि को समेटे हुए है। इस उपन्यास में कोई एक कथा नहीं है और न ही समय, देश काल की कोई सीमा है इसका मुख्य पात्र अदीब स्वयं लेखक है।

कमलेश्वर का व्यक्तित्व एक खुली किताब की तरह था, जिसकी लिखावट न केवल सुशोभित व सुन्दर है वरन् आकर्षित, गम्भीर, संतुलित और दूरदर्शी भी। उन्होंने बहुत ही उच्च कोटि का साहित्य प्रस्तुत किया है, जो एक गम्भीर व्यक्तित्व के द्वारा ही प्रस्तुत किया जा सकता है। कमलेश्वर की रचनाधर्मिता उनके जीवनवृत्त, व्यक्तित्व एवं परिवेश से जुड़ी हुई है। उनका जीवन कठिन एवं संघर्षपूर्ण रहा है। उन्होंने अपने परिवार, परिवेश एवं परिस्थितियों से लेखन की प्रेरणा प्राप्त की। अतः उनके लेखन की एक अन्यतम उपलब्धि उनकी अनुभूति की अभिव्यंजना है। उनका रचना-संसार अनुभूति की प्रामाणिकता से व्यंजित हुआ है।

कमलेश्वर सामाजिक आस्थाओं के लेखक हैं। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से अपने समय के परिवेश को पूर्ण प्रामाणिकता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनका साहित्य जीवन के आघात-प्रत्याघातों, आर्थिक-वैषम्य तथा टूटन-सिकुड़न का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

### (ग) कुर्रतुल ऐन हैदर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

कुर्रतुलऐन हैदर का जन्म ज़िला बिजनौर की एक छोटी सी बस्ती नहतौर के सम्पन्न परिवार में हुआ। उन्होंने भारतीय संस्कृति का न केवल अध्ययन किया



बल्कि उसे करीब से देखा, समझा और परखा तथा उसे अपनी कृतियों में प्रस्तुत किया।

कुर्रतुलऐन हैदर के पिता सज्जाद हैदर यल्दरम (1880–1943 ई०) एक अच्छे और सफल लेखक थे। उर्दू साहित्य में संक्षिप्त कहानी और रोमांटिसिज़्म को आरंभ करने का श्रेय सज्जाद हैदर को ही जाता है। उनका विवाह प्रसिद्ध कहानी लेखिका 'नज़रुल बाकर से सन् 1912 ई० में हुआ। जिनका असली नाम नज़र ज़ेहरा बेगम (1892–1967 ई०) था। विवाह से पहले सन् 1910 ई० में उनका पहला उपन्यास 'अख्तरुन्निसा बेगम' तथा 1918 ई० में उनका दूसरा उपन्यास 'आह मज़लूम माँ' प्रकाशित हुआ। इस प्रकार कुर्रतुलऐन हैदर को साहित्यिक वातावरण बचपन से ही मिला।

कुर्रतुलऐन हैदर जब थोड़ी बड़ी हुई तो उनके माता पिता, भाई तथा परिवार के अन्य लोग उन्हें 'बीबी, ऐनी बीबी', या बिटिया' कहने लगे। आज भी वह साहित्य जगत में 'ऐनी' के नाम से जानी जाती है। पिता की नौकरी के कारण वह अपनी प्रारम्भिक शिक्षा किसी स्कूल में औपचारिक रूप से नहीं पा सकीं। उन्होंने कभी देहरादून कभी अलीगढ़, कभी लखनऊ तथा कभी लाहौर के विभिन्न स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की। फिर उसके बाद वापस देहरादून आयीं। यहीं से प्राइवेट मैट्रिक पास किया उसके बाद लखनऊ के एक कॉलेज से इंटर पास किया। 1945 ई० में दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ कॉलेज से अँग्रेजी साहित्य में बी०ए० किया तथा 1947 ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय से अँग्रेजी साहित्य में एम०ए० किया।

बचपन से ही कला का शौक होने के कारण उन्होंने लखनऊ के गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट की सांय कालीन कक्षा में प्रवेश ले लिया। इसके पश्चात् हैडवेलज स्कूल ऑफ लंदन से कला की उच्च शिक्षा प्राप्त की। इसके अतिरिक्त हिन्दुस्तानी क्लासिकल संगीत और पश्चिमी संगीत की औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त की।

1952 ई० में कैंब्रिज विश्वविद्यालय के एक समर स्कूल में नवीन अंग्रेजी साहित्य का संक्षिप्त कोर्स किया। जिसमें इंग्लिस्तान के बड़े-बड़े विद्वान लेखक और कवि आकर लेक्चर देते थे। उनमें ई० एम० फार्स्टर भी सम्मिलित थे।

माँ की बीमारी के कारण कुर्तुल ऐन हैदर जून 1947 ई0 में बुलंदशहर से देहरादून चली गई। अगस्त के महीने में शहर की स्थिति खराब होने के कारण वह यहाँ से अपनी माँ के साथ लखनऊ चली गई। इसी समय लखनऊ में कुर्तुलऐन हैदर ने शरणार्थियों के लिए चन्दा इकट्ठा किया।

दिसम्बर, 1947 ई0 में कुर्तुलऐन हैदर अपनी माँ, भाई और अपने परिवार के साथ दिल्ली से पाकिस्तान चली गई। वहीं पर सन् 1951 ई0 में सूचना विभाग व फिल्म में इन्फार्मेशन ऑफिसर के पद पर अस्थाई रूप से कार्य किया। कुछ माह बाद वह यहाँ से वेतन लिए बगैर लंदन चली गई और इसी पद पर वह लंदन में कार्यरत हो गई। उसके पश्चात् 'डेली टेलीग्राफ लंदन' तथा 'बी० बी० सी० लंदन' के उर्दू सेक्शन में कुछ दिनों काम किया। फिर पाकिस्तान वापस आकर 'पी० आई० ए० करांची' में इन्फार्मेशन के पद पर कार्यरत हो गई। सन् 1960 ई0 तक पाकिस्तान में वह विभिन्न पदों पर कार्यरत रहीं। सन् 1959 ई0 में उन्हें अपने उपन्यास "आग का दरिया" के प्रकाशित होने पर सन् 1961 ई0 में हिन्दुस्तान आना पड़ा। पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने उन्हें भारत की नागरिकता वापस दिलवाई। कुर्तुलऐन हैदर बंबई में 'मार्केटिंग एण्ड एडवर्टाइजिंग एसोसिएट्स' में कॉपी राइटर के रूप में कार्यरत रहीं। वह अम्परनट (पत्र) बंबई में सन् 1964 ई0 से 1968 ई0 तक मैनेजिंग एडिटर रहीं। इसके बाद सन् 1969 तक यहीं पर संपादक के रूप में कार्य किया।

सन् 1969 ई0 से 1972 ई0 तक कुर्तुलऐन हैदर 'इलेस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इण्डिया' के एडिटोरियल स्टाफ में तथा फिल्म सेक्शन की एडिटर रहीं। इसके पश्चात् एक वर्ष तक 'सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सेंसर' में अध्यक्ष की सलाहकार के रूप में कार्यरत रहीं। इसके बाद बंबई से दिल्ली चली गई।

सन् 1979 में, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली में कुर्तुलऐन हैदर विजीटिंग प्रोफेसर रहीं। इसके पश्चात् 1981-1982 ई0 तक अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में विजीटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्यरत रहीं। इसके पश्चात् अमरीका के कई विश्वविद्यालयों में विजीटिंग लेक्चरर के रूप में समय-समय पर कार्य किया।

बी० सी० सी० आई० बैंक जो लेखकों, पत्रकारों, कलाकारों तथा शिक्षा विशेषज्ञों आदि सभी को आर्थिक सहायता प्रदान करता था। सन् 1984-91 तक कुर्रतुलऐन हैदर इसकी जनरल सेक्रेटरी रहीं।

सन् 1951 ई० से सन् 1991 ई० तक कुर्रतुलऐन हैदर विभिन्न पदों पर कार्यरत रहीं। इसके साथ-साथ वह लेखन कार्य भी करती रहीं। इसी बीच उनके कई कहानी संग्रह, उपन्यास, रिपोर्टाज, नॉवलेट तथा लेख प्रकाशित होते रहे। कुर्रतुल ऐन हैदर जीवन के विभिन्न पड़ावों को पार करती हुई 20 और 21 अगस्त, 2007 की रात में इस संसार को छोड़कर चली गई।

उनका जन्म एक जागीरदार परिवार में हुआ था। देहरादून में उनकी 'आशियाना' नाम की कोठी थी। उनका पालन पोषण वैभवशाली ढंग से हुआ। उनकी सम्पन्नता उनके रहन-सहन और तौर-तरीकों से साफ झलकती थी। मुजीब अहमद खान अपने लेख 'एक अहद साज़ शख्सियत कुर्रतुल ऐन हैदर में लिखते हैं—

‘उनके पात्रों में भी अमीराना शानो शौकत झलकती है और इसीलिए उनके पात्र इतिहास और दर्शन की बात करते हैं।’<sup>25</sup>

वह उन लोगों को भी बिल्कुल पसंद नहीं करती थी जो अपने आपको किसी काम के लिए असमर्थ मानते हैं। उनके विचार के संबंध में मुजीब खान लिखते हैं —

‘‘उनका विचार है कि इंसान हर काम कर सकता है अगर हिम्मत से काम ले। वह प्रत्येक नवयुवक में यह विशेषताएँ देखना चाहती थीं क्योंकि उसी में हमारी सफलता के राज छुपे हुए हैं।’<sup>26</sup>

कुर्रतुल ऐन हैदर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह सभी जाति और धर्म के लोगों को एक ही दृष्टि से देखती थी। इस विशेषता को उजागर करते हुए मुजीब अहमद खान लिखते हैं —

‘‘कुर्रतुल ऐन हैदर की एक बड़ी खूबी यह है कि वह इंसानों में फर्क नहीं करती है। वह हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, अमीर-गरीब सब का अदब और एहताराम करती हैं।’<sup>27</sup>

## कुर्रतुल ऐन हैदर को प्राप्त होने वाले सम्मान और पुरस्कार :-

उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए हिन्दुस्तान के विभिन्न बड़े-बड़े सम्मान और पुरस्कारों से समय-समय पर सम्मानित किया जाता रहा है। जिसका विवरण निम्नलिखित है—

- सन् 1967 ई0 में कुर्रतुलऐन हैदर को उनके कहानी संग्रह 'पतझड़ की आवाज़' के लिए साहित्य एकेडमी पुरस्कार दिया गया।
- सन् 1969 ई0 में कुर्रतुल ऐन को उनके उपन्यासों के अंग्रेजी अनुवाद का उर्दू में अनुवाद करने के लिए 'सोवियत लैण्ड नेहरू' पुरस्कार प्रदान किया गया।
- सन् 1981 ई0 में उन्हें प्रोफ़ेसर शाहिदी एवार्ड, पश्चिमी बंगाल उर्दू अकादमी द्वारा प्रदान किया गया।
- सन् 1982 ई0 में कुर्रतुल ऐन हैदर को उनकी साहित्यिक सेवा के लिए ग़ालिब इंस्टीट्यूट ने 'ग़ालिब पुरस्कार' प्रदान किया।
- सन् 1982 ई0 'उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी एवार्ड' उनके उपन्यास 'आख़िर शब के हम सफ़र' के लिए उन्हें प्रदान किया गया।
- सन् 1984 ई0 में कुर्रतुल ऐन हैदर को गणतन्त्र दिवस पर "पद्मश्री" पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- सन् 1985 ई0 में उनके कथा साहित्य के लिए 'मख़दूम साहित्यिक पुरस्कार' उर्दू एकेडमी, आंध्र प्रदेश की ओर से प्रदान किया गया।
- सन् 1989 ई0 में उन्हें मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय पुरस्कार 'इक़बाल सम्मान' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- सन् 1990 ई0 में उन्हें भारत का सबसे बड़ा साहित्यिक एवार्ड 'ज्ञान पीठ एवार्ड' प्रदान किया गया।
- सन् 1994 ई0 में उन्हें 'फ़ेलो ऑफ़ साहित्य एकेडमी' पुरस्कार दिया गया।
- सन् 1997 ई0 में उन्हें 'आलमी फ़रोग उर्दू अदब एवार्ड' दिया गया।

- सन् 2001 ई० में कुर्रतुल ऐन हैदर को उर्दू अकेडमी दिल्ली का वार्षिक 'कुल हिन्दी बहादुर शाह ज़फ़र एवॉर्ड' प्रदान किया गया।
- सन् 2005 ई० में कुर्रतुल ऐन हैदर को साहित्य और शिक्षा के लिए भारत का सबसे बड़ा पुरस्कार 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया।

### कुर्रतुलऐन हैदर का कृतित्व :-

उर्दू साहित्य में कुर्रतुलऐन ने जो स्थान प्राप्त किया है वह सामान्य बात नहीं है। वह क्लासिकल संस्कृति की एक स्कूल थीं। उन्होंने पश्चिमी संस्कृति के साथ-साथ पूर्वी मूल्यों को भी जोड़े रखा। इसलिए उनकी रचनाओं में पश्चिमी व पूर्वी संस्कृतियों का मेल दिखाई देता है। वह अपने स्वभाव और विचार से बिल्कुल आधुनिक थी। लेकिन अपनी संस्कृति और विरासत को कभी खोना नहीं चाहती थीं।

कुर्रतुलऐन की कहानी 'चॉकलेट का किला' 1939 ई० 'बनात लाहौर' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई। 1939 ई० 'फूल' (बच्चों के अखबार, लाहौर) में 'बी चुहिया की कहानी' भी प्रकाशित हुई। उनकी प्रारम्भिक कहानियों में अंग्रेजी शब्दावली का बाहुल्य है। सन् 1934 ई० तक बच्चों की पत्रिकाओं में उनकी कहानियाँ प्रकाशित होती रहीं।

कुर्रतुलऐन हैदर का पहला अफ़साना 'एक शाम', जिसे वह व्यंग्यात्मक स्फ़ुट कहती हैं नवम्बर, 1943 ई० 'अदीब' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। उसमें लेखिका के रूप में उनका नाम 'लालह-रूख' से प्रकाशित हुआ था। इसके बाद सन् 1944 ई० में लाहौर की प्रसिद्ध पत्रिका 'हुमायूँ' में उनकी कहानी 'यह बातें' बिनते सय्यद सज्जाद हैदर यल्दरम के नाम से प्रकाशित हुई। जून, 1944 ई० के 'अदबी' में उनका अफ़साना 'इरादे' कुर्रतुलऐन के नाम से प्रकाशित हुआ। इस पर उन्हें बीस रुपये का पुरस्कार मिला।

कुर्रतुलऐन हैदर को बड़ों की पत्रिकाओं में लिखने की प्रेरणा किससे मिली। इसका ज़िक्र वह "कारे जहाँ दराज़ है" में इस प्रकार करती हैं—

"एक दिन हकीम युसूफ़ हसन (संपादक — नैरंगेख़्याल) लाहौर से आए। अम्मा से कहा नैरंगे ख़्याल की स्थिति बहुत ख़राब हो चुकी

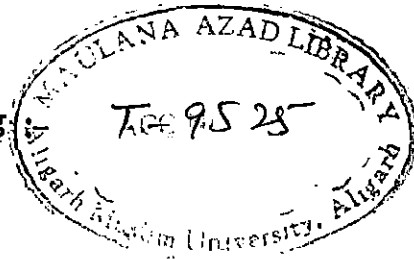
है। इस प्रयास में हूँ कि फिर उसी जोश और उत्साह के साथ निकले, मुझे सम्बोधित किया अब कलम आप के हाथ में आया है। नैरंगे ख्याल में लिखना शुरू कीजिए। मैंने निहायत इतमिनान और आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया बहुत अच्छा जरूर लिखेंगे।”<sup>28</sup>

हकीम यूसुफ़ हसन के कहने पर कुर्रतुलऐन ने कथा साहित्य में कदम रखा। लेकिन उनकी कोई भी कहानी नैरंगे ख्याल में प्रकाशित नहीं हो पाई।

कुर्रतुलऐन हैदर की परवरिश अंग्रेजी युग में हुई। इसलिए उनके रहन-सहन और सोच-विचार पर अंग्रेजी युग और हिन्दुस्तानी समाज के मूल्यों का बहुत प्रभाव पड़ा। उस समाज की संस्कृति का जीता जागता चित्र कुर्रतुलऐन की रचनाओं में मिलता है। कुर्रतुलऐन हैदर ज़मींदार परिवार में पैदा हुई। उन्हें गरीबी का अनुभव नहीं था। मगर उसका अहसास था। उनके यहाँ आम जीवन के बजाय खास जीवन दिखाई देता है। कुर्रतुलऐन हैदर के कथा साहित्य का कैन्वास बहुत विस्तृत है। उन्हें भाषा पर पूर्ण अधिकार था। उनकी रचनाओं में यथार्थवादिता पर बल दिया गया है।

कुर्रतुलऐन हैदर के प्रमुख कहानी संग्रह:

‘सितारों से आगे’ (1947 ई०)



यह कुर्रतुलऐन हैदर का पहला कहानी संग्रह है। इससे पहले इनकी इक्कीस कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी थी, लेकिन इसमें ‘सितारों से आगे’ देवदार के दरख्त’, ‘सुना है आलमें बाला में कोई कीम्यागर था’, ‘लेकिन गोमती बहती रही’, ‘हम लोग’, ‘रक्स शरर’, ‘अवध की शाम’, ‘मोना लीसा’, ‘जहाँ कारवाँ ठहरा था’ आदि शीर्षक से चौदह कहानियाँ सम्मिलित हैं।

इस कहानी संग्रह में कुर्रतुलऐन की प्रारम्भिक कहानियाँ हैं, लेकिन उनकी भाषा, शैली, ढंग आधुनिक अफ़साने से मिलती जुलती है। यह खातून किताब घर दिल्ली से प्रकाशित हुआ।

‘शीशे के घर’ (1954 ई०)

इस कहानी संग्रह में बारह कहानियाँ शामिल हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं— ‘जब तूफ़ान गुज़र चुका’, ‘सर राहे’, ‘आसमान भी है सितम एजाद क्या’, ‘मैंने लाखों

के बोल सहे', 'बर्फ़बारी से पहले', 'कैक्टस लैण्ड', 'यह दाग-दाग उजाला', जहाँ फल खेलते हैं, 'दजला बदजला यम ब यम', 'अन्त मएरुत बसंत मेरो', लंदन लेटर तथा 'जिला वतन'। इनकी कहानियों में जवानी है, परस्पर टकराव है संघर्ष है, इतिहास है और नए युग की जटिल दुनिया है। यह कहानी संग्रह 'मक्तबा जदीद' लाहौर से प्रकाशित हुआ।

### 'पतझड़ की आवाज़' (1966 ई0)

इस कहानी संग्रह में आठ कहानियाँ शामिल हैं—'डालन वाला', 'जिला वतन', 'याद की एक धनक जले', 'कलन्दर', 'कारमन', 'एक मुकालमा', 'पतझड़ की आवाज़' तथा 'हाउसिंग सोसाइटी'।

'जिला वतन' अफ़साना 'शीशे के घर' में भी शामिल है। इसमें हिन्दुस्तान के बँटवारे के अव्यवस्थित युग में सांस ले रही मानसिकता का वर्णन किया गया है।

'पतझड़ की आवाज़' में देश के बँटवारे के समय की दिल्ली का चित्रण इस प्रकार किया है कि उस समय का पूरा चित्र सामने आ जाता है। इन सभी कहानियों में व्यंग्य का आभास होता है।

### 'रोशनी की रफ़्तार' (1982 ई0)

इस संग्रह में अट्ठारह कहानियाँ सम्मिलित हैं जिनके शीर्षक इस प्रकार हैं — 'आवारहगर्द', 'मल्फूज़ात हाजी गुल बाबा बेकताशी', 'फ़ोटो ग्राफ़र', 'हस्बनस्ब', 'सेक्रेटरी', 'नज़ारह दरम्यान है', 'दो स्याह', 'यह गाज़ी यह तेरे पुरअसरार बन्दे', 'फ़कीरों की पहाड़ी', 'अक्सर इस तरह से भी रक्स फ़ुगा होता है', 'सफ़लोरा ऑफ़ जॉर्जिया के एतराफ़ात', 'रोशनी की रफ़्तार', 'लकड़बध्दे की हँसी', 'आईना फ़रोश शहर कोराँ', 'पाली हिल की एक रात', 'दर्श गिर्द सवारे बाशिद', 'जिन बोलो तारा-तारा' तथा 'कोहरे के पीछे'।

हिन्दुस्तान में इसे 'एजुकेशनल बुक हाउस अलीगढ़' से प्रकाशित किया गया है और पाकिस्तान में 'फ्रैंड्स पब्लिशर' ने कराँची से प्रकाशित किया।

## कुर्रतुलऐन हैदर के नॉवलेट :-

कुर्रतुल ऐन हैदर ने पाँच नॉवलेट 'सीताहरन', 'चाय के बाग', 'हाउसिंग सोसाइटी', 'अगले जन्म मोहे बिटिया न कीजो' तथा 'दिलरूबा' की रचना की। जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

### 'सीता हरन' (1960 ई०)

यह 275 पृष्ठों का विस्तृत अफ़साना या नॉवलेट है। इसको पुस्तक के रूप में 'मक्तबा उर्दू अदब लाहौर' ने प्रकाशित किया। इसमें श्रीलंका की धरती और वातावरण का चित्रण किया गया है। हिन्दुस्तान के इतिहास की विस्तृत पृष्ठभूमि को कुर्रतुल ऐन हैदर ने बहुत ही संक्षिप्त और सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है।

### 'चाय के बाग' (1964 ई०)

यह नॉवलेट 135 पृष्ठों पर लिखा हुआ है जिसे कुछ लेखकों ने उपन्यास भी कहा है। इसे पाकिस्तान में 'मंजूर प्रेस लाहौर' और भारत में 'हलक़ए अदब' से सरदार जाफ़री ने प्रकाशित किया है। इसमें पुराने और आधुनिक समाज का चित्र खींचा गया है तथा पुरानी संस्कृति को सराहा गया है और नए समाज पर पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव तथा उसके परिणाम का वर्णन किया गया है।

### 'हाउसिंग सोसाइटी' (1966 ई०)

यह नॉवलेट 'पतझड़ की आवाज़' कहानी संग्रह में सम्मिलित है। इसमें बँटवारा, प्रवास और उस युग की समस्याओं तथा राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों का चित्रण बहुत सुन्दर ढंग से किया गया है।

### 'अगले जन्म मोहे बिटिया न कीजो' (1977 ई०)

चार नॉवलेट 'सीता हरन', 'चाय के बाग', 'अगले जन्म मोहे बिटिया न कीजो' तथा 'दिलरूबा' पर आधारित यह संग्रह 'एजुकेशनल बुक हाउस अलीगढ़' से प्रकाशित किया गया।

इन सभी नॉवलेट में नारी के शोषण तथा उस पर लगातार हो रहे अत्याचार को दिखाया गया है। अबुल कलाम कासमी के अनुसार—



“औरत चाहे सीता हरन की मीर चंदानी हो, चाहें चाय के बाग की सनोवर और राहत का शानी हो, अगले जन्म मोहे बिटिया न कीजो की ‘रश्क कमर हो या दिल रुबा की गुलनार हो सब की सब किस्मत और अपने हालात के हाथों बेदस्त पा होकर एक से दूसरे हाथ में पहुँचती रही हैं।”<sup>29</sup>

### ‘दिलरूबा’ (1976 ई0)

यह नॉवलेट लगभग 61 पृष्ठों पर लिख हुआ है। इसमें नौटंकी की नायिकाओं, उनसे संबंधित लोग, युवावस्था में बिगड़े हुए लखनऊ के एक नवाब जादे और उनके मामूँ जो खुद भी नवाब हैं, उनकी कहानी का चित्रण किया गया है।

### कुर्तुल ऐन हैदर के प्रमुख उपन्यास :—

#### ‘मेरे भी सनम खाने’ (1949 ई0)

यह उपन्यास तीन अध्यायों पर आधारित है पहला — “चली जाए मोरी नय्या किनारे, दूसरा— धँसे हुए नॉवेल तथा तीसरा— मज़िल लैला। इसमें कुर्तुल ऐन हैदर ने हिन्दुस्तान का बँटवारा फिर पाकिस्तान में निवास, हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता जागीरदारों और ज़मींदारों का पतन, भारत और उसकी सदियों पुरानी सामासिक संस्कृति के ढाँचे को बहुत ईमानदारी से प्रस्तुत किया गया है।

#### ‘सफ़ीन—ए—ग़मे दिल’ (1952 ई0)

इस उपन्यास को मक्तबा जदीद लाहौर ने प्रकाशित किया। यह उपन्यास तीन भागों में बँटा हुआ है। इसमें हिन्दुस्तान का बँटवारा, साम्प्रदायिक दंगे, स्वतन्त्रता और उसके प्रभाव की जाँच पड़ताल की गयी है। कुर्तुलऐन हैदर ने एक समन्वित व्यवस्था तथा मिली—जुली संस्कृति की मदद से एक नए सांस्कृतिक वातावरण की खोज करने का प्रयास किया है। जो मज़बूत, दृढ़ समाज के निर्माण में सहायक साबित हो सकता है।

#### ‘आग का दरिया’ (1959 ई0)

हिन्दुस्तान के विभाजन से कुर्तुलऐन हैदर बहुत दुखी थीं। इसी के परिणाम स्वरूप ‘आग का दरिया’ अस्तित्व में आया। कुर्तुलऐन ने इसे चार भागों में बाँटा है

— प्राचीन भारत, मध्यकाल, अंग्रेजों का युग तथा नया युग (जो विभाजन से पहले और, और बाद के युग पर आधारित है)।

‘आग का दरिया’ का कैनवास बहुत विस्तृत है। इसमें हिन्दुस्तान की ढाई हजार साल पुरानी संस्कृति, इतिहास और दर्शन को एक ही स्थान पर समेटने की सफल कोशिश की गयी है।

### ‘आखिर शब के हमसफ़र’ (1979 ई0)

इस उपन्यास को ‘चौधरी अकेडमी लाहौर’ ने प्रकाशित किया था। इसके कुछ भाग ‘गुप्तगु’ पत्रिका में प्रकाशित हो चुके हैं। इसमें बंगाल की फ़िज़ा, वातावरण और ज़मीन प्रस्तुत की गई है। 1942 ई0 का आंदोलन बंगाल की दहशत पसंद एवं क्रान्तिकारी आंदोलन और हिंदुस्तान के बँटवारे को पृष्ठभूमि में रखा गया है।

### ‘कारे जहाँ दराज़ है’ (1977-79 ई0)

इसके दो भाग हैं। मक्तबा उर्दू अदब लाहौर ने 1977 में प्रथम भाग तथा 1979 ई0 में द्वितीय भाग प्रकाशित किया। यह एक जीवनी परक उपन्यास है। इसमें कुर्रतुल ऐन हैदर ने अपने परिवार, पिता सज्जाद हैदर मल्दरम, रिश्तेदार दोस्त और स्वयं अपना ज़िक्र विस्तृत रूप में किया है।

### ‘गर्दिशे रंगे चमन’ (1988 ई0)

इसको ‘मक्तबा दानियाल करँची’ ने प्रकाशित किया था। यह ‘आग का दरिया’ की तुलना में संक्षिप्त उपन्यास है। इसका प्लॉट विस्तृत कैनवास पर फैला हुआ है। इसमें 1857 ई0 के युग से लेकर वर्तमान युग तक को लिया गया है। इस उपन्यास में औरत की नृशंसिता को दिखाया गया है।

### ‘चाँदनी बेगम’ (1990 ई0)

इसको ‘एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली’ ने प्रकाशित किया था। इसका विषय ‘गर्दिशे रंगे चमन’ से कुछ मिलता जुलता है, लेकिन यहाँ पर उन पात्रों के जीवन को प्रस्तुत किया गया है। जो समय की मेहरबानियों से सम्पन्न हो गए हैं।

इस उपन्यास में कुर्तुलऐन ने उच्च वर्ग के लोगों के खोखलेपन का बहुत ईमानदारी से चित्रण किया है।

### कुर्तुल हैदर के प्रमुख रिपोर्टाज –

कुर्तुल ऐन हैदर को पत्रकारिता का भी शौक रहा है जो रिपोर्टाज के बहुत निकट है। उन्होंने बहुत अच्छे और सुंदर रिपोर्टाज लिखे हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है –

1. 'पदमान्दी किनारे', 1960 ई0 में 'अफ़कार' में प्रकाशित हुआ। यह उनके ढाका की यात्रा और गिल्ड की मनाई जाने वाली साल गिराह पर आधारित है।
2. 'सितम्बर का चाँद' इसको पुस्तक के रूप में सन् 1977 ई0 में 'नसीम बुक डिपो' पाकिस्तान ने प्रकाशित किया था। इसमें कुर्तुलऐन हैदर ने जापान में आयोजित लेखकों की अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का वर्णन बहुत आकर्षक ढंग से किया है।
3. 'कोह दमावन्द' इसको 'आजकल' दिल्ली ने मार्च, 1978 ई0 में प्रकाशित किया था। ईरान के बादशाह की 'जश्ने ताज बन्दी' में शामिल होने के लिए कुर्तुलऐन हैदर ईरान गई थीं। यह उसी यात्रा से सम्बन्धित है।
4. 'दकिन सा नहीं ठौर संसार में' इसे 1982 ई0 में पत्रिका 'अफ़कार' ने प्रकाशित किया था। इसमें हैदराबाद की यात्रा का विस्तृत वर्णन है।

इसके अतिरिक्त कुर्तुलऐन हैदर ने 'लंदन लैटर' (1954 ई0, शीशे के घर' में प्रकाशित), 'छठे असीर तो बदला हुआ ज़माना था' (अप्रैल-जून, 1966 ई0, नकूश लाहौर), 'दर चमन हर वर्कई दफ़तर हाल दीगरस्त' (नवम्बर, 1968 ई0, नकूश अफ़साना नम्बर), 'कैद ख़ाने में तलातुम है कि हिन्द आती है' (1983 ई0, अदब लतीफ़, लाहौर), 'गुलग़श्त', 'जहाने दीगर' तथा 'ख़िज़्र सोचता है बोलर के किनारे (मक्तबा उर्दू अदब, लाहौर)

'पदमांदी किनारे' को छोड़कर बाकी सभी रिपोर्टाज 'कोह दमावन्द' 2000 (छः रिपोर्टाज) और 'सितम्बर का चाँद' 2002 (चार रिपोर्टाज) एजुकेशनलन पब्लिशिंग हाउस दिल्ली ने प्रकाशित किए थे।

## कुर्रतुलऐन हैदर के रेखा चित्र तथा लेख :-

‘अँधेरी रात का मुसाफिर’, यह जून, 1956 ई० के ‘अफ़कार’ के “मजाज़ विशेषांक” में प्रकाशित हुआ। यह लेख असरार-उल-हक़ मजाज़ के बारे में लिखा गया है।

‘सिद्दीक़ अहमद सिद्दीकी’ यह एक शख़्सी रेखाचित्र है।

‘देख कबीरा रोया’ यह सआदत हसन मंटो के व्यक्तित्व पर लिखा हुआ एक लेख है।

‘नून मीम राशिद शख़्सियत’ इसमें नून-मीम राशिद के व्यक्तित्व की विशेषताओं को चित्रित किया गया है।

‘चंद बाते’ इसमें जाँ निसार अख़्तर की रचनाओं के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बातों को लिखा है।

‘कुछ अज़ीज़ अहमद के बारे में’ इसमें कुर्रतुलऐन हैदर ने हल्का सा रेखाचित्र खींच कर हास्य व्यंग्य शैली में एक विस्तृत लेख लिखा है।

‘सरोदे शबाना’ यह ‘फ़न और शख़्सियत’ के ‘फ़ैज़ हम फ़ैज़ विशेषांक’ के लिए लिखा गया रेखा चित्र है।

‘फ़ूट नोट’ यह ‘नक़ूश आप बीती विशेषांक’ के लिए लिखा गया आत्म कथात्मक लेख है।

इसके अतिरिक्त उनके अन्य लेख ‘अफ़साना’, ‘आज़ादी की छाँव में’ तथा ‘मुसन्निफ़ के मसाइल’ भी उल्लेखनीय हैं।

## संपादित पुस्तकें :

1. ‘दामाने बाग़बाँ’ (पत्रों का संग्रह) यह 2003 ई० में एज़ूकेशनल पब्लिशिंग हाउस से प्रकाशित किया गया।
2. ‘कफ़े गुल फ़रोश’ (प्रथम-काले और सफ़ेद चित्र, द्वितीय – रंगीन चित्र) इसे 2004 ई० में उर्दू अकादमी दिल्ली, ने प्रकाशित किया।

3. 'हवाए चमन में खीमएगुल' (नज़र सज्जाद हैदर का पद्य संकलन) इसे 2004 ई0 में एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, ने प्रकाशित किया।
4. 'उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ हिज़ लाइफ़ एण्ड म्यूज़िक' (अंग्रेजी में) इसे मालती जीलानी तथा कुर्रतुल ऐन हैदर ने मिलकर संपादित किया 2003 ई0 में इसको 'हर आनंद पब्लिकेशन्स, दिल्ली से प्रकाशित किया गया।

### अनुवाद (अंग्रेजी व अन्य भाषाओं से उर्दू में) :-

1. 'एल्स एन वडरलैण्ड' यह पत्रिका 'फूल' लाहौर से 1939 ई0 में प्रकाशित हुआ।
2. 'हमी' चिराग़ हमी परवाने' (Portrait of Lady) यह 1958 ई0 में प्रकाशित हुआ।
3. 'नॉव' यह सय्यद वलीउल्लाह की बंगाली कहानी का अनुवाद है। जो नवम्बर, 1958 ई0 में 'माहे नौ करोंची' से प्रकाशित हुआ।
4. 'तीन जापानी खेल' यह जून, 1960 ई0 में 'नकूश' लाहौर से प्रकाशित हुआ।
5. 'रात की बात' यह ऑस्ट्रेलिया की कहानी का अनुवाद है। जो अगस्त, सितम्बर, 1960 ई0 में 'हम क़लम' करोंची से प्रकाशित की गई।
6. 'जिन हसन बिन अब्दुर्रहमान' यह दो भागों में प्रथम और द्वितीय अक्टूबर, 1962 ई0 'मक्तबा ज़ामिया' दिल्ली से प्रकाशित हुई।
7. 'ऐल्फ़स के गीत' यह 1969 ई0 में 'मक्तबा ज़ामिया दिल्ली' से प्रकाशित हुई।

इसके अतिरिक्त कुर्रतुलऐन हैदर ने 'आदमी का मुकद्दर' (The Fate of Man), 'कलीसा में क़त्ल' (Murder in the Cathedral), 'तलाश' (Break Fast at Tiffany), तथा 'दि स्टोरी ऑफ़ एपिक कारपेट' नाम से अनुवाद किए।

### उर्दू से अंग्रेजी में अनुवाद

1. 'ग़ालिब एण्ड हिज़ पोइट्री' यह अली सरदार जाफ़री तथा कुर्रतुल ऐन हैदर ने मिलकर लिखी। इसको 1970 में 'पापुलर' बंबई ने प्रकाशित किया।

2. 'स्टोरीज़ फ्रॉम इण्डिया' इसका खुशवंत सिंह तथा कुर्रतुल ऐन हैदर ने मिलकर अनुवाद किया। इसको 1974 ई0 में 'स्टर्लिंग' दिल्ली ने प्रकाशित किया।
3. 'दि नॉच गर्ल' कुर्रतुलऐन हैदर ने हसन शाह के उपन्यास का अनुवाद किया। जिसे 1992 ई0 में 'स्टर्लिंग' दिल्ली ने प्रकाशित किया।
4. 'डॉसिंग गर्ल' हसन शाह की आत्मकथा का अनुवाद है जिसे 1995 ई0 में अमेरीकन एडिशन ने प्रकाशित किया।

### अपनी किताबों का उर्दू से अंग्रेजी में अनुवाद —

1. 'आग का दरिया' का 'The river of fire' के नाम से अनुवाद किया।
2. 'आखिर शब के हमसफ़र' का 'Fire Flies in the mist' नाम से अनुवाद किया। जिसको 1994 ई0 में 'स्टर्लिंग' दिल्ली ने प्रकाशित किया।
3. 'पतझड़ की आवाज़' कहानी संग्रह का अनुवाद 'The Sound of falling leaves' नाम से किया।
4. 'जिला वतन' कहानी का 'The Exiles' नाम से अनुवाद किया। जो पाकिस्तान में 1955 ई0 में प्रकाशित हुआ।
5. 'अगले जन्म मोहे बिटिया न कीजो' का 'A Women's life' नाम से अनुवाद किया। जिसे 'चेतना पब्लिकेशन्स' ने 1979 ई0 में प्रकाशित किया।
6. 'चाय के बाग' का 'Tea Garden of sylhet' नाम से किया।

इसके अतिरिक्त बहुत सी कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया जिसका प्रकाशन 'अम्पर नट' और 'इलेस्ट्रेटेडवीकली' में हुआ।

### बच्चों की कहानियों का अंग्रेजी से उर्दू में अनुवाद —

कुर्रतुल ऐन हैदर ने बच्चों के लिए 'लोमड़ी के बच्चे', 'बहादुर घोड़ा', 'मियाँ ढेंचू के बच्चे', 'भेड़िये के बच्चे', 'हिरन के बच्चे', 'शेर खाँ', 'डेंगू', 'तथा जिन हसन बिन अब्दुर्रहमान' के नाम से कहानियों के अनुवाद किए। जो 'मक्तबा जामिया दिल्ली' से प्रकाशित हुई।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कुर्रतुलऐन हैदर एक प्रतिभाशाली कथाकार हैं। जितना महान उनका व्यक्तित्व था उतना ही उनका कृतित्व भी उच्चकोटि का दिखाई देता है। वे उर्दू साहित्य की ही नहीं विश्व के महान रचनाकारों में सम्मिलित की जा सकती हैं। उनकी रचनाओं से साहित्य और प्रत्येक युग के पाठक वर्ग को लाभ पहुँचेगा।

## सन्दर्भ सूची

1. प्रेमचंद, कुछ विचार, पृष्ठ 15, सरस्वती प्रेस इलाहाबाद, 1965 ई० ।
2. दिनकर, रामधारी सिंह, रसवन्ती (भूमिका), पृ० 5-6, अजन्ता प्रेस पटना 1955 ई० ।
3. आजमी मंजर, उर्दू अदब के इरतिका में अदबी तहरीकों और रूजहानों का हिस्सा, पृ० 17-18 उ०प्र० उर्दू अकादमी लखनऊ, 1966 ई० ।
4. पामदत्त, रजनी, 'आज का भारत', मैकमिलन इंडिया लिमिटेड नई दिल्ली, 1977 ई० ।
5. त्रिवेदी, राम प्रसाद, प्रगतिवादी समीक्षा, पृ० 36 ,ग्रन्थम रामबाग कानपुर, नवम्बर, 1934 ई० ।
6. पट्टामिसीता रमैया, कांग्रेस का इतिहास भाग-1, पृ० 468-469, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1948 ई० ।
7. मिश्र, शिवकुमार, -'प्रगतिवाद', पृ० 22, राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लि०, दिल्ली, 1966 ई० ।
8. आजमी, खलील-उर-रहमान, उर्दू में तरक्की पसंद अदबी तहरीक, पृ० 45 ऐजुकेशनल बुक हाउस अलीगढ़, 1975 ई० ।
9. चौहान, शिवदान सिंह, साहित्य की समस्याएँ, पृ० 179, आत्मा राम एण्ड संस, दिल्ली, 1959 ई० ।
10. अमृत डांगे, श्रीपाद, जन जीवन और साहित्य, (प्रगतिवादी आंदोलन का आलेखात्मक इतिहास - कर्णसिंह चौहान, पृ० 58 से उद्धरित), नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम, 1985 ई० ।
11. रहबर, हंसराज, प्रगतिवादी पुनर्मूल्यांकन, पृ० 143, नवयुग प्रकाशन दिल्ली प्रथम, 1966 ई० ।



12. मिश्र, शिवकुमार, प्रगतिवाद, पृ० 11, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लि० दिल्ली-6, प्रथम, 1966 ई०।
13. धवन, डॉ० सुषमा, हिन्दी उपन्यास प्रेमचंद तथा उत्तर प्रेमचंद काल, पृ० 286, राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लि० दिल्ली, 1955 ई०।
14. वही, पृ० 286
15. सरमस्त, यूसुफ, बीसवीं सदी में उर्दू नॉवेल, पृ० 299, नेशनल बुक हाउस हैदराबाद, 1973 ई०।
16. नारंग, गोपीचंद, 'कृष्णचंद्र', पृ० 35, दिल्ली मशमूला ऐवाने उर्दू 1970 ई०।
17. सरमस्त, यूसुफ, बीसवीं सदी में उर्दू नॉवेल, पृ० 348, नेशनल बुक हाउस हैदराबाद, 1973 ई०।
18. अशरफ़, डा० ख़ालिद, बर्रे सगीर में उर्दू नॉविल, पृ० 278, ऐजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1994 ई०।
19. ख्वाजा अहमद अब्बास, 'इन्किलाब', पृ० 567, उर्दू अदब, कुल पृष्ठ 569, 1975 ई०
20. देसाई, डॉ० मंजुला, कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन, पृ० 16 क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स राम बाग, कानपुर, प्रथम, 2002,
21. यादव, राजेन्द्र, कमलेश्वर श्रेष्ठ कहानिया, पृ० 8-9, दिल्ली, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरीगेट, 2002 ई०।
22. कमलेश्वर, गायत्री, कमलेश्वर मेरे हमसफ़र, पृ० 16, दिल्ली बालाधर, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरीगेट, दिल्ली, 2005 ई०।
23. राय, गोपाल, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, पृष्ठ 256 राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, नई दिल्ली, 2013 ई०।
24. वही, पृष्ठ 257

25. जैदी, हुमायूँ जफ़र, आलम मो० महफूज़, कुर्रतुल ऐन हैदर-फन और शख़्सियत, पृ० 122 मासिक किताब नुमा जामिया नगर, नई दिल्ली।
26. वही, पृ० 120
27. वही, पृ० 120
28. हैदर, कुर्रतुलऐन 'कारे जहाँ दराज़ है', प्रथम, पृ० 425, ऐज़ूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1985 ई०।
29. चार नॉवलेट, पृ० 231, ऐज़ूकेशनल बुक हाउस, अलीगढ़, कुल पृष्ठ, 400, 1989 ई०।

## द्वितीय अध्याय

- (क) कमलेश्वर का उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' का परिचयात्मक अध्ययन
- (ख) कुर्रतुलऐन हैदर का उपन्यास 'आग का दरिया' का परिचयात्मक अध्ययन

## (क) कमलेश्वर का उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' का परिचयात्मक अध्ययन -

कमलेश्वर का उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' हिन्दी उपन्यास में एक नया शिल्प लेकर आया। इस ओर संकेत करते हुए जीवन सिंह लिखते हैं—

‘कमलेश्वर जीवन पर्यन्त संघर्ष के मोर्चे पर डटे रहे और साहित्य सृजन में भी अपनी तरोताज़गी का एहसास कराते रहे। इसी संघर्ष प्रक्रिया में से उनके जीवन के उत्तरार्द्ध की एक बड़ी रचना ‘कितने पाकिस्तान’ के रूप में स्रोतस्विनी की भाँति प्रवाहित हुई। उनका सृजन और लेखन कबीर की ‘जागै अरू सोवै’ की ताक़ीद करता है।’<sup>1</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ का प्रथम प्रकाशन जनवरी, 2000 ई० में राजपाल एण्ड संस, दिल्ली से हुआ। ‘कितने पाकिस्तान’ के संबंध में कमलेश्वर उपन्यास की भूमिका में लिखते हैं—

यह उपन्यास मन के भीतर लगातार चलने वाली एक जिरह का नतीजा है। दशकों तक सभी कुछ चलता रहा। मैं कहानियाँ और कॉलम लिखता रहा नौकरियाँ करता और छोड़ता रहा।..... तमाम रचनाओं, विचारों, इतिहास की सैकड़ों सर्जनात्मक दस्तकों और व्यवधानों के बीच रुक-रुक कर ‘कितने पाकिस्तान’ का लिखा जाना चलता रहा.....।’<sup>2</sup>

कमलेश्वर ने ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास में पाँच हजार वर्ष के इतिहास को समेटा तथा अनादिकाल से लेकर वर्तमान युग का वास्तविक रूप दिखाया है। ‘कितने पाकिस्तान’ में कथानक की दृष्टि से नवीन प्रयोग किया गया है। इसमें कथानक या प्लॉट जैसा कुछ भी नहीं है। यह समूची मानव जाति का एक आख्यान रूप है। कालक्रम की स्वतन्त्रता स्वीकार करते हुए लेखक ने इसमें लंबे अतीत का आख्यान प्रस्तुत किया है। प्रो० गोपी चंद नारंग ‘कितने पाकिस्तान’ के संबंध में लिखते हैं—

“कमलेश्वर के इस उपन्यास में इतिहास की कई शताब्दी, कई युग और संपूर्ण ब्रह्माण्ड एक साथ जाग उठे हैं।”<sup>3</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ का प्रारंभ एक छोटी सी रोमांटिक घटना से होता है जिसमें कानपुर स्टेशन का पुल पार करते समय विद्या का रुमाल नीचे गिर जाता है

फिर उससे जुड़ी एक और छोटी सी घटना सामने आती है जिसमें एक लिफाफा लेखक को मिलता है, जिसका पता ज्ञात नहीं है, जिसके अंदर उर्दू में ग़ालिब के सिर्फ़ तीन शेर लिखे हुए हैं। इस घटना के बाद उपन्यासकार इतिहास, समाज और संस्कृति के ऐसे पहलुओं पर विचार विमर्श प्रारम्भ करता है। जिस पर कभी बहस नहीं की गयी।

उपन्यास में एक ओर 1999 ई0 के कारगिल युद्ध की विभीषिका से हमारा साक्षात्कार होता है तथा दूसरी ओर रामायण —महाभारत से होते हुए ग्रीक मिथक गिलगमेश तक की यात्रा हो जाती है जो मृत्यु को जीतने का प्रयास करता है। गिलगमेश को परास्त करने के लिए आकाश पुत्र एंकिदु को भेजा गया, लेकिन एंकिदु और गिलगमेश में मित्रता हो गई। उसके पश्चात देवताओं ने उसे नष्ट करने के लिए एक भयंकर सांड को भेजा। जिसमें एंकिदु की मृत्यु हो जाती है। गिलगमेश घोषणा करता है—

“मैं पीड़ा से लड़ूँगा...यातना सहूँगा...कुछ भी हो मैं अपने मित्र और मनुष्य मात्र के लिए मृत्यु को पराजित करूँगा ! मैं मृत्यु से मुक्ति की औषधि खोज कर लाऊँगा।”<sup>4</sup>

इस उपन्यास में मृत्यु शब्द एक प्रतीक के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। सम्भवतः यह दुख का प्रतीक है। उपन्यासकार मृत्यु रूपी दुख से संसार को मुक्त करना चाहता है, क्योंकि मनुष्य ने मित्रता नामक तत्व को तलाश लिया है जिससे देवता वंचित हैं। उनके लिए केवल वासना ही सब कुछ है। देवता अनु ने कहा—

“भयानक बात यह है कि पृथ्वी सम्राट गिलगमेश ने मित्रता नामक तत्व को तलाश लिया है.... यह सुनकर सारे देवता बेहद चिन्तित और हताश हो गए तब देवता अलवोनियस ने संकट ग्रस्त स्वर में कहा— देवताओं के देव अनु हमारी कमजोरी यही है कि हमने प्रेम और मित्रता जैसे तत्वों को नहीं तलाशा... सारी देवियाँ केवल हमारी वासनाओं का तृप्ति कुंड हैं और हम देवताओं में कोई भी किसी का मित्र नहीं हैं।”<sup>5</sup>

कमलेश्वर ने यहाँ देवताओं की मानसिकता पर व्यंग्य किया है। सभी देवता इस बात से चिन्तित हैं कि मनुष्य ने प्रेम और मित्रता जैसे तत्वों की खोज कर ली

है। यह हमारे लिए भयानक खतरा हो सकता है। कमलेश्वर मनुष्यों को देवताओं से श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं, क्योंकि मित्रता और प्रेम जैसे गुण मनुष्यों में पाए जाते हैं देवताओं में नहीं। इसके बाद बूटा सिंह की प्रेम कहानी सामने आती है। वह जैनब से प्रेम करने लगता है। यह वही प्रेम है, जिसकी खोज मनुष्य ने सदियों पहले कर ली थी—

“लड़की ने उसे एक बार भरपूर नज़रों से देखा। बूटा सिंह ने भी उसे उसी तरह भरपूर नज़रों से देखा।”<sup>6</sup>

कमलेश्वर ने उपन्यास में कई ऐतिहासिक घटनाओं को प्रमाण के आधार पर प्रस्तुत किया है। बाबर पर राम मन्दिर गिरवाने का आरोप था। उसको अदीब की अदालत में बुलवाया जाता है। बाबर अपने ऊपर लगाए जाने वाले आरोप को नकार देता है और कहता है कि वह मजिस्द मैंने नहीं बनवाई थी—

“ए. फ़्यूहरर को बुलवाया जाए ! उसने सन् 1889 में वह ‘शिलालेख पढ़ा था जो मेरे नाम पर थोपी जा रही मस्जिद में लगा हुआ था... आज वह पढ़ा नहीं जा सकता क्योंकि जाहिलों ने उसे पढ़ने लायक नहीं छोड़ा।”<sup>7</sup>

कमलेश्वर बाबर के कथन के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि बाबर अयोध्या गया ही नहीं था। औध (अवध) गया था जिसे अयोध्या समझ लिया गया।

‘कितने पाकिस्तान’ का कैनवास बहुत विस्तृत है। यह उपन्यास संस्कृति और इतिहास की पृष्ठभूमि को अपने अंदर समेटे हुए है। इसमें लेखक ने अदीब या समय की अदालत में दुनिया भर की अनेक सभ्यताओं में चलने वाले संघर्ष की समस्याओं को उठाया है। इसमें आदिकाल से लेकर आर्यों के आगमन उनके संघर्ष, युद्धों की अनुगूँज, महाभारत का युद्ध, आर्याना के डेरियस और यूनानी मिलिडयाडिस का मैराथन में हुआ युद्ध, झेलम, कैने, सोमनाथ, तराइन, क्रेसी, पानीपत जैसे युद्धों का गहन अन्वेषण मानवीय धरातल पर किया है तथा हड़प्पा, मोहन-जोदड़ो, मेसोपोटामिया, दज़ला-फ़रात, बेबीलोन, हिती सभ्यता का गिलगमेश, प्राचीन सुमेरी व चीनी सभ्यताओं से लेकर मुग़ल सल्तनत, भारत विभाजन, बाबरी मस्जिद विध्वंस

(1992 ई०) तथा 1998 ई० में पोखरन (भारत) और चगाई (पाकिस्तान) तक की देशकाल की अवधि को समेटने का प्रयत्न किया गया है।

‘कितने पाकिस्तान’ में कमलेश्वर ने मुख्य रूप से इतिहास के उन बिंदुओं पर अधिक बल दिया है जहाँ पर मानवीय संवेदना में एक अलग प्रकार का परिवर्तन दिखाई देता है। समय की अदालत में अर्दली महमूद ने अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यक्तियों को उनकी कब्रों से निकालकर हाज़िर किया है जिसमें बाबर, अकबर, शाहजहाँ, औरंगज़ेब, दाराशिकोह शुजा और मुराद, हिटलर और माउंट बेटन, लार्ड कर्जन, मैकाले और रेडक्लिफ़, गाँधी और जिन्ना, पोखरन और हिरोशिमा अपना सत्य बोलने के लिए मजबूर हैं समय की अदालत में उनसे उग्र जिरह होती है। जिरह के पश्चात् जो तथ्य उभर कर सामने आता है वह झूठ को बेनकाब करता है। वास्तव में सारी समस्या मनुष्य के अस्तित्व और उसके कल्याण से जुड़ी है। मानवतावादी संस्कृति और भविष्य का विनाश करने वाले युद्ध, महाभारतके अट्ठारह दिनों का युद्ध, हमारे युग के युद्ध और वह सारी लड़ाईयाँ जो मनुष्य जाति के विनाश का कारण बनीं, इस उपन्यास में उपस्थित हैं। उन युद्धों के कारण छाने वाले अंधकार, काली आँधियाँ, कोहराम तथा दुःखः दर्द मानव सभ्यता पर लगा हुआ एक दाग है जिसे कमलेश्वर धो देना चाहते हैं।

इस उपन्यास में औरंगज़ेब और दाराशिकोह के राजनीतिक और धार्मिक अंतर्द्वन्द्व का विस्तृत चित्रण किया गया है। इसके साथ-साथ शिबली नोमानी तथा काज़ी अब्दुस्सत्तार भी दिखाई देते हैं, शिबली नोमानी औरंगज़ेब का समर्थन करते हैं, और उसको सही ठहराते हैं। दूसरी तरफ़ काज़ी अब्दुस्सत्तार दाराशिकोह को सही मानते हैं, क्योंकि दाराशिकोह ने हिन्दुस्तान की सामासिक संस्कृति को जीवित रखने की ज़िम्मेदारी उठायी थी। समय की अदालत शिबली नोमानी के दृष्टिकोण का काट प्रस्तुत कर देती है। उपन्यास में अख़्तर-उल-ईमान भी दिखाई देते हैं। उनको भी हिन्दुस्तानी संस्कृति के बँटने का दुःख होता है। उपन्यासकार उर्दू शायर रघुपति सहाय फिराक़ का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए कहता है कि सच तक पहुँचने के लिए अतीत, वर्तमान और भविष्य के पलों को तोड़कर खंडित नहीं करना चाहिए। इसी के साथ लेखक एक ऐसे बिंदु पर पहुँचता है, जहाँ सत्ता के भयावह

झूठ की जीत हुई थी और मानवीय संवेदना का सच हार गया था। वह क्षण जब सत्ता संघर्ष में औरगंजेब दाराशिकोह से जीत गया था। कमलेश्वर का मानना है कि पाकिस्तान बनने का प्रारंभ उसी समय हो गया था जब मानवीय संवेदना के सत्य पर झूठी धार्मिकता की जीत हुई थी। इसके पश्चात देश के बँटवारे की घटनाएँ, पाकिस्तान, बूटा सिंह और जैनब, कैबिनेट मिशन प्लान, लॉर्ड माउन्ट बेटन, जिन्ना, राही मासूम रजा, प्रो० मुशीर-उल-हक (कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति) तथा भागलपुर की भीषण घटनाएँ सामने आती हैं। देवेन्द्र कुमार गुप्ता 'कितने पाकिस्तान' के संबंध में लिखते हैं—

“पूरे उपन्यास में कमलेश्वर की मानवीय जीवन मूल्यों में आस्था दिखाई पड़ती है।”<sup>8</sup>

कमलेश्वर ने पूरे उपन्यास में प्रेम एवं मित्रता जैसे तत्वों पर बल दिया है, जो मनुष्य ने मानव मात्र के लिए खोजे हैं।

उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में अप्राकृतिक मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए जीवन की खोज की गई है। जब मानवता को बर्बादी के गड्ढे में ढकेल दिया गया और उनके जीवन को छीन लेने का प्रयास किया गया। तब से मनुष्य में विद्रोह की भावना ने जन्म लिया है। इस उपन्यास में मानवता की समाप्ति की समस्या को समय की अदालत में प्रस्तुत किया गया है और उसमें वह सभी लोग उपस्थित हैं जिन्हें अपराधी समझा जाता रहा है, जो हमारे युग को सच्चाई बता सकें। इसमें प्राचीन काल से लेकर वर्तमान युग तक के सभी लोग उपस्थित हैं, जो अतीत की घटनाओं पर बहस करके सत्य को ढूँढ रहे हैं। कमलेश्वर की इस रचनात्मक अदालत में हिन्दुस्तान का अतीत भी उपस्थित है और वर्तमान भी। इसमें आर्य युग, मुगल युग तथा बँटवारे के बाद का युग भी है जिसको कमलेश्वर ने अपनी आँखों से देखा है। विभाजन के समय घृणा की जो आँधी चली वह आज तक नहीं रुकी है। अब यह काली आँधियाँ वैज्ञानिकों के कारण चल रही हैं जिन्होंने एटमी बारूद को जन्म देकर बहुत से देशों को शमशान बना डाला है तथा मानवतावादी संस्कृति को मौत के घाट उतार दिया है। कमलेश्वर ने इस उपन्यास में मानवतावादी



संस्कृति का बँटवारा करने वालों को ही मानवता का शत्रु माना है। संस्कृति के बँटवारे से ही मानवता की मृत्यु हो रही है। प्रोफेसर गोपी चंद नारंग के अनुसार —

“यह उपन्यास हमारे युग के मरते हुए मूल्यों और इंसानियत के बुझते हुए दीयों को रौशन रखने का प्रयास है।”<sup>9</sup>

इस उपन्यास में प्राचीन संस्कृतियों यूनान, मिस्र तथा रोम की संस्कृतियों के सन्दर्भ में भी बातें की गई हैं। इसके संदर्भ में इतिहास को जानने और वर्तमान काल को समझने का प्रयास किया गया है। लेखक ने धर्म के रखवालों तथा अनेक संस्कृतियों के प्रतिनिधियों को समय की अदालत में प्रस्तुत किया है। यह इतिहास और संस्कृति की एक रुचिकर कथा है। यह उपन्यास अतीत और वर्तमान में यात्रा करता है। इसमें एक ओर मिस्र के पिरामिड और बेबीलोनिया का प्राचीन इतिहास है तो दूसरी ओर धर्म के नाम पर किया गया बँटवारा है। उपन्यास में इमाम नाज़िश यह महसूस करते हैं कि धर्म के नाम पर बना देश पाकिस्तान ग़लत था, और कहते हैं—

“लेकिन अब तो सभी देशों में नफ़रत का एक पाकिस्तान बनाने की कोशिशें जारी हैं ..... क्या हुआ बोस्निया में क्या हुआ साइप्रस में, क्या हुआ है तब के टूटे सोवियत यूनियन और अब के बने रशियन फेडरेशन में। क्या हो रहा है आज के अफ़ग़ानिस्तान में ? हर व्यक्ति नफ़रत के सहारे अपने ही लोगों के खिलाफ़ एक दूसरा पाकिस्तान ईजाद करना चाहता है।”<sup>10</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास का भी यही मुख्य उद्देश्य है। संसार के कई देशों में जो बँटवारे की निरंतर प्रक्रिया चल रही है उसमें केवल नफ़रत का बारूद है।

‘कितने पाकिस्तान’ में कमलेश्वर ने जीवन के मूल तत्वों जीवन, कर्म, श्रम, मित्रता और प्रेम का चित्रण किया है। प्रेम के महत्व को अदीब—विद्या, जैनब और बूटा सिंह, सलमा और अदीब के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

“विद्या का गिरता रूमाल और गिलगमेश की मृत्यु से मुक्ति की औषधि के लिए अंतहीन यात्रा कहानी के दोनों छोरों—अतीत व वर्तमान को लगातार पकड़े रहने का प्रयास है।”<sup>11</sup>

कमलेश्वर ने इस उपन्यास में सभी मानवतावादी विरोधी समस्याओं को उठाया है फिर चाहे वह समस्या ईरान की हो, बोस्निया की हो, अमेरीकन रेड इंडियन्स की हो या भारत की हिन्दू-मुस्लिम समस्या हो। 'कितने पाकिस्तान' के संबंध में राजेन्द्र यादव लिखते हैं—

"इस रचना में लेखक ने इतिहास और भूगोल की सीमाओं को तोड़ने का प्रयास किया है। यह मनुष्य की वास्तविक समस्याओं और चिन्ताओं को सामने रखने की कोशिश करती है।"<sup>12</sup>

इस उपन्यास में चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी नए प्रयोग किए गए हैं। उपन्यास की भूमिका में कमलेश्वर लिखते हैं—

"कोई नायक महानायक सामने नहीं था, इसलिए मुझे समय को ही नायक-महानायक और खलनायक बनाना पड़ा।"<sup>13</sup>

'कितने पाकिस्तान का मुख्य पात्र समय या अदीब है। उसकी चिंताएँ सहज मानवीय चिंताओं के रूप में उभरकर सामने आती हैं। उन चिंताओं में प्रेम मानवीय मूल्यों के रूप में सर्वोपरि है। अदीब या समय की अपनी एक अदालत है जिसमें भारत से लेकर दक्षिण अमरीका तक के आरोपी पात्र अपना-अपना पक्ष रखते हैं और सत्य से रूबरू कराते हैं। कमलेश्वर ने फ्लैश बैक पद्धति का प्रयोग करते हुए अनादिकाल से लेकर आज तक के संसार का कल्पना के माध्यम से वास्तविक रूप प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

इसके अतिरिक्त साहित्यकार का अर्दली महमूद पात्र के रूप में हमारे सामने आता है, जो सम्पूर्ण संसार से अनेक ऐतिहासिक व्यक्तित्वों को उनकी कब्रों से निकाल कर समय की अदालत में प्रस्तुत कर देता है। जो साहित्यकार को उसकी सच्चाई की पैरोकार अदालत में सत्य प्रस्तुत करने में प्रारम्भ से अंत तक सहायता करता है।

प्रस्तुत उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में अनेक ऐतिहासिक पात्र सामने आते हैं, जिनमें दाराशिकोह का सर्वाधिक विस्तृत रेखांकन है और कमलेश्वर ने उनके व्यक्तित्व तथा संघर्ष को विस्तार से परखा है। लेखक ने दाराशिकोह की पराजय

को पाकिस्तानी विचार धारा के उदय से जोड़ते हुए उन्हें हिन्दुस्तान का प्रतीक बताया है।

‘समय’ की अदालत में समय और स्थिति की माँग के अनुसार अनेक पात्र सामने आते हैं जिनमें बाबर, ए०प्यूहरर, गुलबदन बेगम ऐतिहासिक पात्रों के रूप में सामने आते हैं। जामा मस्जिद के इमाम अबदुल्लाह बुखारी, अशोक सिंघल, जो उपन्यासकार के अनुसार जाहिल हैं, यह वह लोग हैं जो धर्म के नाम पर वक्त को बदलने नहीं देते हैं। प्रो० मुशीरउल-हक, (कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति), जिनकी श्रीनगर के एक इलाके में हत्या कर दी गयी, बिलकीस, जिसे शादी के नाम पर धोखा देकर अरब ले जाया गया और वहाँ उसे वासना का शिकार बनाया गया। यह सभी पात्र अदीब की अदालत में मौजूद हैं। इनके अतिरिक्त मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना पात्र के रूप में हमारे सामने आते हैं जिनको देश के विभाजन का जिम्मेदार ठहराया गया है। कमलेश्वर ‘कितने पाकिस्तान’ में मानवतावादी इतिहास के अनेक पात्रों को उनकी कब्रों से निकालकर समय की अदालत में प्रस्तुत करते हैं उनके द्वारा इतिहास के उन बिंदुओं को उठाया है जो हमारे सामने आज एक समस्या के रूप में विद्यमान है जो सहज मानवीय चेतना में फाँक उत्पन्न करने का काम कर रहे हैं। इतने लम्बे मानव इतिहास को उसकी घटनाओं को प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने सफल संवाद योजना की है।

कमलेश्वर ने ‘कितने पाकिस्तान’ की संवाद योजना के प्रस्तुतीकरण में नवीन प्रयोग किया है। बाबरी मस्जिद विध्वंस की समस्या पर समय की अदालत में बाबर को प्रस्तुत किया गया। त्रिशूलधारी और बाबर की वार्तालाप इस प्रकार है—

अदीब — तुमने हिन्दुस्तान पर हमला क्यों किया था ?

बाबर — हमला ! तो एक बादशाह और क्या करता ? जब फ़रग़ना और बुखारा की मेरी सल्तनत छिन गई तो दूसरी सल्तनत तो बननी ही थी....।”

त्रिशूलधारी — सारे झगड़ों की जड़ तो तुम हो !न तुम राम मन्दिर मिसमार करते, न ये झगड़े खड़े होते।

बाबर — मेरा अल्लाह और तारीख़ गवाह है.... मैंने कोई मन्दिर मिसमार नहीं किया और न हिन्दुस्तान में कोई मस्जिद अपने नाम से कभी बनवाई।' <sup>14</sup>

उपर्युक्त वार्तालाप के माध्यम से कमलेश्वर ने बाबर पर लगे आरोपों को निराधार सिद्ध किया है। इसी प्रकार औरंगज़ेब भी समय की अदालत में हाज़िर किया जाता है और उससे उसके अपराधों को स्वीकार करवाया जाता है—

"अदीब— आलमगीर ! तमाम इल्ज़ाम तुम पर आयद हैं.....सबसे बड़ा तो यह है कि तुम एक धर्मांध शहशाह थे, कट्टर सुन्नी थे..... इसलिए तुमने दक्षिण की गोलकुंडा, बीजापुर, खानदेश, बरार और अहमद नगर के राज्यों के उन सुल्तानों को बर्बाद किया जो मुसलमान तो थे पर सुन्नी नहीं शिया थे !..... और यह कि तुमने अपनी हिन्दू रियाया को सताया, उसे तलवार के जोर पर मुसलमान बनाया, उसके त्यौहारों—उत्सवों पर प्रतिबंध लगाया, उनके मन्दिरों को तोड़ा..... इसके अलावा तुमने अपने पिता शाहजहाँ को कैद किया, अपने भाई दाराशिकोह और मुराद को मरवाया। शुजा को जिला वतन किया।'

अदालत ने पूछा — औरंगज़ेब ! क्या कहना है तुम्हें ?

औरंगज़ेब — क्या कहना है मुझे ? मैं कोई सफ़ाई नहीं देना चाहता। मुझे जब जो ठीक लगा, वही मैंने किया.... आखिर मैं शहंशाह था....मुझे अच्छी तरह मालूम है कि अब्बा हुजूर को सात साल कैद में रखने, अपने भाइयों को मारकर तख़्त हासिल करने जैसे तमाम इल्ज़ाम मुझ पर हैं ! मैं खुद कुछ नहीं कहना चाहता।.... <sup>15</sup>

औरंगज़ेब की उपर्युक्त स्वीकारोक्ति के माध्यम से कमलेश्वर राजनीतिज्ञों की उस मानसिकता पर व्यंग्य करते हैं जो सत्ता के लिए रिश्तों को भी दाँव पर लगा देते हैं।

उपन्यास में एक स्थान पर अदीब की अदालत में बाबर से हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के संबंध में प्रश्न किया जाता है, उसके जवाब में बाबर कहता है कि मुझे हिन्दुस्तान, पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ और रणथमौर के हिन्दू राजपूत राणा सांगा ने बुलाया था। बाबर का उत्तर सुनकर अदालत में उपस्थित एक त्रिशूल

धारी जो रामजन्म भूमि के लिए मारा गया था, बाबर को झूठा कहता है। अदालत के आदेशानुसार अर्दली ने उस त्रिशूल धारक को फटकारा। अर्दली और त्रिशूल धारक के बीच जो वार्तालाप होती है, वह इस प्रकार है—

अदीब — त्रिशूल धारक ! जब तुम मरे थे उस वक्त तुम क्या थे ?

— “तब मैं हिन्दू था” ।

“हिन्दू क्या इंसान नहीं होते” ?

“होते हैं, लेकिन जब नफरत का ज़हर मेरी नसों में दौड़ता है। तब मैं इंसान का चोला उतारकर हिन्दू बन जाता हूँ।”<sup>16</sup>

कमलेश्वर ने यहाँ तटस्थ रूप से स्थिति का विश्लेषण किया है और धर्म के नाम पर अत्याचार करने वाली मानसिकता पर प्रहार किया है।

सलमा और अदीब दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं। दोनों अलग-अलग धर्मों के मानने वाले हैं। उनके प्रेम को यह समाज धर्म के नाम पर अलग करना चाहता है। कमलेश्वर ने दो प्रेम करने वालों की मनःस्थिति और उनके विचारों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है—

सलमा ने कहा —आप अब मुसलमान बन जाइए

अदीब —बन गया

सलमा — और मैं हिन्दू बन जाती हूँ।

अदीब — बन जाओ।

अदीब ने कहा — मैं तुम्हारा हाथ पकड़ूँ ?

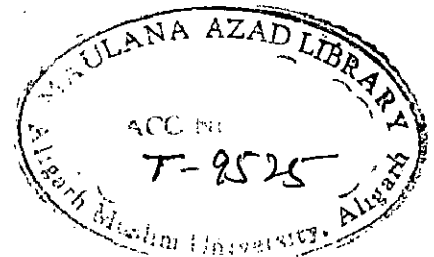
सलमा — पकड़िए।

अदीब — हाँ तो अब कैसा लगा ? एक मुसलमान के हाथ में हाथ देते हुए ?

सलमा — इसमें तो कोई मज़हब आड़े नहीं आया। यह तो उसी तरह मुझे कँपाता है, जब आप हिन्दू थे। और न मेरा हिन्दू होना आड़े आता है.... मैं भी उसी तरह लाजवंती की तरह आपकी छुअन से अपनी पँखुड़ियाँ बंद कर लेती

अदीब — और अब ?

सलमा — मेरे ओंठ उसी तरह भीगते और प्यासे हो जाते हैं जैसे पहले थे। यह प्यास तो मज़हब बदलने से बदलती नहीं, बुझती नहीं।



अदीब — शायद यह ग़लत तरीका हो ..... आओ हम दोनों मुसलमान हो जाते हैं। या दोनों हिन्दू ही हो जाते हैं। अदीब ने उसे बाँहों में कसते हुए कहा। अब

सलमा — अब भी आपकी बाँहों में वही कशिश है...।<sup>17</sup>

वातावरण चित्रण की दृष्टि से अगर देखा जाए तो कहा जा सकता है कि 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर वातावरण को शब्दों के माध्यम से जीवंत कर देते हैं—

"नीम के झड़ते पत्तों और उतरते अँधेरे के बीच चलती हुई, यह बात न जाने कैसे त्र्योबिश के चाँदी के तट पर पहुँच गई थी। रात चाँदनी थी...सागर की लहरें सफेद फूलों की चादर की तरह काँप रही थीं। भीगा हुआ तट मद्धिम स्वर में कुछ गा रहा था... कोरल की रेत चाँदी की तरह बिखरी हुई थी। काही रंग के सेवती के ठिगने पौधे हथेलियाँ खोले खड़े थे...पत्तियाँ पलटती थी, तो उनकी हथेलियाँ चाँदी की तश्तरियों में बदल जाती थीं.....।"<sup>18</sup>

कमलेश्वर ढलती हुई शाम का वातावरण इन शब्दों में साकार कर देते हैं—

"उस वक्त सामने पश्चिम में सूरज डूब रहा था बादलों का पल्लू उसे छुपाने की कोशिश कर रहा था। पर वह बार-बार अपनी किरनों की टॉर्च फेंकते हुए त्र्योबिश को पलट-पलट कर देख रहा था।"<sup>19</sup>

सागर की लहरों पर तैरती नावों का सुन्दर चित्र इस प्रकार है —

"हिन्द महासागर की शान्त लहरें तट को थपकियाँ दे रही थीं। कुछ खाना बंदोश नावें अब भी कोरल की तरफ जा रही थीं या उत्तर में ग्रां-बे की ओर उड़ती चली जा रही थीं। उनके पॉल डूबते सूरज की रोशनी में मुकुटों की तरह चमकते और खो जाते थे

"झिलमिलाती पन्नी वाले पानी पर कुछ बोदस थाप देते थर-थरा रही थीं ..... दूर काली जेटी की जाली पर चाँदी की बर्फियाँ बिछी थीं।"<sup>20</sup>

मनोरम और सुंदर दृश्यों का ध्वन्यात्मक चित्रण के साथ ही विभत्स वातावरण का चित्रण करने में भी कमलेश्वर निपुण हैं। एक उदाहरण इस प्रकार है—

"हाहाकार, चीत्कार, आग़ज़नी, सामूहिक हत्याएँ, बलात्कार चीख़ पुकार, अपहरण, अजन्में बच्चों के लोथड़े, कीड़े पड़ी बिजबिजाती फूली हुई लाशें, अर्द्ध जीवित और मृत देहों का मौँस खा-खाकर थके हुए लकड़बग्घे, कुत्ते गिद्ध....और रक्त प्लावन का दृश्य।"<sup>21</sup>

कमलेश्वर अपनी प्रतीकात्मक शैली के द्वारा धार्मिक भेदभाव को समाप्त करना चाहते हैं। दाराशिकोह का यह कथन इस बात का प्रमाण है—

“क्योंकि हर मूर्ति में जीवन छुपा हुआ है और कुफ़्र— अविश्वास के नीचे विश्वास— ईमान छिपा हुआ है। इस ईमान को मैं नहीं तोड़ सकता। तोड़ूँगा तो इंसान हर तरह के विश्वास, ईमान से रहित हो जाएगा। यह ईमान ही मनुष्य के अस्तित्व की कुंजी है, क्योंकि इसी ईमान के सहारे वह ‘बहु’ को ‘एक’ में पैबस्त पाता है। सच्चा मुसलमान यही देखता है... बहुत्व को एकत्व में देखना ही वहीदिया है.... यही तौहीद का फ़लसफ़ा है।”<sup>22</sup>

दाराशिकोह को कमलेश्वर ने हिन्दुस्तान तथा हिन्दुस्तानी संस्कृति का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया है। उसकी हत्या को उभरती हुई सामासिक संस्कृति के पतन के रूप में देखा है—

“जिस दिन दाराशिकोह का सिर कलम हुआ, उसी दिन हिन्दुस्तान की बनती एक सहिष्णु और नई तहज़ीब का सिर भी कलम हो गया।”<sup>23</sup>

राम मन्दिर विवाद ने फैज़ाबाद को किस प्रकार साम्प्रदायिक झगड़ों का केन्द्र बना दिया जबकि वास्तविकता कुछ और है। वहाँ का जन जीवन किस प्रकार सामान्य है उसका चित्रण व्यंग्यात्मक शैली में इस प्रकार करते हैं—

‘बाज़ार खाने—पीने की चीज़ों और रेडीमेड पौशाकों से भरे हुए थे। वहाँ न हिन्दू दुकानें थीं न मुसलमान दुकानें.... वहाँ सिर्फ़ दुकाने थीं। गंदगी और भीड़ उतनी ही जितनी कि पूरे हिन्दुस्तान में है। पोशोक सब वही जो सब पहनते हैं।’<sup>24</sup>

पत्रानुकूल और विषयानुकूल भाषा का प्रयोग इस उपन्यास की विशेषता है। अवधि भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है—

“ओ’ मैं इसही मस्जिद का पेश इमाम भी हूँ। इहाँ कोई मीरबाकी नहीं रहा.... न उसकी खानदानी कोई है इहाँ...।”

कौनउ नहीं बाबू साहेब ! एक बुजुर्ग ने कहा, जौन अली को शिद्यत से मानते हैं, तौन शिया, जौन सुस्ती से मानते हैं तौन सुन्नी!”<sup>25</sup>

कमलेश्वर ने ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास में उपन्यास के पारंपरिक ढाँचे को तोड़ कर अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक नया प्रयोग किया जिसकी सराहना की

जानी चाहिए। इसके साथ ही यह भी प्रशंसनीय है कि पूरे उपन्यास में विश्व में छापी अशान्ति के प्रति एक गम्भीर चिन्ता दिखायी देती है, साथ ही घृणा, द्वेष के स्थान पर प्रेम और मैत्री जैसे सद्भाव का प्रसार करने की लालसा और उत्कंठा दिखायी देती है।

**कुर्तुलऐन हैदर का उपन्यास 'आग का दरिया' का परिचयात्मक अध्ययन:**

स्वतन्त्रता प्राप्ति के आस-पास उर्दू के जिन साहित्यकारों ने लिखना प्रारम्भ किया, उनमें कुर्तुलऐन हैदर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कुर्तुल ऐन हैदर के संबंध में उर्दू के प्रसिद्ध आलोचक कमर रईस लिखते हैं —

“कुर्तुलऐन हैदर के उपन्यासों में अतीत और वर्तमान दोनों का अनुभव एक साथ होता है उनके यहाँ समय एक इकाई है और वह वर्तमान को अतीत के प्रभाव से अलग नहीं करती। 'आग का दरिया', 'आखिर शब के हमसफ़र', 'गर्दिशे रंगे चमन' इन तीनों बड़े उपन्यासों में अतीत की यात्रा प्रकाशमान होती है।”<sup>26</sup>

कुर्तुलऐन हैदर का उपन्यास 'आग का दरिया' 642 पृष्ठों पर आधारित है, जिसका प्रथम प्रकाशन दिसम्बर सन् 1959 ई० में 'मक्तबा जदीद लाहौर' से हुआ था। 'आग का दरिया' की भूमिका में कुर्तुल ऐन हैदर 'उपन्यास' के संबंध में लिखती हैं—

“आग का दरिया' मैंने सन् 1956 ई० में शुरू किया। सन् 1957 ई० में ख़त्म हुआ। मार्शल ला अक्टूबर 1958 ई० में लागू हुआ। उस समय उपन्यास की पाण्डुलिपि लाहौर में थी और दिसम्बर सन् 1959 ई० में मक्तबाजदीद ने उसे प्रकाशित किया। पहले संस्करण के अन्तिम पृष्ठ पर रचना की सन् मौजूद थी। अतः सेंसरशिप के मानसिक झटके ने मेरा क़लम आग का दरिया की ओर नहीं मोड़ा।”<sup>27</sup>

यह उपन्यास 101 अध्यायों में विभाजित है। इसके घटनास्थलों को विश्लेषण के तौर पर पाँच भागों में बाँटा जा सकता है —

प्रथम भाग— अध्याय 1 से 13 तक श्रावस्ती से संबंधित हैं तथा 14 से 17 पाटलीपुत्र से।



द्वितीय भाग— अध्याय 18 से 25 तक बहराइच, जौनपुर और बनारस से संबंधित है।

तृतीय भाग — अध्याय 26 से 56 तक कलकत्ता और लखनऊ से तथा 57 और 58 पुराने और नए इतिहास के दो पथों से संबंधित है।

चतुर्थ भाग — अध्याय 59 से 96 तक यूरोप से संबंधित है। अध्याय 97 और 98 नए युग में दूसरे प्रमुख मोड़ 1947 ई० से संबंधित है। अध्याय 99 और 100 पूर्वी पाकिस्तान और नए हिन्दुस्तान से संबंधित है।

पंचम भाग — अन्तिम अध्याय आधुनिक हिन्दुस्तान से संबंधित है।

कुर्रतुल ऐन हैदर ने इस उपन्यास में ढाई हजार वर्षों के इतिहास को समेटा है तथा बौद्धकाल से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद तक की समन्वयवादी विचारधारा को चित्रित किया है। 'आग का दरिया' के प्रकाशन के कुछ दिन बाद नून, मीम राशिद ने इस पर रेडियो समीक्षा की (मतबूआ आहंग करांची), जिसका कुछ अंश प्रस्तुत है —

"इस सोहबत में केवल एक नई किताब से बहस करना चाहता हूँ। वह कुर्रतुल ऐन हैदर का उपन्यास 'आग का दरिया' है, जिसे प्रकाशित हुए अभी दस पन्द्रह दिन ही हुए हैं। एक ही उपन्यास पर बहस करने का औचित्य केवल यह है कि उपन्यास यकीनन उर्दू उपन्यासों में बहुत महत्व (अहमियत) प्राप्त करके रहेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि कुर्रतुलऐन हैदर ने 'समय' का अनुभव किया है, वह तकनीक के ऐतबार से बहुत महत्व रखता है... इस उपन्यास में तलअत नाम की लड़की वह खुद हैं.... जहाँ तक इस उपन्यास का संबंध है, यह अपने अधिक विस्तार के बावजूद भारत की एक वर्ग की कथा है। यह यू० पी० के मुसलमानों का अल्मिया है जिसमें भारत के बँटवारे ने उसे मुब्तिला कर दिया था। अगर चे हिन्दुस्तानी मुसलमान की इस कशमकश का विश्लेषण कुर्रतुल ऐन हैदर ने बड़ी चाबुक दस्ती से किया है। और तकनीक के ऐतबार से उसका बड़ा महत्व है।"<sup>28</sup>

डॉ० मोहम्मद अहसन फ़ारूकी अपने एक लेख (साकी, अप्रैल 1960 में प्रकाशित) में लिखते हैं —

“अब मेरा ख़्वाब भी टूट गया और उनके विषय पर उनकी तरह ही सोच रहा हूँ। साहब ज़ादी की क्या ऊँची सोच है, क्या बालिग़-उल-नज़री है..... वर्जीनिया वुल्फ़ से आगे बढ़ जाती है।”<sup>29</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने वर्तमान युग के अंग्रेजी कथाकारों के नवीनतम हैयती अनुभवों से लाभ उठाया है। विषय और तकनीक की सतह पर कुर्रतुल ऐन हैदर वर्जीनिया वुल्फ़ से अधिक प्रभावित दिखाई देती हैं। ‘आग का दरिया’ में हिन्दुस्तान के ढाई हजार वर्षों के सांस्कृतिक इतिहास को प्रस्तुत करने के लिए चार पात्र लिए हैं यानी गौतम, हरिशंकर, चम्पा और कमाल। ये पात्र नामों के थोड़े से अंतर के साथ बराबर हमारे सामने आते रहते हैं और हर युग में यह महसूस होता है कि उन पात्रों का स्वभाव एक है।

कुर्रतुल ऐन हैदर वर्जीनिया वुल्फ़ के साथ-साथ टी० एस० ईलियट से भी प्रभावित दिखाई देती हैं। जिस प्रकार ईलियट ने अपनी प्रसिद्ध लम्बी कविता “The Wast Land” में प्रथम विश्वयुद्ध के कारण पश्चिमी समाज में फैले भय, पराजय, एकाकीपन दुख को सांकेतिक शैली में प्रस्तुत किया है। ठीक उसी तरह कुर्रतुलऐन ने हिन्दुस्तान के बँटवारे के कारण पूर्वी समाज में फैले दुख एकाकीपन और सांस्कृतिक क्रांतियों को कुछ पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अस्लूब अहमद अन्सारी उपन्यास के संबंध में लिखते हैं—

“कुर्रतुल ऐन हैदर ने उपन्यास के प्रारम्भ में ईलियट की कविता को **Epigraph** के तौर पर दिया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उपन्यास का विषय समय की वह धारा है जो मनुष्य के जीवन को चारों ओर से घेरे हुए है। कुर्रतुलऐन ने मनुष्य की अब तक की प्राप्त की हुई सफलता में से कुछ रहस्यों, बारीकियों को चुना है। संस्कृतियों और साम्राज्यों ने किस प्रकार सहमति की कामना की है, किस प्रकार अपने झण्डे गाड़े हैं। इंसानी संबंधों में प्रेम और घृणा, स्वार्थ त्याग स्वेच्छा चार आदि के कारण उत्पन्न हुई जटिलताएं तथा अनुभव में जो वेदना, कड़वाहट तथा उससे व्यक्तित्व के विकास पर पड़ने वाला प्रभाव, इतिहास तथा दर्शन से कहीं अधिक है। यही सब कुछ इस उपन्यास का विषय है।”<sup>30</sup>

कुर्रतुल ऐन हैदर ने ईलियट के ही अनुकरण में कृष्ण, गीता और अर्जुन के दर्शन से बहस की है। उन्होंने ‘आग का दरिया’ में समय को शक्तिशाली पात्र के

रूप में प्रस्तुत किया है। उनका विचार है कि 'समय' ही इंसान के जीवन में 'आग का दरिया' है जिसकी धार पर इंसानियत की दुनिया बहती, बनती और बिगड़ती चली जा रही है। समय के सामने इंसान बेबस है।

यह उपन्यास हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास से लेकर बँटवारे के बाद के कई वर्षों पर आधारित है। कुर्रतुलऐन हैदर ने ढाई हजार साल की हिन्दुस्तानी संस्कृति को 'समय' के अप्राकृतिक बँटवारे के साथ प्रस्तुत किया है। नून० मीम० राशिद 'आग का दरिया' के विषय में लिखते हैं—

“जहाँ तक इस उपन्यास के विषय का संबंध है यह अपने अधिकतर विस्तार के बावजूद हिन्दुस्तान की जनता के एक वर्ग की दास्तान है। यह यू० पी० के मुसलमान का दुख है। दुख का कारण कशमकश है जिसमें हिन्दुस्तान के बँटवारे ने उसे ग्रस्त कर रखा था।”<sup>31</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने हिन्दुस्तानी संस्कृति की पृष्ठभूमि में देश के बँटवारे से प्रभावित व्यक्ति के एकाकीपन को उसी प्रकार प्रस्तुत किया है जिस प्रकार ईलियट ने प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात यूरोप में फैले दुख और एकाकीपन को प्रस्तुत किया है। महमूद अयाज़ लिखते हैं—

“प्रत्येक युग में मनुष्य की आत्मा की समस्याएँ अनादिकाल व अनंतकाल से हैं। अनेक पात्रों के बीच में ढाई हजार वर्ष का समय फैला हुआ है लेकिन दुख का दर्शन आत्मा के एकाकीपन की समस्या दिल की घृणा की स्मरण शक्ति की यातना और खामोशी का सन्नाटा उन सबसे हर बार और प्रत्येक युग में साक्षात्कार हुआ है।”<sup>32</sup>

‘आग का दरिया’ का कैनवास बहुत विस्तृत है। कुर्रतुलऐन हैदर ने हजारों साल की विस्तृत पृष्ठभूमि को उपन्यास के कैनवास पर फैला दिया है। इस प्रकार हिन्दुस्तान का कई हजार साल पुराना इतिहास, संस्कृति, दर्शन और रीति रिवाज इस उपन्यास में सिमट कर जीवंत हो उठे हैं।

कुर्रतुलऐन हैदर ने बुद्धमत, हिन्दू धर्म और उपनिषद के दर्शन पर लम्बी बहस की है उसमें अतीत का चित्रण है। कुर्रतुल ऐन हैदर ने ‘आग का दरिया’ में इतिहास का सहारा लेकर सदियों पुरानी संस्कृति तथा धार्मिक रीतियों में अभिव्यक्त प्रेम और त्याग को तलाश करने का प्रयास किया है। उन्होंने संस्कृति पर विशेष

बल दिया है तथा सैकड़ों वर्षों में फैले हुए विभिन्न सांस्कृतिक युग को लगातार ऐतिहासिक ज्ञान के दर्पण में प्रस्तुत कर दिया है। इतिहास और राजनीतिक ज्ञान के माध्यम से जो दर्शन उसमें उभरता है उसमें व्यक्तिगत और सामूहिक अस्तित्व की पहचान, आस्था का विस्तार और जीवन की नवीनता को एक इकाई में गुंफित कर दिया है। इसके साथ ही आधुनिक जीवन की जटिलताओं और नई राष्ट्रीय और सांस्कृतिक शक्तियों के उत्थान को भी प्रस्तुत किया है। कुर्रतुलऐन हैदर ने बँटवारे से प्रभावित लोगों के मनोविज्ञान को समझने का भी प्रयास किया है। व्यक्ति की वेदना, अकेलापन मानसिक उथल-पुथल, आंतरिक द्वन्द्व को प्रस्तुत उदाहरण में देखा जा सकता है—

“उन सबके बीच में उन सबसे घिरी हुई वह तन्हा खड़ी थी क्योंकि अन्तिम अनुभव में पता चलता है कि मनुष्य बिल्कुल अकेला है। उसके बावजूद हम चारों ओर इंसानों से विभिन्न प्रकार के एक्वेशन स्थापित करने के प्रयास में लगे रहते हैं। जब यह एक्वेशन गलत होने शुरू हो जाते हैं तो यह भी पता चलता है कि हम बेहद मामूली हैं।”<sup>33</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने अपने इस उपन्यास में प्लाट की स्वतंत्र तकनीक को अपनाया है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि ‘आग का दरिया’ की कथावस्तु में तारतम्यता तथा सुसंबद्धता की कमी खटकती है। लेकिन आंतरिक सतह पर पात्रों की मानसिक तथा संवैदानिक प्रवाह में एक निरंतरता और व्यवस्था उपस्थित है।

‘आग का दरिया’ उपन्यास की इस तकनीक को अधिकाँश उर्दू आलोचकों ने ‘शऊर की रौ’ की तकनीक (Stream of consciousness) माना है। इसलिए इसमें प्लाट और कथा पर बल न देकर पात्रों के मानसिक विश्लेषण पर बल दिया गया है क्योंकि शऊर की रौ की तकनीक पर आधारित उपन्यास की माँग यही है। इसके संबंध में प्रोफेसर अब्दुस्सलाम लिखते हैं —

“प्राचीन उपन्यास में रूचि का तज़करह कहानी होती थी। मगर शऊर की रौ के उपन्यास में कहानी केवल नाम की होती है इसलिए पारम्परिक उपन्यास की तरह उसमें कोई प्लाट नहीं होता। उसमें सब कुछ पात्र की संवेदनाएँ होती हैं। उपन्यासकार अपने कैमरे का रूख पात्र की संवेदनाओं की ओर मोड़ देता है। पाठक पात्र की संवेदनाओं का अध्ययन स्वयं कर सकता है।”<sup>34</sup>

‘आग का दरिया’ के यह चार युग (प्राचीन भारत, मध्यकाल, अंग्रेजों का युग तथा नया युग जो बँटवारे से पहले तथा बाद पर आधारित है) हिन्दुस्तान की सांस्कृतिक आत्मा के विभिन्न रूपक है। कुर्रतुलऐन हैदर ने प्रत्येक युग की सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन की झलकियाँ बड़ी कुशलता से प्रस्तुत की हैं। इस उपन्यास के मुख्य पात्रों में गौतम, चम्पा, हरिशंकर कमाल तथा ऐशले प्रत्येक युग में उपस्थित हैं जो विभिन्न मनुष्यों के आचरण के प्रतिनिधि हैं। यह लोग ऐतिहासिक यात्रा करते हुए उपमहाद्वीप के बँटवारे और उसके बाद के युग तक आते हैं और उपन्यास की प्रवृत्ति को विचारात्मक प्रवृत्ति का वाहक बना देते हैं।

‘आग का दरिया’ का प्रारम्भ ढाई हजार साल पहले की हिन्दुस्तानी संस्कृति से होता है जो श्रावस्ती और पाटली पुत्र में परवान चढ़ी। इस युग का प्रतिनिधि गौतम नीलम्बर है। इस युग में हिन्दुस्तान के विभिन्न धर्म और दर्शन फले फूले। एक ओर वैदिक धर्म का दौर था तो दूसरी ओर गौतम बुद्ध की शिक्षा भी फैल रही थी। गौतम नीलम्बर, दर्शन का छात्र है। वह ब्रह्मचारी और कलाकार है। वह हर समय हृदय की शान्ति के विचार में लगा रहता है। हरिशंकर ने भी सब कुछ त्याग दिया है वह भी शान्ति की खोज में है। गौतम और हरिशंकर की मित्रता हो जाती है परन्तु दोनों के दृष्टिकोण में भिन्नता है। दोनों में विस्तृत वाद-विवाद होते हैं। गौतम इस बात से चिंतित है कि एक अकेला मनुष्य और उसके सामने बासठ विभिन्न दर्शन हैं, वह किसे अपनाए और किसे छोड़ दे—

**“बासठ विभिन्न दृष्टिकोण और जीवन एक है और इंसान अकेला है।”<sup>35</sup>**

कुर्रतुलऐन हैदर यहाँ अनेक सम्प्रदाय और मत मतान्तर पर व्यंग्य करती दिखाई देती हैं जो मनुष्य को जोड़ने का नहीं बाँटने का कार्य करता है।

गौतम नीलम्बर चम्पक से प्रेम करता है। एक रात उसके साथ मदिरा पीता है। उस रात के बाद चम्पक उसे नहीं मिलती है लेकिन गौतम उसको भूल नहीं पाता है। अचानक चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना, श्रावस्ती पर आक्रमण कर देती है। गौतम शान्ति व अमन की लड़ाई में शामिल हो जाता है। युद्ध में उसकी उँगलियाँ कट जाती है। वह अपने अनुभव और विचार को प्रकट नहीं कर पाता है क्योंकि

कलाकार के लिए उसकी उँगलियाँ ही सब कुछ होती है। गौतम नीलम्बर अब अभिनय की दुनिया में कदम रखता है। नाटक के मण्डप में एक दिन तमाशाइयों के साथ बैठी हुई चम्पक दिखाई देती है जिसकी माँग में सिन्दूर और गोद में बच्चा था। नाटक समाप्त होने के पश्चात वह एक ऐसी दिशा की ओर चल पड़ता है जिसके संबंध में वह कुछ नहीं जानता। नदी को तैर कर पार करते हुए वह तेज़ लहरों की चपेट में आ जाता है। पुराने युग का गौतम नीलम्बर जो दरियाओं को कवेल तैर कर पार किया करता था अंत में भी दरिया को तैरकर पार करता हुआ दिखाया गया है। उपन्यास का प्रथम भाग यहीं समाप्त होता है। जब एक युग समाप्त हो जाता है तो वह अपने युग के सांस्कृतिक, सामाजिक तथा ऐतिहासिक पत्थरों के साथ पानी में डूब जाता है और फिर नदी के किनारे पर एक दूसरे ऐतिहासिक युग का प्रारंभ होता है। कुर्तुलऐन हैदर पुराने युग के अंत होने और मध्यकाल के प्रारम्भ होने का वर्णन प्रतीकात्मक शैली में इस प्रकार करती हैं —

“सरजू की मौजें गौतम नीलम्बर के ऊपर से गुज़रती हुई चली गई।  
अबुल मंसूर कमालउद्दीन ने किनारे पर पहुँचकर अपना श्याम किरन  
घोड़ा बरगद के पेड़ के नीचे बाँधा और चारों ओर नज़र डाली।  
उसकी थकी हुई आँखों को यह जगह बड़ी सुहानी मालूम हुई।”<sup>36</sup>

प्लाट की दृष्टि से कुर्तुलऐन हैदर ने दोनों युगों में एक संबंध और निरंतरता उत्पन्न करने का प्रयास किया है। इस प्रकार अबुल मंसूर कमालउद्दीन के साथ सरजू के किनारे नए युग का प्रारम्भ होता है।

दूसरे युग में हम अबुल मंसूर कमालउद्दीन से मिलते हैं। वह महमूद गज़नवी के युग में हिन्दुस्तान आता है लेकिन धीरे-धीरे इस्लामी संस्कृति हिन्दुस्तानी वातावरण और संस्कृति से मिल जाती है। इस प्रकार हिन्दुस्तान में एक नई हिन्द इस्लामी संस्कृति का अस्तित्व सामने आता है जिसकी चर्चा कुर्तुल ऐन हैदर इस प्रकार करती हैं —

“हज़ारों लाखों मील दूर से आया हुआ धर्म हिन्दुस्तान में अपने चारों ओर अपने वातावरण से प्रभावित होता रहा। उसकी जड़े अजनबी सर ज़मीन पर फैलने लगीं।”<sup>37</sup>

इस प्रकार एक सामासिक संस्कृति का उदय होता है। इस युग में हम देखते हैं कि हिन्दुस्तान में मुसलमानों का राज्य दृढ़ हो चुका है दिल्ली और अन्य स्थानों पर मुस्लिम बादशाह हैं। अबुल मंसूर कमालुद्दीन जौनपुर के शाह हुसैन शर्की के पुस्तकालय का निदेशक है। प्रारम्भ में ही उसका परिचय चम्पा से होता है जो पहले युग की चंपक का नया रूप है। अबुल मंसूर कमालुद्दीन उससे प्रेम करता है परन्तु धर्म, विवाह के रास्ते में बाधक बन जाता है। कमालुद्दीन के व्यक्तित्व नयी-नयी चीजों को ग्रहण करने की क्षमता है। वह बादशाह के साथ युद्धों में भाग लेता है। कुछ समय पश्चात् युद्ध में मृत्यु का ताण्डव देख वह दुखी हो जाता है और एक अनजान यात्रा पर निकल जाता है और भटकता हुआ काशी पहुँचता है। यह सूफियों और भक्ति आन्दोलन का युग था। इस युग में शंकराचार्य, बल्लभाचार्य, रामानंद और कबीर की शिक्षा फैल रही थी यहाँ कमालुद्दीन कबीर से प्रभावित हो जाता है। उसके विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन होता है और वह बंगाल पहुँचकर एक शूद्र लड़की शीला से शादी कर लेता है और उसका नाम बदलकर आमना बीबी रख देता है। शीला से शादी करने के बाद उसे शान्ति प्राप्त हो जाती है। वह प्रेम का पक्षधर तो था ही तथा हिन्दुस्तानी संस्कृति एवं सभ्यता में भी पूरी तरह रंग जाता है। वह भारतीय भाषा में शायरी करता है तथा कहानियाँ लिखता है। उस समय शेरशाह के सिपाही उसे दोषी ठहराकर उसे मार डालते हैं क्योंकि उसके पुत्रों ने मुगल दरबार की सेवा स्वीकार कर ली थी।

तृतीय युग में हम प्रथम बार सरिल ऐशले से मिलते हैं। इस युग में हिन्दुस्तान पर अंग्रेजों का राज्य दृढ़ हो चुका है। सरिल हार्ड ऐशले कंपनी के लूटमार के युग का प्रतिनिधि है जो हिन्दुस्तान की दौलत तथा हिन्दुस्तानी जनता का शोषण कर रहे है। यहीं एक और पात्र अबुल मंसूर कमालुद्दीन बंगाली मुसलमान के रूप में सामने आता है। यह बंगाल के मजबूर बेबस किसानों और मल्लाहों का प्रतिनिधि है। बंगाल का गौतम नीलम्बर दत्त अनुपम योग्यता का स्वामी है। वह हिन्दुओं का प्रतिनिधि है। गौतम नीलम्बर दत्त सरिल का नायब है और सदैव उसकी मदद करता है। जब वह लखनऊ आता है तो चम्पा नामक तवायफ़ से बहुत प्रभावित होता है। चम्पा भी उसके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित होती है और

प्रेम करने लगती है मगर गौतम वापस बंगाल चला जाता है कुछ समय बाद वह पुनः लखनऊ आता है तो वहाँ उसे चम्पा बेहद कमज़ोर भिखारन, बुढ़िया के रूप में मिलती है। गौतम उसे एक रूपया दान के रूप में देता है। चम्पा नामक तवायफ़ को भिखारन बुढ़िया के रूप में दिखाकर कुर्रतुलऐन ने स्त्री जीवन की त्रासदी की ओर संकेत किया है।

नवाब कम्मन पतनशील नवाबों का प्रतिनिधि है। उपन्यास के इस भाग में लखनऊ की संस्कृति अपनी अनेक विशेषताओं और विषमताओं के साथ सामने आती है। इस युग में हिन्दुस्तान में एक नया ऐंग्लो इंडियन वर्ग सामने आता है जिसका वर्णन भी इस भाग में मिलता है।

उपन्यास का चौथा भाग बँटवारे से पहले और बाद के समय पर आधारित है। इस युग में गौतम, कमाल, हरीशंकर, चंपा के अतिरिक्त तलत, अप्पी, भय्या साहब तथा निर्मला आदि पात्र सामने आते हैं। यह पात्र शिक्षित, बुद्धिमान, इंटेलेक्चुअल और राजनीतिक ज्ञान रखने वाले नौजवान लड़के-लड़कियों के रूप में प्रस्तुत किये गए हैं। उनको मानसिक सतह पर स्थितियों का ज्ञान है लेकिन वह कुछ ठोस कदम उठाने में असफल रहते हैं। वे अपनी आकांक्षाओं को कल्पना के स्तर से उतार कर ठोस रूप नहीं दे पाते हैं। इस युग में काँग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच द्वन्द्व को भी दिखाया गया है।

भय्या साहब पाकिस्तान चले जाते हैं। गौतम, कमाल, चम्पा, तलत और निर्मला यूरोप चले जाते हैं। यहाँ लंदन और पेरिस का जीवन दिखाया गया है जहाँ शिक्षा राजनीति और बौद्धिक चिन्तन में वे व्यस्त रहते हैं। गौतम हिन्दुस्तानी हाईकमिशनर के कार्यालय में नौकरी कर लेता है। भय्या साहब पाकिस्तान की ओर से लंदन आए हुए हैं। 'निर्मला को टी० बी० की बीमारी हो जाती है और वह लंदन के एक अस्पताल में मर जाती है। कमाल रज़ा राष्ट्रप्रेमी हिन्दुस्तानी मुसलमानों का प्रतिनिधि है। उसे पाकिस्तान में कोई रुचि नहीं है। चम्पा की स्थिति भी ऐसी ही है। लेकिन वह पाकिस्तान और मुस्लिम लीग में रुचि लेती है। लखनऊ में भय्या साहब उससे प्रेम करते हैं मगर वह उसको स्वीकार नहीं करती है लेकिन जब वह पाकिस्तान जा रहे होते हैं तब व्याकुल हो उठती है। बाद में लंदन से डिग्रियाँ



लेकर वह हिन्दुस्तान में मुरादाबाद अपने चाचा के यहाँ आ जाती है। उसका पूरा ग्रुप भी लंदन से हिन्दुस्तान वापस आ जाता है। यहाँ जागीरदारी व्यवस्था समाप्त हो चुकी है। कमाल के पिता चिंतित होते हैं क्योंकि उनकी कोठी के कागजात भय्या साहब के नाम होते हैं अतः उस कोठी के उत्तराधिकारी भय्या साहब ही होते हैं। लेकिन संदेहात्मक होने के कारण यह कोठी कस्टोडियन के अधिकार में चली जाती है। कमाल अपने माता-पिता के साथ पाकिस्तान चला जाता है। पाकिस्तान से वह एक विस्तृत पत्र तलअत को लिखता है जिसमें पाकिस्तान की वर्तमान पॉलिसी की कड़ी आलोचना करता है। भय्या साहब के द्वारा कमाल को बारह सौ रूपया माहवार की नौकरी मिल जाती है। फिर वह सरकारी दौरे पर पूर्वी पाकिस्तान चला जाता है जहाँ उसका परिचय उसके सहपाठी से होता है। पूर्वी पाकिस्तान से होता हुआ वह हिन्दुस्तान आता है जहाँ वह चम्पा से मिलता है। मगर अपने दूसरे घनिष्ठ मित्रों से मिलने से बचता है। पुनः पाकिस्तान आकर वह अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त हो जाता है। प्लाट की नयी तकनीक होने के कारण उपन्यास की कथा के सूत्र बिखरे हुए दिखाई देते हैं लेकिन आंतरिक रूप से उनमें एक क्रमबद्धता भी व्याप्त है।

कुर्रतुलऐन हैदर ने इस उपन्यास में चरित्र-चित्रण की सतह पर नए प्रयोग किए और पश्चिमी तकनीक से लाभ उठाकर चरित्र-चित्रण को एक नई दिशा प्रदान की क्योंकि उन्होंने अपने अधिकतर उपन्यासों में शऊर की रौ और फलैश बैंक की तकनीक को अपनाया। अतः पात्र भी इसी तकनीक के साँचे में ढलकर सामने आते हैं। यहाँ पात्रों का परिचय नहीं कराया जाता है बल्कि वह स्वयं जीवन की समस्याओं और उसके पहलुओं को प्रस्तुत करते हुए विचारों के बहाव से जन्म लेते हैं। यहाँ पात्र अपनी सोच के द्वारा अपनी पहचान बनाते हैं। ऐसे उपन्यासों में घटना या पात्र के स्थान पर मानसिक व आंतरिक घटना तथा आंतरिक जीवन को विशेष महत्व प्राप्त होता है।

कुर्रतुल ऐन हैदर ने सर्वप्रथम उर्दू उपन्यासों में उच्च वर्ग के सभ्य, दूरदर्शी, इंसान दोस्त तथा इंटैलेक्चुअल पात्र दिए हैं। 'आग का दरिया' में विभिन्न पात्रों की सहायता से हिन्दुस्तानी संस्कृति का पूरा इतिहास प्रस्तुत कर दिया है। उपन्यास के

प्रत्येक युग में दुख-दर्द तथा वेदना उपस्थित है। संपूर्ण मानवता का दुख एक है जिसे कुर्रतुलऐन हैदर ने अपने पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

‘आग का दरिया’ में प्रमुख पात्र केवल पाँच हैं— गौतम, हरिशंकर, चम्पा, कमाल और सरल ऐशले। यह पात्र नामों के थोड़े से अंतर के साथ विभिन्न युगों में विभिन्न रूप बदल कर उपमहाद्वीप की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक कड़ियों को निरंतरता प्रदान करते हैं और पाठक के मन पर अपना एक अलग प्रभाव छोड़ते हैं। उसके पात्र अधिकतर लक्षणात्मक हैं। ‘आग का दरिया’ के दो मुख्य पात्र गौतम और चम्पा के संबंध में मुजतबा हुसैन लिखते हैं—

“मालूम नहीं चम्पा का नाम कुर्रतुल हैदर के मन में क्यों आया ? उस नाम में जो खुशबू है इसिलए या प्राचीन भारत को उभारने के लिए। उसकी भी संभावना है कि बेगमात अवध का इतिहास उनकी नज़र के सामने रहा हो और शाह ज़मन गाज़ी उद्दीन हैदर के युग ने उनके मन में यह नाम ताज़ा कर दिया हो..... चम्पक कहीं हिन्दुस्तान की आत्मा तो नहीं है जो विभिन्न शासकों की बाँदी रही है फिर भी यह ख़याल होता है कि कहीं यह प्रतीकात्मक औरत तो नहीं जो इतिहास के विभिन्न युगों में विभिन्न भूमिका निभा चुकी है। माँ, तवायक, इश्क बाज़ो का खिलौना .... जो पहले भी अकेली थी और आज भी अकेली है.... और फिर यह गौतम कौन है ? केवल एक शब्द जो केवल महात्मा बुद्ध की ओर संकेत करता है। या छात्र या अनादिकालीन आदमी जो युग के साथ-साथ बदलता रहता है। क्या यह दोनों पात्र अनादिकालीन आदमी और अनादिकालीन औरत का प्रतिनिधित्व करते हैं।”<sup>38</sup>

गौतम हिन्दुस्तान के बौद्धिक व्यक्ति का प्रतिनिधि पात्र है। वह प्रत्येक युग में मुख्य पात्र के रूप में उपस्थित दिखाई देता है। प्राचीन युग का गौतम नीलम्बर अनादिकालीन व्यक्ति का प्रतीक है जिसकी आत्मा मनुष्य और उस ब्रह्माण्ड के रहस्यों को समझने के लिए बेचैन और बेकरार है। गौतम नीलम्बर वैदिक युग के दर्शन के छात्र के रूप में सामने आता है जो इस बात से बहुत चिंतित है कि एक अकेला मनुष्य और उसके सामने विभिन्न मत हैं वह किसे अपनाए और किसका त्याग करे। गौतम नीलम्बर ज्ञान की प्यास बुझाने के लिए शहरों और जंगलों में घूमता रहता है। वह चम्पक से प्रेम करता है। एक रात उसके साथ नृत्य करता है, मदिरा पीता है। उस रात के बाद फिर उसे चम्पक नहीं मिलती लेकिन गौतम

उसकी याद को अपने मन से लगाए बैठा है। दूसरा गौतम सरल का बंगाली क्लर्क गौतम नीलम्बर दत्त है। वह अध्ययन करता है। कम्पनी की नौकरी से इस्तीफा देने के बाद वह हिन्दू कॉलेज में प्रवेश ले लेता है। यहाँ उसकी मित्रता देवेन्द्रनाथ टैगोर से हो जाती है। उनके प्रभाव से नीलम्बरदत्त ब्रह्म समाज का उत्साही और सक्रिय सदस्य बन जाता है। बाद में वह प्रोफेसर हो जाता है। उस नीलम्बर की दोस्ती मटिया बुर्ज वाले नवाब कम्पन से हो जाती है। उनकी दोस्ती हिन्दू मुस्लिम दोस्ती की प्रतीक है। गौतम नीलम्बर दत्त युवावस्था में एक बार लखनऊ आता है, जहाँ उसका परिचय चम्पा बाई से होता है। चम्पा बाई उसको अपना दिल दे देती है। फिर बुढ़ापे में जब प्रो० नीलम्बर दत्त लखनऊ आता है, तो वही चम्पा बाई उसे भिखारन के रूप में दिखाई देती है। आधुनिक युग के गौतम की आत्मा भी प्यासी है यद्यपि उसे जीवन की अधिकतर सुख समृद्धि प्राप्त है। वह हिन्दुस्तानी फॉरेन सर्विस में है। गौतम ने विदेश नीति पर दो किताबें लिखकर खूब प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। सांसारिक सफलता उसके पैर चूम रही है लेकिन वह फिर भी उदास और अकेला है। वह एक साथ निर्मला और चम्पा दोनों की ओर आकर्षित होता है और समझ नहीं पाता कि वह एक साथ दोनों लड़कियों को कैसे चाह सकता है। वह अपने मन की बेचैनी को समझना चाहता है लेकिन समझ नहीं पाता। अंततः बेचैनी उसका भाग्य बन जाती है। प्राचीन युग से आधुनिक युग तक इस विस्तृत यात्रा में गौतम को चैन नहीं मिलता है। वह बेकरार और बेचैन ही रहता है। और उपन्यास के अंत में वह एक थका हारा खिन्न-अकेला और पराजित मनुष्य का प्रतीक बन जाता है—

“और उसने देखा कि चारों ओर खामोशी छाई हुई है और उसमें हमेशा की तरह वह अकेला उपस्थित है। संसार का अनादिकालीन मनुष्य थका हुआ। पराजित, आनन्दित, आशावादी मनुष्य जो ईश्वर में है और स्वयं ईश्वर है”<sup>39</sup>

‘आग का दरिया’ के मुख्य पात्रों में चम्पा एक ऐसी पात्र है जो प्रत्येक युग में हिन्दुस्तानी औरत की प्रतीक है जो अनादिकाल से अकेली और अतृप्त है। त्याग और बलिदान उसका भाग्य है। चम्पक से लेकर चम्पा अहमद तक वह स्त्री के विभिन्न रूप का प्रतिनिधित्व करती है। प्राचीन युग में चम्पक अयोध्या के राजगुरु

की बेटी है, दौलत सम्मान और प्रतिष्ठा उसके पैरों में है। वह अपने युग की विवेकशील और पढ़ी लिखी स्त्री है। वह गौतम से जीवन और त्याग के दर्शन पर बहस करती है। वह बहुत अच्छी नृत्यांगना भी है और गौतम से प्रेम करती है बाद में स्थिति बदल जाती है। उसके क्षेत्र पर चन्द्रगुप्त का आक्रमण होता है। राजा की हत्या के बाद चम्पक को दूसरी राजकुमारियों के साथ पकड़ कर पाटलीपुत्र लाया गया। विजय प्राप्त करने वालों ने अयोध्या के राजघराने की लड़कियों से शादियाँ रचाई। चम्पक का विवाह चाणक्य महाराज के पचास वर्षीय ब्राह्मण अफसर से कर दिया गया। इस प्रकार प्राचीन युग की एक विवेकशील और पढ़ी लिखी स्त्री की बेबसी का चित्र हमारी आँखों के सामने आता है—

“उसे वही करना पड़ा जो औरत के स्तर से उसके भाग में लिखा था। और जो संभवतः उसका कर्तव्य या चम्पक का धर्म था कि उसकी उपासना और उसकी सेवा करे क्योंकि वह उसका पति था। और वह उसकी सेवा करती थी जैसे पाटली पुत्र की अन्य हजारों पत्नियाँ करती थीं।”<sup>40</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने अपने स्त्री पात्रों की बेबसी, उनके साथ किये जाने वाले अन्याय तथा उनके एकाकीपन का मार्मिक चित्रण किया है। वह पराजय को औरत के भाग्य से जोड़कर देखती हैं।

दूसरे युग में चम्पा अयोध्या के एक पण्डित की लड़की चम्पावती के रूप में दिखाई देती है। यह युग हिन्द इस्लामी संस्कृति के सम्मिश्रण का युग था। पण्डित कन्या चम्पावती अरब देश से आए हुए अबुल मंसूर कमालुद्दीन से प्रेम करती है और उसे अपना आराध्य मानने लगती है। अबुलमंसूर कमालुद्दीन एक ऐसा पात्र है जो सामासिक संस्कृति का प्रतीक है। वह चम्पावती से मुस्लिम धर्म अपनाने को कहता है उसके उत्तर में चम्पावती उससे कहती है—

“मगर हम तो तुमको यूँ ही अपना पति मानते हैं। वह यह सुनकर चकरा गया कि वह कैसे मेरा तुम से ब्याह कहाँ हुआ है.... उससे क्या होता है वह हंसती रही। हम तुमको अपना मालिक ख्याल करते हैं यह बात तुम नहीं समझ सकते।”<sup>41</sup>

अबुल मंसूर कमालउद्दीन कुछ दिनों के बाद उसे भूल जाता है लेकिन चम्पावती अपना सारा जीवन प्रतीक्षा करती हुई अकेलेपन के साथ गुज़ार देती है। प्राचीन युग की चम्पक और मध्यकाल की चम्पक में बहुत अंतर है चम्पावती केवल प्रेम करना चाहती है, प्रेम को वह धर्म मानती है। चम्पक एक बुद्धिजीवी और विवकेशील स्त्री के रूप में हमारे सामने आती है। इस प्रकार दोनों के चरित्र में बहुत अंतर है।

तीसरे युग में चम्पाबाई लखनऊ की प्रसिद्ध वेश्या है। सरल ऐशले चम्पाबाई में बहुत दिलचस्पी लेता है। जब भी वह लखनऊ आता है चम्पा से ज़रूर मिलता है उस पर हजारों रुपये खर्च करता है। चम्पा के प्रेमियों में लखनऊ के बहुत बड़े घराने के नवाब कमाल रज़ा खाँ बहादुर उर्फ़ नवाब कम्मन और लखनऊ के रेजीडेन्ट भी शामिल हैं। यह लखनऊ गाज़ीउद्दीन हैदर का है जिसमें वेश्या को विशेष महत्व प्राप्त था तथा अच्छे परिवार के लड़के महफ़िल के तौर तरीक़े सीखने के लिए कोठों पर जाते थे। गौतम नीलम्बर दत्त युवास्था में एक बार बंगाल से लखनऊ आता है। चम्पा बाई उससे आकर्षित होकर उसे दिल दे बैठती है और उससे कहती है —

“हम को छोड़कर मत जाओ। तुम हमें बहुत ज़्यादा भा गए हो। नीलम्बर उसे खुदा हाफिज़ कहने जाता है

तो चम्पा उससे कहती है :

“हमारे शहर का दस्तूर है, दुआ देते समय कहते हैं सिवा ग़म हुसैन के खुदा कोई ग़म न दे। यह दुआ मैं तुमको नहीं दे सकती। तुम हुसैन का ग़म भी नहीं जानते। तुम तो जानते ही नहीं ग़म किसे कहते हैं।”<sup>42</sup>

प्रौढ़ावस्था में जब नीलम्बर दत्त प्रोफेसर नीलम्बरदत्त बनकर लखनऊ आता है तो उसे एक भिखारन यही आवाज़ लगाती हुई दिखाई देती है। यह भिखारन वही चम्पा बाई है उसे देखकर वह दंग रह जाता है। कुर्रतुलऐन हैदर ने चम्पाबाई की दुर्दशा के माध्यम से यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि वेश्या के रूप में स्त्री का शोषण किस प्रकार किया जाता है। प्रेम और समत्व की प्रतिमूर्ति को पहले तो कोठे की शान-शौकत का हिस्सा बनाया जाता है और बुढ़ापा आता है तो उसे

भिखारन का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश कर दिया जाता है। चम्पाबाई लखनऊ के सामाजिक तथा सांस्कृतिक पतन का प्रतीक है।

अन्तिम बार चम्पा हमारे सामने चम्पा अहमद के रूप में आती है। यह एक मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है। जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने लखनऊ और वहाँ से इंग्लैण्ड जाती है। चम्पा अहमद का चरित्र अपने युग के दूसरे पात्रों के साथ मिलकर नवीन जाति अथवा युग के मानसिक और संवेदनात्मक कशमकश का प्रतीक बन जाता है। चम्पा अहमद किसी भी स्थिति में अपने अस्तित्व को बचाने का पूर्ण प्रयास करती है। उसमें दुख और पीड़ा से सामना करने की शक्ति है। चम्पा अहमद प्रतिकूल स्थितियों का सामना बड़ी हिम्मत से करती है। जिस समय कमाल रज़ा जैसा नेशनलिस्ट पाकिस्तान जाने पर मजबूर हो जाता है दूसरी ओर चम्पा का हिन्दुस्तान में ही रहने का निर्णय उसकी संकल्प शक्ति का उदाहरण है। चम्पा अहमद कमाल रज़ा से कहती हैं —

“मैं आख़िकार बनारस वापस जा रही हूँ तुमको याद है मैंने नीम के किनारे बोट हाउस में तुमसे कहा था : मैं वापस जाना चाहती हूँ कोई साथ ले जाने वाला नहीं मिलता अब मैंने देखा कि किसी दूसरे का सहारा ढूँढना किस क़दर मूर्खता थी मैं खुद ही बनारस लौटती हूँ। जानते हो मेरे पैत्रिक शहर का नाम क्या है ?” “शिवपुरी।”<sup>43</sup>

चम्पा अहमद का चरित्र ‘आग का दरिया’ के अन्य पात्रों की तुलना में सबसे अधिक शक्तिशाली, और जानदार रूप में सामने आता है।

‘आग का दरिया’ के तीसरे युग में अबुल मंशूर कमालउद्दीन बंगाली मुसलमान के रूप में सामने आता है जो मजबूर और बेबस किसानों और नाविकों का प्रतिनिधि है। जो वर्षों से शासक वर्ग के शोषण का शिकार है। उपन्यास के अन्तिम युग में कमाल रज़ा देशभक्त हिन्दुस्तानी मुसलमानों का प्रतिनिधि है। लेकिन बँटवारे के बाद हिन्दुस्तान में उसको संदेह की दृष्टि से देखा जाता है और पाकिस्तान में भी वह शक के घेरे में रहता है। हिन्दुस्तान में उसे पाकिस्तानी जासूस समझा जाता है। उसका पूरा अस्तित्व एक प्रश्न चिन्ह बनकर रह जाता है। वह कहाँ जाए क्या करे कुछ समझ नहीं पाता। उसकी इस विकट स्थिति का चित्रण कुर्रतुलऐन हैदर इन शब्दों में करती हैं—

“ट्रेन चली। दोनों तरफ़ के सिपाही डिब्बों में चढ़े। यकायक दूसरा देश शुरू हो गया। दो सरदार जी घास पर खड़े पहरा दे रहे थे।

मैं अब पाकिस्तान में हूँ। हिन्दुस्तान से आया हूँ। मुहाजिर। यू०पी० का मुसलमान।

मुहाजिर ! शरणार्थी । निर्वासी

जब ट्रेन ने बॉर्डर क्रॉस किया तो वह जो इतने दिनों से अपनी सारी शक्ति लगाकर आँसू रोक रहा था.... बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगा। फिर उसने महसूस किया कि उसका हम सफ़र जो पुलिस का अफ़सर था और अमृतसर से वापस जा रहा था। उसे ग़ौर से देख रहा है।

कमाल बहुत शर्मिन्दा हुआ और उसे लगा जैसे पुलिस अफ़सर कह रहा है तुम अब तक दो भिन्न वफ़ादारियों के दो राहे पर खड़े हो। लानत है तुम पर।<sup>44</sup>

कमाल रज़ा पात्र के माध्यम से कुर्रतुलऐन हैदर ने मुसलमानों की मानसिकता का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। वे बाहर से यहाँ आए। यहाँ की संस्कृति में रच बस गए और पुनः उन्हें पाकिस्तान बहिष्कृत कर दिया गया। इस स्थिति के विषय में वे लिखती हैं—

“अबुल मंसूर कमालउद्दीन का किस प्रकार हिन्दुस्तान में प्रवेश हुआ था और किस प्रकार हिन्दुस्तान से निकल गया।<sup>45</sup>

नवाब कम्मन पतनशील नवाबों का प्रतिनिधि है। इसके अतिरिक्त हरिशंकर भी उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पात्र है। जिसकी गौतम नीलम्बर और कमाल रज़ा से मित्रता है। गौतम नीलम्बर और हरिशंकर के दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न हैं। हरिशंकर गौतम से शब्द के दर्शन पर बहस करते हुए कहता है —

“मगर तुम्हारे हम नाम-गौतम-ने तो कहा था कि अगर आवाज़ अबदी है तो ज़बान से पहले ही शब्द सुनाई दे जाने चाहिए। क्योंकि आकाश और हमारे कानों के बीच कोई रोक नहीं।

गौतम नीलम्बर हरिशंकर से कहता है —

“तुम कैसे दार्शनिक हो जो शब्द में विश्वास नहीं रखते।<sup>46</sup>

उपन्यास के अंत में गौतम नीलम्बर और हरिशंकर उस मन्दिर की सीढ़ियों पर मिलते हैं जहाँ वह लगभग ढाई हजार साल पहले मिले थे —

"दरिया के किनारे पहुँच कर वह एक शिकस्ता मन्दिर की सीढ़ियों पर जा बैठा .....  
 "तुम कौन हो भाई" नीचे से किसी ने पूछा।  
 "मैं हूँ "गौतम ने लेटे लेटे जवाब दिया।"<sup>47</sup>

सरल ऐशले एक पादरी का लड़का है जो ईस्ट इंडिया कम्पनी में नौकरी के लिए हिन्दुस्तान आता है। हिन्दुस्तानियों के लिए उसके हृदय में घृणा है और उसका रहन-सहन बिगड़े हुए नवाबों का सा था।

तलत का चरित्र भी महत्वपूर्ण है। वह सामासिक संस्कृति की प्रतिनिधि है। उसके अतिरिक्त रेखा, शान्ता, रौशन आरा तथा शाहरूख सुल्तान आदि उपन्यास के बाहरी सतह पर दिखाई देते हैं। 'आग का दरिया' का अधिकांश पात्र उच्च वर्ग के हैं। लेकिन उनमें आम जीवन के चिन्ह भी मौजूद हैं। चम्पा अपने गाँव और गाँव के लोगों का उल्लेख इन शब्दों में करती है—

'कदीर और कमरन और राम अवतार और राम दया और हमारे गाँव के काश्तकार और हमारे इक्के वाले और पनवाड़ी और हमारे ज़रदोज़ जो चिकन काढ़ते—काढ़ते अन्धे हो जाते थे और हमारे बागों के कन्जड़े और पालकियों के कहार। यह सब हमारी पृष्ठभूमि है, जिसे तुम कभी न जानोगे।'<sup>48</sup>

'आग का दरिया' के चरित्र-चित्रण में विस्तार और फैलाव है। इसके अधिकतर चरित्र प्रतीकात्मक हैं। इसके संबंध में डॉ० अहसन फारूकी लिखते हैं—

'कुर्तुल ऐन हैदर वर्जीनिया वुल्फ़ से तीन बातों में आगे निकल जाती हैं एक यह कि उनका उपन्यास बड़ा विस्तृत ज़माना घेरता है, दूसरी यह कि उसमें फैलाव बहुत अधिक है और तीसरी यह कि रचना में उन्होंने वह कमाल दिखाया है कि उनको जीनियस कहना पड़ता है।'<sup>49</sup>

कुर्तुलऐन हैदर 'आग का दरिया' उपन्यास में की संवाद योजना बड़ी सतर्कता और कुशलता से करती हैं। उनके पात्र सामान्य नहीं है वह अपना प्रतीकात्मक महत्व रखते हैं। वे धर्म और दर्शन की गूढ़ बातों को बड़ी सरलता से करते हैं। वे विभिन्न दर्शनों पर बहस करते हैं। गौतम को अधिक भ्रमण न करने का दुख है तो हरिशंकर कहता है—



“केवल उसी का दुख है ? तुमने दुख के दर्शन पर कितना गौर किया है, भाई गौतम ?

गौतम नीलम्बर ब्रह्मचारी है और एक आश्रम में रहता है। हरिशंकर की भी यही स्थिति है। दोनों ‘समय’ की शक्ति पर विचार विमर्श करते हैं—

‘हरिशंकर गौतम से कहता है— ‘गौतम मैंने अंदाज़ा लगाया कि ‘समय’ बहुत ख़ौफ़नाक चीज़ है। क्या तुम कभी ‘समय’ के ख़ौफ़ से लर्जे हो।”

“हाँ” । गौतम ने आँखें बंद किए—किए जवाब दिया। <sup>50</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने पात्रों के अनुकूल स्वाभाविक संवादों की योजना की है। गौतम और हरिशंकर दोनों विद्यार्थी हैं जो दर्शन तथा साहित्य का अध्ययन करते हैं। गौतम को ज्ञान प्राप्त करने का बहुत शौक है। लेकिन वह काशी की पाठशाला को पसंद नहीं करता और हरिशंकर से कहता है—

“मैं श्रावस्ती में पढ़ता हूँ ! काशी की पाठशाला तो केवल महापण्डित तैयार करती है।”

“और तुम क्या बनना चाहते हो ?”

“यही तो समझ में नहीं आता।”

“तुम्हारे जीवन का उद्देश्य क्या है गौतम नीलम्बर ?

गौतम के समक्ष जीवन का उद्देश्य स्पष्ट नहीं है। वह हरिशंकर को स्पष्ट रूप से उत्तर नहीं दे पाता है।

“गौतम ने गुस्से से पूछा — “तुम काहे से भाग रहे हो” ?

“हरिशंकर ने कहा — “तुम काहे की तलाश में हो” ?

.....  
“तुम खुद परस्त हो।” गौतम ने कहा

“और तुम ज़हन के गुरुर में मुब्तिला” हरिशंकर ने कहा।”<sup>51</sup>

उपर्युक्त संवाद के माध्यम से गौतम और हरिशंकर की मानसिकता का परिचय मिल जाता है।

कमाल और चम्पा का धर्म अलग है परन्तु दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं। उन दोनों की प्रेमपूर्ण वार्तालाप का एक उदाहरण इस प्रकार है—

“तुम भी ब्रह्मन हो और तुम्हारी ज़ात और ऊँची हो जाएगी,  
सय्यदानी कहलाओगी, मुझसे ब्याह कर लो न भई”

“मगर हम तो तुमको यूँ ही अपना पति मानते हैं।”

वह यह सुनकर चकरा गया। “वह कैसे।

मेरा तुमसे ब्याह कहाँ हुआ। यानि कि ।

मैं— तुम। मेरा मतलब है कि।”

“उससे क्या होता है ?” वह हँसती रही।

“हम तो तुमको अपना मालिक ख़याल करते हैं।

यह बात तुम नहीं समझ सकते।”

वह इस तरह बे फ़िकरी से हँसा

“हम तो सिर्फ़ एक आदमी को अपना पति समझेंगे और वह

आदमी तुम हो, हमारा तुम्हारा तो जन्म—जन्म का साथ है।”

‘जन्म—जन्म का साथ क्या खुराफ़ात है।’ कमाल ने भँवें

चढ़ाकर कहा।”<sup>52</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर की अनुभूतिपरक सूक्ष्म दृष्टि उनके वातावरण चित्रण को आकर्षक बनाती है। वह जीवन के खोखलेपन को तीव्रता के साथ प्रस्तुत करने के लिए रोमांटिसिज़्म को हल्की सी चाशनी के साथ प्रस्तुत करती हैं। ‘आग का दरिया’ उपन्यास में घाट का एक दृश्य कुर्रतुलऐन हैदर शब्दों के माध्यम से साकार कर देती हैं—

‘गौतम नीलम्बर को नदी तैरकर पार करना थी घाट पर तीन लड़कियाँ एक तरफ़ बैठी बातें कर रही थीं। उनके हंसने की आवाज़ यहाँ तक आ रही थी। लड़कियों कितनी बातूनी होती हैं। गौतम ने सोचा उन्हें भला कौन सी समस्याएँ हल करनी है। उसका दिल चाहा कि नज़र भर उन्हें देख ले। मुख्य रूप से उस केसरी साड़ी वाली लड़की को, जिसने बालों में चम्पा का फूल उड़स रखा था”<sup>53</sup>

चाँदनी रात में जौनपुर के एक खण्डहर का दृश्य इन शब्दों में प्रस्तुत किया गया है—

‘मद्धम सी रौशनी सारे में फैल गई। पूर्णिमा का चाँद खण्डर की टूटी हुई छत से नीचे झाँक रहा था और उसकी किरणों ने लाल पत्थर के टूटे हुए फर्श पर अजीब—अजीब कोण बना दिए थे। फर्श पर विभिन्न अस्पष्ट चिन्ह बने थे जिनको सैंकड़ों बरसातों ने मिटाकर बहुत धुँधला कर दिया था। यह त्रिशूल और जीवन का पेड़ और ज़मीन का कँवल और ब्रह्मण्ड का पहिया और कँवल का सिंहासन

और आग का स्तम्भ। जाने इन अनोखे प्रतीकों का क्या अर्थ उन लोगों के भस्तिष्क में रहा होगा।”<sup>54</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर लखनऊ की एक शाम का चित्रण वह इन शब्दों में करती हैं—

‘अब चिराग सारे में रौशन हो चुके थे। नदी के किनारे डोगियों में दिये जले। नदी ने अपनी यात्रा चालू रखी। बरामदे में लैम्प रौशन कर दिए गए थे। शेड पर बरसाती परवाने चक्कर काट रहे थे।’<sup>55</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर के उपन्यास को यदि शैली की दृष्टि से देखा जाए तो कहा जा सकता है कि उन्होंने शऊर की रौ (चेतना का प्रवाह) शैली से अधिक काम लिया है। ‘शऊर की रौ’ की तकनीक के विषय में यह कहा जा सकता है कि उपन्यासकार की चेतना का प्रवाह जिस ओर मुड़ जाता है वहाँ का चित्रण उपन्यासकार करने लगता है। उसके सामने कोई स्थिर बना-बनाया ढाँचा मौजूद नहीं होता। ‘आग का दरिया’ में भी यही स्थिति दिखाई देती है। इसके साथ ही प्रतीकात्मक और सांकेतिक शैली उपन्यास को विशिष्ट बनाती है। प्रतीकात्मक शैली का एक उदाहरण इस प्रकार है—

“समय का रेला पानी को बहाए लिए जाता था। चारों ओर फैलाव था। लेकिन पत्थर को पकड़कर उसको एक क्षण के लिए अपनी सुरक्षा का अहसास हुआ लेकिन उसके हाथों की उँगलियाँ कटी हुई थीं और पल भर से अधिक पत्थर को अपनी पकड़ में न रख सका। सरजू की मौजें गौतम नीलम्बर के ऊपर से गुज़रती चली गई।”<sup>56</sup>

नाटकों की तरह उपन्यास में एकालाप भी दिखाई देता है। एक स्थान पर गौतम नीलम्बर अपने आप से कहता है —

‘और उदासी से डर लगता है मुझे अपनी रूह की तन्हाई से डरना नहीं चाहिए। गौतम ने अपने आप से कहा।’<sup>57</sup>

इस उदाहरण में अर्थ की कई पर्तें हैं। गौतम की यात्रा का यह पड़ाव और उसका अंत धरती पर स्वयं इंसानी व्यक्तित्व की अनादिकालीन यात्रा का प्रतीक बन जाता है।

कुर्तुलऐन हैदर ने विषयानुरूप तथा पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है जिसमें हिन्दी, अंग्रेजी और कहीं-कहीं अवधी भाषा के शब्द मिलते हैं। हिन्दी भाषा के शब्द का एक उदाहरण इस प्रकार है—

गौतम ने कहा — “मुझे मज़बूत साम्राज्य नहीं चाहिए।”<sup>58</sup>

कुर्तुल ऐन हैदर ने अंग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया है। जिसके उदाहरण इस प्रकार देख सकते हैं—

“तलत ने कान्फ्रेंस से लौट कर शहर के स्टेशन पर पहुँचते हुए आँखें बंद करके दुआ माँगी और सरपट दफ़्तर की तरफ़ दौड़ी। न्यूज़रूम में वही गहमा गहमी थी”<sup>59</sup>

एक स्थान पर चम्पा गौतम से कहती है —

‘तुम मुझसे बहुत परिचित हो चुके हो। प्रत्येक मनुष्य बेहद exposed है।’<sup>60</sup>

अवधी भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है जहाँ चम्पा गौतम से कहती है —

‘हम सिरल साहब को हजार दफ़ा छोड़ देंगे। मगर तुम हमको छोड़कर मत जाओ। तुम हमें बहुत ज्यादा भा गए हो .....’

तुम ने सुना ? हम, चम्पा जिस पर एक आलम जान देता है खुद बेहया बनकर तुमसे यह कह रहे हैं।’<sup>61</sup>

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कुर्तुलऐन हैदर का उपन्यास ‘आग का दरिया’ उर्दू साहित्य की एक कालजयी कृति है और कला का बेहतरीन नमूना है।

## सन्दर्भ सूची

1. जीवन सिंह, अभिव्यक्ति के खतरे उठाने वाला लेखक, वर्तमान साहित्य, सितम्बर 2007, पृ० 47
2. 'कितने पाकिस्तान', पृ० 1
3. उर्दू अनुवाद—खुर्शीद आलम, 'कितने पाकिस्तान', पृ० 1, 2006 ई०
4. कमलेश्वर, 'कितने पाकिस्तान', पृ० 24, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2007 ई०
5. वही, पृ० 29
6. वही, पृ० 39
7. वही, पृ० 71
8. देवेन्द्र कुमार गुप्ता, सामाजिक प्रतिबद्धता का आख्यान, वर्तमान साहित्य, पृ० 97, सितम्बर 2007,
9. आलम खुर्शीद, 'कितने पाकिस्तान (उर्दू अनुवाद)', पृ० 4
10. कमलेश्वर, 'कितने पाकिस्तान', पृ० 94
11. नानक चंद, 'इन्द्रप्रस्थ भारती (पत्रिका)', हिन्दी अकादमी, दिल्ली, 110007, जनवरी—मार्च, 2004, पृ० 13
12. कमलेश्वर, 'कितने पाकिस्तान' कुछ सम्मतियाँ, पृ० 3, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2007,
13. वही, पृ० 3
14. कमलेश्वर, 'कितने पाकिस्तान', पृ० 68—69
15. वही, पृष्ठ 160—163
16. वही, पृ० 69
17. कमलेश्वर, 'कितने पाकिस्तान', पृ० 131
18. वही, पृ० 114
19. वही, पृ० 118
20. वही, पृ० 118—123
21. वही, पृ० 47

22. वही, पृ० 186
23. वही, पृ० 246
24. वही, पृ० 79
25. वही, पृ० 82-83
26. करीम, डॉ० इरतिजा, कुर्तुल ऐन हैदर एक मुताला, पृ० 39, एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2001 ई०
27. हैदर, कुर्तुल ऐन, 'आग का दरिया', अर्जे मुसत्तिफ़, पृ० 07, एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008 ई०
28. वही, पृ० 7
29. वही, पृ० 8
30. उस्लूब अहमद अन्सारी, कुर्तुलऐन हैदरःफन और शख्सियत, किताब नुमा विशेषांक पृष्ठ 34
31. राशिद, नून०मीम० 'आग का दरिया' पर तब्सरा "मशमूला हफ़्त रोज नुसरत लाहौर", 1960, पृ० 25
32. अयाज़ मुहम्मद, 1993, आग का दरिया पर तब्सरा रिसाला— सौगात, पृ० 84 बैंगलौर पाँचवाँ शुमारह
33. हैदर, कुर्तुल ऐन, 'आग का दरिया', पृ० 364
34. अब्दुस्सलाम, प्रोफेसर, "कुर्तुल ऐन हैदर और नावेल का जदीद फ़न", पृ० 5 एजाज़ पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1983
35. हैदर, कुर्तुल ऐन, 'आग का दरिया', पृ० 25
36. वही, पृ० 116
37. वही, पृ० 162
38. हुसैन मुजतबा, 'आग का दरिया' मशमूला—कुर्तुल ऐन हैदर एक अध्ययन", सम्पादक इरतिजा, करीम, पृ० 165-166
39. वही, पृ० 642
40. वही, पृ० 109
41. वही, पृ० 141

42. वही, पृ० 211
43. वही, पृ० 616
44. वही, पृ० 635
45. वही, पृ० 640
46. वही, पृ० 22
47. वही, पृ० 639
48. वही, पृ० 453
49. हमारी ज़बान, अलीगढ़, जनवरी, 1996ई०, पृ० 4
50. हैदर, कुर्रतुल ऐन, 'आग का दरिया', पृ० 19
51. वही, पृ० 20—21
52. वही, पृ० 141
53. वही, पृ० 13
54. वही, पृ० 130
55. वही, पृ० 259
56. वही, पृ० 115—116
57. वही, पृष्ठ 15
58. वही, पृ० 41
59. वही, पृ० 410
60. वही, पृ० 360
61. वही, पृ० 209

## तृतीय अध्याय

'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया का  
तुलनात्मक अध्ययन

- (क) सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से  
तुलनात्मक अध्ययन
- (ख) राजनीतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन



## ‘कितने पाकिस्तान’ का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

किसी भी उपन्यास का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन करने के लिये उस समाज की स्थिति तथा उस संस्कृति के रीति रिवाज और परम्परा, तीज त्यौहार, रहन-सहन एवं जीवन शैली, धर्म एवं दर्शन, साहित्य, जीवन दर्शन तथा मूल्यों आदि को समझना आवश्यक है।

कमलेश्वर के उपन्यास ‘कितने पाकिस्तान’ में संस्कृति के अनेक रंग और रूप देखने को मिलते हैं। इस उपन्यास में मनुष्य जाति, उसके विकास एवं उसकी सभ्यता पर बहुत ही सूक्ष्म रूप से तथ्य परक प्रकाश डाला गया है। ‘कितने पाकिस्तान’ के संबंध में देवेन्द्र कुमार गुप्ता अपने एक लेख ‘सामाजिक प्रतिबद्धता का आख्यान’ में लिखते हैं।

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास भारतीय समाज, संस्कृति और इतिहास की बहुआयामी एवं विस्तृत तस्वीर को अंदर समेटे हुए है।<sup>1</sup>

विभाजन की घटना से कमलेश्वर अत्यधिक व्यथित दिखाई देते हैं। उन्होंने इस घटना को अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में प्रस्तुत किया है। विभाजन चाहे किसी समाज या देश का हो, सरहदें केवल देश की सीमाओं को ही नहीं अलगाती वे संस्कृतियों को भी अलगा देती हैं।

इस उपन्यास में पाँच हजार वर्षों की समय सीमा को लिया गया है। जिसमें प्रेम, युद्ध, संस्कृति एवं सभ्यताओं के उत्थान पतन आदि का कलात्मक ढंग से वर्णन किया गया है। उपन्यास में ‘पाकिस्तान’ एक विशेष मनः स्थिति का प्रतीक बनकर सामने आया है। जिसकी नींव में नफरत, घृणा, आक्रोश, हिंसा, धार्मिक उन्माद तथा अलगाव वाद है। संपूर्ण उपन्यास में लेखक युद्ध के विरुद्ध शान्ति एवं मृत्यु के विरुद्ध जीवन की खोज करता है।

कमलेश्वर समाज में हो रहे अन्याय एवं मृत्यु से बहुत परेशान हैं। मनुष्य ने मनुष्य को मारने के लिए नई-नई खोजें की हैं और निरंतर कर रहा है, जिसका परिणाम केवल अप्राकृतिक मृत्यु है—

“सदियों मनुष्य प्रकृति का शोषण करता रहा। प्रकृति बाँझ हो गई तो मनुष्य ही मनुष्य का शोषण करने लगा। जब से मनुष्य ने मृत्यु का अविष्कार किया है, तब से युद्धों में अप्राकृतिक मृत्युएँ होने लगी हैं.....  
.....नरसंहार होने लगे हैं.....”<sup>2</sup>

कमलेश्वर समाज में फैली मृत्यु और नरसंहार के प्रति बहुत चिन्तित और दुखी दिखाई देते हैं। हर तरफ मौत का ताँडव हो रहा है।

कमलेश्वर संसार में हो रहे मानव विरोधी आक्रमणों एवं युद्धों से बहुत परेशान हैं। उन्होंने संसार की उन घटनाओं को उठाने का प्रयास किया है जो जीवन विरोधी हैं—

“6 अगस्त 1945! अमरीका द्वारा हिरोशिमा पर हमला। पृथ्वी पर हमला। पूरा शहर तबाह.....उत्तर, पूरब और दक्षिण में हरे भरे जंगल और पहाड़ थे.....न मालूम वे कहीं अदृश्य हो गए।”<sup>3</sup>

कमलेश्वर यहाँ जापान के नागासाकी तथा हिरोशिमा शहरों पर हुए एटमी हमलों से बहुत दुखी दिखाई देते हैं। अमरीका ने 6 अगस्त 1945 ई० को हिरोशिमा पर तथा 9 अगस्त 1945 ई० को नागासाकी पर एटमी हमला किया। इन आक्रमणों से हिरोशिमा तथा नागासाकी पूरी तरह नष्ट हो गए। वहाँ के बच्चे अब भी विकलांग पैदा होते हैं। कमलेश्वर उन अविष्कारों के प्रति चिन्ता व्यक्त कर रहे हैं जो विकास के स्थान पर विध्वंस के लिए अविष्कृत किए जा रहे हैं।

हिन्दुस्तानी संस्कृति में स्त्री को देवी का रूप माना जाता है। किसी भी देश की संस्कृति का स्तर स्त्रियों के सम्मान, से ही तय होता है। कमलेश्वर ने जीती जागती हिन्दुस्तानी संस्कृति को अदीब की अदालत में प्रस्तुत करके स्वयं उसके मुँह से इस प्रकार कहलवा दिया—

“औरत की आबरू ही संस्कृति के मेयारों को तय करती है.....जे तहजीब अपनी औरत की आबरू को इज़्ज़त नहीं दे सकी वह रोम, यूनान, और मिस्र की तरह मिट गई.....चाहे यह नृशंस ही लगे, पर हिन्दुस्तान में जब उसकी तहजीब औरत की आबरू की रक्षा नहीं कर सकी, तो खुद औरत ने अपनी सभ्यता की रक्षा के खातिर अपना वलिदान देकर इस संस्कृति का मुँह उजला किया है.....”<sup>4</sup>

कमलेश्वर यह कहना चाहते हैं कि देश की संस्कृति का स्तर स्त्री के सम्मान से जुड़ा रहता है तथा हमारे देश की स्त्रियाँ भी त्याग के माध्यम से संस्कृति की रक्षा करती हैं। उपन्यास में देश की सामासिक संस्कृति और सद्भाव की झलक देखने को मिलती है। स्त्रियों पर एक ओर बहुत अत्याचार हुए लेकिन दूसरी ओर उनकी अस्मत् की रक्षा भी की गई। इसका चित्रण उपन्यास में इस प्रकार मिलता है—

“बूटा सिंह ने पलट कर देखा। एक सोलह सत्रह साल की लड़की अपनी अस्मत् की रक्षा के लिए उसकी ओर दौड़ती चली आ रही थी। उसके कपड़े तार तार थे.....एक हिंसक नौजवान उसका पीछा कर रहा था। वह अधनंगी लड़की बूटा सिंह के पैरों पर आ गिरी..... मुझे बचाओ.....मुझे बचाओ.....वह हिंसक नौजवान बूटा सिंह से बोला—

इसे मेरे हवाले कर दो!

— नहीं इसे मैं तुम्हारे हवाले नहीं करूँगा!

— तुम्हें करना होगा.....यह मेरे हिस्से में आई है

— हिस्से में.....बूटा सिंह ने आँखे तरेर कर पूछा—तेरे हिस्से में?

— हाँ! हिन्दू मुसलमान का बँटवारा हो चुका है। पाकिस्तान बन चुका है

— कहाँ बन चुका है पाकिस्तान?

— तीसरी ढाणी के उस पार.....पाकिस्तान बनने की लकीर खिंच चुकी है। मैं इसे काफिले वालों से छीन कर लाया हूँ.....

— नहीं हिन्दुस्तान पाकिस्तान की लकीर खिंच गई तो खिंच जाए..... लेकिन हिन्दू मुसलमान के नाम पर औरत की इज्जत का बँटवारा तो नहीं हो सकता।

— वह हिंसक नौजवान बोला तुम चाहो तो इसकी इज्जत खरीद लो!

— खरीद लूँ!

—हाँ कितने में

— नक़द पन्द्रह सौ!

.....

— नाम क्या है तुम्हारा?

— जैनब!

- गाँव?
- मणियार ढाणी!
- जात?
- हिन्दू राजपूत!
- धरम ?
- मुसलमानी!

.....  
ढाणी के दो एक बुजुर्ग कह रहे हैं कि तुम आ ही गई हो तो तुमसे  
ब्याह कर लूँ..... साथ रहके दूर दूर रहना ठीक नहीं होगा।.....

..... गाँव के बड़े, दुशाली सिंह ने यह ज़रूरी समझा कि बूटा सिंह  
ने और जैनब का आनंद कारज हो जाना चाहिए। ..... शादी  
ब्याह करके साथ साथ रहना सही होगा। आखिर औरत की भी कोई  
मरजादा होती है।<sup>5</sup>

हिन्दुस्तानी संस्कृति में प्राचीन काल से ही स्त्री के सम्मान की रक्षा की जाती रही है। किसी भी समाज या संस्कृति में यह नहीं है कि धर्म के नाम पर किसी स्त्री की इज्जत का बँटवारा किया जाए। भारत विभाजन के समय जब लोग अपने अपने देश की तलाश कर रहे थे, तब गाँव मणियार ढाणी में दो भिन्न धर्म के व्यक्ति एक दूसरे के साथ विवाह करके जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार हो गए थे। जब चारों ओर धर्म के नाम पर बँटवारा हो रहा था, तब ढाणी में दो धर्म मिलकर एक हो रहे थे।

किसी भी समाज और संस्कृति को जानने और समझने के लिए उस समाज में रहने वाले लोगों के रहन सहन और उनकी जीवन शैली को समझना आवश्यक है। कमलेश्वर ने इस उपन्यास में हिन्दुस्तानियों के रहन-सहन एवं जीवन शैली के साथ-साथ संसार की विभिन्न संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के लोगों के रहन सहन एवं जीवन शैली का भी चित्रण किया है।

“श्रीमान! युरुक का सम्राट गिलगमेश नितान्त चरित्र भ्रष्ट मनुष्य है.....  
... वह महाविलासी है। वह विश्व विजय के लिए निकला तो कोई  
शक्तिवान उससे लोहा नहीं ले पाया। अपनी विजय यात्रा में उसने

पराजित योद्धाओं की पत्नियों और स्त्रियों को अंकशायनी बनाया.....  
.. वह उद्दाम वासना से ग्रस्त महाविलासी सम्राट है।”<sup>6</sup>

युरूक सभ्यता का सम्राट गिलगमेश बहुत ही चरित्र भ्रष्ट और महाविलासी मनुष्य था। उसके साथ साथ वह उतना ही शक्तिशाली भी था। उसने अपनी विजय यात्रा के समय बहुत सी लड़कियों और स्त्रियों के साथ दुराचार किया। कमलेश्वर विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों के मनुष्यों के कुछ सन्दर्भ देकर उन संस्कृतियों के संबंध में बताना चाहते हैं कि वह संस्कृतियाँ कैसी थीं।

उपन्यास में विश्व की प्राचीन संस्कृतियों की कलात्मक व्याख्या एवं मूल्यांकन किया गया है फिर चाहें वह बेबेलोनियाँ, मेसोपोटामियाँ, यूनान की सभ्यता हो, सुमेरी सभ्यता हो, मिस्र हो अथवा सिंधु घाटी की सभ्यता हो। इन सभ्यताओं में हमेशा से संघर्ष एवं द्वन्द्व चला आ रहा है। प्राचीन संस्कृति में देवताओं का जीवन श्रमविहीन और वासना पर आधारित था। उन्हें प्रेम, मित्रता एवं संस्कार जैसे तत्वों की प्राप्ति नहीं हुई थी—

‘मेसोपोटामिया के देवता अलवोनियस ने संकट ग्रस्त स्वर में कहा—  
देवताओं के देव अनु ! हमारी कमजोरी यही है कि हमने प्रेम और  
मित्रता जैसे तत्वों को नहीं तलाशा.....’

सारी देवियाँ केवल हमारी वासनाओं का तृप्ति कुण्ड हैं और हम  
देवताओं में कोई किसी का मित्र नहीं है.....’

देवी तानिया ने भाषण दिया—

दज़ला, फ़रात और डैन्यूब की पराधरती के समस्त देवताओं! तुम सब भूल रहे हो....धरती के मनुष्य ने प्रेम, मित्रता के अलावा प्रजनन की वैध परम्परा का अविष्कार भी कर लिया है, इसलिए उन्हें संस्कार जैसी महाशक्ति भी प्राप्त हो गई है.....। तुम्हारे पास केवल वासना है, प्रेम नहीं है। केवल वैयक्तिक श्रेष्ठता द्वेष है इसलिए मित्रता नहीं। तुमने स्त्री को मात्र भोग्या मानकर अवैध सन्तानों का देवलोक स्थापित कर लिया है, पर इस देवलोक के पास कोई संस्कार या परम्परा नहीं.....।”<sup>7</sup>

कमलेश्वर ने विश्व की प्राचीन संस्कृतियों और देवताओं की कमजोरियों की ओर संकेत करते हुए संस्कार और परम्परा जैसे गुणों से युक्त होने के कारण मनुष्यों को देवताओं से श्रेष्ठ सिद्ध किया है।

इस युग में जहाँ प्रत्येक ओर मृत्यु, हाहाकार, चीत्कार तथा अन्याय फैला हुआ है। ऐसे समय में कमलेश्वर फ़ैज़ाबाद के समाज एवं उसकी संस्कृति, उसके रहन सहन एवं जीवन शैली का चित्रण करते हुए लिखते हैं—

“वही बाज़ार वही गहमा गहमी और वही सामान्य जीवन। बच्चे रिक्शों में लदे स्कूल जा रहे थे। मुसलमान औरतें बुर्का पहने बाज़ारों में खरीद फ़रोख्त कर रहीं थीं या चूड़ियाँ पहन रही थीं। हिन्दू मनिहार उनकी नाजुक कलाइयों में चूड़ियाँ पहना रहे थे और वे बुर्क का पल्ला उठाए, खुले मुँह उनके सामने बैठी थीं। वे मनिहार उनके भाई, चाचा या मामा थे। बज़ार खाने पीने की चीज़ों और रेडिमेड पोशाकों से भरे हुए थे। वहाँ न हिन्दू दुकाने थीं न मुसलमान दुकाने..... वहाँ सिर्फ़ दुकानें थीं। गंदगी और भीड़ उतनी ही जितनी की पूरे हिन्दुस्तान में है। फ़ैज़ाबाद की दीवारें अपने बच्चों की देखभाल कर रहीं थी—वे जनम घुट्टी बेच रही थी। सुंदर औरतें होठों की लाली और ब्रेसरी खरीद रही थीं। सब बच्चों के खिलौने एक से थे। काठ और प्लास्टिक के खिलौने। सब उसी तरह के पत्ते पर चाट खा रहे थे और पान खाके बुर्क वाली सुंदरियों के ओंठ उसी तरह हल्के गुलाबी से रचे हुए थे जैसे गुड़हल के फूलों के!”<sup>8</sup>

बाबरी मस्जिद और राम जन्म भूमि विवाद का जन्म जिस भूमि और शहर फ़ैज़ाबाद में हुआ वहाँ जन सामान्य को इन विवादों से कोई सरोकार नहीं है। भ्रष्ट राजनेता पूरे देश में साम्प्रदायिक वैमनस्य को फैलाने का कार्य करते हैं। फ़ैज़ाबाद का बाज़ार इस बात का गवाह है कि वहाँ हिन्दू मुसलमान में कोई भेदभाव नहीं दिखाई देता। चारों ओर शान्ति और प्रेम है, जन जीवन सामान्य है। यहाँ हिन्दू और मुसलमानों का आपस में एक रिश्ता है। बाज़ार में गहमा गहमी है वहाँ केवल दुकाने हैं न हिन्दू की और न मुसलमानों की। व्यापार और मनुष्यता का कोई धर्म नहीं होता।

प्रत्येक संस्कृति के कुछ अच्छे और कुछ बुरे कर्म होते हैं, लेकिन जो संस्कृतियाँ अपने कुकर्मों का पश्चात्ताप कर लेती हैं वे भविष्य में जीवित रहती हैं—

“शायद पछताने की ताकत रखने वाली संस्कृतियाँ ही जीवित रहती हैं.....और वे जीवित संस्कृतियाँ ही सभ्यताओं के रूप में स्थापित हो पाती हैं। कर्म और कुकर्म के मानदंड स्थापित कर लेना मामूली बात नहीं है।”<sup>9</sup>

कमलेश्वर यहाँ मूल्यों की बात कर रहे हैं। जो संस्कृति अपने कर्मों और कुकर्मों में अंतर करके अपनी गलतियों को सुधार लेती हैं। वही भाविष्य में सभ्यता के रूप में स्थापित हो पाती हैं।

प्रेम, मित्रता तथा संस्कार जैसे मानवीय मूल्यों का जीवन में बहुत अधिक महत्व है। इन मानवीय मूल्यों की तलाश मनुष्यों ने की है—

“एंकिदू देवदासी रूना को अपनी बलिष्ठ बाँहों में लेकर तरह तरह से देखता रहा था। न मालूम वे एक दूसरे की आँखों में क्या तलाशते रहे.....मुझे तो लगता है यह प्रेम नाम की भवना थी जो मनुष्य ने स्त्री में तलाश ली है.....।”<sup>10</sup>

कमलेश्वर विभिन्न संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के भ्रष्ट देवताओं एवं उनकी जीवन शैली के संबंध में चर्चा करते हुए मनुष्य जाति एवं उसके द्वारा खोजे गए मानवीय मूल्यों की प्रशंसा करते हैं। जब वासना के बाद भी वन्य जीव एंकिदू देवदासी रूना से अलग नहीं हुआ क्योंकि तब उन्होंने एक दूसरे की आँखों में प्रेम भावना को तलाश लिया था।

मनुष्य समाज एक नैतिक समाज में जीवन व्यतीत कर रहा है। मानवीय विचारों से ओत प्रोत हिंसी सभ्यता का सम्राट गिलगमेश भी जीवन के ऐश्वर्य एवं भोग विलास से प्रभावित हुआ, परन्तु समय के साथ साथ उसके विचारों में परिवर्तन भी होते रहे। उसकी बढ़ती हुई शक्ति से देवतागण चिन्तित हो गए और उसको रोकने के लिए देवताओं ने आकाश पुत्र एंकिदू को मनुष्य जीवन देकर पृथ्वी पर भेजा किंतु थोड़ी मुठभेड़ एवं संघर्ष के उपरान्त गिलगमेश और एंकिदू दोनों मित्र बन गए। तभी देवताओं द्वारा भेजे गए विकराल साँड से गिलगमेश की रक्षा करते हुए एंकिदू बुरी तरह घायल होकर प्राण त्याग देता है। यह उसका मित्र के प्रति

प्रेम और कर्तव्य ही था। अपने मित्र एंकिदु को देखकर गिलगमेश फूट फूट कर रोने लगता है और प्रण करता है—

“सुनो! देवताओं सुनो! पृथ्वी सम्राट गिलगमेश की आवाज़! यह दूसरी आवाज़ है। यह भोग विलास और पशुवत दैहिक ऐश्वर्य की आवाज़ नहीं, यह मनुष्य की पीड़ा, दुख, यातना, श्रम और मृत्यु से उसे मुक्त करने की आवाज़ है! मैं पीड़ा से लड़ूँगा.....यातना सहूँगा.....कुछ भी हो मैं अपने मित्र और मनुष्य मात्र के लिए मृत्यु को पराजित करूँगा! मैं मृत्यु से मुक्ति की औषधि खोज कर लाऊँगा।”<sup>11</sup>

कमलेश्वर प्रेम, मित्रता आदि तत्वों को विशेष महत्व देते हुए गिलगमेश और एंकिदु की मित्रता का वर्णन करते हैं। गिलगमेश की आवाज़ सुनकर देवता भयभीत हो गए, क्योंकि मनुष्य जाति ने देवताओं की भाँति जीवन को भोगविलास में व्यतीत नहीं किया, बल्कि उन्होंने जीवन के नवीन आयाम ढूँढे, जो मनुष्य जाति के लिए विकास का मार्ग खोलते हैं। मनुष्य ने मानव जाति के लिए प्रेम, मित्रता, कर्म, श्रम, शान्ति तथा संस्कार जैसे तत्वों की खोज कर ली है। मित्रता एवं प्रेम की भावना ईश्वर ने केवल मनुष्य को ही प्रदान की है। देवतागण इस सब से वंचित रहे हैं। सिन्धु सभ्यता का ब्रह्मा अपनी पुत्री शतरूपा पर ही आसक्त होकर पिछले सौ वर्षों से काम वासना में लिप्त है। उसने पिता और पुत्री के पवित्र संबंध को अर्थहीन और अपवित्र कर दिया। इसी प्रकार अन्य देवताओं ने भी कई रिश्तों को कलंकित किया लेकिन उनकी दृष्टि में वह सब ग़लत नहीं है। देवता सूर्य ने अपने भाई विश्वकर्मा की पुत्री से विवाह किया। इन कुकृत्यों के बावजूद अन्य देवताओं ने इन व्यभिचारी देवताओं को पतित नहीं ठहराया क्योंकि यह सभी देवता अभी तक प्रेम, मित्रता जैसे तत्वों को नहीं तलाश पाए।

जिस सभ्यता एवं संस्कृति में प्रेम एवं मित्रता की कमी हो, उसका विकास हो पाना संभव नहीं है। मनुष्य जाति में परस्पर घृणा और ईर्ष्या के आधार पर कोई भी नव निर्माण नहीं किया जा सकता, बल्कि मनुष्य समाज तथा देशों को विभाजित किया जा सकता है। धर्म और संस्कृति का मेल अनेक त्रासदियों को जन्म देता है क्योंकि धर्म व्यक्तिगत होता है और संस्कृति सामूहिक होती है। संस्कृति के सूत्र को



जोड़ने वाली शक्ति है जो धर्म और संप्रदाय से बहुत ऊपर है। संस्कृति निरंतर प्रयत्नशील और विकासमान होती है। जब संस्कृति इन दोनों गुणों से वंचित हो जाती है तब यह जड़ एवं रूढ़ि का रूप धारण कर लेती है।

हिन्दुस्तानी संस्कृति हमेशा से समन्वयवादी रही है, लेकिन उपन्यासकार के अनुसार इस समन्वयवादी संस्कृति का सिर उस दिन कट गया जब सत्ता के लिए औरंगजेब ने अपनी कुटनीति से दाराशिकोह का सिर कलम करवा दिया—

“जिस दिन दाराशिकोह का सिर कलम हुआ, उसी दिन हिन्दुस्तान की बनती हुई एक सहिष्णु और नई तहज़ीब का सिर कलम हो गया.....।”<sup>12</sup>

जब मानवीय संवेदना के सत्य पर झूठी धार्मिकता की जीत हुई उसी दिन हिन्दुस्तान की बनती हुई एक नई संस्कृति की वहीं हत्या हो गई।

कमलेश्वर अपने देश की ही नहीं बल्कि संपूर्ण संसार की स्थिति से बहुत परेशान हैं। वह धरती से उठने वाले प्रलयकारी युद्धों और काली आँधियों को हमेशा के लिए समाप्त करना चाहते हैं और एक खुशहाल समाज और संसार की चाहत रखते हैं। कमलेश्वर ‘कितने पाकिस्तान’ में इन युद्धों का कारण जानने का प्रयास करते हैं—

“धर्म शास्त्रों के अध्ययन, तप और साधना से मोक्ष को प्राप्त करने का अधिकार केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्णों को है, शूद्र वंशी शंबूक! जे अपने दास धर्म को त्याग कर मोक्ष के लिए साधना कर रहा है..... इस महापाप के कारण ही ब्राह्मण पुत्र की मृत्यु हुई है महाराज! नारद जी ने सूचना दी। राजा रामचन्द्र जी ने क्षत्रिय धर्म का पालन किया और ब्राह्मण धर्म की रक्षा के लिए शूद्र शंबूक जैसे ऋषि और तपस्वी की गर्दन काटकर धड़ से अलग कर दी..... यह झंझावत और काली आँधियाँ रामराज्य के इसी जघन्य अपराध और पाप के कारण चल रही हैं।”<sup>13</sup>

कमलेश्वर यहाँ अपने देश की वर्ण व्यवस्था पर प्रहार करते हुए दिखाई देते हैं। मोक्ष प्राप्त करने के लिए धर्म शास्त्रों का अध्ययन, तप और साधना का अधिकार केवल उच्च वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य वर्णों को है। यह अधिकार निम्न वर्ण को

नहीं है। सत्युग में वर्ण व्यवस्था के कारण शूद्र वंशी शंबूक की हत्या कर दी गई थी।

कमलेश्वर ने सत्युग की इस घटना को वर्तमान में धर्म के नाम पर हो रहे झगड़े तथा रक्तपात से जोड़ा है। संसार में जब कभी भी धर्म का दुरुपयोग किया गया है, तब-तब चारों ओर लड़ाई, झगड़े, नरसंहार, रक्तपात और अंधकार फैला है।

कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में संसार की अधिकतर संस्कृतियों एवं सभ्यताओं की व्याख्या की है। एक लेखक एक अदीब के रूप में केवल सदियाँ नहीं सभ्यताएँ भी जीवित रहती हैं। एक लेखक ही अपने समाज, अपनी संस्कृति, उनकी समस्याओं एवं दुखों की अनुभूति कर सकता है, उन्हें समझ सकता है। कमलेश्वर संसार में फैली हुई मनुष्य की रक्त रंजित नियति से परेशान है। वह ब्राह्मणवाद एवं पुरोहितवाद के संबंध में कहते हैं—

“हर सभ्यता, हर धर्म में ब्राह्मणवाद पैदा हुआ। भारत में तो वह बहुत देर से आया, पर मिस्र की सभ्यता में भी पुरोहितवाद पैदा हुआ। यह जड़ता का प्रतीक था। ये पुरोहित पुजारी ब्राह्मण ही मिस्र की सभ्यता के पतन का कारण बने! यही सुमेरियन सभ्यता में हुआ, जो सूर्य के नहीं चन्द्र के पूजक थे, जो व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को बहुत महत्व देते थे.....

जब सुमेरियन सभ्यता के ब्राह्मण स्वार्थी हो गए तो उस सभ्यता का भी विनाश हो गया और तब उस विनष्ट सभ्यता पर जन्मी बेबीलोनियन सभ्यता। इसने पहली बार मिली जुली संस्कृति को मंजूर किया था।.....

लेकिन इस सभ्यता में भी कुलीनता का दम्भ पैदा हुआ.....उसमें भी अलिखित वर्ण बनते गए.....यही असीरियन, हिप्पी, आर्मीनियन, हिब्रू, एरोयेन और ग्रीक देशों के साथ हुआ.....पर ये सभ्यताएँ जी नहीं सकीं, क्योंकि इनमें भी कुलीनता के नाम पर उन लोगों का उदय हुआ जो मन्दिर, पुराण और पवित्रता के नाम पर स्वयं को पुरोहित पुकारते थे। ये ही असल ब्राह्मण थे.....जो जातीय नहीं स्वार्थ केन्द्रित कुलीनता और ब्राह्मणवाद के प्रतीक थे।”<sup>14</sup>

प्राचीनकाल से ही प्रत्येक सभ्यता और संस्कृति में ब्राह्मणवाद पैदा हुआ। यह ब्राह्मणवाद और पुरोहितवाद जड़ता का प्रतीक था, क्योंकि इसने समय को बदलने नहीं दिया। ये पुरोहित और ब्राह्मण श्रम करने, कर देने तथा फौजी सेवा से मुक्त थे। ये केवल व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को महत्व देते थे। कमलेश्वर प्राचीन संस्कृतियों के विनाश का कारण ब्राह्मणवाद को ही मानते हैं।

उपन्यास में 'पाकिस्तान' शब्द विभाजन के प्रतीक के रूप में सामने आया है। कमलेश्वर विभाजन की त्रासदी से त्रस्त हैं। वह मानसिक स्तर पर विभाजन को स्वीकार नहीं कर पाए, क्योंकि विभाजन से ही हर तरफ अशान्ति फैली हुई है।

धर्म एवं वर्ण के आधार पर विभाजन आज से नहीं सदियों से चला आ रहा है। ब्राह्मणों ने वर्ण के आधार पर संपूर्ण मानव जाति का विभाजन बहुत पहले ही कर दिया। इसके संबंध में कमलेश्वर लिखते हैं—

“तुमने अपना वर्णाश्रम धर्म बना लिया था। हर बच्चा माँ के पेट से पैदा होता है पर तुम्हारे ब्राह्मणों और उनके ग्रंथों ने माँ की कोख का अपमान करते हुए मनुष्य को ब्रह्मा के अलग अलग अंगों से पैदा करने का सिद्धान्त पैदा किया.....

आज के शब्दों में कहूँ तो तुम्हारे ब्राह्मणों ने अपना पाकिस्तान बना लिया.....

और तब तुम्हारे उपनिषदों ने इन्सानी मूल्यों और सम्पदा को बचाने का प्रयास किया.....तुम्हारे उपनिषद् और कुछ नहीं.....वे ब्राह्मणवादी अत्याचारों, वर्णवादी अनाचारों और ईश्वरवादी आस्था को स्थापित करने वाले पश्चात्ताप के ग्रंथ हैं.....धर्म के आधार पर संस्कृतियाँ बनती हैं..... पर कालान्तर में वे धर्म से मुक्त होकर मानव संस्कृतियों में तब्दील हो जाती हैं।”<sup>15</sup>

ब्राह्मणों ने अपने अपने ग्रंथों के आधार पर मनुष्य जाति को अलग अलग वर्णों में विभाजित कर दिया। ब्राह्मण ग्रंथों के बाद उपनिषदों की रचना हुई। इनकी रचना केवल ब्राह्मणवादी अत्याचारों और अनाचारों के पश्चात्ताप के रूप में हुई, क्योंकि कुलीन आर्यों ने ही मनुष्यों का वर्णवादी विभाजन किया और आज तक संस्कृति को भी धर्म से अलग होने नहीं दे रहे हैं।

धर्म के नाम पर किसी भी देश का विभाजन करना ग़लत है क्योंकि कोई भी धर्म नफ़रत या घृणा नहीं सिखाता है। प्रत्येक धर्म प्रेम और शान्ति का सन्देश देता है। कमलेश्वर उपन्यास में धर्म की महत्ता का वर्णन करते हुए लिखते हैं—

“इस्लाम की नज़र से पाकिस्तान का बनना ही गुनाह है.....  
क्योंकि इस्लाम नफ़रत नहीं सिखाता, पर पाकिस्तान की बुनियाद  
नफ़रत पर रखी गयी है.....इस्लाम जैसा मज़हब किसी मुल्क की  
सरहदों में कैद कैसे किया जा सकता है। कोई मज़हब कैद नहीं  
किया जा सकता.....।”<sup>16</sup>

कमलेश्वर के अनुसार प्रत्येक धर्म का मूल उच्च सिद्धान्तों पर टिका होता है। चाहे वह इस्लाम धर्म हो या कोई दूसरा धर्म। देश विभाजन के कारणों को कमलेश्वर जब तर्क की कसौटी पर कसते हैं तो यही निष्कर्ष निकलता है कि इस्लाम नफ़रत और घृणा नहीं सिखाता और पाकिस्तान नफ़रत की बुनियाद पर बनकर तैयार हुआ। प्रत्येक धर्म केवल प्रेम, सद्भाव और शान्ति सिखाता है। सरहदें धर्म के आधार पर नहीं बाँटी जा सकतीं।

धर्म के नाम पर संस्कृति को भी विभाजित करना बहुत मुश्किल है क्योंकि संस्कृतियाँ बनने में सदियाँ लगती हैं। कमलेश्वर ‘कितने पाकिस्तान’ में संस्कृति के संबंध में लिखते हैं—

“तहज़ीब को कैसे तक्सीम किया जा सकता है?.....  
अफ़ग़ानिस्तान की धरती पर वर्षों हिन्दू और बौद्ध धर्मों का प्रभाव रहा है, यह तहज़ीबी और तारीख़ी रिश्ता है जो सरहदों के बँटवारे के बावजूद आज भी ज़िन्दा है। शत्रुओं से काबुल की रक्षा के लिए बौद्ध राजा कनिष्क ने ही वह दीवारें बनवाई थीं, जो इसे शायद आज भी महफूज़ रखे हैं।.....और बौद्ध धर्म से पहले इसी धरती पर चारों वेद रचे गए हैं.....इन वेदों में अफ़ग़ानिस्तान के सारे पहाड़ों, वादियों, शहरों और बादशाहों के नाम मौजूद हैं.....।”<sup>17</sup>

सरहदों के विभाजन के बाद भी संस्कृतियाँ जीवित रहती हैं। कमलेश्वर संस्कृति के विभाजन को मन्ज़ूर नहीं करते हैं। अफ़ग़ानिस्तान का बौद्ध और हिन्दू धर्म से यह

रिश्ता सांस्कृतिक है। यह संस्कृति एक दिन में नहीं बनती, इसके निर्माण में सदियों लगी हैं।

कमलेश्वर समाज में फैली हुई बर्बरता, अन्याय, कहर तथा अशान्ति से बहुत दुखी हैं। वह इन समस्याओं को हमेशा के लिए समाप्त करना चाहते हैं। वह कहते हैं—

“मैं अब बुरी तरह लस्त हो गया हूँ। मैं अपने दोस्तों और समकालीनों को आवाज़ देना चाहता हूँ कि मेरा साथ दो..... राकेश, रेणु, दुष्यन्त, राही, परसाई, रघुवीर, श्रीकान्त के अलावा मैं अपने तमाम उन जीवन्त दोस्तों को आवाज़ लगाना चाहता हूँ जिन्होंने अपनी रचनात्मक शक्ति को अपने लिए नहीं, दुनिया के लिए समर्पित कर दिया है और वे लगातार अपनी व्यक्तिगत रचना शक्ति और अपने कलम की सच्चाई से इस दुनिया को बेहतर बनाना चाहते हैं..... उनसे कहो मेरा साथ दें..... मैं बहुत अकेला पड़ गया हूँ! दुनिया को उनकी ज़रूरत है.....।”<sup>18</sup>

कमलेश्वर की इच्छा है कि जिन समस्याओं को वह अपने उपन्यास ‘कितने पाकिस्तान’ में उठाते हैं, उन समस्याओं को उठाने में उनके समकालीन लेखक भी उनकी सहायता करें। इन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा कलम की शक्ति और सच्चाई से दुनिया को अवगत कराया और उसको सँवारने तथा बेहतर बनाने का सफल प्रयास किया, क्योंकि साहित्य और कलम में बहुत शक्ति होती है। इसके द्वारा संसार को सत्य से अवगत कराया जा सकता है और बहुत हद तक अन्याय और बर्बरता को रोकने में सफलता भी प्राप्त की जा सकती है।

अधिकाँश लेखक अपनी रचनाओं में अपने युगों को जीवित रखते हैं। कमलेश्वर ‘कितने पाकिस्तान’ में इसके संबंध में लिखते हैं—

“कबीर, तालस्तॉय, टैगोर, एग्नॉन, कज़ातिज़ाकिस, राहुल साँकृत्यायन, दिनकर, चेखव, कामू, प्रेमचंद, लूसुन, मिलान कुंदेरा, ब्रेख्त, निराला, सार्त्र, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, मीर, सौदा, ग़ालिब, फ़ैज़, फ़ैज़ी निज़ामी, मंटो कृष्ण चन्द्र, राजेन्द्र सिंह बेदी, दुष्यंत कुमार, रेणु, राकेश, रघुवीर सहाय, परसाई, श्रीकान्त, मुक्तिबोध। वह तो सबको पहचानता था। शरणार्थियों के रूप में लेखक अपने अपने तंबुओं में मौजूद थे। यह बस्ती रेत की एक नदी के किनारे थी.....समय रेत की धारा की तरह बह रहा था।”<sup>19</sup>

यहाँ कमलेश्वर ने लेखकों के नाम प्रतीकात्मक रूप में लिए हैं। इन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा समय को कैद कर लिया है लेकिन इस समय जब चारों ओर नफरत और घृणा फैली हुई है तब इन लेखकों और उनकी रचनाओं को कमलेश्वर याद करते हैं। कबीर जो निर्गुण भक्ति काव्य के प्रवर्तक थे। वे सदैव जाति पाति धर्म और सम्प्रदाय का विरोध करते हैं और सामासिक संस्कृति के विकास पर बल देते हैं।

कमलेश्वर मानते हैं कि मनुष्य ने ही अपनी संकल्प शक्ति से लौकिक अनुभव को अलौकिक बना दिया। मनुष्यों के द्वारा बनाए गए यह मिथक, पुराकथाएँ पौराणिक इतिहास में बदलीं। आगे चलकर इन्हीं से धर्मकथाएँ निकलीं और इन्हीं से धर्म कथाएँ निकलीं और इन्हीं से संकीर्ण धर्म उत्पन्न हुए और इन्हीं संकीर्ण धर्मों से संकीर्ण विचार उत्पन्न हुए, जिनके कारण संपूर्ण संसार में अमानुषता फैली हुई है। यही अमानुषता विभाजन का कारण बनती है और सरहदें खड़ी करके मनुष्य के हृदय को खण्ड खण्ड कर देती है।

कमलेश्वर ने संपूर्ण उपन्यास में विभाजन के दर्द को दिखाने का प्रयास किया है। हिन्दुस्तान के विभाजन के साथ साथ संबंधों का भी विभाजन हुआ। इसका चित्रण राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यास 'आधागाँव' में किया है जिसका उल्लेख कमलेश्वर इस प्रकार करते हैं—

“हियाँ के हट के हमनी कहाँ जाए के पड़ी?.....

अधेड़ मुसलमान बफ़ाती ने अपने हिन्दू लंगोटिया यार से पूछा दोनों बचपन के गहरे दोस्त थे। तब उसके दोस्त कन्हैया ने कहा— अब जहाँ आराम मिले चले जाओ।.....जिन्ना साहब का पाकिस्तान तो बन ही रहा है.....लेकिन पाकिस्तान जाए का किराया भाड़ा भी जुट गया, तो भी ई हमार खेतवा कइसे जाई पाकिस्तान?”<sup>20</sup>

यहाँ कमलेश्वर ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि अपनी मिट्टी से जुड़े हुए लोग, खेत, खलिहान, अपनी धरती को छोड़कर कहीं अन्य स्थान पर क्यों जाएं? यह प्रश्न उन्हें छलनी करता है। जहाँ हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के लोग

साथ साथ वर्षों से रहते आ रहे हैं। वे अलग क्यों हो जाएं? दो भिन्न धर्म जो हिन्दुस्तानी संस्कृति को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। हिन्दुस्तान के विभाजन के समय वह धर्म अलग हुए, संस्कृति विभाजित हुई। एक दूसरे के प्रति विचार परिवर्तित हो गए।

इस प्रकार संपूर्ण संसार में मनुष्य जाति के विनाश का खेल खेला जा रहा है। चारों ओर हाहाकार, चीत्कार, चीख पुकार, आगजनी, सामूहिक हत्याएँ हो रही हैं। कमलेश्वर इस पीड़ा से लोगों को बचाना चाहते हैं और उपाय तलाशने की बात करते हैं—

“इस बेसूद और ग़ैर ज़रूरी मौत से निजात पाने के लिए ज़िन्दगी की सार्थक तलाश में किसी को निकलना ही पड़ेगा।”<sup>21</sup>

कमलेश्वर अप्राकृतिक मृत्यु से बहुत दुखी और चिन्तित हैं। दुनियाभर में हो रहे युद्धों में केवल अप्राकृतिक मौतें होती हैं। इससे छुटकारा पाने के लिए इसके विरुद्ध आवाज़ उठाना बहुत ज़रूरी है। एक लेखक या रचनाकार का फर्ज है कि वह अमानवीय घटनाओं एवं अप्राकृतिक मृत्यु के विरुद्ध आवाज़ उठाए। कमलेश्वर अपने स्तर पर एक सफल प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं।

कमलेश्वर ने उपन्यास में विश्व की अनेक संस्कृतियों की कलात्मक व्याख्या की है। स्वयं संस्कृति को भी पात्र के रूप में अदीब की अदालत में प्रस्तुत कर दिया है। उपन्यास में मानवीय संस्कृति के बँटवारे से उत्पन्न होने वाली त्रासदी को प्रस्तुत किया गया है। कमलेश्वर आधुनिक युग की वैज्ञानिक उपलब्धियों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि संस्कृतियों के विभाजन ने ही संसार में महामृत्यु का साइंसी फॉर्मूला प्रदान किया है और आज संपूर्ण विश्व में इसी सूत्र पर अमल हो रहा है। ऐसे वातावरण में एक रचनाकार का कर्तव्य है कि वह इस विषैले वातावरण को शुद्ध करने का प्रयत्न करे। ताकि समस्त संसार में प्रेम, सौहार्द, शान्ति और बन्धुत्व की भावना का प्रसार हो और सर्वत्र शान्ति का राज हो।

### ‘आग का दरिया’ का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन :

संस्कृति और समाज का मूल रूप ‘आग का दरिया’ में देखने को मिलता है। इसमें कुर्रतुलऐन हैदर ने ढाई हजार वर्षों के सांस्कृतिक इतिहास को उठाया है। इस उपन्यास में हिन्दुस्तान की गंगा जमुनी संस्कृति के अनेक रंग देखने को मिलते हैं।

भारत विभाजन उपमहाद्वीप के इतिहास की एक प्रमुख घटना थी, जो एक त्रासदी के रूप में सामने आई। भारत की स्वतन्त्रता अपने साथ बँटवारे का श्राप लेकर आई। इस विभाजन की घटना ने कलाकारों और विशेष रूप से लेखकों को अत्यधिक प्रभावित किया। दोनों देशों भारत और पाकिस्तान के लेखकों और विद्वानों को अपनी संस्कृति की खोज की आवश्यकता पड़ी। भारत और पाकिस्तान के लेखकों के बहुमत ने इस अप्राकृतिक विभाजन को मानसिक स्तर पर रद्द कर दिया तथा इस घटना को सामासिक उत्तराधिकार पर प्रबल आक्रमण माना। भारत और पाकिस्तान के लेखकों और कलाकारों ने इस अप्राकृतिक घटना को मानसिक रूप से स्वीकार नहीं किया। कुर्रतुलऐन हैदर ने इस उपन्यास में उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक यात्रा के सन्दर्भ से मनुष्य की श्रेष्ठता को खोजा है।

प्राचीन काल के गौतम नीलम्बर से आधुनिक युग के गौतम तक यह यात्रा एशिया के सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक संघर्ष की परिधि पूर्ण करता है। इस कथा के वर्णन में कुर्रतुलऐन हैदर ने अपनी पकड़ मज़बूत रखी है। यह उपन्यास एशिया का सांस्कृतिक इतिहास है, जिसमें उसकी संस्कृति की विभिन्न परतें एक युग से लेकर दूसरे युग तथा एक जाति से लेकर दूसरी जाति तक फैली है। उद्भव और विकास का संपूर्ण चित्र उपन्यास के पृष्ठों पर फैला हुआ है। कुर्रतुलऐन हैदर मनुष्य को संसार की सभी जातियों में उच्च मानती हैं। विभिन्न युगों में संस्कृति और समाज अपना रूप बदलते हैं लेकिन मनुष्य हमेशा जीवित रहता है, केवल उसके नाम परिवर्तित होते हैं।



‘आग का दरिया’ का कथ्य ढाई हजार वर्षों तक फैला हुआ है। कुर्रतुलऐन हैदर ने इस विस्तृत अवधि में एशिया के साँस्कृतिक जीवन के कई उतार चढ़ाव का अन्वेषण किया है। यह उपन्यास बुद्धमत और ब्रह्ममत के टकराव से होता हुआ अंत में काँग्रेस तथा मुस्लिम लीग के टकराव पर पहुँचता है तथा बँटवारे के दुख पर समाप्त हो जाता है।

कुर्रतुलऐन हैदर ने ‘आग का दरिया’ में भारत के चार युगों का उल्लेख किया है—

- 1—प्रचीन भारत
- 2—मध्यकाल
- 3—अँग्रेजों का युग
- 4—आधुनिक युग

‘आग का दरिया’ में उपन्यासकार ने सामासिक संस्कृति, अँग्रेजी साम्राज्य, राष्ट्रीय आन्दोलन तथा स्वतन्त्र आधुनिक भारतीय एवं पाकिस्तानी समाज को लिया है। उन्होंने प्रमुख धाराओं का वर्णन एक ऐसे वातावरण में किया है, जिससे हमें प्रत्येक युग की प्रवृत्ति, उसके गुण और स्वभाव का परिचय प्राप्त हो जाता है। जब एक युग दूसरे युग में प्रवेश करता है तो उस सम्मिश्रण से जो मानसिक और विचारात्मक वातावरण और मूल्य जन्म लेते हैं, उसका अध्ययन इस उपन्यास का महत्वपूर्ण बिन्दु है।

कुर्रतुलऐन हैदर ने ‘आग का दरिया’ में प्राचीन भारत के गुरु एवं शिष्य के संबंध, शैक्षिक विधि तथा ब्रह्मचारी विद्यार्थी के संघर्ष का चित्रण रचनात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है—

“दूसरे ब्राह्मणों की भाँति गौतम नीलम्बर की शिक्षा भी पाँच वर्ष की आयु से प्रारम्भ कर दी गई थी। अब वह पूरे चौबीस वर्ष का हो चुका था और उसे शास्त्रों, मूर्तियाँ बनाने, साहित्य, भूत विद्या, गणित विद्या, व्याकरण, दर्शन, नैतिक शास्त्र, अदाकारी, रसायन विज्ञान तथा औषधि विज्ञान, पाठ्यक्रम के सभी विषय पढ़ाए गए थे। शास्त्र विद्या के अतिरिक्त वह राग विद्या में कुशल था। उत्तर प्रदेश के

रहने वाले भाषा विद्व समझे जाते थे। गौतम को भी भाषा की सेहत का बहुत खयाल रहता।<sup>22</sup>

उपर्युक्त उद्धरण में गौतम नीलम्बर जिसको प्राचीन युग के एक उत्कृष्ट विद्यार्थी के रूप में प्रस्तुत किया गया है वह उस युग का मस्तिष्क एवं प्रतिनिधि था। उसने अनेक प्रचलित विषयों में निपुणता प्राप्त कर ली थी। उस युग में सभी विद्यार्थियों को एक समान जीवन व्यतीत करना पड़ता था और उसे पेट भरने के लिए भिक्षा पर गुजारा करना पड़ता था। लोग विद्यार्थियों को सम्मान के साथ भोजन देते थे, उनका सत्कार करते थे और ऐसा करके स्वयं को भाग्यवान समझते थे। विद्यार्थी एक ब्रह्मचारी का जीवन व्यतीत करता था, परन्तु उस युग में ब्राह्मण माँस खाते थे, लेकिन शिक्षा प्राप्त करने की अवधि में माँस खाना, सुगंध एवं फूल का प्रयोग करना वर्जित था। वह एकान्त में रहते हुए अपने गुरु की आज्ञा का पालन करते थे। 'आग का दरिया' उपन्यास में कुर्तुलऐन हैदर विद्यार्थियों के जीवन दर्शन के संबंध में इस प्रकार लिखती हैं—

“विद्यार्थी को आदेश था कि वह वर्ण और जाति के घमण्ड और प्रसिद्धि की आकांक्षा से दूर रहे। आत्म प्रशंसा की भावना पर काबू पाए। दिमाग का सुकून और हृदय का धैर्य और संतोष प्राप्त करे।<sup>23</sup>”

विद्यार्थियों को वर्ण, जाति, प्रसिद्धि, घमण्ड एवं नींद से दूर रहने का कड़ा आदेश था। विद्यार्थी इनका पालन करते थे। वह शेखी तथा अहं की भावना को कभी उत्पन्न नहीं होने देते थे।

कुर्तुलऐन हैदर प्राचीन काल के श्रावस्ती शहर के रथकार, कुम्हार, बेंत की टोकरी बुनने वाले तथा पंचम वर्ग के रहन सहन एवं जीवन शैली का जीवंत एवं मार्मिक चित्रण इन शब्दों में करती हैं—

“रथकार, मिट्टी के बर्तन बनाने वाले, कलाल और बेंत की टोकरी बुनने वाले शहर के बाहर रहते थे। आबादी से बिल्कुल अलग थलग चण्डालों की बस्ती थी। उनका पंचम वर्ग चारों जातियों से कमतर था केवल लार्शें उठाना और मुर्दे जलाना उनके भाग्य में लिखा था। यही उनका व्यवसाय था। वह केवल मुर्दों की उतरन पहन सकते

थे। उनको आदेश था कि टूटे फूटे बर्तनों में खाना खाएँ और केवल काँसे के आभूषण का प्रयोग करें।<sup>24</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने साहित्य के अध्ययन के द्वारा हिन्दुस्तान के विभिन्न सांस्कृतिक युगों को समझा है और अपने पाठकों को भी समझाने की कोशिश की है। यही कारण है कि 'आग का दरिया' में उपस्थित साहित्य के ऐतिहासिक सन्दर्भ पाठक को विभिन्न युगों की स्थिति से उत्तम ढंग से परिचित ही नहीं कराते बल्कि उन युगों के प्रचलित शास्त्रों से संबंधित ज्ञान भी प्रदान करते हैं।

उपनिषद्, वेद, पुराण, महाभारत, भगवद्गीता के वचन तथा कालिदास, शूद्रक, पाणिनी, कौटिल्य, महावीर जैन, भरत मुनि आदि के दर्शन 'आग का दरिया' में सम्मिलित किए गए हैं। कुर्रतुलऐन हैदर ने प्राचीन भारत के पुराण का सन्दर्भ इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

"पुराणों की कथाएँ उसने पढ़ रखी थीं जिनमें ब्रह्माण्ड के तत्व से रचना का वर्णन था और भगवानों और दार्शनिकों की कहानियाँ और शाही परिवारों की वंशतालिका का। प्राकृतों के इतिहास पर उन कथाओं की नींव थी जो सदियों से दरबारों और चौपालों में दास्तान सुनाते आ रहे थे। उन पुराणों में चालीस चालीस हजार शेर होते थे जो विष्णु और शिव की हम्द (प्रार्थना) के साथ प्रारम्भ किये जाते थे।"<sup>25</sup>

उपर्युक्त उदाहरण से हिन्दुस्तान में कथाओं की परम्परा का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पुराणों की शिक्षा तथा धार्मिक परम्पराएँ भी सामने आती हैं।

उपन्यास के प्रथम भाग में प्राचीन युग में धर्म, जीवन, आत्मा, सभ्यता, राजनीति तथा शास्त्रों के संबंध में जो विचार मिलता है उसका चित्रण किया गया है—

"कपिल नास्तिक नहीं था। सीधा सीधा अधर्मी था। ब्रह्मा के बजाए उसने प्रकृति को ब्रह्माण्ड का कारण माना था। प्रकृति जो कारण कार्य दृष्टि की नींव थी। प्रकृति प्रथम कारण है। मस्तिष्क, स्वाभिमान पाँचों इन्द्रियाँ और चारों तत्व उसकी विधि और सारा विकास उस

पर आधारित है और पुरुष जो शुद्ध आत्मा है, जो न किसी का कारण है और न कार्य और प्रकृति से अलग खड़ा है। पुरुष अन्तहीन इंसानी गवाह है, और उसके और प्रकृति के मिलाप से संसार का उद्गम होता है। उन दोनों के अतिरिक्त तीसरी शक्ति कोई नहीं है।.....वेदान्त वाले अद्वैतवादी ईश्वर को मानने वाले जो एक ब्रह्मा को नितान्त शक्तिमान मानते थे, कार्य कारण भेद के विचार पर कपिल से सहमत नहीं थे।<sup>26</sup>

उपर्युक्त अंश से ऐसा प्रतीत होता है जैसे लेखिका मार्क्सवाद के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की ओर संकेत करती हैं। ब्रह्माण्ड की रचना से संबंधित दर्शन का विवेचन किया गया है। कपिल ब्रह्माण्ड की रचना प्रकृति से मानता था। इन सबके अतिरिक्त शाक्यमुनि के विचार में ईश्वर का अस्तित्व चाहे हो या न हो सत्य केवल यह है कि दुख उपस्थित है और मृत्यु शाश्वत सत्य है—

“प्रत्येक आत्मा दुख है। सर्वम दुखं दुखं। हर शै नश्वर है। शरीर और आत्मा दोनों की कोई असलियत नहीं है। आत्मा अनश्वर नहीं केवल उसको रूप देने वाले तत्व बाकी रहते हैं।.....मनुष्य इस प्रकार बुझ जाता है, जैसे चिराग को फूंक मारकर बुझा दिया जाए। केवल घटनाओं और अनुभव का दौर निरंतर स्थिर है और रहेगा।”<sup>27</sup>

लेखिका यह स्पष्ट करना चाहती हैं कि ईश्वर की सत्ता है या नहीं यह तो विवाद का विषय बन सकता है परन्तु दुख और मृत्यु शाश्वत सत्य है इस विषय पर सभी दर्शन एकमत हैं। उपनिषद् के संबंध में कुर्रतुलऐन हैदर लिखती हैं—

“उपनिषद् में लिखा था कि जिसको अपनी आत्मा की तमन्ना है, उसके लिए बाप-बाप नहीं, माँ-माँ नहीं, दुनिया-दुनिया नहीं, देवता-देवता नहीं, चोर-चोर नहीं, कातिल-कातिल नहीं। उसको सुकर्म और कुकर्म की चिंता नहीं क्योंकि वह दिल के सारे दुखों पर विजय पा चुका था।”<sup>28</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर उपनिषद् की चर्चा करते हुए लिखती हैं कि जो व्यक्ति अपनी आत्मा की प्राप्ति चाहता है तो फिर वह अपने दिल की सारी ख्वाहिशों, आकांक्षाओं और दुखों पर विजय प्राप्त कर लेता है। उसके लिए सभी रिश्ते अर्थहीन हो जाते हैं।

कुर्रतुलऐन हैदर ने धार्मिक पुस्तकों के साथ ही भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' को बहुत महत्व दिया है। 'नाट्यशास्त्र' संस्कृत की प्राचीन रचना है। इसको देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्राचीन हिन्दुस्तान में ललित कलाएँ बहुत विकसित थीं। 'नाट्यशास्त्र' नाटक से संबंधित है लेकिन साथ ही उसमें अन्य विषय भी सम्मिलित हैं। संगीत, नृत्य, अलंकारिक शैली, भाषण कौशल तथा रस आदि विषय पर लिखा गया यह महत्वपूर्ण ग्रंथ है। 'आग का दरिया' में नाट्यशास्त्र के जिन नियमों का वर्णन किया गया है उनमें अभिनय, नृत्य, नाटकों के प्रकार आदि सम्मिलित हैं। अभिनय और नाटकों के प्रकारों का वर्णन करते हुए वह लिखती हैं—

“नाट्यशास्त्र में लिखा था कि नायक के लिए आवश्यक है कि उसकी आँखें बड़ी हों, होंठ लाल, दाँत चमकीले। उसमें प्रतिष्ठा, अभिमान और घमण्ड होना चाहिए। उसे छंद कला, भाषण कला तथा ललित कला पर निपुणता प्राप्त होनी चाहिए.....भरतमुनि ने अङ्गतालिस प्रकार के नायक और पौने चार सौ प्रकार की नायिकाओं की सूची बनाई थी। उन्होंने निर्देशन और रंग भूमि की साज सज्जा तथा अभिनय कर्ताओं के गुणों से संबंधित विस्तार से लिखा था। चैन और संतुलन उदाहरण के लिए आवश्यक था। तीव्र दुख तथा हत्या और दहशत के दृश्यों से बचा जाता था ताकि दर्शकों की मानसिक शान्ति में बाधा न पड़े।”<sup>29</sup>

उपर्युक्त उद्धरण में कुर्रतुलऐन हैदर ने भरतमुनि के रंगमंच और नाटकों तथा अभिनय से संबंधित विचारों का सार प्रस्तुत किया है। लेखिका इस बात की ओर संकेत करती हैं कि भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के मुख्य नियमों में दर्शकों की मानसिक शान्ति में बाधा न पहुँचाने का नाट्यकारों को विशेष निर्देश दिया है। नाट्यशास्त्र का चतुर्थ अध्याय नृत्य से संबंधित है। 'आग का दरिया' में इसको आधार बनाकर कुर्रतुलऐन हैदर ने तांडव नृत्य का वर्णन किया है। तांडव नृत्य और विभिन्न रसों के मेल-जोल से उत्पन्न होने वाली मानसिक स्थितियों का वर्णन करते हुए वे लिखती हैं—

“इस नृत्य और रस के भाव मनुष्य की संपूर्ण मानसिक, दिली और आध्यात्मिक स्थितियों का चित्रण है और सांसारिक कल्पनाओं से उन्हें लगाव दिया गया है। श्रंगार रस विष्णु का है। उसमें उनके अवतार

नटवर गिरधारी वृन्दावन में अपनी गोपलीला रचाते हैं। वीर रस कड़कते गरजते बादलों के सुनहरे भगवान इन्द्र से संबंधित है। करुणा दया का भाव है। दरिया से उसका संबंध जोड़ा गया है। हास्य श्वेत रंग की पोशाक में परिहास है। भयानक रस का रंग काला है। काल से संबंधित वीभत्स शिव के महाकाल रूप का नीला लक्षण है। अद्भुत रस में आश्चर्य है।<sup>30</sup>

इस प्रकार कुर्रतुलऐन हैदर ने बड़े कलात्मक ढंग से नाट्यशास्त्र के आठ रसों और उनसे संबंधित लक्षणों की स्पष्ट व्याख्या करने का प्रयास किया है।

‘आग का दरिया’ उपन्यास प्राचीन युग से मध्य युग में प्रवेश करता है जो हिन्दू और इस्लामी संस्कृति के मिलन का युग है। इस युग का प्रतिनिधि कमालउद्दीन है, उसका पिता अरबी तथा माँ ईरानी थी। कमालउद्दीन मध्यकाल की हिन्दू मुस्लिम संस्कृति के रचे बसे तथा रंगे हुए मुसलमान का यथार्थवादी प्रतिनिधि है। कुर्रतुलऐन हैदर ने मध्यकाल की चर्चा करते हुए दो सांस्कृतिक धाराओं के मेलजोल पर बल दिया है और यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि मुसलमानों ने हिन्दुस्तान आने के पश्चात् इस देश को किस प्रकार अपनाया तथा प्राचीन हिन्दुस्तानी संस्कृति को प्रभावित किया और इसके साथ-साथ स्वयं भी उसका प्रभाव स्वीकार किया। इस प्रकार हिन्दुस्तान में एक नई हिन्दू इस्लामी संस्कृति अस्तित्व में आई।

अबुलमंसूर कमालउद्दीन हिन्दुस्तान को अपना देश समझकर, संपूर्ण रूप से हिन्दुस्तानी संस्कृति एवं सभ्यता में रंग जाता है। हिन्दुस्तानी भाषा में शायरी करता है और कहानियाँ लिखता है। वह धार्मिक आन्दोलन से भी प्रभावित होता है जो मुसलमानों में सूफी तथा हिन्दुओं में भक्ति आंदोलन के नाम से जाना जाता है। इस भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक कबीर थे। यह आंदोलन धर्म से अलग मित्रता एवं प्रेम का उपदेश देता था। यह हिन्दू मुस्लिम विश्वासों का मिला जुला आंदोलन था। इस सामासिक संस्कृति का वर्णन ‘आग का दरिया’ में कुर्रतुलऐन हैदर इन शब्दों में करती हैं—

“सारा देश एक नए रंग में रंगा जा चुका था। पिछले तीन सौ साल से उस भक्ति मार्ग पर एक बहुत सुन्दर यात्री समूह चल रहा था। उस समूह में कैसे कैसे लोग सम्मिलित थे। अजमेर के मुईनउद्दीन और एटा के अमीर खुसरो, दिल्ली के निजामुद्दीन और गुजरात के नरसिंह मेहता और बंगाल के बैरभूम का चण्डीदास और बिहार के मिथलापुरी के विद्यापति और महाराष्ट्र का दर्जी नामदेव, प्रयाग के रामानंद और दक्षिण के माधव और वल्लभ। बादशाहों और क्षत्रपति राजाओं के दरबारों और राजाओं, वजीरों और सिपाहियों के संसार से निकलकर कमाल ने देखा कि उस दूसरी दुनिया में मजदूर और नाई और मोची और किसान बसे हुए थे। यह गणतन्त्र हिन्दुस्तान था।”<sup>31</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर भारत की सामासिक संस्कृति के निर्माण में भक्ति आंदोलन और सूफी आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख करती हैं। जिसमें हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही धर्मों के लोगों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया और उल्लेखनीय बात यह थी कि राजाश्रय और धर्माश्रय से दूर लोकाश्रय में लोकजीवन के सहयोग से यह संस्कृति निर्मित हुई। कमाल ईराक के बादशाहों के दरबारों, वजीरों और सिपाहियों के संसार से निकलकर, इधर हिन्दुस्तान आया था। उसने वहाँ राजसी प्रवृत्तियाँ ही देखी थीं। हिन्दुस्तान में उसका साक्षात्कार निम्न वर्ग और साधारण लोगों की असाधारण प्रतिभा से होता है जिससे वह अभिभूत हो जाता है।

‘आग का दरिया’ में कुर्रतुलऐन हैदर वेदान्त दर्शन के प्रवर्तक शंकराचार्य के दर्शन का उल्लेख इस प्रकार करती हैं—

“हिन्दुस्तान का महान विचारक शंकराचार्य! उसके दर्शन का केन्द्र एकेश्वरवाद था। ईश्वर जो शुद्ध मस्तिष्क और शुद्ध व्यक्तित्व था, निर्गुण! और दुनिया जो माया थी।”<sup>32</sup>

शंकराचार्य हिन्दू धर्म में नवीनता लाए। इस नवीनता और भक्ति आंदोलन ने हिन्दुस्तानी अध्यात्मवाद का प्रारूप निश्चित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिन्दू जोगियों और मुसलमान सूफियों की आराधना करने की पद्धति एक दूसरे से बहुत मिलती जुलती थी। कुर्रतुलऐन हैदर भक्ति और सूफी आंदोलन के संबंध में इस प्रकार अपने विचार प्रकट करती हैं—

“बिखराव और अशान्ति के युग में सूफियों की खानकाह में ज्ञान सुरक्षित रहा तथा गुदड़ी पहनने वाले सूफी एक एक करके इस नए देश में चले आ रहे थे। जिसे महमूद ने विजय किया था। इन सूफियों ने बंगाल, बिहार, अवध, राजस्थान, दक्षिण, गुजरात, सिन्ध तथा पंजाब में नए विहार आबाद किए। सरजू के किनारे रहने वाले यह पण्डित लोग एक नए चक्कर में पड़ रहे थे। इस चक्कर का नाम उन्होंने भक्ति रख छोड़ा था। वह लोग दिन रात निर्गुण राम, निर्गुण राम जपो रे भाई की रट लगाया करते थे। उन्हीं के यहाँ कमालउद्दीन, शंकराचार्य तथा वल्लभ और रामानंद के नामों से परिचित हुआ और अब सबके सब काशी के भक्त कबीर के पीछे दीवाने होते जा रहे थे।”<sup>33</sup>

निर्गुण भक्ति आंदोलन का महत्व बढ़ रहा था। कबीर चारों ओर प्रसिद्ध हो रहे थे। कमालउद्दीन कबीर की शिक्षा से बहुत प्रभावित हुआ। वह विभिन्न धर्मों और दर्शनों का अध्ययन करने के बाद इस परिणाम पर पहुँचा कि प्रेम बाहरी धर्म से उच्च है और प्रेम ही मूलमंत्र है। कबीर की निर्गुण राम की कल्पना तथा मानव मित्रता संबंधी विचारों ने उसे निम्न जाति और मज़दूरों का देवता बना दिया।

सूफी और निर्गुण भक्ति आंदोलन ने उस युग की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन को बहुत प्रभावित किया। सूफियों के प्रभाव से हिन्दू मुसलमान एक दूसरे के बहुत निकट हो गए थे।

अबुलमंसूर कमालउद्दीन हिन्दुस्तानी मुसलमानों से प्रारंभ में अपने भीतर कोई समानता खोज नहीं पाता, लेकिन यही कमालउद्दीन बहुत दिनों हिन्दुस्तान में रहने के बाद रोज़ डाकू निज़ाम की यह नात सुनता है—

“अगर मोहम्मद अवतार जन्म न लेते।  
ते अल्लाह की सत्ता त्रिलोक में स्थापित न होती  
नमो: नमो: हैं अब्दुल्लाह और आमना  
जय हो मक्का नगरी की और सारे औलिया की और बीबी फ़ात्मा की  
जो सारे जग की माता हैं।  
जय हो उत्तर में हिमालय की जिसके चरणों में संपूर्ण ब्रह्माण्ड फैला है  
जय हो पूरब से निकलते सूर्य की  
अब मैं वृन्दावन के सामने झुकता हूँ



भगवान कृष्ण और श्री राधे को और चारों खोंट नदियों और सागरों को मेरा  
 प्रणाम, जय हो मुसलमानों के फिरकों की  
 जय धरती माता और पवित्र संखा नदी की  
 नौपाड़ा की मस्जिद को मेरा प्रणाम  
 क्योंकि वह बड़ा पीर एक बार इन क्षेत्रों से गुज़रा था  
 अब मैं आगे बढ़कर सीता घाट पहुँचता हूँ  
 आदर्श स्त्री सीता देवी और उनके महाराज रघुनाथ को मेरा प्रणाम,  
 जय हो, जय हो, जय हो।<sup>34</sup>

कमालउद्दीन पर इस नात का बहुत प्रभाव पड़ता है क्योंकि इस नात में प्रत्येक धर्म के महत्त्व को स्वीकार करते हुए उसमें आस्था व्यक्त की गई है।

इसके पश्चात् कमाल जो ईरान में राजसी प्रवृत्ति का व्यक्ति था, हिन्दुस्तान आकर यहाँ के लोक जीवन से इतना प्रभावित होता है कि एक शूद्र लड़की शीला से विवाह कर लेता है और एक भारतीय किसान की भाँति जीवन व्यतीत करने लगता है तथा पूरी तरह हिन्दुस्तानी रंग में रंग जाता है—

“बग़दाद का अबुलमंसूर कमालउद्दीन जो पचास साल पहले इधर इराक़ से हिन्द आया था, कोई दूसरा इंसान था। यह कोई भिन्न मनुष्य था जो बालों की लटें और दाढ़ी बढ़ाए चार ख़ाने का तहमद बाँधे हाथ में इकतारा लिए विष्णु गीत अलाप रहा है।<sup>35</sup>

हिन्दुस्तान आकर कमालउद्दीन पर भारतीयता का जो रंग चढ़ा उसने उसका पूरा व्यक्तित्व बदल दिया।

कुर्रतुलऐन हैदर मध्ययुग के प्रमुख भक्ति और सूफी आंदोलनों का चित्रण करके इस परिणाम पर पहुँचती हैं कि युद्ध और लड़ाइयाँ धर्मों के बीच नहीं होती बल्कि राजनीतिक शक्तियों के बीच होती हैं। मध्ययुग में हिन्दू और मुसलमानों में भिन्नता नहीं थी। धर्म निरपेक्षता तथा उच्च विचार चारों ओर फैले हुए थे। आज दोनों धर्मों के बीच जो दूरियाँ और वैमनस्य की भावना है वह उस समय नहीं थी। अंग्रेजों ने हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों के बीच फूट डालकर दूरियाँ पैदा कर दीं।

हिन्दुस्तानी काव्य परम्परा में स्त्री का स्वरूप अरबी काव्य परम्परा से भिन्न रहा है। 'आग का दरिया' के मध्य युग का अबुलमंसूर कमालउद्दीन ईराक से हिन्दुस्तान आता है और वह इस भिन्नता का अनुभव करता है —

"कमाल जिस भाषा में शायरी करता था उसकी परम्परा थी कि वीरयोद्धा अपनी प्रेमिका के लिए जान पर खेल जाते थे। यह बहुत अच्छी कल्पना थी। मृगनयनी आँखों वाली शहजादी लाल गुलाब का फूल हाथ में लेकर अलकबीर के किनारे झरोखे में बैठी है। झरोखे के नीचे शूरवीर शायर रुबाब बजा बजा कर उसे अपने भयानक प्रेम के गीत सुना रहा है। यह गीत जो चाँदनी रातों में वादियों और पहाड़ी रास्तों पर गूँजते थे और जिसकी गूँज फ्रांस और एलिस के उस पार तक फैल चुकी थी। शूरवीर शायर प्रेमिका को ऊँचे खंबे पर बिठाकर उसकी पूजा करता था और जब चाहता था उसे खंबे से उतार देता था। इस अजनबी बेटुके देश में आकर उसने ईश्वर की बे जुबान रचना को एक नवीन रूप में देखा! वह तो स्वयं हाथ में रुबाब लिए प्रेम के गीत अलाप रही थी। राधा बनकर कृष्ण की पूजा करती थी लेकिन यह पूजा इतनी उच्च थी कि उसके योग्य बनने के लिए कृष्ण को ईश्वर का स्तर प्राप्त करना पड़ा था।"<sup>36</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर का विचार है कि हिन्दुस्तान और ईराक के काव्य स्वरूप में भिन्नता है। ईराक की शायरी में प्रेमी अपनी प्रेमिका को रिझाने का प्रयत्न करता है परन्तु मध्यकालीन भारतीय काव्य पद्धति में प्रेमिका अपने प्रेमी को प्राप्त करने और प्रभावित करने का प्रयत्न करती है परन्तु उस प्रेमी को नायकत्व से महानायकत्व तक भी पहुँचना पड़ता है।

उपन्यास की कथा मध्य युग से अँग्रेजों के युग में पहुँचती है। जहाँ हम सरल ऐश्ले से मिलते हैं। 18वीं शताब्दी के अंत का आधा युग है जब हिन्दुस्तान पर अँग्रेजों ने अपनी पकड़ मज़बूत करनी प्रारम्भ कर दी थी। इस युग में अँग्रेजों और हिन्दुस्तानियों के बीच शासक और गुलाम का संबंध स्थापित होने लगता है। अँग्रेज स्वयं को उच्च समझते थे और संपूर्ण हिन्दुस्तानी संस्कृति को निम्न और घटिया समझते थे।

अँग्रेजों ने हिन्दुस्तानी परम्परा, सभ्यता, रीति रिवाज तथा धर्म सभी का मज़ाक उड़ाया। उन्होंने असंख्य हिन्दुस्तानियों को अपने रंग में रंग लिया। अँग्रेजों

ने भारत के उद्योग धन्धों को किस प्रकार नष्ट किया उसका मार्मिक चित्रण इस प्रकार किया गया है—

“ढाके के कारखाने में उल्लू बोल रहे थे। सारे देश में लोहे की भट्टियाँ बहुत पहले ही ठन्डी पड़ चुकी थीं। इंग्लिस्तान की मिलों से काला धुआँ उठा था। जिसने सारे संसार में अंधेरा कर दिया और इस अंधेरे में हिन्दुस्तानी जुलाहों की हड्डियाँ हिन्दुस्तान के मैदानों की धूप में चमक रही थीं। हिन्दुस्तान से लूटी हुई दौलत की नींव पर इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति और नवीन पूँजीवाद की नींव उठाई जा चुकी थी।”<sup>37</sup>

अँग्रेजों ने अपने हित के लिए हिन्दुस्तानियों की संस्कृति को तो भ्रष्ट किया ही, यहाँ के उद्योग धन्धों को भी विनाश की कगार पर पहुँचा दिया। हिन्दुस्तान की दौलत को वह अपने देश ले जाते रहे और वहाँ पर नवीन पूँजीवाद तथा उद्योग-धन्धों का निर्माण करते रहे।

हिन्दुस्तान का उभरता हुआ मध्यवर्ग अँग्रेजों के सहयोग से व्यापार कर रहा था, और उनके साथ मिलकर स्वयं भी बड़े पैमाने पर अपने ही देशवासियों का शोषण कर रहा था। अँग्रेज भारतीय मजदूरों के उत्पादन को कच्चे माल के रूप में इंग्लैण्ड भेजते थे। जहाँ की मिलों में हिन्दुस्तान के कच्चे माल से तैयार किया गया माल वापस हिन्दुस्तान में बेचा जाता था। कुर्तुलऐन हैदर ने इस पूरी स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है—

“तेल सोने के मोल बिक रहा था। नमक अप्राप्य था। चावल के लिए वह तरस गया था। छाली, तम्बाकू प्रत्येक वस्तु के व्यवसाय पर कम्पनी बहादुर ने अधिकार जमा लिया था। दरियाओं पर उनकी कश्तियाँ माल से लदी हुई चल रही थीं। मगर बाज़ार में मूल्य आसमान तक पहुँच चुके थे। हिन्दुस्तान जो संसार का सबसे बड़ा औद्योगिक देश था, अब कृषि प्रधान देश में परिवर्तित कर दिया गया.....।”<sup>38</sup>

हिन्दुस्तान को आर्थिक रूप से अँग्रेजों ने पंगु बना दिया था। यहाँ के उद्योग धन्धों को नष्ट करके उसे आर्थिक रूप से निर्बल बना दिया। इससे हिन्दुस्तानियों के सामने बहुत मुश्किलें आ गई थीं।

अँग्रेज़, हिन्दुस्तानियों को अच्छी तरह जानते थे कि वह धर्मभीरु हैं। उन्होंने एक बार इसाई धर्म अपना लिया तो उन पर शासन करना सरल हो जाएगा। इसाई धर्म अपनाने वाले हिन्दुस्तानियों के लिए इसाई मिशनरियों ने विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया था। अछूत और निम्न वर्ग ने अपनी समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए धर्म परिवर्तन का सहारा लिया। इस ओर कुर्तुलऐन हैदर ने 'आग का दरिया' में इस प्रकार संकेत किया है—

“शीला का भाई अपनी गरीबी से तंग आकर सोच रहा था कि श्रीरामपुर जकर इसाई हो जाए। सारे दुख दूर हो जाएंगे। उसको अपनी बहनों के बोझ से छुटकारा मिल जाएगा। मिशन वाले स्वयं ही उनकी शादी ब्याह की चिंता करेंगे।”<sup>39</sup>

इस युग में निम्न और अछूत वर्ग इसाई धर्म अपनाने लगे। मुसलमानों ने इसाई मिशनरियों के विरोध में इस्लाम की महत्ता और सत्यता को सिद्ध करने के लिए अनेक आंदोलन चलाए, लेकिन अछूत और निम्न वर्गों में इसाईयत का प्रसार होता रहा। परिणामस्वरूप एक ऐसे एंग्लो इण्डियन वर्ग की नींव पड़ी जिसे एक युग तक आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा प्राप्त होती रही।

अँग्रेज़ शासकों ने अपने देश और परिवार से दूर अपने अकेलेपन से बचने के लिए, समय व्यतीत करने के लिए पराधीन जनता के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाने का प्रयास किया एवं उनकी औरतों तथा अन्य सामाजिक सुविधाओं से परिचित होने और समृद्धि प्राप्त करने के लिए प्रारम्भ में घुल मिल गए। परिणामस्वरूप हिन्द यूरोपीय संस्कृति का एक रूप उभरकर सामने आया, जिसका उल्लेख उपन्यास में इस प्रकार किया गया है—

“सरल अब कलकत्ता की उच्च सोसाइटी में रच बस चुका था। और इसी स्टाइल से रहता था, जो इस समय इस सोसाइटी की विशेषता थी। उसके पालकी धारक हर समय लाल वर्दी पहने तैयार रहते। चौकी दार चाँदी की छड़ियाँ लेकर चलते। बावर्ची और सेवक उसके भोजनालय के निर्देशक थे। हुक्का लाने वाला उसका पेचवान भरता था। एक अकेला सरल ऐशले और उसके व्यक्तिगत समूह में चालीस पचास आदमी सम्मिलित थे.....नवाबों की भाँति जीवन व्यतीत करना उनका आदर्श था। हिन्दुस्तानी नवाबों और अँग्रेज़ उच्च वर्ग ने आपस

में समझौता करके एक बहुत ही सभ्य वातावरण की नींव डाली थी। बंगाल की पूँजीवादी संस्कृति में अँग्रेज़ अफ़सर भी घुलमिल चुका था। प्लासी के बाद कम्पनी का फैक्टरी केवल दौलत इकट्ठा करके वतन वापस जाने के बजाय अब नवाब कहलाने के सपने देखता था और उर्दू साहित्य में दिलचस्पी लेता था और हरम में दस दस देसी औरतें रखता था। सरल भी शनीला को अपनी कोठी में लाकर बाकायदा नवाब बन गया।<sup>40</sup>

सरल ऐशले के माध्यम से एक ऐसे पात्र का चित्रण किया गया है जो इंग्लैण्ड से भारत आने के बाद यहाँ की संस्कृति में रच बस जाना चाहता है।

कुर्रतुलऐन हैदर ने 19वीं शताब्दी के अंत में होने वाले विभिन्न सुधारवादी आंदोलनों का भी संक्षिप्त उल्लेख किया है तथा नवजागरण का प्रभाव देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों को किस प्रकार उन्नत कर रहा था उसका चित्रण इस प्रकार किया है—

"उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में कलकत्ता बहुत आधुनिक शहर था। जिसमें अनगिनत कालेज थे और यहाँ राजनीतिक और सांस्कृतिक आंदोलनों और प्रेस और अखबार नए बंगाली उपन्यासों में हिन्दू संस्कृति की नवीनता का प्रचार किया जा रहा था। राजा सुरेन्द्र मोहन टैगोर ने हिन्दुस्तानी संगीत को जीवित करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया था। स्वामी विवेकानंद दर्शन का प्रचार कर रहे थे। देश में प्रत्येक ओर राजनीतिक एवं सांस्कृतिक आंदोलनों का प्रचार हो रहा था।"<sup>41</sup>

विभिन्न सुधारवादी आंदोलनों ने आधुनिक युग के सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन को प्रभावित किया। 'आग का दरिया' के इस भाग में महत्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थलों में बंगाल एवं लखनऊ की चर्चा विस्तार से की गई है।

कुर्रतुलऐन हैदर संस्कृति एवं सभ्यता के मिलाप के उत्थान बिन्दु को 18वीं शताब्दी के अंत से 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ के लखनऊ में खोजती हैं। पूरा लखनऊ एक रंग में रंग चुका था। रीति रिवाज खाने पीने का ढंग तथा भाषा एवं साहित्य सब में सामासिक संस्कृति की झलक दिखाई देती है। 'आग का दरिया' से एक उदाहरण इस प्रकार है जिसमें लखनऊ की सभ्यता का चित्रित हुई है—

"लखनऊ के रोमी दरवाजे में पहर दिन चढ़े की नौबत बजने वाली थी चौक में चहल पहल प्रारम्भ हो गई थी। राजाओं के महलों के बाग साफ़ किये जा रहे थे। नौकर इन्हीं फूलों के गजरे और गुलदस्ते समेट रहे थे। मेहरियाँ खुश गप्पियों में व्यस्त थीं। फिर दोपहर का समय हुआ, भोजनालयों की शोभा बढ़ी, भटियारनें व्यस्त हुईं, दीवान खानों में दस्तर खान बिछे, नौकरानियाँ पानदान खोलकर बैठीं। लड़कियाँ चुनरियाँ रँगने में व्यस्त हुईं। फिर चौथा पहर आया, सूरज डूबने लगा, गली कूँचों में से गीतों की आवाजें आना प्रारम्भ हुईं। सुन्दर मुख, सुन्दर लिबास कंजड़ने, तेज़ तर्रार तंबूलने, सुन्दर तथा कुशाग्र बुद्धि वाली भटियारनें सावन गाती फिरती थीं। गली के लड़के बैतबाजी करते जाते थे और गोलियाँ खेलते थे। .....नदी किनारे बैठे योगी तरई बजाते थे। नई विवाहित लड़कियाँ अपने अपने घरों में बैठी सड़क की ओर देखती थीं कि सावन मनाने के लिए उनका भाई मायके से डोली कब भेजेगा। हलवाई पूरियाँ छान रहे थे, बच्चियाँ पकवान बना रही थीं प्रत्येक मनुष्य प्रसन्न था।"<sup>42</sup>

लखनऊ की संस्कृति अपनी एक अलग पहचान रखती है और उर्पयुक्त अंश में उसका रंग अपनी खुशबू बिखेरता हुआ दिखाई देता है।

1857 ई० की क्रान्ति के पश्चात् लखनऊ का यह रंग धीरे धीरे फीका पड़ने लगा। अँग्रेजी शासन की नींव पड़ने के बाद पुरानी शक्तियाँ कमजोर पड़ने लगीं। कृषि व्यवस्था के स्थान पर पूँजीवादी व्यवस्था उभरने लगी। पूँजीवादी वर्ग ने समय के साथ साथ चलने के लिए पुराने अधिकारों से संबंध तोड़कर अँग्रेजी रंग स्वीकार किया। अतः एक नई संस्कृति एवं सभ्यता उभरकर सामने आई।

'आग का दरिया' का चौथा भाग विभाजन से पहले और बाद के समय पर आधारित है। इस पूरे युग में एक जागीरदार समाज अपने अस्तित्व का बोध कराता है। यहाँ गौतम, कमाल, हरिशंकर, चम्पा, तलत, निर्मला तथा और भी कई पात्र उपस्थित हैं। यह सभी पात्र हिन्दुस्तान की सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये पात्र शिक्षित, बुद्धिमान, संवेदनशील तथा राजनीतिक समझ रखने वाले नवयुवक और नवयुवतियों के रूप में दिखाई देते हैं। ये सभी पात्र अत्यंत विवकेशील हैं लेकिन कार्य करने में असफल हो जाते हैं, उनके सपने एवं आकांक्षाएँ

क्रियान्वित नहीं हो पाती लेकिन ये सभी हिन्दुस्तान की सामासिक संस्कृति से बहुत अधिक प्रेम करते हैं।

इस भाग में हिन्दुस्तानी सोच पर यूरोप की घटनाओं और विचारों का प्रभाव मिलता है। लंदन और पेरिस का सामाजिक जीवन तथा शैक्षिक वातावरण का चित्रण भी है, राजनीति पर समीक्षाएँ हैं, टिप्पणी हैं तथा दार्शनिक विचारों का प्रकटन भी है लेकिन 1947 ई० की विभाजन की घटना उनकी कल्पनाओं और विचारों को ध्वस्त कर देती है। राष्ट्रीय एकता का प्रवर्तक कमाल, नए राष्ट्र की ओर मुड़ने पर विवश होता है। चम्पा अपने चाचा के पास छोटे से खण्डहर नुमा मकान में जीवन व्यतीत करने पर मजबूर होती है। इस भाग में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी समाजों की चर्चा भी की गई है।

कुर्रतुलऐन हैदर को पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों देशों में रहने का अवसर प्राप्त हुआ है। इसलिए उन्होंने 'आग का दरिया' में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक जड़ों की पहचान के संबंध में दोनों देशों के विद्वानों की असमंजसता और विरोध को विस्तार से ऐतिहासिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने दोनों देशों की राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं को निकट से देखा है। अतः 'आग का दरिया' में वह रूप संपूर्णता के साथ उभरकर सामने आया है।

कुर्रतुलऐन हैदर के यहाँ अविभाजित हिन्दुस्तान की सामासिक संस्कृति तथा जागीरदारी मूल्यों व परम्पराओं से भावनात्मक जुड़ाव अतीत की ओर प्रत्यागमन का कारण बनता है। यह सामासिक, सांस्कृतिक वातावरण विभाजन की आँधी से छिन्न भिन्न हो जाता है। हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान जाने वाले लोगों को भी इस संस्कृति के छूट जाने का दुख था। कुर्रतुलऐन हैदर ने युद्ध की क्रूरता, सांस्कृतिक विरासत का अंत और छिन्न भिन्नता का जो चित्रण किया है वह अत्यंत संवेदनशील एवं मर्मस्पर्शी है। इस प्रकार कुर्रतुलऐन हैदर ने 'आग का दरिया' उपन्यास में हिन्दुस्तान के प्राचीन से लेकर आधुनिक समाज और संस्कृति तथा विभाजन के बाद

के पाकिस्तान की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का कलात्मक और मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।

**‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ का सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन :**

कमलेश्वर का उपन्यास ‘कितने पाकिस्तान’ तथा कुर्रतुलऐन हैदर का उपन्यास ‘आग का दरिया’ दोनों उपन्यासों को जब हम तुलनात्मक दृष्टि से देखते हैं तो उनके प्रकाशन काल में 41 वर्ष का अन्तर दिखाई देता है। कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर दोनों ही प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े हुए उपन्यासकार हैं। इस लिए दोनों के विचारों और दृष्टि में काफी समानता दिखाई देती है। दोनों ही उपन्यासकार विभाजन की पीड़ा से दुखी और पीड़ित थे और इन दोनों उपन्यासों में उनकी यही पीड़ा अभिव्यक्त हुई है।

सन् 1947 ई० में हुई भारत विभाजन की घटना उपमहाद्वीप के इतिहास की प्रमुख घटना थी, जो एक त्रासदी के रूप में सामने आयी। इस विभाजन की घटना ने कलाकारों और विशेष रूप से लेखकों को अत्यधिक प्रभावित किया। दोनों देशों भारत और पाकिस्तान के लेखकों और विद्वानों ने अपनी संस्कृति को तलाशने का प्रयास किया। भारत और पाकिस्तान दोनों देशों के लेखकों ने भारत विभाजन की इस घटना को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि इस घटना ने भारत की सामासिक संस्कृति को छिन्न-भिन्न कर दिया, उसे टुकड़ों में बाँट दिया।

कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर दोनों ही उपन्यासकार हिन्दुस्तान के विभाजन को ग़लत मानते हैं। अपने उपन्यास ‘कितने पाकिस्तान’ में कमलेश्वर समाज विरोधी शक्तियों पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं—

“हिन्दुस्तान की कौमी तक्दीर एक है....तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा। और आज़ादी का लाल किला मुहब्बत की बुनियाद पर खड़ा होगा.....नफ़रत की बुनियाद पर नहीं! पाकिस्तान एक नफ़रत का नाम है! नफ़रत के उसूलों पर पाकिस्तान बना है! जिन्नाह ने इतिहास नहीं बनाया.....साम्राज्यवादी ताकतों के इतिहास



ने जिन्नाह को बनाया है! मुझे यह मन्जूर नहीं!.....,मज़हब से कौम नहीं बनती.....एक खून और एक तवारीख़ से कौम बनती है! अगर मज़हब से कौम की शिनाख़्त पैदा करोगे तो यह सारी दुनिया टुकड़ों में बंट जाएगी.....<sup>43</sup>

वहीं दूसरी ओर कुर्रतुलऐन हैदर 'आग का दरिया' में दोनों देशों की सांस्कृतिक पहचान से संबंधित संघर्ष, टकराव, तथा विरोधी दृष्टियों पर व्यंग्य करती हुई लिखती हैं—

"हिन्दुस्तान पूरा प्रयास करके यह प्रमाणित करने में प्रवृत्त है कि विभाजन ग़लत था और देश एक है और उसकी संस्कृति विभाजन के लिये नहीं है, पाकिस्तान यह प्रमाणित करना चाहता है कि विभाजन सही था और यहाँ कि संस्कृति बहुत भिन्न है और इसी अलग राष्ट्रीयता की नींव पर यह देश प्राप्त किया गया है। इधर हिन्दुस्तान कहता है कि संपूर्ण पूरब की संस्कृति का स्रोत उसका कल्चर है। उधर राशिदा के आंदोलन और अब्बासियों और मुग़लों के युग के राग अलापे जाते हैं। इन दोनों देशों का प्रचार बड़े जोरों पर चालू है।"<sup>44</sup>

हिन्दुस्तान के विभाजन के बाद दोनों ही देशों के राजनीतिज्ञों ने अपने-अपने स्तर से अपने-अपने देश का प्रचार करना प्रारम्भ किया। हिन्दुस्तान के लोग विभाजन को ग़लत मानते थे कि इस देश की संस्कृति को विभाजित नहीं किया जा सकता क्योंकि संपूर्ण पूरब की संस्कृति का स्रोत हिन्दुस्तानी संस्कृति है। दूसरी ओर पाकिस्तान के लोग इस विभाजन को सही मानते थे। वह कहते थे कि यहाँ की संस्कृति हिन्दुस्तान की संस्कृति से भिन्न है और इसी कारण इस देश का निर्माण हुआ है।

हिन्दुस्तान के विभाजन का प्रभाव मुख्य रूप से दोनों देशों हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लेखकों और कलाकारों पर पड़ा। लेकिन दोनों देशों के लेखक इस विभाजन की घटना को मानसिक स्तर पर स्वीकार नहीं कर पाए। कमलेश्वर हिन्दुस्तान को केवल एक राष्ट्र मानते हैं और वह इस राष्ट्र की बुनियाद प्रेम को मानते हैं तथा पाकिस्तान को नफ़रत और घृणा का परिणाम मानते हैं क्योंकि पाकिस्तान का निर्माण धर्म के नाम पर हुआ है। 'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का

‘दरिया’ दोनों ही उपन्यास विभाजन की त्रासदी पर लिखे गए। कमलेश्वर ने हिन्दुस्तान के विभाजन से उपजे दुख दर्द तथा अशान्ति को उपन्यास में जगह-जगह उठाया है। उपन्यास के एक पात्र कॉमरेड इमाम नाज़िश, जिसने विभाजन के समय पाकिस्तान जाने का फैसला किया था और उसे वहाँ कठिनाई पूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ा। कमलेश्वर इमाम नाज़िश के शब्दों में विभाजन के प्रभाव का चित्रण इस प्रकार करते हैं—

“अब मेरे पास पछतावे के सिवा कुछ नहीं है.....नफ़रत के जिस सैलाब का हमने समर्थन किया था, उसने किसी को कहीं नहीं पहुँचाया...मैं अपने घर और बीवी को छोड़कर उस अंधे सैलाब में बहता हुआ पाकिस्तान पहुँच गया था.....अपनी सरज़मीं से उखड़ कर.. ..पाकिस्तान में लगातार मुझे भूमिगत रहना पड़ा.....मैं नफ़रत के सैलाब का हिस्सा बना, पर मेरी बीवी एक नई तामीर के सैलाब का हिस्सा बनी !”<sup>45</sup>

इमाम नाज़िश के माध्यम से कमलेश्वर यह कहना चाहते हैं कि पाकिस्तान जाने वाले भारतीय को नफ़रत का हिस्सा बनना पड़ा और मंज़िल से भटक गया परन्तु जो भारत में रह गया वह अपनी जड़ों से जुड़ा रहा और उन्नति की मंज़िलें तय करता रहा।

‘आग का दरिया’ में कुर्रतुलऐन हैदर विभाजन से प्रभावित जीवन को इस प्रकार चित्रित करती हैं—

“कमाल लखनऊ पहुँचा, गुलफ़िशाँ के फाटक में दाख़िल हुआ। उसे दुनिया बदली हुई नज़र आयी। बाग़ के दरख़्त जल चुके थे। पौधे सूख गए थे। घास की जगह झाड़ झन्काड़ उगा हुआ था। मोटर ख़ाना और अस्तबल गौदाम बने हुए थे।.....

वह अपने कमरे में जाकर पलंग पर गिर गया और चुपके-चुपके रोने लगा। दुनिया वही थी—गुलफ़िशाँ, लखनऊ, अज़ीज रिश्तेदार..... “अब क्या इरादा है?” कमाल ने अपने बाबा से पूछा। “क़र्बला हिजरत कीजिएगा या पाकिस्तान?” “यहीं रहूँगा”। उन्होंने इतमिनान से जवाब दिया। “कोई हम भगोड़े हैं। मगर बाबा आप तो बड़ी धूम-धाम से मुस्लिम लीग में शामिल हुए थे।”<sup>46</sup>

कमाल के माध्यम से कुर्तुलऐन हैदर ने विभाजन के दर्द, पीड़ा और उसके प्रभाव को चित्रित किया है। जब कमाल इंगलैण्ड से हिन्दुस्तान वापस आता है और लखनऊ में गुलफिशों में जाकर देखता है कि सारी हरी भरी ज़िन्दगी विभाजन का शिकार हो गई। वह सोचता है कि मैं वही हूँ जिसने सारी ज़िन्दगी ज़मींदारों के विरुद्ध नारे लगाते गुज़ारी है। उसी ज़मींदारी के अन्त होने के कारण ही इतना बड़ा ज़वाल आया है कि आज यहाँ दो वक्त्त की रोटी भी नहीं मिल रही है। कमाल अपने मुस्लिम लीगी पिता से यह जानना चाहता है कि वह हिन्दुस्तान छोड़कर कर्बला जाएँगे या पाकिस्तान परन्तु पिता दो टूक जवाब देते हैं कि यहीं रहेंगे, कोई हम भगोड़े हैं। कुर्तुलऐन हैदर कमाल के पिता के माध्यम ऐसे मुसलमानों के चरित्र को उभारती हैं जिसे प्रत्येक स्थिति में अपने वतन में रहना गवारा है।

कमलेश्वर ने उपन्यास में संपूर्ण विश्व में हो रहे विभाजन एवं उससे उपजे युद्ध और युद्धों में लगातार हो रही मनुष्य जाति की हानि पर चिंता व्यक्त की है। उपन्यास में 'पाकिस्तान' शब्द विभाजन के प्रतीक के रूप में कई बार प्रयोग किया गया है। कमलेश्वर उपन्यास में एक जगह लिखते हैं—

“अब तो सब मुल्कों में नफ़रत का एक पाकिस्तान बनाने की कोशिशें जारी हैं....क्या हुआ बोस्निया में, क्या हुआ है साइप्रस में, क्या हुआ है तब के टूटे सोवियत यूनियन और अब के बने राशियन फ़ेडरेशन में। क्या हो रहा है आज के अफ़ग़ानिस्तान में ? हर व्यक्ति नफ़रत के सहारे अपने ही लोगों के खिलाफ़ एक दूसरा पाकिस्तान ईजाद करना चाहता है!”<sup>47</sup>

कमलेश्वर ने विश्व भर में हो रहे बँटवारों को 'पाकिस्तान' के रूप में देखा है। हर जगह लोग एक दूसरे के विरुद्ध नफ़रत और घृणा लिये हुए हैं और इसी नफ़रत और घृणा के बल पर बँटवारे हो रहे हैं, पाकिस्तान अस्तित्व में आ रहे हैं।

कुर्तुलऐन हैदर ने विभाजन की त्रासदी को दिखाने के लिए हिन्दुस्तान की सामासिक संस्कृति को वैदिक काल से लेकर विभाजन से पहले तक बनते हुए दिखाया है। जो सामासिक संस्कृति 1947 ई0 में विभाजित हुई, उसके निर्माण में सदियों लगीं। इस विभाजन का प्रभाव हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों देशों के

लोगों पर पड़ा। विभाजन के बाद के पाकिस्तानी समाज का चित्रण करते हुए कुर्रतुलऐन हैदर लिखती हैं—

“विभाजन के बाद मालूम हुआ कि अब हिन्दू कहता है कि जब तुम्हारा कल्चर और तुम्हारे दृष्टिकोण भिन्न हैं तो जाओ पाकिस्तान हमारे सर पर क्यों सवार हो। अतः यह कौम मुहाजिर बनके पाकिस्तान आई। लाहौर में पंजाबी था, ढाके में बंगाली। दोनों जगह शरणार्थियों को बड़ा फ़स्ट्रेशन हुआ। अतः उन्होंने कराँची का रुख किया।...अब यहाँ जगह-जगह उनकी ‘कॉलोनिया’ स्थापित हैं।..... साल में एक बार वीजा बनवाकर ख़ानदान के बच्चे-खुचे लोगों से मिलने हिन्दुस्तान जाते रहते हैं, जिसको अब तक यह ‘घर’ कहते हैं अर्थात् घर असल में सन्देला या मुरादाबाद है, मुल्क पाकिस्तान है।”<sup>48</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर यह स्पष्ट करना चाहती हैं कि अपना वतन छोड़कर पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों को लोगों के कटाक्ष सहन करने पड़े। पाकिस्तान जाकर भी वे मुसलमान एक नहीं हो पाए। पंजाबी मुसलमान और बंगाली मुसलमान जैसे ख़ानों में बँटे हुए, अपने पीछे छूट गए घर को याद करते रहते हैं।

‘कितने पाकिस्तान’ में कमलेश्वर ने मनुष्य जीवन के दुख दर्द, उनकी समस्याओं एवं उच्चवर्ग के द्वारा कमज़ोर और ग़रीब लोगों के शोषण की बात को उठाया है। ‘आग का दरिया’ में भी कुर्रतुलऐन हैदर ने अँग्रेज़ों के द्वारा हिन्दुस्तानियों के शोषण और ग़रीब हिन्दुस्तानियों की समस्याओं को उठाया है। कुर्रतुलऐन हैदर ने 1947 ई० से पहले के हिन्दुस्तानियों विशेष रूप से यहाँ के दबे कुचले और निम्न वर्ग की समस्याओं को उठाया है। अँग्रेज़ों के युग में निम्न वर्ग के लोग जैसे शूद्र अपनी समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए धर्म परिवर्तन चाहते हैं। इस पूरी स्थिति का कुर्रतुलऐन हैदर ने बड़ी कलात्मकता के साथ ‘आग का दरिया’ में वर्णन किया है।

भारत की उस सामासिक संस्कृति के प्रति कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर का प्रेम अभिव्यक्त होता है जिसे निर्मित होने में वर्षों लगे। अतः ‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ दोनों ही उपन्यासों में भारतीय संस्कृति का मूल रूप देखने को मिलता है

हिन्दुस्तान की धरती पर प्राचीन काल से लेकर अब तक संसार की विभिन्न जातियाँ अपनी-अपनी परम्पराएँ और रीति रिवाज लेकर आईं। सर्वप्रथम आर्य आए उनके बाद मुग़ल और फिर अंग्रेज़। मुग़लकाल में अकबर जैसा महान सम्राट हुआ। उसने देश की स्थिति को पहचाना और हिन्दू मुस्लिम संस्कृति में समन्वयवादी विचारधारा को उत्पन्न करने का भरसक प्रयास किया तथा उसने अपने प्रयासों के बल पर देश में व्यापक सांस्कृतिक एकता स्थापित की। 'कितने पाकिस्तान' में हिन्दुस्तानी रीति रिवाज और परम्परा का चित्रण इस रूप में मिलता है—

“उगते सूरज को सलाम करना और डूबते सूरज को नमाज़ के साथ विदा करना.....यह तो हमारी हिन्दुस्तानी परम्परा का ख़ास हिस्सा है.....।”<sup>49</sup>

हिन्दुस्तान में प्राचीनकाल से यह धार्मिक परम्परा चली आ रही है। सूरज के उगते समय हिन्दू धर्म के मानने वाले उसकी पूजा करके उसका स्वागत करते हैं और यह कामना करते हैं कि उनका पूरा दिन अच्छा व्यतीत हो। इस्लाम में सूरज निकलने से पहले और सूरज डूबने से पहले नमाज़ अदा की जाती है। इसी आशा और विश्वास के साथ यह धार्मिक परम्परा सदियों से चली आ रही है।

‘आग का दरिया’ एक ऐसा उपन्यास है, जिसमें सांस्कृतिक सन्दर्भ अत्यधिक मिलते हैं। इस उपन्यास का प्रारम्भ आज से ढाई हजार वर्ष पहले की भारतीय संस्कृति के युग से होता है, जो श्रावस्ती और पाटलीपुत्र में परवान चढ़ी। अन्य देशों के लोग आकर श्रावस्ती शहर में रहते थे। अलग अलग मुहल्लों में कारीगर, सुनार, बजाज़, आढ़ती और अन्य व्यवसायी वर्ग अपने अपने नियम और मँडलियों के साथ आबाद थे। यहाँ साल भर चहल पहल रहती थी। कुर्तुलऐन हैदर उस युग की संस्कृति एवं सभ्यता का वर्णन इस प्रकार करती हैं—

“श्रावस्ती का शहर बहुत ही गहन और शोभा युक्त था, हमेशा कोई न कोई त्यौहार मनाया जाता। प्रत्येक मनुष्य अपने अपने कार्यों में व्यस्त था। रचनाकारों और संगतराशों की टोलियाँ निगारखानों में व्यस्त रहती थीं। नाटक मँडली में सुबह से खेल प्रारम्भ हो जाता और दिन भर चलता रहता। नायक और नायिकाएँ चमकदार वस्त्र पहने, चेहरे पर रोगन लगाए प्रसिद्ध उदाहरण प्रस्तुत करते। अमीर

लड़कियाँ सोलह श्रंगार किये थालियों में घी के द्वीप जलाए मन्दिरों की ओर जाती दिखाई देतीं। ऊद और लोबान की महक से वातावरण बोझल हो जाता।<sup>50</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने प्राचीन काल के श्रावस्ती शहर का बहुत ही कलात्मक ढंग से वर्णन किया है। उपर्युक्त अंश से एक प्रमुख संस्कृति एवं सभ्यता का चित्र मिलता है। इस चित्रण द्वारा प्राचीन काल के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की झलकियाँ पाठक की आँखों के सामने उभर आती हैं।

भारतीय संस्कृति की एक छोटी सी झलक कमलेश्वर को गाज़ियाबाद ज़िले के देहरा गाँव में देखने को मिलती है। मुग़लकाल में यहाँ के राजपूतों ने इस्लाम धर्म कुबूल कर लिया था लेकिन वह आज भी अपने आपको मुसलमान राजपूत कहते हैं और महाराणा प्रताप के कुल का मानते हैं। जिसका चित्रण उपन्यास में इस प्रकार किया गया है—

“गाज़ियाबाद ज़िले का देहरा गाँव मुसलमान राजपूतों का गाँव है। ये सिसोदिया हैं और महाराणा प्रताप के वंशज ही नहीं उनके कुल के हैं। इनका धर्म परिवर्तन औरंगज़ेब के ज़माने में हुआ.....इन लोगों का मानना है कि धर्म परिवर्तन से रक्त नहीं बदल जाता। वे अपना परिचय दोहरा मानते हैं, वे मुसलमान राजपूत हैं।.....हिन्दू और मुसलमान दोनों ही सिसोदिया राजपूतों के लिए देहरा एक वंशगत केन्द्र बिन्दू है। साठे में कुल साढ़े आठ गाँव मुसलमानों के हैं पर सब के नम्बरदार मुखिया हैं मेहर अली राजपूत! वे कहते हैं धर्म परिवर्तन के कारण ज़रूरत पड़ी तो मन्दिर की दीवार के सहारे ही हमने मस्जिद खड़ी कर ली है। आज भी मुसलमान बहन अपनी सन्तान की शादी के समय भइया को भात लाने के लिए बुलाने जाती है तो यही लोकगीत गाती है—“भैया रघुवीर भात हमारो लइयो.....।”<sup>51</sup>

देहरा गाँव, सिसोदिया हिन्दू राजपूत और सिसोदिया मुसलमान राजपूत दोनों के लिए वंशगत केन्द्र बिन्दु है। एक मुसलमान बहन के ओठों से निकला ‘रघुवीर’ शब्द, से उसकी संस्कृति साफ़ झलकती है। यह भारतीय सामासिक संस्कृति का एक रूप है। इस प्रकार के अन्य अनेक उदाहरण भी मिलते हैं। दिल्ली से लेकर गढ़ मुक्तेश्वर तक बीच बीच में विभिन्न कुल के हिन्दू मुसलमान राजपूत गाँव फैले

हुए हैं। इन गाँवों के राजपूतों और ब्राह्मणों ने अपने धर्म परिवर्तन के बाद भी अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ा। इसी प्रकार राजस्थान के मेवाती मुसलमान भी अपनी संस्कृति एवं लोक प्रथाओं से अब भी जुड़े हुए हैं। उपन्यासकार इस स्थिति के प्रति बहुत आश्वस्त दिखाई देता है।

‘आग का दरिया’ उपन्यास में हिन्दुस्तान की सामासिक संस्कृति का स्वरूप बाले मियाँ के नाम से विख्यात सालार मसूद की मज़ार पर किस तरह देखने को मिलता है उसका चित्रण इस प्रकार किया गया है—

“सालार मसूद पिछली दो शताब्दियों में बाले मियाँ के रूप में कौशल देश के निवासियों के लिए एक और देवता बन चुके थे। उनके मज़ार पर घी के चिराग जलाए जाते, उनके झण्डे उठाए जाते। हर वर्ष धूम धाम से उनकी बारात निकलती। अबुलमंसूर कमालउद्दीन जो पहली बार बहराइच आया था। सालार मसूद की ज़ियारत गाह की दीवार से लगकर पेड़ की छाया में बैठ गया और आश्चर्य से औरतों की एक टोली को देखने लगा जो हाथों में पीतल की थालियाँ सँभाले सामने मज़ार पर चढ़ावा चढ़ाने के लिए आ रही थीं। ये हिन्दू औरतें थीं।”<sup>52</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर बहराइच जिसका प्राचीन नाम श्रावस्ती था, उसका वर्णन करते हुए लिखती हैं कि इस शहर के बादशाह बुतपरस्त, तेज़तर्रार और बहुत गुस्से वाले थे। तब ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की थी कि बहुत जल्द इनका अन्त होने वाला है। तब मसूद गाज़ी जो गज़नी के महमूद का सिपहसालार यहाँ आया और तब उसने सोहल देव का खात्मा कर दिया। और दूसरी तरफ़ दिल्ली में कुतुबुद्दीन ऐबक आया उसके सिपहसालार अहमद बख्तियार ख़ाँ ने कौशल देश, मगध और बंगाल के सभी मूर्तिपूजा करने वाले बादशाहों का खात्मा कर दिया। तब श्रावस्ती, नालन्दा जैसे शहरों के ब्रह्मचारी और भिक्षु अपने अपने पोथी पतरे वहीं छोड़कर इधर उधर भाग गए, लेकिन जिस प्रकार पिछले दो हज़ार सालों में शाक्यमुनि को लोगों ने विष्णु का अवतार बना दिया था। उसी प्रकार बुद्धमत के मन्दिरों में हज़ारों देवी देवता फिर से आबाद हो चुके थे। पूरा बंगाल और बिहार फिर से तांत्रिक मंत्रों और भजनों की सुरीली आवाज़ों से गूँज रहा था। उसी तरह सालार मसूद जिन्होंने मूर्तिपूजा का खण्डन किया था। उन्हें पिछली दो सदियों में कौशल देश के वासियों

ने देवता बना दिया था। उनके मज़ार पर घी के दिये जलाए जाते थे, झण्डे उठाए जाते थे।

‘कितने पाकिस्तान’ में कमलेश्वर ने फैज़ाबाद के एक छोटे से गाँव सनेहुआ के रीति रिवाजों का चित्रण किया है। वहाँ सुन्नी और शिया दोनों वर्ग साथ-साथ रहते हैं, जो प्रेम और सौहार्द का एक अनूठा उदाहरण है—

“वहीं पेड़ के नीचे एक बड़ा सा दीप स्तंभ बना था.....  
इस पर पचासों चिराग़ जलाते हैं, हम जब ताज़िया उठाते हैं.....ई  
दीप घर है.....हम जब हिन्दू रहे तब हमारे पुरखन ने बनवाया रहा.....  
अब हम ताज़िया उठाते बख़्त इस पै चिराग़ जलाते हैं।”<sup>53</sup>

फैज़ाबाद का एक छोटा सा गाँव सनेहुआ इस सामासिक संस्कृति का केन्द्र है। यह गाँव फैज़ाबाद से चार मील दूर है। इस गाँव में शिया और सुन्नी दोनों वर्ग साथ साथ रहते हैं। यहाँ एक मस्जिद और एक मज़ार है। मज़ार के आँगन में एक दीप स्तंभ था, जिसे धर्मान्तरण से पहले इनके पूर्वजों ने बनवाया था। जिस पर अब यह लोग ताज़िया उठाते समय चिराग़ जलाते हैं। वर्षों से चले आ रहे यह उनके रीति रिवाज हैं।

‘आग का दरिया’ में कुर्तुलऐन हैदर ने अवध की उस सामासिक संस्कृति का चित्रण किया है जो यहाँ के रहने वाले हिन्दू और मुसलमानों के सैकड़ों वर्षों के मेल जोल से अस्तित्व में आई।

लखनऊ की संस्कृति अपने अनेक गुणों एवं अवगुणों के साथ उपस्थित है। कुर्तुलऐन हैदर को अवध की उस संस्कृति से गहरा प्रेम है जो हिन्दू और मुसलमानों की सामासिक संस्कृति थी। यह सामासिक संस्कृति सैकड़ों वर्षों के मेलजोल का परिणाम है। हिन्दू और मुसलमान न केवल एक दूसरे के दुख दर्द में सम्मिलित होते थे बल्कि धार्मिक रीति रिवाजों तथा त्यौहारों में भी भाग लेते थे—

“लखनऊ परियों के शहर की तरह जगमगा रहा था। यह शहर अयोध्या और बनारस के प्राचीन संगीत का संरक्षक है। यहाँ मुहर्रम



के समय में वातावरण में बहाग और पीलू और सोहिनी घुल जाती है।.....

यहाँ के लोग गरीब, अमीर औरत मर्द जो ठाकुर इमाम बख्श और लाला हुसैन बख्श, मिर्जा मेंधू और नवाब कम्मन कहलाते हैं और इमामन मेहतरी और मिर्जा जंगली और सुखबच्चन लौंडी और बसंती बेगम यह सब रोते हैं, हँसते हैं, गाते बजाते हैं। जागीरदाराना समाज के जितने गुण एवं अवगुण हो सकते हैं, वह सब इनमें मौजूद हैं.....

मुहर्रम में उपद्रव तथा दंगे फसाद नहीं होते, न मस्जिदों के सामने बाजा बजाया जाता है। हिन्दू ताजियादारी करते हैं और मुसलमान दीवाली मनाते हैं। कैसा उल्टा ज़माना है। नवाब बहू बेगम हर साल होली मनाने फ़ैज़ाबाद से अपने बेटे के पास लखनऊ आती हैं। सारे राज्य में हिन्दू राजाओं ने मस्जिदें और इमाम बाड़े बनवा रखे हैं।<sup>54</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने लखनऊ की सांस्कृतिक आत्मा को कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के त्यौहारों में एक साथ सम्मिलित होते थे। मुहर्रम के समय में हिन्दू सबीलें निकालते तथा एहले बैत के ग़म में मर्सिये लिखते थे। यहाँ पर मुसलमान कवियों ने कृष्ण भक्ति के गीत लिखे और हिन्दू कवियों ने ईश वन्दना तथा स्तुति के पद विश्वास के साथ लिखे। मुसलमान हिन्दुओं के त्यौहार दीवाली और होली खुशी खुशी मनाते थे। दोनों वर्ग हँसी खुशी मिल जुलकर एक साथ रहते थे। 18वीं शताब्दी में पूरा लखनऊ एक रंग में रंग चुका था। लेखिका ने हिन्दू मुस्लिम रीति रिवाज, परम्पराओं तथा वहाँ के तौर तरीकों का जीवंत चित्रण किया है।

कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में हिन्दुस्तानी समाज, उसके रहन सहन, जीवन शैली, रीति रिवाजों एवं परम्पराओं का चित्रण करने के साथ-साथ संसार की विभिन्न संस्कृतियों का सांकेतिक रूप में चित्रण किया है। कुर्रतुलऐन हैदर ने 'आग का दरिया' में हिन्दुस्तानी संस्कृति के प्रारम्भ का इतिहास, श्रावस्ती व पाटलीपुत्र की संस्कृति, हिन्दू मुस्लिम सामासिक संस्कृति, अँग्रेजी साम्राज्य, पूँजीवादी व्यवस्था, राष्ट्रीय आंदोलन, स्वतन्त्रता तथा आधुनिक हिन्दुस्तानी तथा पाकिस्तानी समाजों का भी चित्रण किया है।

कमलेश्वर ने उपन्यास में मनुष्य और देवताओं के बीच तुलना करके मनुष्यों को देवताओं से उच्च ठहराया क्योंकि मनुष्य ने प्रेम, मित्रता एवं संस्कार जैसे तत्वों की खोज की है जबकि देवता इससे वंचित रहे हैं। 'आग का दरिया' में अद्भुत जीवन दृष्टि दिखाई देती है। चार विभिन्न युगों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करना और उसके सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन को पुनर्जीवित करना कुर्रतुलऐन हैदर की कुशलता का परिचायक है। हिन्दुस्तान का सांस्कृतिक विकास उसके ऐतिहासिक विकास से अलग करके नहीं देखा जा सकता, क्योंकि यहाँ के सांस्कृतिक ढाँचे को विभिन्न वर्गों और युगों में विभिन्न शक्तियों ने प्रभावित किया। प्राचीन युग से देश के विभाजन तक यहाँ का सांस्कृतिक वातावरण जिन पड़ावों से गुज़रा है, इस उपन्यास में उसका चित्रण बड़ी बारीकी और कारीगरी से किया गया है।

'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर वर्ण व्यवस्था के प्रति रोष व्यक्त करते हैं। उन्होंने जातिवाद और वर्णवाद का विरोध एवं खण्डन इस प्रकार किया है—

"हम ब्रह्मा के पैरों से पैदा नहीं हुए हैं.....आर्यों का यह दैवी विधान अनर्गल है.....क्योंकि ब्रह्माणों की पत्नियाँ भी गर्भवती होती हैं, वे भी बच्चों को जन्म देती हैं, उन्हें दूध पिलाती और उनका पालन पोषण करती हैं.....इतने पर भी यह आर्य ब्राह्मण, जिनका जन्म स्त्रियों की कोख से होता है, यह दावा करते हैं कि वे ब्रह्मा के मुख से पैदा हुए हैं.....।"<sup>55</sup>

कमलेश्वर आर्यों के द्वारा बनाए गए वर्णवाद पर व्यंग्य करते हैं और यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि कोई भी मनुष्य ब्रह्मा के मुख से पैदा नहीं हुआ है। ईश्वर ने मनुष्य की उत्पत्ति का एक प्राकृतिक विधान बनाया है।

कुर्रतुलऐन हैदर ने भी अपने उपन्यास 'आग का दरिया' में जाति और वर्णवाद का विरोध प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से किया है। प्राचीन काल में विद्यार्थियों के लिए कड़ा आदेश था कि वह—

"वह वर्ण और जाति के घमण्ड से दूर रहें।"<sup>56</sup>

कमलेश्वर एवं कुर्रतुलऐन हैदर दोनों ही अपने उपन्यासों में वर्ण व्यवस्था एवं जातिवाद का विरोध करते हुए दिखाई देते हैं।

कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में उपनिषद्, वेद, ब्राह्मण ग्रंथों का विरोध किया है। उपन्यास में एक जगह सलमा अदीब से कहती है—

**"उपनिषद् और कुछ नहीं पश्चात्ताप के ग्रंथ है।"<sup>57</sup>**

इसकी तुलना में कुर्रतुलऐन हैदर ने 'आग का दरिया' में उपनिषद्, वेद, पुराण, महाभारत आदि ग्रंथों की विशेषताओं का उल्लेख किया है—

**"उन पुराणों में चालीस चालीस हजार शेर होते थे जो विष्णु और शिव की प्रार्थना के साथ प्रारम्भ किये जाते थे।"<sup>58</sup>**

कमलेश्वर उपन्यास में धार्मिक ग्रंथों का विरोध करते हुए दिखाई देते हैं क्योंकि उनका मानना है कि इन्हीं धार्मिक ग्रंथों के आधार पर जातिवाद तथा वर्णवाद आदि का जन्म हुआ है। इसकी तुलना में कुर्रतुलऐन हैदर धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा और धार्मिक परम्पराओं को सामने लाती हैं। उपनिषद् की चर्चा करते हुए वह लिखती हैं कि जो व्यक्ति अपनी आत्मा को पाने की तमन्ना रखता है, तो वह अपने दिल की सभी आकांक्षाओं और दुखों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

कमलेश्वर 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में देश की स्थिति के प्रति चिन्ता व्यक्त करते हैं। उनके समय में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की आपसी लड़ाई, संघर्ष और तनाव बहुत बढ़ चुका था। इसीलिए कमलेश्वर ने संपूर्ण उपन्यास में विभाजन के दर्द, आपसी टकराव, संघर्ष तथा इसके साथ साथ संसार के सभी देशों की समस्याओं को उठाया है।

'आग का दरिया' कलात्मक दृष्टि से उर्दू का सबसे बड़ा उपन्यास है। कुर्रतुलऐन हैदर ने उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक यात्रा से मानवी श्रेष्ठताओं की खोज की है। प्राचीन युग के गौतम नीलम्बर से आधुनिक युग के गौतम तक यह यात्रा उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा वर्गीय संघर्ष को समेटती है।

इस प्रकार 'कितने पाकिस्तान' और 'आग का दरिया' उपन्यास का सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से तुलना करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इसमें कोई शक नहीं कि उर्दू उपन्यास 'आग का दरिया' कुर्रतुलऐन हैदर की एक कालजयी कृति है। उसमें समाज और संस्कृति के जो रूप चित्रित हुए हैं, वे बेमिसाल हैं परन्तु कमलेश्वर का उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' भी अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है और 'आग का दरिया' से बहुत सीमा तक प्रभावित दिखाई देता है।

### 'कितने पाकिस्तान' का राजनीतिक अध्ययन :

अगर हम इतिहास देखें तो पाएंगे कि साहित्य और राजनीति का संबंध बहुत पुराना है। संस्कृत साहित्य से परिचित लोग जानते हैं कि बाणभट्ट की कादंबरी में 'शुकनासोपदेश' राजनीति के बारे में एक गंभीर उपदेश है। प्रसिद्ध ग्रंथ 'पंचतन्त्र' की रचना ही राजकुमारों को राजनीति की शिक्षा देने के लिए हुई थी। कालिदास ने भी अपनी रचनाओं में राजनीति पर टिप्पणी की है। विशाख का 'मुद्राराक्षस' तो विशुद्ध रूप से राजनीतिक नाटक है। यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आखिर क्यों साहित्य से राजनीति के जुड़ाव की एक परम्परा रही है। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि साहित्य समूचे समाज से जुड़ा होता है जिसका एक रूप राजनीति है। अतः साहित्य और राजनीति का संबंध भी अत्यंत स्वाभाविक है।

अगर कलाकार अथवा साहित्यकार में बुनियादी ईमानदारी है तो वह किसी भी कीमत पर जनता का पक्ष नहीं छोड़ेगा, लेकिन जनता के सर्वोत्तम हितों की रक्षा में उसका योगदान नाम मात्र का ही रहेगा। जब तक कि वह विद्यमान राजनीतिक जटिलताओं की तह में पहुँचकर उनकी ओर सारे संघर्षरत लोगों का ध्यान आकर्षित नहीं करता। राजनीति की ज़मीन पर होने वाली हार जीत संपूर्ण जीवन को प्रभावित करती है। कलाकार सुंदर जीवन का सपना देखता हुआ उसे

साकार करने में तब तक असमर्थ रहेगा जब तक कि समकालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं होंगी।

किसी भी युग की राजनीतिक स्थितियों को उस काल की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से अलग नहीं कर सकते। इस दृष्टि से कमलेश्वर के उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में हम उन बिन्दुओं एवं स्थितियों का अध्ययन करेंगे जो राजनीति से संबंधित हैं।

'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने विभिन्न राजनीतिक बिन्दुओं को उठाया है। देश के नेता, राजनेता अपने स्वार्थ के लिए राजनीति का दुरुपयोग करते हैं और देश की स्थिति से बेखबर रहते हैं। चुनाव के समय और सरकार बनाने-गिराने के समय तो जनता से संवाद के लिए व्याकुल रहते हैं परन्तु देश की सुरक्षा के लिए प्राण न्योछावर कर देने वाले सैनिकों के प्रति कोई दायित्व बोध नहीं होता। उपन्यास में अदीब देश के प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री के नाम शिकायती पत्र में उनकी इसी संवेदनहीनता तथा लापरवाही की ओर संकेत करता है—

“प्रिय प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री जी।

यह तो आपके नैतिक पतन की पराकाष्ठा है कि जब आपकी सरकार गिराई गई थी, तो दूसरे ही दिन आप देश की जनता को सन्देश देने के लिए दूरदर्शन पर मौजूद थे, लेकिन जब उत्तरी सीमान्त पर स्ववाङ्मन लीडर अजय कुमार आहुजा मारा गया, फ्लाइट लेफ्टिनेंट नचिकेता अपनी जान को खतरे में डालकर क्षतिग्रस्त जहाज़ से कूदा, जब कारगिल क्षेत्र में ही वायुसेना का हेलिकाप्टर क्षतिग्रस्त हुआ और चालक दल के चार सदस्य मारे गए, साथ ही सरकारी आँकड़ों की विश्वसनीयता संदिग्ध होने के बावजूद यह बताया गया कि हमारी सेना के 29 जवान मारे गए हैं, 128 घायल हैं तथा 12 लापता हैं, तब इस देश को विश्वास में लेने के लिए, उसके संकट और दुख में शामिल होने के लिए आपको दूरदर्शन पर आने की ज़रूरत महसूस नहीं हुई! यह संवेदन हीनता की इन्तिहा है।”<sup>59</sup>

उपन्यास में कमलेश्वर बड़ी गम्भीरता के साथ देश के नेता और मंत्री की संवेदन शून्यता को प्रस्तुत करते हैं।

पत्रकार की कलम में बहुत शक्ति होती है यदि वह सत्य लिखे। कमलेश्वर स्वयं एक पत्रकार थे और वह चाहते थे कि लाहौर के पत्र 'फ्राइडे टाइम्स' के एडिटर नज़म सेठी अपनी कलम के द्वारा युद्ध को रोकने का प्रयास करें। 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने दुनिया भर की उन समस्याओं को उठाया है जो मानव जाति के निरंतर हो रहे विनाश का कारण है। अदीब की अदालत में विभिन्न प्रकार की दस्तकें अपनी अपनी समस्याएँ लेकर आती हैं जिसमें एक कोसोवो प्रदेश की दस्तक है। जो अपने विनाश की समस्या लेकर आई है। कमलेश्वर नियन्त्रण की राजनीति के संबंध में इस प्रकार लिखते हैं—

"नियन्त्रण द्वारा आत्माओं को तोड़ा जाता है.....फिर उन्हें विभाजित किया जाता है.....उनमें सांस्कृतिक प्रतिरोध की शक्ति विखंडित की जाती है और तब बाज़ारवादी जोंके उस विभाजित कौम का सारा रक्त चूस लेती हैं। खंडित संस्कृति के शमशानों में तब उत्सव के बाज़ार स्थापित होते हैं.....धर्म और इतिहास शोषकों के हाथों में खिलौना बनकर नाचते गाते, जश्न मनाते अपने ही विभाजित अंग के शत्रु और अपने विनाश का कारण बन जाते हैं.....बड़ी सभ्यताओं को तोड़कर उन्हें बन्दी बनाने के लिए विभाजन का यही रास्ता उन असभ्य अपसंस्कृतियों ने चुना है..... जिनके खेतों में सिर्फ बारूद और बन्दूकें उगती हैं.....नाटो राक्षसों के इकतरफ़ा मिसाइली हमले जारी हैं....वायुमंडल और प्राचीन नदी डैन्यूब का पानी विषाक्त हो गया है.. मृत्यु पागलों की तरह जिन्दगी का पीछा कर रही है।"<sup>60</sup>

डैन्यूब नदी की घाटी में बसे सर्बिया और युगोस्लाविया पर 'नाटो' के वैज्ञानिकों ने अपने हितों के लिए, कोसोवों को अपने नियन्त्रण में रखने के लिए उस पर मिसाइली हमला करके उसको नष्ट कर दिया। लेखक इस बात से दुखी है।

प्रत्येक शक्तिशाली देश, दूसरे देश पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए उस पर अपना नियन्त्रण रखना चाहता है। नियन्त्रण के द्वारा लोगों की आत्माओं को तोड़कर गृह कलह कराकर उन्हें विभाजित कर दिया जाता है और उस विभाजित कौम को शक्तिशाली देश बिल्कुल नष्ट कर देते हैं। नष्ट और खंडित संस्कृति को शमशान बना दिया जाता है फिर उसी शमशान पर वही शक्तिशाली

देश अपनी सफलता का जश्न मनाते हैं, खुशी मनाते हैं। शोषण करने वाले देश धर्म और इतिहास का ग़लत लाभ उठाकर संस्कृतियों को नष्ट कर देते हैं।

भारत की दीर्घ काल की औपनिवेशिक दासता से मुक्ति विश्व मानवता के इतिहास की अनुपम एवं अद्वितीय घटना है। यह निर्विवाद है कि ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों ने अपने साम्राज्य को बनाए रखने के उद्देश्य से हिन्दू और मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिकता का बीज बोने का कार्य किया। काँग्रेस के नेतृत्व में होने वाली राष्ट्रीय आंदोलन की तीव्र गतिविधियों और भारतीय जनता में जाग्रत होती प्रखर राजनीतिक चेतना से ब्रिटिश शासकों की नीति में परिवर्तन आया।

भारतीय नेताओं एवं राजनीतिज्ञों की कूटनीति, स्वतन्त्रता प्राप्ति और अधिकार की लालसा तथा ब्रिटिश साम्राज्यवादी कूटनाति विभाजन का कारण बनी। 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने देश के महत्वपूर्ण लीडरों की उस मनः स्थिति को दिखाने का प्रयत्न किया है जो विभाजन को लेकर दुखी थे। लेकिन बाज़ी हाथ से निकल चुकी थी और जनता के बीच पहुँच चुकी थी इसलिए अब पीछे नहीं हटा जा सकता था—

“महात्मा गाँधी, नेहरू, पटेल, गुफ़्फ़ार ख़ाँ और यहाँ तक कि जिन्ना भी विभाजन के मसौदे को लेकर उदास थे.....गाँधी ने पहली बार सत्ता को धारण करने के औचित्य की धारणा को राजवंशों से छीनकर जनता को सौंप दिया है। यहीं से इस दुनिया का रूप बदलना शुरू हुआ है.....कोई सम्राट अपने फैसलों को कई बहानों और तरीकों से बदल सकता है। वह प्रधानमंत्री, सिनेट या सलाहकारों का सहारा लेकर अपनी इज़्ज़त बचा सकता है...लेकिन जनता के लीडरों की जो नई जमात आई है, वह अपने सार्वजनिक उद्रेक में जो कुछ कह जाती है, उन स्थापनाओं से पीछे नहीं हट सकती....यही मोहम्मद अली जिन्ना की विडम्बना और त्रासदी है। उन्होंने एक बार सार्वजनिक तौर पर इंडिया का विभजन माँग लिया तो फिर उनका मन चाहे जितना पछताता रहे वे उस माँग से पीछे नहीं हट सकते.....हटेंगे तो अपना नेतृत्व खो देंगे।”<sup>61</sup>

न चाहते हुए भी लीडर किस तरह अपने ही बुने जाल में उलझ गए थे। लेखक ने इसका स्वाभाविक चित्रण किया है।

सन् 1940 ई० में लाहौर घोषणा पत्र में सिन्धियों को संपूर्ण स्वायत्तता देने का वादा किया गया था, लेकिन 1947 ई० में पाकिस्तान बनने के बाद सत्ता के इरादे बदल गए। धोखा खाने के कारण पूर्वी पाकिस्तान टूटकर बंगला देश बना। अब सिन्धी अपना सिन्ध स्वतन्त्र कराना चाहते हैं।

वर्चस्व और सत्ता प्राप्त करने की लालसा ही विभाजन और युद्ध का कारण बनती है। सत्ता प्राप्ति के नशे के सामने किसी भी रिश्ते का कोई महत्व नहीं रह जाता। इसी लिए पाकिस्तान बन जाने के बाद वहाँ गृहयुद्ध की स्थिति बनी हुई है और भारत के मुसलमानों की स्थिति बेहतर नहीं कही जा सकती। कमलेश्वर उपन्यास में यही स्थिति मुगल काल में दिखाते हैं। सत्ता प्राप्त करने के लिए औरंगजेब ने रौशन आरा के साथ मिलकर अपने भाई और पिता के विरुद्ध षड़यन्त्र रचा। जब इस कूटनीति का पता शहंशाह को चला तो वह कहता है—

“तकलीफ़ इस बात की है कि औरंगजेब और रौशनआरा, मेरे एक बेटे और एक बेटी ने मिलकर मेरे खिलाफ़ साजिश की।”<sup>62</sup>

मुगलकाल की राजनीतिक स्थिति में धर्म की बहुत बड़ी भूमिका थी। ‘कितने पाकिस्तान’ में औरंगजेब और दाराशिकोह के सत्ता संघर्ष तथा राजनीतिक अन्तर्द्वन्द्व पर विस्तार से चर्चा की गई है। औरंगजेब ने सत्ता के लिए धर्म का उपयोग किया और अपनी कूटनीति से दाराशिकोह को हरा दिया। औरंगजेब अपनी बहन रौशनआरा के साथ मिलकर दाराशिकोह के विरुद्ध षड़यन्त्र रचता है, जिसका चित्रण कमलेश्वर ने इस प्रकार किया है—

“आपा! मैं क्या करूँ.....भाईजान दाराशिकोह को कोई भी सज़ा देते मेरी आत्मा काँपती है..... हिन्दुस्तान की सारी प्रजा उसे चाहती है। ख़ास तौर से दिल्ली की प्रजा कभी भी मेरे खिलाफ़ विद्रोह कर सकती है। इस विद्रोह को दबाने का एक ही तरीका है—रौशनआरा ने कहा। हिन्दुस्तानी प्रजा की मज़हब परस्ती और मज़हब के लिए उसकी आधार भूत कमज़ोरी का तुम इस नाजुक वक़्त में फ़ायदा उठाओ। तुम दाराशिकोह के खिलाफ़ काफ़िर और अनेकेश्वरवादी होने का इल्ज़ाम लगाकर उलेमाओं से उसकी सज़ाए मौत का फ़तवा जारी करवा दो।”<sup>63</sup>



कमलेश्वर यहाँ यह दिखाना चाहते हैं कि भारत की धर्मभीरु प्रजा की मानसिकता का लाभ एक ओर मुग़लकाल में उठाया गया तो दूसरी ओर ब्रिटिश सरकार ने भी भारत की धर्मभीरुता को अपना हथियार बनाया।

कमलेश्वर मध्ययुग की राजनीति, कूटनीति तथा षड़यन्त्रों की सच्चाई का पता लगाने का प्रयास करते हैं। अदीब के माध्यम से उसे स्पष्ट करते हुए लिखते हैं—

“मैं मानता हूँ बाबर आक्रान्ता था.....लेकिन उसके पश्चाताप को कभी समझा ही नहीं गया।.....उससे हजारों वर्ष पहले ओड़िसा का कलिंग राज्य भी स्वायत्त प्रदेश नहीं, अपने राजा के अधीन स्वतन्त्र देश था। अशोक ने कलिंग पर जब आक्रमण किया तो वह भी आक्रान्ता था.....

युद्ध में इतना खून बहा कि दया नदी का पानी लाल हो गया था..... अपनी इस बर्बता का पश्चाताप तब अशोक ने पंचशील और अहिंसा के सिद्धान्तों को देकर किया था। यदि अशोक का पश्चाताप भारतीय था तो भारत को अपना देश मान लेने वाले मुग़लों के पश्चाताप के क्षणों को हम अभारतीय क्यों कहना चाहते हैं ? वे अरबी, तुर्की, तातारीया अफ़ग़ानी पश्चाताप के क्षण नहीं, वे भारतीय भूमि पर उदित हुए उनके गहन पश्चाताप के क्षण थे! अकबर उस भारतीय पश्चाताप का सबसे ज्वलंत उदाहरण है.....और जहाँगीर तथा शाहजहाँ के पश्चाताप का नतीजा था—दाराशिकोह! लेकिन मुश्किल यह है कि राजतन्त्र की कोई धर्म संस्था, कोई मज़हबी तहरीक किसी शोक और पश्चाताप को मंजूर नहीं करती....क्योंकि धर्म या मज़हब ज़िन्दगी की सच्चाइयों से हमेशा सदियों पिछड़ा रहता है! और यही तमाम बेबुनियाद पाकिस्तानों की बुनियाद बनता है।”<sup>64</sup>

उपन्यासकार यह कहना चाहता है कि बाबर और अशोक ने युद्ध की विभीषिका के बाद जो पश्चाताप किया उसे समान भाव से स्वीकार किया जाना चाहिए।

उपन्यास में कमलेश्वर ने यह भी देखने का प्रयत्न किया है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी ने किस तरह भारत में घुसपैठ की। 1600 ई0 में हिन्दुस्तान में ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना के साथ ही धीरे धीरे अँग्रेजों ने हिन्दुस्तान पर अपनी जड़े मज़बूत करना आरम्भ कर दिया। ईस्ट इंडिया कम्पनी के इन अँग्रेज व्यापारियों ने हिन्दुस्तान से काली मिर्च, लौंग, इलायची, अदरक, दालचीनी, नील तथा अफीम निरंतर अपने देश भेजी।

अंग्रेज़ अफसर रॉबर्ट क्लाइव हिन्दुस्तान के विरुद्ध षड़यन्त्र रचता रहा। अंग्रेज़ धीरे धीरे हिन्दुस्तानी हुकूमत की जड़े काटने लगे और इसके साथ ही नवाब और रजवाड़ों की आपसी लड़ाई का लाभ उठाने का प्रयास करने लगे। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने बंगाल के माल गोदामों के नाम पर किले बनाकर उनकी चौकीदारी के लिए फौज खड़ी कर ली। बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने इन ग़ैर कानूनी हरकतों को स्वीकार नहीं किया।

किसी भी धर्म का प्रयोग जब राजनीतिक लाभ के लिए किया जाता है तो विभाजन अवश्य होता है। कमलेश्वर 'कितने पाकिस्तान' में यही बताना चाहते हैं—

"इस्लाम में हर कुदरती ज़रूरत के लिए जगह है, लेकिन जब मज़हब को सियासी फ़ायदे के लिए नफ़रत में बदला जाता है तो एक नहीं तमाम पाकिस्तान पैदा होते हैं!"<sup>65</sup>

कोई भी धर्म ज़िन्दगी जीने के लिए पाबन्दियाँ नहीं लगाता है। वह तो केवल सही और ग़लत का फ़र्क बताता है। प्रत्येक धर्म का जीवन मूल्य एक ही होता है। धर्म के आधार पर किये गए बँटवारे की कीमत यहाँ के निवासियों ने अपना घर, अपना वतन, अपने जज़्बात, अपनी यादों और अपने रिश्तों को बाँटकर अदा की। कमलेश्वर विभाजन के समय की लोगों की मानसिक स्थिति का वर्णन करते हुए लिखते हैं—

"रामपुर रियासत के आला वज़ीर के दो जवान बेटों ने अलग अलग फैसला किया था। बड़ा बेटा मेजर याकूब ख़ान, जो वायसराय के अंगरक्षकों का नायब मुखिया था, वह बेहतर मौक़े और ओहदे की तलाश में पाकिस्तान चला गया था। छोटा बेटा कैप्टन यूनुस ख़ान अपनी यादों को छोड़ नहीं पाया था। उसने हिन्दुस्तान में ही रहना मंजूर किया था। इतिहास ने सन् 1965 ई० की भारत पाक जंग में विभाजन की त्रासदी का दर्दनाक मंज़र देखा था! कश्मीर में पुंछ की पहाड़ियों में घमासान युद्ध हुआ था। पाकिस्तान के फ़ौजी दस्तों का कमांडर था— वही रामपुर का याकूब ख़ान और हिन्दुस्तान की गोरखा रेजीमेन्ट की कमान सँभाले था—

रामपुर का यूनुस ख़ान! दोनों सगे भाई एक दूसरे के आमने सामने थे। विभाजन की कीमत दोनों चुका रहे थे.....सवाल ज़िन्दगी और

मौत का था। सवाल अपने अपने देश का था। भारतीय मेजर यूनुस खान आक्रमण करते हुए चीखा था—भाई जान बचिए!

याकूब खान ज़िन्दा नहीं बच पाया था। मेजर यूनुस खान ने अपने 'दुश्मन' बड़े भाई को हराने के बाद उसे वहीं दफ़न किया था, और प्रीमैच्योर रिटायरमेंट लेकर रामपुर लौट गया था।<sup>66</sup>

सन् 1947 ई० में हिन्दुस्तान के विभाजन के बाद जब अँग्रेज़ अफ़सर वापस जा रहे थे। उसी समय आर्मी के अफ़सर का भी बँटवारा होने लगा था। दिल्ली छावनी से हिन्दु और सिख सिपाही अपने मुसलमान साथियों को विदा कर रहे थे, उधर रावलपिण्डी छावनी से मुसलमान सिपाही अपने हिन्दू और सिख सिपाही साथियों को विदा कर रहे थे। सबसे अधिक असमंजस की स्थिति में भारत की छावनियों से जाने वाले मुसलमान फ़ौजियों की थी। उन्हें किसी भी देश की फ़ौज में रहने की आज़ादी थी। उन्हें यह चुनाव स्वयं अपनी मर्ज़ी से करना था। पाकिस्तान का निर्माण धर्म के नाम पर किया गया था, और हिन्दुस्तान को सेक्यूलर घोषित किया गया था। उपन्यासकार ने विभाजन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली मौत, दुख-दर्द, निराशा तथा रिश्तों के विघटन को बड़ी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है।

कमलेश्वर ने संपूर्ण उपन्यास में विभाजन के कारणों पर प्रकाश डालते हुए उससे उत्पन्न होने वाले दुख दर्द को विभिन्न राजनीतिक बिन्दुओं के माध्यम से उठाया है। इसके साथ ही वे कुछ महत्वपूर्ण सवालों के जवाब भी ढूँढ़ते नज़र आते हैं जैसे बाबर ने अयोध्या के राम मन्दिर को नहीं तोड़ा था। औरंगज़ेब ने दारा शिकोह को मृत्युदण्ड देने के लिए हिन्दुस्तान की प्रजा की धर्म भीरुता का फ़ायदा उठाया। धर्म और भाषा को आधार बनाकर लड़ाओ और राज्य करो यह अँग्रेज़ों की औपनिवेशिक नीति का एक हिस्सा था।

**'आग का दरिया' का राजनीतिक अध्ययन :**

किसी भी युग की सामाजिक परिस्थितियाँ उस युग की राजनीतिक स्थितियों से अलग अपना कोई महत्व नहीं रखती। यहाँ कुर्रतुलऐन हैदर के उपन्यास 'आग

का दरिया' के 'उन्हीं पहलुओं का विश्लेषण विभिन्न युगों के अनुरूप किया जाएगा, जिनका सीधा संबंध राजनीतिक हलचलों से है।

'आग का दरिया' में मुख्य रूप से हिन्दुस्तानी इतिहास बोध की संवेदनशीलता चित्रित हुई है। इसमें केवल दर्शन और इतिहास नहीं बल्कि उसमें हिन्दुस्तान की अन्वेषक आत्मा को प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास के प्रत्येक युग में उच्च विचार रखने वाले तथा विवकेशील मनुष्य चुने गए हैं जो अपने युग की राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थिति पर विचार विमर्श करते हैं। कुर्तुलऐन हैदर ने अनावश्यक विस्तार के स्थान पर महत्वपूर्ण धाराओं का वर्णन एक ऐसे वातावरण में किया है जिससे हमें प्रत्येक युग की राजनीतिक परिस्थितियाँ, सांस्कृतिक क्रान्तियाँ और उसके आधारभूत कारण तथा प्रकृति का ज्ञान प्राप्त होता है।

प्राचीन युग का गौतम नीलम्बर एक आदर्श विद्यार्थी है। वह गणित, धर्म, युद्ध की कला, दर्शन, नृत्य तथा संगीत के साथ साथ राजनीति की भी शिक्षा प्राप्त करता है। उसने महाभारत, मनु तथा जैमिनी के राजनीतिक दृष्टिकोण का गहन अध्ययन किया और इस नतीजे पर पहुँचा कि—

"कर्तव्य एवं दण्ड के आधार पर सत्ता स्थापित होती है। महाभारत में लिखा था कि दण्ड अर्थात् सजा न हो तो शक्तिशाली, कमजोर को इस प्रकार कुचले जिस प्रकार बड़ी मछली, छोटी मछली को खाती है और महाभारत की किताब 'शान्ति' में लिखा था कि मनुष्य भयानक हद तक लालची एवं अत्याचारी है। अतः 'यह मेरा है' का नारा भुला देना चाहिए। सत्ता की अनुभूति ही सारे झगड़े की जड़ है। अन्याय मनुष्य के स्वभाव में है। संस्कृति उसे सद्व्यवहार सिखाती है। राजा दण्ड धर है लेकिन वह भी कानून से ऊँचा नहीं। अतः मनु ने आदेश दिया था कि अयोग्य राजा को भी दण्ड दिया जा सकता है। सत्ता और राजनीतिक व्यवस्था मनुष्य के लिए आवश्यक है।"<sup>67</sup>

लेखिका इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि सत्ता की लालसा ही झगड़े उत्पन्न करती है और दण्ड का विधान मनुष्य को नियंत्रित रखता है।

उपन्यास में यह दिखाया है कि प्राचीन भारत विभिन्न छोटी छोटी स्वाधीन सत्ताओं में बँटा हुआ था। अधिकतर स्थानों पर व्यक्तिगत सत्ताएँ स्थापित थीं। श्रावस्ती, अयोध्या, पाटलीपुत्र, नालन्दा तथा तक्षिला आदि उच्च सत्ताएँ थी। प्राचीन युग की सत्ताओं में मगध सबसे अधिक शक्तिशाली था। मगध में नन्द परिवार के राजाओं की हुकूमत थी परन्तु महापदम नन्द को चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपनी कूटनाति से पराजित किया तथा पाटलीपुत्र को अपनी राजधानी बनाई। इसका उल्लेख कुर्रतुलऐन हैदर 'आग का दरिया' में इस प्रकार करती हैं—

“यह आधुनिक युग है। चन्द्रगुप्त मौर्य बहुत शक्तिशाली राजा है। उसके राज्य का डंका सारे संसार में बज रहा है उसका सिंहासन संसार के उच्च शहरों में शामिल किया जाता है। उसकी सेना की शक्ति से अन्य देश भयभीत हैं.....विष्णु गुप्ता, जिसका दूसरा नाम चाणक्य है वही विष्णु गुप्ता सत्ता का परामर्श दाता है। (और शाक्य मुनि ने कहा था कि विजय घृणा उत्पन्न करती है क्योंकि विजयी लोग दुख की नींद सोते हैं लेकिन विजय एवं पराजय से निर्लिप्त मनुष्य सुख में रहता है).....।”<sup>68</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने प्राचीन युग तथा आधुनिक युग के राजनीतिक दृष्टिकोण के अन्तर को स्पष्ट किया है। प्राचीन युग में राजनीतिक नियम धर्म के अधीनस्थ दिखाई देते हैं। कोई भी कानून से ऊँचा नहीं, लेकिन आधुनिक युग में संपूर्ण बागडोर राजा के हाथ में है। प्राचीन युग के अंतिम समय में कौटिल्य की पुस्तक 'अर्थशास्त्र' ने गहरा प्रभाव डाला।

उपन्यास का दूसरा युग हिन्दू इस्लामी संस्कृति के सम्मिश्रण का युग है। इस युग का प्रतिनिधि अबुलमंसूर कमालउद्दीन है। हिन्दुस्तान में मुसलमानों के आगमन से पूर्व देश छोटी-छोटी रियासतों में बँटा हुआ था। 'आग का दरिया' में हमें देखने को मिलता है कि हिन्दुस्तान में मुसलमानों की सत्ता स्थापित हो चुकी है। दिल्ली के साथ साथ अन्य स्थानों पर भी मुस्लिम शासक हैं। हिन्दू जनता मुस्लिम राजा को अपना शासक मानती है और उसकी वफ़ादार भी है। मुस्लिम राजाओं ने हिन्दुस्तान को अपना देश समझा और उसकी संस्कृति एवं सभ्यता में पूर्ण रूप से रंग गए। कमालउद्दीन में यह विशेषता दिखाई देती है कि वह

पुस्तकालय का संरक्षक होने के बावजूद अपनी वेशभूषा से सिपाही लगता है। तलवार बाँधता है और समय आने पर युद्धों में सम्मिलित भी होता है। यह इस बात का प्रमाण है कि सैन्य कला प्रतिष्ठित लोगों के लिए अनिवार्य कला थी। मध्य युग में हिन्दुस्तान की राजनीतिक स्थिति निरंतर होने वाले युद्धों, विरोधों तथा राजनीतिक क्रान्ति से प्रभावित थी। कुर्तुलऐन हैदर ने तत्कालीन राजनीतिक स्थिति के साथ ही मध्य एशिया की राजनीतिक हलचल का चित्रण भी करती हैं—

“संसार अजीब हंगामों के युग से गुज़र रहा था। इतिहास में कोई युग ऐसा नहीं आया जब बेचारे मनुष्य पर कोई न कोई क़यामत न आई हो। पिछली शताब्दियों में तातारियों की सेना ने आक्रमण किए। इसाईयों और ईरान के आग पूजने वालों और इंदलस के यहूदियों और अरब के मुसलमानों ने मिलजुल कर ज्ञान का जो धूम धाम से दीप जलाया था, वह गोबी के जंगल से उठने वाली आँधियों ने सारा का सारा बुझा दिया था। बनू उमय्या का दमिश्क बनू अब्बास का बग़दाद, अब्दुर्रहमान का अश्बीला ने आँखों के सामने कैसे कैसे चित्र खींचे थे। इस क़यामत के बाद बचा खुचा ज्ञान जो बचा हुआ था वह मुसलमान जाति की आपस की फूट और तनावों से समाप्त हो गया था। जिस प्रकार बग़दाद तथा स्कन्दरिया नष्ट हुआ था। उसी प्रकार मथुरा उजड़ा और नालन्दा, कन्नौज और उज्जैन यह सब मनुष्यों की बस्तियाँ थीं। जिसमें सामान्य मर्द और औरतें रहते थे और जिन्होंने उनको ख़त्म किया वह भी सामान्य मनुष्य थे। लेकिन इस अफ़रातफ़री, इस नरसंहार, इन जंगलों की धूल, धक्काड़ के पीछे ज्ञान के दीप टिमटिमाते रहे। पुस्तकें लिखी जाती रहीं.....इंसानियत का चिराग़ कभी न बुझ सका।”<sup>69</sup>

लेखिका यह कहना चाहती हैं कि चाहे अरब के मुस्लिम मुल्क हों या हिन्दुस्तान के शहर हों, लुटने बर्बाद होने के बाद भी मानव मूल्यों को बर्बाद नहीं कर सके। मानव मूल्य कभी न बुझने वाला चिराग़ है। हिंसा, बिखराव और अशांति के वातावरण में भी ज्ञान सूफियों की ख़ानकाहों में सुरक्षित रहा। सूफी तथा भक्ति आंदोलन ने मित्रता तथा प्रेम का उपदेश दिया।

औपनिवेशिक भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक वातावरण में जो परिवर्तन आए और जिस प्रकार धीरे-धीरे अँग्रेज़ों ने विभिन्न वर्गों के बीच फूट डालकर अपनी सत्ता को दृढ़ बनाया, उससे हमारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक

जीवन बहुत प्रभावित हुआ। इस षड़यन्त्र के परिणामस्वरूप हिन्दुओं एवं मुसलमानों में घृणा, वैमनस्य एवं दुश्मनी ने अपनी जड़ें मज़बूत कर लीं। हिन्दुस्तानी सामासिक संस्कृति जिसे रामानंद, कबीर, नानक एवं सूफी परम्परा ने परवान चढ़ाया, उसमें बाधाएँ आने लगीं।

मुसलमानों की अपेक्षा हिन्दू जाति ने स्थितियों से समझौता किया और समय से कदम मिलाकर चल पड़े, परन्तु मुसलमान अपनी नवाबी मानसिकता से बाहर न निकल सके और पिछड़ गए। इस स्थिति का चित्रण उपन्यास में इस प्रकार किया गया है—

“ईस्ट इण्डिया कम्पनी आई तब भी हिन्दुओं ने स्थितियों से तुरंत समझौता कर लिया और मुगलों का कायस्थ मुंशी क्षण में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के क्लर्क में परिवर्तित हो गया। पिछले सौ साल से हिन्दू अपने जाति पाति के बंधनों और प्राचीन दर्शन के बावजूद पश्चिमी शिक्षा और साइंटिफिक दृष्टिकोण के निकट पहुँच गए थे। सर्वप्रथम पश्चिम के दर्शन का प्रभाव उन्होंने स्वीकार किया। जब देश भक्ति के आंदोलन प्रारम्भ हुए उसका निराकरण करने के लिए अँग्रेजी शासन ने तुरंत देश के अछूत वर्गों को जिन्हें 1857 ई० के पश्चात् हर प्रकार से कुचला गया था। अब अपनी कृपाओं से सम्मानित करना प्रारम्भ कर दिया। हिन्दुओं के यहाँ एक उच्च वर्ग भी उत्पन्न हो चुका था। जो लीडरशिप और लिबरल राजनीति के लिए तैयार था।”<sup>70</sup>

उपन्यासकार ने इस ओर संकेत किया है कि भारतीय नवजागरण के समय देश की हिन्दू जनता ने तो समय के अनुरूप अपने को बदल लिया था और उनमें जागृति उत्पन्न हो गई थी, परन्तु मुस्लिम समाज दिन प्रतिदिन पिछड़ता जा रहा था और नई सभ्यता, संस्कृति तथा आधुनिक शिक्षा से कोसों दूर था।

‘आग का दरिया’ में स्वतन्त्रता के लिए चलाए जाने वाले आंदोलनों की हलचल तथा तद्युगीन राजनीति का भी चित्रण किया गया है। दिसम्बर 1885 ई० में इण्डियन नेशनल काँग्रेस की स्थापना के साथ स्वतन्त्रता आंदोलन को एक स्पष्ट दिशा मिल गई। थोड़े समय बाद ही इण्डियन नेशनल काँग्रेस अनेक राजनीतिक उतार चढ़ावों का स्थल बन गई। अनेक क्रान्तिकारियों एवं राष्ट्रप्रेमियों ने इण्डियन

नेशनल काँग्रेस की शरण ली। यह क्रम अभी चल रहा था कि अँग्रेजों ने एक बार फिर अपना पुराना हथियार 'फूट डालो और शासन करो' का प्रयोग किया।

अँग्रेजों की कूटनीति और विरोध के बावजूद एक ओर काँग्रेस के नेतृत्व में हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के लिए प्रयास जारी थे तो दूसरी ओर क्रान्तिकारी अपनी भूमिका निभा रहे थे। 1905 ई० में हुए बंगाल के विभाजन ने क्रान्तिकारी आंदोलनों की नींव डाल दी थी। मजदूरों की यूनियन भी बनने लगी थी, उनकी बदली हुई शक्ति का कारण था मार्क्सवाद। 'आग का दरिया' में कुर्रतुलऐन हैदर मार्क्सवाद की शक्ति से इन शब्दों में परिचित करवाती हैं—

"शहरों में ट्रेड यूनियन स्थापित हो रहे थे। 1929 ई० में सत्ता ने बंगाल, बंबई, पंजाब और यू.पी. के मजदूरों को पकड़ लिया, जिनमें कम्युनिस्ट भी सम्मिलित थे। मेरठ ट्रायल प्रारम्भ हुआ। कम्युनिस्ट यह एक नयी विचारधारा अब राजनीतिक दृश्य पर प्रकट हुई। यह अधिकतर यूरोप के विश्वविद्यालयों में एक पढ़े हुए इंटेलेक्चुअल थे। संपूर्ण संसार में आर्थिक डिपरेशन छाया हुआ था। एक नया प्रयास बड़े पैमाने पर प्रारम्भ हो चुका था। इस प्रयास में अमेरिका आगे आगे था।"<sup>71</sup>

लगभग 1940 ई० में देश के विभिन्न क्षेत्रों में मजदूरों के विभिन्न आंदोलन चले। विभिन्न प्रदेशों में कम्युनिस्ट अपने कदम जमाने लगे थे। यह लोग विशेष रूप से ट्रेड यूनियनों में काम कर रहे थे लेकिन उनका मुख्य उद्देश्य देश की स्वतन्त्रता था। पहली काँग्रेस पार्टी इस समय तक सामान्य जन की पार्टी बन चुकी थी।

कुर्रतुलऐन हैदर ने हिन्दुस्तान के विभाजन को मानसिक रूप से स्वीकार नहीं किया। किन्तु वह कुछ समय के लिए पाकिस्तान गई भी और वहाँ रहीं लेकिन वह अपने आप को संयुक्त राष्ट्रीयता की पकड़ से बाहर न निकाल सकीं। यही कारण है कि कुर्रतुलऐन हैदर ने हिन्दुस्तान की सामासिक संस्कृति और उसके मूल्य एवं परम्पराओं को एक आइडियल के रूप में अपनी यादों में जीवित रखा। यह बात सत्य है कि सरहदें तो किसी भी समय विभाजित की जा सकती हैं लेकिन सांस्कृतिक जीवन को विभाजित करना न तो राजनीतिज्ञों के वश में था और न ही धर्म के ठेकेदारों के।



विभाजन के बाद मुसलमान स्वदेश त्याग और देश निकाला की मानसिक त्रासदी से दो चार हुए। हिन्दुस्तान से पाकिस्तान प्रवास करने वाले लोग हिन्दुस्तान के किसी शहर, किसी कस्बे, किसी गाँव को ही अपना घर कहते हैं। वह वापस यहाँ आना चाहते हैं मगर बीच में रेखा खींची हुई है। यह असमंजस की स्थिति पाकिस्तानी मुसलमानों की ही नहीं बल्कि उनकी भी है जिन्होंने इस विभाजन का विरोध किया।

हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान जाने वाले वहाँ मुहाजिर कहलाए और आज भी उन्हें प्रवासी समझा जाता है। दूसरी ओर पाकिस्तान न जाने वाले मुसलमान जो भारत में ही रहे और अपनी जन्मस्थली छोड़ कर नहीं गए। वे आज भी संदेह की दृष्टि से देखे जाते हैं। उनकी देश भक्ति पर शक किया जाता है। इस स्थिति का चित्रण राही मासूम रज़ा ने भी अपने उपन्यासों और कविताओं में बड़े मार्मिक ढंग से किया है और 'आग का दरिया' में भी इस स्थिति का मार्मिक विश्लेषण किया गया है क्योंकि लेखिका स्वयं भारत छोड़कर पाकिस्तान जाने वालों में थीं। इसलिए उनकी अनुभूति अत्यन्त वास्तविक और यथार्थ है। उपन्यास में जब कमाल हिन्दुस्तान में बेरोजगारी से तंग आकर पाकिस्तान जाता है। कुछ दिनों बाद जब वह हिन्दुस्तान आता है तो उसे महसूस होता है जैसे हिन्दुस्तान में लोग उसे पाकिस्तानी जासूस समझते हैं और पाकिस्तान में उसकी हिन्दुस्तानी देशभक्ति के चर्चे के कारण उसकी वफ़ादारी पर शक किया जाता है। उस समय कमाल दो अलग-अलग वफ़ादारियों के दो राहे पर खड़ा दिखाई देता है जहाँ वह समझ नहीं पाता कि किधर जाए। इस असमंजसता से वह बेचैन हो जाता है और फूट-फूट कर रो पड़ता है। इस स्थिति का चित्रण कुर्रतुलऐन हैदर इस प्रकार करती हैं—

“जब ट्रेन ने बॉर्डर क्रॉस किया तो वह, जो इतने दिनों से अपनी सारी हिम्मत खर्च करके अपने आँसुओं को छुपा रहा था, खम्बे के पास एक सरदार जी को बन्दूक ताने खड़े देखकर बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगा। फिर उसने महसूस किया कि उसका सहायत्री, जो पुलिस का अफ़सर था और अमृत सर से वापस जा रहा था, उसे गौर से देख रहा है। उसे लगा जैसे वह उससे कह

रहा है : तुम अब तक दो भिन्न वफ़ादारियों के दो राहे पर खड़े हो—लानत है तुम पर।”<sup>72</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर उपन्यास के द्वारा अपने अस्तित्व की जड़ों को खोजते हुए सांस्कृतिक वातावरण की पहचान करती हैं। सामाजिक अवलोकन, ऐतिहासिक ज्ञान, सांस्कृतिक पीड़ा, सभ्य जीवन की परिवर्तित होती हुई स्थितियाँ, मनुष्य की आत्मा का अकेलापन तथा सांस्कृतिक क्रान्तियों की छुपी हुई आन्तरिक और बाहरी बातों को विशेष रूप से विश्लेषित करती हैं। लेखिका उपन्यास में राजनीतिक धर्म और संस्कृति के बारे में अपने विचारों को बड़ी बेबाकी से रखती हैं। उन्हें उच्च मानवीय मूल्यों तथा परम्पराओं से बेहद लगाव है। वह किसी भी स्थिति में मनुष्य जाति के किसी वर्ग पर अन्याय सहन नहीं कर सकतीं। ‘आग का दरिया’ में सांस्कृतिक ह्रास का मार्मिक चित्रण किया है। अकाल की मार सहने वाले पूर्वी पाकिस्तान की संस्कृति और वहाँ की निर्धनता का चित्रण लेखिका उपन्यास में कमाल के माध्यम से इस प्रकार करती हैं—

“ओफ़ो यहाँ कितनी जनसंख्या थी। औरतें, जिनके माथों पर बड़ी-बड़ी लाल बिन्दियाँ और माँग में गहरा लाल सिंदूर था। रंग बिरंगी सूती साड़ियाँ पहने बच्चियाँ, धोतियों के किनारे सँभाले हिन्दू। चारखाना तहमद बाँधे मुसलमान, जिनकी अधिकतर दाढ़ियाँ थीं। भूखे मरने वाले काले काले लड़के। अधिकारीगण, ऐंग्लो इण्डियन गार्ड, पालकी उठाने वाले कहार (यहाँ अब तक पालकियाँ चल रही थीं)। फिर ट्रेन चली, ट्रेन पुनः तालाबों के किनारे— किनारे दौड़ने लगी, जिनमें कमल के फूल खिले थे। किसी फूलों की बेल से ढके झोंपड़े के दरवाज़े पर कोई औरत ऊदी साड़ी पहने खड़ी दिखाई दे जाती। कुछ औरतें घूँघट निकाले बाँसों के झुँड के नीचे—नीचे चल रही थीं। उनके नाम क्या होंगे ? आमना, सकीना, रीबा, राधा। उनके जीवन की कहानियाँ क्या होंगी भला! उनका ब्रह्माण्ड के संबंध में दृष्टिकोण, जीवित रहने से मृत्यु तक की कथा, कष्ट, निर्धनता, अकाल, अकाल, अकाल। उसने आँखें बन्द कर लीं। अल्लाह पानी दे, भात दे, भात दे।”<sup>73</sup>

पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान के बीच एक गहरी खाई थी। दोनों के बीच कोई रागात्मक संबंध नहीं था। पश्चिमी पाकिस्तान के लोग पूर्वी पाकिस्तान को

कंगाल और पिछड़ा समझते थे। इसके साथ ही उनकी संस्कृति और भाषा से भी उन्हें चिढ़ थी। लेखिका ने उनकी इस मानसिकता का चित्रण इस प्रकार किया है—

“बिल्कुल बैकवर्ड देश है यह। ज़रा यहाँ के निवासियों से आपका सम्पर्क हो तो आटे दाल का भाव पता चल जाएगा। एक से एक आलसी, षण्यन्त्रकारी, कट्टरपंथी और बेईमान। उनपर शासन करना और उनको वश में रखना बड़ा दिल गुर्दे का काम है। कमाल को याद आया अठारहवीं शताब्दी के किसी अँग्रेज़ कलेक्टर की संगति में यात्रा कर रहा है। विश्वास कीजिए,” उच्च अधिकारी ने बात जारी रखी, जिस दिन यह भाग पाकिस्तान से अलग होगा मैं ईश्वर का लाख लाख शुक्र अदा करूँगा और खुशी के मारे सात दिन ड्रंक रहूँगा। उनकी हर चीज़ हमसे भिन्न है। ग़ैर इस्लामी भाषा बोलते हैं। वज़ीरे आजम को प्रधानमंत्री और अमन को शान्ति कहते हैं। संस्कृति से अपना संबंध जोड़ रखा है।”<sup>74</sup>

नफ़रत की सुलगती हुई यह आग सन् 1971 ई० में भड़क कर शान्त हो गई। जब पूर्वी पाकिस्तान बंगलादेश बनकर पश्चिमी पाकिस्तान से अलग एक देश बन गया। इस प्रकार लेखिका का 1957 ई० का पूर्वानुमान 1971 ई० में सत्य सिद्ध हो गया। जो उनकी प्रतिभा, समझ, राजनीति और इतिहास बोध का प्रमाण है।

हिन्दुस्तान की सामासिक संस्कृति जिसको बनने में सदियाँ लगीं। वह 1947 ई० में विभाजित हो गई। कुर्रतुलऐन हैदर इस विभाजन को मानसिक रूप से स्वीकार नहीं कर पाई। जो संस्कृति 1947 ई० में विभाजित हुई, उस संस्कृति को कुर्रतुलऐन हैदर ने ढाई हजार साल पहले के समय से बनते हुए दिखाया। वैदिक काल, मध्यकाल, औपनिवेशिक काल और 1947 ई० से पूर्व तक बनने वाली संस्कृति का विभाजन 1947 ई० में हो गया। यह स्थिति लेखिका को मानसिक रूप से दुखी और पीड़ित करती है। पूरे उपन्यास में दुख की छाया दिखाई देती है।

लेखिका ने ‘आग का दरिया’ में उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक यात्रा की है। प्राचीन युग के गौतम नीलम्बर से आधुनिक युग के गौतम नीलम्बर तक यह यात्रा उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक एवं राजनीतिक सीमाओं को पूर्ण करती है। यह उपन्यास कलात्मक एवं विचारात्मक दृष्टि से उर्दू का सबसे बड़ा उपन्यास है। समय के हाथों

मानवता की कैसी दुर्दशा होती है, उसकी कथा को ऐतिहासिक और राजनीतिक भावबोध के साथ प्रस्तुत किया गया है।

‘आग का दरिया’ को उपमहाद्वीप का सांस्कृतिक इतिहास भी कहा जा सकता है। संस्कृति की विभिन्न परतें खुलती जाती हैं। एक युग से दूसरे युग तथा एक जाति से दूसरी जाति के ह्रास एवं विकास का संपूर्ण चित्रण इस उपन्यास में देखने को मिलता है।

**‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ का राजनीतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन :**

कमलेश्वर के उपन्यास ‘कितने पाकिस्तान’ तथा कुर्रतुलऐन हैदर के उपन्यास ‘आग का दरिया’ की जब हम राजनीतिक दृष्टि से तुलना करते हैं तो देखते हैं कि दोनों ही उपन्यासों में विभिन्न राजनीतिक स्थितियों, घटनाओं तथा राजनीति के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाले दुख-दर्द, अशान्ति, निराशा के प्रति चिन्ता व्यक्त की गयी है।

राजनीति के दाँव पेंच से उपजे कारक जब युद्ध करवाते हैं तो उसमें नुकसान केवल निरीह जनता का होता है, मनुष्य जाति का होता है। कमलेश्वर ने ‘कितने पाकिस्तान’ में जगह जगह यह बात उठाई है कि युद्धों से केवल मृत्यु मिलती है, जीवन नहीं। दुख मिलता है सुख नहीं, निराशा हाथ आती है आशा नहीं। तो क्यों निरंतर युद्ध हो रहे हैं। उपन्यास में अर्दली अदीब से कहता है—

“अगर यह हमला युद्ध में बदल गया, तब तो बड़ा नुकसान होगा! दोनों मुल्कों में नुकसान सिर्फ अवाम का होगा.....।”<sup>75</sup>

सन् 1972 ई० में मित्रता, भाईचारे और व्यापार के लिए ‘लाहौर घोषणा’ सन्धि की गई थी। लेकिन 1999 ई० में उसका उल्लंघन किया गया। पाकिस्तानी फौजियों ने कारगिल के इलाके में अचानक आक्रमण किया। इस आक्रमण से कमलेश्वर चिन्तित दिखाई देते हैं। वह चाहते हैं कि यह आक्रमण युद्ध में परिवर्तित न हो क्योंकि उससे केवल जनता की हानि होगी।

कुर्रतुलऐन हैदर ने 'आग का दरिया' में केवल राजनीतिक घटनाओं पर ही नहीं बल्कि राजनीति के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाले दुख-दर्द, पीड़ा, निराशा आदि को उपन्यास का विषय बनाया। उपन्यास में गौतम एक स्थान पर प्रश्न करता है—

"मगर दूसरे देशों पर वह आक्रमण क्यों करते हैं ? गौतम ने उदासी से कहा "मनुष्यों के एक समूह पर अधिकार जमाना चाहिए। किसी एक जाति का दूसरी जाति को सम्मोहित करना, किसी एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति का उन्मूलन करना ग़लत है। राजनीति के दृष्टिकोण की बात मत करो कि एक मछली दूसरी मछली को खाती है।"<sup>76</sup>

गौतम नीलम्बर युद्ध तथा उसके नतीजे में होने वाली बर्बादी तथा मृत्यु से चिंतित और दुखी होता है। युद्ध क्यों किया जाता है? इस प्रश्न को उपन्यास में कई स्थान पर उठाया गया है तथा क्यों हज़ारों मनुष्यों को मौत की नींद सुला दिया जाता है। गौतम नीलम्बर युद्ध विरोधी होने के बाद भी युद्ध में सम्मिलित हो जाता है। युद्ध में उसके हाथों की उँगलियाँ कट जाती हैं और वह समय की क्रूरता का शिकार हो जाता है।

कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर दोनों ही उपन्यासकारों ने राजनीतिक घटनाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली मौत के प्रश्न को भी बड़े मार्मिक ढंग से उठाया है। 'कितने पाकिस्तान' में वह लिखते हैं कि पूरे विश्व में जो भी युद्ध महायुद्ध होते आए हैं। उनमें हुई मौत के योगफल से हार और जीत तय की जाती है—

"मौत! सारे युद्ध महायुद्ध यही तो बताते हैं कि मौत के योगफल के आधार पर ही हार जीत तय हो सकती है। तुम कितनी मौत दे सकते हो! वह कितनी मौत उठा सकता है। जब तक दूसरा जीवित रहता है, पहला नहीं जीतता। मौत ही जय पराजय को तय करती है। सभी युद्धों महायुद्धों की यही तो हार जीत है.....।"<sup>77</sup>

किसी भी युद्ध अथवा महायुद्ध चाहे वह कुरुक्षेत्र में हुआ आर्यों का महाभारत संग्राम या मेराथन के मैदान में आर्याना के डेरियस और यूनानी मिल्लियाडिस का युद्ध हो।

इन सभी में केवल मौत के आधार पर ही विजय घोषित की जाती रही है। युद्ध जीतने की पहली और अनिवार्य शर्त दूसरे की मृत्यु है।

‘आग का दरिया’ में अबुलमंसूर कमालउद्दीन युद्ध से उत्पन्न होने वाली, बर्बादी एवं मृत्युओं से चिंतित और दुखी है—

“अब कमाल का जी उचाट हो गया। उसने अत्यधिक नरसंहार देखा था, उसने इतनी विवश औरतों को रोते देखा था, उसने सुल्तान हुसैन के दरबार के धनवानों को युद्ध की स्थिति में सुल्तान सिकन्दर के सामने जाते देखा था कि पगड़ी उनकी गर्दनो में रस्सियों की भाँति बँधी थी और वह पैदल कैदियों की भाँति विजेता के सम्मुख प्रस्तुत किये जा रहे थे.....किताबें बेकार थीं, ज्ञान बेकार था, दर्शन अर्थहीन थे, क्योंकि मनुष्य का रक्त इन सबके बावजूद बहता था। इतिहास से उसको जितना लगाव था अब उतनी ही घृणा हो गई।”<sup>78</sup>

कमालउद्दीन की चिन्ता के माध्यम से कुर्तुलऐन हैदर यह कहना चाहती हैं कि पुस्तकों और पोथियों में तथा प्रत्येक दर्शन में प्रेम और सौहार्द का ज्ञान प्रदान किया जाता है और ऐसी पुस्तकें असंख्य हैं फिर भी परिणाम शून्य हैं और घृणा का, नरसंहार का राज कायम है। ऐसे युग में जबकि संपूर्ण हिन्दुस्तानी समाज बिखराव और अशान्ति का शिकार था, देश छोटी-छोटी स्वतन्त्र सत्ताओं में विभाजित था। युद्ध एवं क्रान्तियाँ दैनिक जीवन का अंग बन चुकी थीं। इन स्थितियों से बचने के लिए लोग विवश होकर सूफियों और भक्तों की शरण ले रहे थे। अबुलमंसूर कमालउद्दीन भी अध्यात्म और भक्ति आंदोलन में शरण लेता है। वह बंगाल जाकर एक शूद्र लड़की से विवाह कर लेता है तथा अपना बचा हुआ जीवन कहानियाँ और गीत लिखने में व्यतीत करता है। कमालउद्दीन जो इंसानियत और शान्ति की उपासना करता था। उसे भी धोखेबाज़ बताकर मार दिया गया।

कमलेश्वर तथा कुर्तुलऐन हैदर दोनों ही उपन्यासकारों ने अपने-अपने उपन्यासों में अँग्रेजों के द्वारा हिन्दुस्तान के विरुद्ध अपनाई गई कूटनीतियों का चित्रण किया है। भारत में अँग्रेजों के आगमन के पश्चात् यहाँ की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितियों में परिवर्तन आने लगे। अँग्रेजों ने धीरे धीरे यहाँ के विभिन्न वर्गों में फूट डालना प्रारम्भ कर दिया। जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दू एवं

मुसलमान जनता में परस्पर घृणा, शत्रुता, वैमनस्य उत्पन्न होने लगा। जिससे यहाँ की सामासिक संस्कृति का ढाँचा चरमरा गया। अँग्रेज़ यह भली-भाँति जानते थे कि जनता के एक बार भड़क जाने पर उसे ठंडा करना बहुत मुश्किल है। इसका लाभ उठाते हुए अँग्रेज़ों ने भारत विभाजन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, लेकिन भारतीय नेता हृदय से उसे स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। उनके भीतर द्वन्द्व की भावना थी। उस स्थिति का चित्रण 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर इस प्रकार करते हैं—

“और मैं 3 जून को भारत के विभाजन की घोषणा कर देना चाहता हूँ.....आप पाकिस्तान माँग रहे थे। हम आपको पाकिस्तान दे रहे हैं। दुनिया जानती और मानती है कि पाकिस्तान कभी नहीं बन सकता... लेकिन ब्रिटिश क्राउन तश्तरी में पाकिस्तान रखकर आपको पेश कर रहा है.....अब आप हिचक क्यों रहे हैं?”<sup>79</sup>

अँग्रेज़ वायसराय माउंटबेटन ने अपनी कूटनीति से भारत का विभाजन कर दिया। हिन्दुस्तान की सामासिक संस्कृति को नष्ट कर दिया। भारत विभाजन ने आम जनता के सम्मुख एक प्रश्न खड़ा कर दिया कि वह किसे चुने अपनी जन्म भूमि या परदेस। विभाजन के इस ग़लत फैसले से घृणा और नफ़रत का कभी न ख़त्म होने वाला सिलसिला शुरू हो गया है। अँग्रेज़ स्वयं को हिन्दुस्तानियों से उच्च समझते थे। उन्होंने दृढ़ता के साथ धीरे धीरे हिन्दुस्तान पर अपना प्रभाव जमाया। सरल के आगमन के समय हिन्दुस्तान में यहाँ के ऐसे बूढ़े लोग भी उपस्थित थे जो सिराजुद्दौला की ओर से अँग्रेज़ों के विरुद्ध लड़े थे। वह सब मुग़लों और नवाबों के युगों के गीत गाते थे। 'आग का दरिया' में इस प्रकार का एक प्रतिनिधि पात्र राधेचरन हैं। वह मुग़लों की सरकार का प्रबंध सँभालता था तथा शेष समय पूजा पाठ में लगाता था। अँग्रेज़ शासकों ने मुसलमान नवाबों और उनके हिन्दू कारिन्दों के बीच फूट डालनी चाही लेकिन वे सफल नहीं हो सके। उदाहरण स्वरूप एक प्रसंग को लिया जा सकता है जिसमें एक अँग्रेज़ अफ़सर राधेचरन को भड़काने की कोशिश करता है तो राधेचरन उसकी बात पर विश्वास नहीं करता और स्पष्ट रूप से कहता है—

“तुम झूठ बोलते हो साहेब। हमारे नवाबों के यहाँ कुव्ववस्था नहीं थी। मैं कायस्थ हूँ मेरे पूर्वज सदियों से मुर्शिदाबाद में सत्ता का प्रबंध करते आए हैं।”<sup>80</sup>

उस समय उस कमरे में एक अँग्रेज़ मिशनरी भी उपस्थित था जो अपनी यात्रा वृत्तान्त लिख रहा था और उसने यह संवाद सुनकर नितान्त विपरीत बात लिखी कि—

“बंगाल का हिन्दू मुसलमान नवाबों से घृणा करता है। मुसलमान हिन्दुओं के खून के प्यासे हैं। इस देश में कोई एकता नहीं। असल में उसे एक देश कहना ही नहीं चाहिए। यह बहुत सी जातियों का संग्रह है। जिसमें हिन्दू मुसलमान हमेशा आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं यह दोनों कभी इकट्ठे नहीं हो सकते।”<sup>81</sup>

सन् 1857 ई० के बाद ब्रिटिश शासन ने अपनी नीतियाँ प्रारम्भ की, क्योंकि इस युद्ध में हिन्दू और मुसलमान एक साथ लड़े थे। अँग्रेज़ जानते थे कि अगर इस देश पर शासन करना है तो हिन्दू और मुसलमानों को अलग करना चाहिए। ब्रिटिश शासन की नीतियों का वर्णन कमलेश्वर ‘कितने पाकिस्तान’ में इस प्रकार करते हैं—

“हमारी पॉलिसीज़ बदलीं और तब यह तय किया गया कि हिन्दू और मुसलमान, जो 1857 ई० में एक हुए थे, इन्हें अलग अलग रखा जाए....नहीं तो अँग्रेज़ी हुकूमत चलने नहीं पाएगी। इसलिए मैंने बाबरी मस्जिद पर इब्राहीम लोदी का जो शिला लेख पड़ा था, उसे जानबूझकर मिटाया गया.....लेकिन मैंने उसका जो अनुवाद किया था, वह आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया की फाइलों में पड़ा रह गया। उसे नष्ट करने का ख्याल किसी को नहीं आया। इसी के साथ ‘बाबरनामा’ के वो पन्ने गायब किए गए जो इस बात का सबूत देते हैं कि बाबर अवध में गया तो ज़रूर, पर कभी अयोध्या नहीं गया.... और उसके बाद हमारी अँग्रेज़ कौम ने, और खास तौर से एच. आर. नेविल ने जो फैज़ाबाद गज़ेटियर तैयार किया, उसमें शैतानी से यह दर्ज किया कि बाबर अयोध्या में एक हफ़्ते ठहरा और इसी ने प्राचीन राम मन्दिर को मिसमार किया।”<sup>82</sup>

कमलेश्वर ने अदीब की अदालत में ब्रिटिश शासन के आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया के डायरेक्टर जनरल ए. फ़्यूहरर को प्रस्तुत करके बाबर पर लगे झूठे आरोप को हटाने के लिए सारी सच्चाई उसके मुँह से उगलवा दी। ए.फ़्यूहरर ने बाबरी



मस्जिद का वह शिलालेख पढ़ा था, जिसकी नींव इब्राहीम लोदी ने लगभग 17 सितम्बर 1523 ई० में रखी थी। बाबर पर राम मन्दिर तोड़ने का आरोप लगाया गया था, लेकिन बाबर कभी अयोध्या नहीं गया था और न ही उसने राम मन्दिर को तुड़वा कर बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था। यह सब ब्रिटिश शासन की नीति थी जो हिन्दुस्तानियों को धर्म के नाम पर अलग रखना चाहते थे। इसके संबंध में कमलेश्वर लिखते हैं—

“1857 ई० की क्रान्ति के बाद अँग्रेजों की नीति बदली थी और उन्होंने वतन को मजहब के नाम पर तक्सीम करना शुरू कर दिया था।”<sup>83</sup>

कुर्तुलऐन हैदर 'आग का दरिया' में अँग्रेजों की नीतियों के संबंध में लिखती हैं कि उस समय अवध के शासकों का व्यवहार अपनी हिन्दू जनता के साथ बड़ा प्रेमपूर्ण और न्यायपूर्ण था लेकिन सरल ऐशले का मित्र बिशप और उनके साथी अपने भ्रमण वृत्तान्त में लिखते हैं कि—

“इस देश का हिन्दू—मुसलमान एक दूसरे के खून का प्यासा है और वेस्ट मिनिस्टर में हमारी सत्ता को चाहिए कि उन वहशियों को अपनी जड़ता एवं धर्मान्धता से छुटकारा दिलाने के लिए जल्दी जल्दी बहुत सी बन्दूकें भेजिए।”<sup>84</sup>

बिशप और उनके साथियों द्वारा लिखी गयी इन बातों के माध्यम से इस बात का सहज ही अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि अँग्रेज हिन्दुस्तानियों के प्रेम और सद्भाव को घृणा में बदलने की कितनी कोशिश कर रहे थे। अँग्रेजों ने अपने हित के लिए किस प्रकार हिन्दुस्तानी इतिहास को रूपांतरित करके प्रस्तुत किया और हिन्दुस्तानियों में घृणा का बीज बो दिया। इसाई मिशनरियों द्वारा इसाई धर्म स्वीकार करने वाले हिन्दुस्तानियों को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ देना इसी नीति का एक हिस्सा था। अँग्रेज यह जानते थे कि हिन्दुस्तान पर शासन करना आसान नहीं है। उन्होंने 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनाई और हिन्दुस्तानी जनता जो 1857 ई० के युद्ध में एक साथ अँग्रेजों से लड़ी थी, उसको उन्होंने धर्म के नाम पर लड़वा दिया। हिन्दुस्तानियों को अलग करने के लिए वह नई-नई नीतियाँ बनाते

रहे। वह हिन्दुस्तान को धर्म के नाम पर बाँटते रहे। अँग्रेजों की कूटनीति का चित्रण करते हुए कमलेश्वर 'कितने पाकिस्तान' में लिखते हैं—

“अँग्रेजों ने अपने चहेते अफसर कनिंघम, जिसे हिन्दुस्तान के तवारीख और पुरानी इमारतों की देखभाल करने का काम सुपुर्द किया गया था, उसने बड़ी चालाकी से लखनऊ गज़ेटियर में यह दर्ज किया था कि बाबरी मस्जिद की तामीर के दौरान हिन्दुआ ने तामीर होती मस्जिद पर हमला किया था और उस जंग में मुसलमानों ने एक लाख चौहत्तर हजार हिन्दुओं को हलाक किया था.....उन्हीं हिन्दुओं के खून से मस्जिद के लिए गारा बनाया गया था.....खुद अँग्रेज अफसर नेविल ने फ़ैजाबाद गज़ेटियर में लिखा है कि सन् 1869 ई० में फ़ैजाबाद अयोध्या की कुल आबादी 9,949 थी और सन् 1881 में उसी की आबादी की 11643 थी, यानी 12 बरसों में करीब 2000 आबादी की बढ़त हुई थी.....यानी सन् 1528 ई० में उस इलाके की आबादी क्या रही होगी? तब 1,74000 हिन्दू कैसे मारे जा सकते थे ?”<sup>85</sup>

अँग्रेजों की कूटनीति ने हिन्दुस्तान को धर्म के नाम पर विभाजित कर दिया। बाबर के द्वारा लिखे 'बाबर नामा' में जिस 'औध' का ज़िक्र है उसे अँग्रेज अफसर एच. आर. नेविल ने फ़ैजाबाद गज़ेटियर तैयार करते समय बेईमानी से 'अयोध्या' कहा है, जबकि 'औध' का अर्थ है 'अवध'।

कमलेश्वर यह कहना चाहते हैं कि सन् 1881 ई० तक फ़ैजाबाद और अयोध्या की कुल जनसंख्या 11643 थी तो बाबर के समय सन् 1528 ई० में वह कितनी होगी। उस समय 1,74000 हिन्दू कैसे मर सकते थे। जब थे ही नहीं तो मरते कैसे ? यह सब अँग्रेजों की कूटनीति का परिणाम है। अँग्रेज अपनी कूटनीति में बहुत हद तक सफल भी हुए।

'आग का दरिया' में कुर्रतुलऐन हैदर ने ब्रिटिश शासन की जनता विरोधी कूटनीति एवं काँग्रेस की कृषि सुधार से संबंधित आंदोलन की पृष्ठभूमि को इस प्रकार वर्णित किया है—

“काँग्रेस ने एक ज़माने से कृषि सुधार के लिए ऐजीटेशन कर रखा था। किसानों के संबंध में ब्रिटिश शासन ने विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न कूटनीति अपना रखी थीं। बंगाल में जहाँ उन्होंने मुसलमानों से सत्ता

छीनी थी, वहाँ मुसलमानों को आर्थिक रूप से बिल्कुल बर्बाद करके हिन्दुओं को उनके स्थान पर शक्तिशाली बनाया था। पंजाब उन्होंने सिक्खों के हाथों से लिया था। अतः यहाँ मुसलमानों को उन्होंने प्रोत्साहन दिया। जो प्रदेश बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मद्रास सबसे अधिक समय तक अँग्रेजों के अधीन रहे, वे सबसे ज्यादा बर्बाद थे। बंगाल में लगातार अकाल पड़ते थे। पंजाब अँग्रेजों के हाथ में सबसे अंत में आया था। अतः सबसे अधिक खुशहाल प्रदेश यही था। उत्तर प्रदेश जो हिन्दुस्तान का दिल था और देश की सारी प्रारम्भिक काल एवं मध्यकाल की संस्कृतियों का पालना, वहीं का किसान सबसे अधिक कंगाल था। किसान, जो काँग्रेस आंदोलन की ओर आ रहा था, समझता था कि स्वराज का अर्थ कृषि सुधार है। जब उसे जन्म जन्म के अन्याय एवं ऋण के बोझ से छुटकारा मिलेगा।<sup>86</sup>

इसलिए स्वतन्त्रता आंदोलन में किसानों एवं मजदूरों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। सामान्य जनता अपने अधिकारों की माँग करने लगी और धीरे-धीरे लोगों में राजनीतिक समझ उत्पन्न होने लगी।

हिन्दुस्तान को विभाजित करने के लिए ब्रिटिश राज्य सत्ता ने 1934 ई0 से 1937 ई0 तक कुछ नीतियाँ बनाई थीं। जिसका वर्णन कमलेश्वर 'कितने पाकिस्तान' में इस प्रकार करते हैं—

“सन् 1934 ई0 से 1937 ई0 तक ब्रिटेन की राज्य सत्ता ने जो साजिश भरे कार्यक्रम तैयार किये, वे दूसरे विश्वयुद्ध के कारण एकाएक तो लागू नहीं किये जा सके, लेकिन युद्ध समाप्त होते ही, इस कूटनीतिक दुरभिसंधियों को अमली जामा पहनाने के लिए बैवेल को भारत का वायसराय नियुक्त किया गया। एक सोचे समझे और तयशुदा कार्यक्रम के तहत भेजा गया। वह था, जब तक और जहाँ तक संभव हो, भारत की आजादी को स्थगित करना और स्थगित न हो सके, तो भारत विभाजित करके उसे कई टुकड़ों में बाँट देना.....।”<sup>87</sup>

ब्रिटिश शासन द्वारा जनरल बैवेल को हटाकर माउन्टबेटन को भारत का वायसराय नियुक्त किया गया ताकि भारत पर नियन्त्रण रखा जा सके, और ऐसा न हो सके तो भारत को विभाजित कर दिया जाए।

सन् 1935 ई० के बाद हिन्दुस्तान के राजनीतिक वातावरण में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन दिखाई दिए। इस बदले हुए परिदृश्य का चित्रण कुर्रतुलऐन हैदर ने इस प्रकार किया है—

“काँग्रेस ने 1935 ई० के विधान में मुख्य बिंदु पारित करके मन्त्रिपद स्थापित किए। यह एक नया अनोखा अनुभव था। प्रथम बार देश में राष्ट्रीय लीडर सत्ता के प्रबंध में सम्मिलित हुए। मिसिज विजय लक्ष्मी पण्डित लोकल सेल्फ़ गर्वनमेंट की मंत्री बनी....इसी समय में काँग्रेस ने नेशनल प्लानिंग कमेटी बनाई। कृषि, शिक्षा, बेरोज़गारी आदि के लिए दस साल की योजना तैयार की। तभी काँग्रेस ने चीन मेडिकल मिशन भेजा। फिर युद्ध छिड़ गया तथा हिन्दुस्तान से परामर्श लिए बिना ब्रिटेन ने इस देश को भी युद्ध की भट्टी में झोंक दिया। अँग्रेजों के लिए पिछले सत्तर साल से हिन्दुस्तानी फौज दूसरे एशियावालों से लड़ती थी और अब उनकी, फिर यूरोपियन इम्पीरियलिज़्म के मैदान पर भेंट चढ़ा दिया गया, काँग्रेस सत्ता ने त्यागपत्र दे दिया। अब फिर गर्वनर का राज प्रारम्भ हुआ। काँग्रेस ने असहयोग आंदोलन प्रारम्भ किया। फ्रांस के पतन के बाद जब एकतावादियों की स्थिति बहुत खस्ता हो गई तब काँग्रेस ने एक बार फिर प्रस्ताव रखा कि अगर केन्द्र में संपूर्ण स्वतन्त्रत सत्ता स्थापित कर दी जाए तो वह युद्ध में सहयोग करने के लिए तैयार है। यह प्रस्ताव ब्रिटेन ने अस्वीकार किया तब महात्मा गाँधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया। तीस हजार मर्द और औरतें जेलों में बंद किये गए।

7 अगस्त 1942 ई० को कोएट इण्डिया रेजूलेशन पास किया गया। देश में विरोध प्रारम्भ हुआ। अहमद नगर फोर्ट फिर आबाद हुआ। विश्वविद्यालय के विद्यार्थी इसमें आगे आगे थे। दस हजार हिन्दुस्तानी पुलिस वाले फायरिंग से मारे गए।”<sup>88</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने स्वतन्त्रता के लिए किये गए प्रयासों तथा द्वितीय विश्व युद्ध में भारत को झोके जाने का विवरण दिया है। क्रान्तिकारी कम्युनिस्टों की सरगर्मियाँ, काँग्रेस एवं मुस्लिम लीग के बीच टकराव, सामान्य जनता का दुख दर्द, आक्रोश तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए किये गए प्रयासों का चित्रण उपन्यास में किया गया है।

सन् 1757 ई० में ईस्ट इंडिया कम्पनी के सिपह सालार क्लाइव ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के सिपह सालार मीर जाफ़र को लालच देकर उन्हें धोखे से हरा

दिया। क्लाइव ने मीर जाफर के साथ मिलकर नवाब सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड़यन्त्र रचा और सन् 1757 ई० का प्लासी का युद्ध जीत लिया। अँग्रेजों ने हिन्दुस्तान को अपना उपनिवेश बनाने के लिए भारत के स्वतन्त्र राज्यों के विरुद्ध अनेक षड़यन्त्र प्रारम्भ कर दिये। इन्हीं षड़यन्त्रों में दो कौमों का सिद्धान्त भी था। अँग्रेजों ने हिन्दुस्तानियों को अलग अलग धर्मों के नाम पर बाँटने की नींव रख दी थी।

कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर दोनों ही उपन्यासकारों ने अपने-अपने उपन्यासों में द्विराष्ट्रवाद के सिद्धान्त को उठाया है। 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर माउंटबेटन के इस वाक्य के माध्यम से अँग्रेजों की कूटनीति का उल्लेख करते हैं—

“हमने सन् 1757 ई० में ही दो कौमों के सिद्धान्त की नींव रख दी थी.....

फोर्ट विलियम कॉलेज में हमने मुंशी सदासुखलाल और मौलवी मीर अम्मन को बुलाकर इनकी सम्मिलित भाषा की रीढ़ तोड़ दी थी.....।”<sup>89</sup>

अँग्रेजों ने साम्प्रदायिकता का विष पहले ही घोल दिया था। इण्डियन नेशनल काँग्रेस की स्थापना के बाद अँग्रेजों ने मुसलमानों को यह अहसास कराना प्रारम्भ किया कि काँग्रेस उनके लाभ के लिए किसी प्रकार का संघर्ष नहीं कर सकती। अँग्रेज अपने इस षड़यन्त्र में सफल रहे। 1906 ई० में इण्डियन नेशनल काँग्रेस से कुछ लोग अलग हुए और उसके परिणामस्वरूप मुस्लिम लीग अस्तित्व में आई। मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए मुस्लिम बहुसंख्यक एवं भिन्न क्षेत्रों तथा सत्ताओं में मुस्लिम लीडरों की माँग की। हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों वर्गों में साम्प्रदायिकता की भावना उत्पन्न होने लगी। इन उतार चढ़ावों को हिन्दू सभा एवं मुस्लिम लीग जैसी साम्प्रदायिक पार्टियों ने तीव्र कर दिया। परिणामस्वरूप भारतीय सामासिक संस्कृति की कल्पना टूटने-बिखरने लगी। हिन्दू साम्प्रदायिक शक्तियों का कहना था कि हिन्दू हिन्दुस्तान की मूल जाति है और मुसलमान विदेशी जाति।

इसके विपक्ष में मुस्लिम लीग का मानना था कि मुसलमान भिन्न जाति है। इस राजनीतिक असमंजसता एवं परिवर्तन के कारण साम्प्रदायिक सहमति और भाईचारे की जड़ें कमजोर पड़ने लगीं। संपूर्ण जाति के मन में धीरे-धीरे द्विराष्ट्र दृष्टि का विष घोला जाने लगा। इसका वर्णन 'आग का दरिया' में मुस्लिम पात्र चम्पा द्वारा इस प्रकार किया गया है—

“जब मैं बनारस में पढ़ती थी, मैंने द्विराष्ट्र पर कभी विचार न किया। काशी की गलियाँ और शिवाले और घाट मेरे लिए उतने ही महत्वपूर्ण थे जितने लीला भार्गव के लिए। फिर यह हुआ कि जब मैं बड़ी हुई तो मुझे पता चला कि उन शिवालों पर मेरा कोई अधिकार नहीं, क्योंकि मैं माथे पर बिन्दी नहीं लगाती और तिपलेश्वर की आरती उतारने के स्थान पर मेरी अम्मा नमाज़ पढ़ती हैं अतः मेरी संस्कृति दूसरी है। मैंने बसंत कॉलेज में तिरंगे के नीचे खड़े होकर जनगणमन गाया है लेकिन मुझे वहाँ पर प्रायः ऐसा महसूस हुआ कि मुझे उस तिरंगे के साए में अजनबी समझा जाता है।”<sup>90</sup>

अंग्रेज़ों ने 19वीं शताब्दी के अंत से हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय आन्दोलन को दबाने के लिए यहाँ पर साम्प्रदायिकता का जो विष घोला, वह आज तक विद्यमान है जिसका दर्द चम्पा के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है।

सन् 1857 ई० के युद्ध के बाद मैकाले ने हिन्दुस्तान में अँग्रेज़ी शिक्षा अनिवार्य कर दी और फ़ारसी भाषा को बेदख़ल कर दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि फ़ारसी के विद्वान और उच्च वर्गीय सभ्य सुसंस्कृत लोग अज्ञानियों की पंक्ति में खड़े हो गए। मैकाले की शिक्षा नीति की ओर संकेत करते हुए कमलेश्वर लिखते हैं—

“मैंने अँग्रेज़ी शिक्षा अनिवार्य बनाकर फ़ारसी को बेदख़ल किया था और पूरे हिन्दुस्तान के बुद्धिजीवियों और तहज़ीबयाफ़ता तबकों को अनपढ़ और जाहिल बना दिया था।”<sup>91</sup>

1857 ई० के बाद अँग्रेज़ों ने मुसलमानों को अपना निशाना बनाया क्योंकि इस क्रान्ति में मुसलमानों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था, उनकी सम्पत्ति पर कब्ज़ा कर लिया गया। उनकी कलाएँ, उनकी शिल्पकारी नष्ट कर दी गई तथा विभिन्न सरकारी सेवाओं से उन्हें निकाला जाने लगा। मुस्लिम जनता पश्चिमी संस्कृति से

कम परिचित हुई, लेकिन हिन्दुओं ने समय के साथ अँग्रेजी शिक्षा से लाभ उठाया। इसलिए मुसलमान दूसरी जातियों की तुलना में पिछड़ गए। बंगाल के हिन्दुओं ने अँग्रेजी पद्धति की शिक्षा का सबसे अधिक लाभ उठाया और प्रगति की। दूसरी ओर इसी प्रदेश के मुसलमान अँग्रेजी शिक्षा से दूर रहने के कारण पिछड़ गए—

“बंगाल में मुसलमानों के युग में माफ़ी की ज़मीनों की आमदनी से मदरसे स्थापित हुए थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने उन ज़मीनों पर कब्ज़ा कर लिया था। मदरसे बन्द हो गए थे और मुसलमान पिछड़ गए। उनकी तुलना में हिन्दू अँग्रेजी पढ़ रहे थे। मुसलमान जागीरदार समाप्त हो चुका था। मुसलमान शिल्पकार नष्ट कर दिया गया था। उसका स्थान दुआमी प्रबंध, हिन्दू ज़मींदारों और हिन्दू मध्यम वर्ग ने ले लिया था।.....मुसलमानों में भय की साइक्लोजी उत्पन्न होनी प्रारम्भ हो गई थी। इस भय को अच्छे समय पर अँग्रेजों ने हवा दी। मुसलमान किसान और जुलाहा देश की धरती पर मेहनत करके जीवित रहता था। उसके संबंध में किसी ने न सोचा।”<sup>92</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने मुस्लिम जातियों के पिछड़ेपन के कारणों को बखूबी स्पष्ट किया है और आज भी स्थिति अधिक नहीं बदली है अन्य जातियों की अपेक्षा मुसलमान आज भी पिछड़ा हुआ है। कुर्रतुलऐन हैदर ने ‘आग का दरिया’ में प्राचीन युग के राजनीतिक दृष्टिकोण, राजनीतिक नियम तथा राजनीति की शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला है। इसके साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति तथा आधुनिक युग के राजनीतिक दृष्टिकोण का भी चित्रण किया है।

कमलेश्वर के समय तक आते-आते साम्प्रदायिक समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया था। विभाजन के बाद समस्याओं का अन्त नहीं हुआ बल्कि समस्याओं के नए-नए रूप सामने आने लगे, जिसका प्रभाव ‘कितने पाकिस्तान’ पर साफ़ दिखाई देता है। उपन्यासकार की खीज उपन्यास के शीर्षक ‘कितने पाकिस्तान’ में बखूबी अभिव्यक्त हुई है। यही स्थिति कुर्रतुलऐन हैदर के उपन्यास ‘आग का दरिया’ में दिखाई देती है। देश की ढाई हजार वर्षों की संस्कृति को विभाजन के समय नष्ट होने में देर नहीं लगी। राजनीतिक षड़यन्त्र ने किस प्रकार अबोध देशवासियों के दिलों पर घाव उत्पन्न कर दिया जो अब नासूर बन चुका है। लाइलाज मर्ज़!

## सन्दर्भ सूची :

1. संपा० गुप्ता, देवेन्द्र कुमार, वर्तमान साहित्य, पृष्ठ 97, सितम्बर 2007 ई०।
2. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 23
3. वही, पृष्ठ 349
4. वही, पृष्ठ 219
5. वही, पृष्ठ 37-39, 50-51
6. वही, पृष्ठ 25
7. वही, पृष्ठ 29
8. वही, पृष्ठ 79
9. वही, पृष्ठ 20
10. वही, पृष्ठ 27-28
11. वही, पृष्ठ 34
12. वही, पृष्ठ 246
13. वही, पृष्ठ 19
14. वही, पृष्ठ 85-86
15. वही, पृष्ठ 103
16. वही, पृष्ठ 110
17. वही, पृष्ठ 136
18. वही, पृष्ठ 91
19. वही, पृष्ठ 95



20. वही, पृष्ठ 57
21. वही, पृष्ठ 23
22. कुर्रतुलऐन हैदर,आग का दरिया, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 32—33
23. वही, पृष्ठ 34
24. वही, पृष्ठ 30
25. वही, पृष्ठ 48
26. वही, पृष्ठ 64—66
27. वही, पृष्ठ 67
28. वही, पृष्ठ 54
29. वही, पृष्ठ 103
30. वही, पृष्ठ 104—105
31. वही, पृष्ठ 148
32. वही, पृष्ठ 155
33. वही, पृष्ठ 157
34. वही, पृष्ठ 161
35. वही, पृष्ठ 164
36. वही, पृष्ठ 129
37. वही, पृष्ठ 187
38. वही, पृष्ठ 183—184
39. वही, पृष्ठ 179

40. वही, पृष्ठ 177–178
41. वही, पृष्ठ 190
42. वही, पृष्ठ 195–196
43. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2007 पृष्ठ 106
44. कुर्रतुलऐन हैदर, आग का दरिया, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 564
45. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2007 पृष्ठ 94
46. आग का दरिया, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 557–558
47. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2007 पृष्ठ 93
48. आग का दरिया, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 563
49. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2007, पृष्ठ 142
50. आग का दरिया, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 29–30
51. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 181–182
52. आग का दरिया, पृष्ठ 121
53. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 83
54. आग का दरिया, पृष्ठ 197–199
55. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 256–257
56. आग का दरिया, पृष्ठ 34

57. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 103
58. आग का दरिया, पृष्ठ 48
59. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 15-16
60. वही, पृष्ठ 45
61. वही, पृष्ठ 53
62. वही, पृष्ठ 189
63. वही, पृष्ठ 239-240
64. वही, पृष्ठ 199-200
65. वही, पृष्ठ 136
66. वही, पृष्ठ 323-324
67. आग का दरिया, पृष्ठ 35-36
68. वही, पृष्ठ 98
69. वही, पृष्ठ 124-125
70. वही, पृष्ठ 309-310
71. वही, पृष्ठ 314
72. वही, पृष्ठ 635
73. वही, पृष्ठ 314
74. वही, पृष्ठ 603
75. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 13
76. आग का दरिया, पृष्ठ 40
77. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 18

78. आग का दरिया, पृष्ठ 137
79. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 55
80. आग का दरिया, पृष्ठ 185
81. वही, पृष्ठ 186
82. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 73
83. वही, पृष्ठ 73
84. आग का दरिया, पृष्ठ 199—200
85. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 73—74
86. आग का दरिया, पृष्ठ 314
87. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 281
88. आग का दरिया, पृष्ठ 315
89. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 325
90. आग का दरिया, पृष्ठ 344
91. कितने पाकिस्तान, पृष्ठ 325
92. आग का दरिया, पृष्ठ 310

## चतुर्थ अध्याय

‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ के  
शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन

- (क) कथ्य की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन
- (ख) पात्र की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन
- (ग) भाषा की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन

‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ के शिल्प का तुलनात्मक अध्ययन करने से पहले आवश्यक है कि दोनों उपन्यासों के शिल्प का अलग-अलग विस्तार से विवेचन कर लिया जाए। तत्पश्चात् दोनों उपन्यासों के शिल्प का संयुक्त रूप से निष्कर्ष देना समीचीन होगा।

### ‘कितने पाकिस्तान’ का कथ्य :

कमलेश्वर के उपन्यासों के शिल्प की बात की जाए तो कहा जा सकता है कि कमलेश्वर ने ‘कितने पाकिस्तान’ में नए शिल्प का प्रयोग किया है। कुर्वरपाल सिंह इसके संबंध में अपने लेख ‘कितने पाकिस्तान : इतिहास के व्यापक संदर्भ’ में लिखते हैं—

“इसके शिल्प पर कुछ लोग नाक मुँह सिकोड़ते हैं, परन्तु शिल्प एवं भाषा, संवेदना और विचार तय करते हैं। इस उपन्यास में दोनों सघन एवं स्पष्ट रूप में मिलते हैं।”

हरीश त्रिवेदी अपने लेख ‘विलक्षण और अद्भुत रचना’ में ‘कितने पाकिस्तान’ के शिल्प के संबंध में इस प्रकार लिखते हैं—

“इसका शिल्प साहित्य की सुपरिभाषित विधाओं को तोड़कर एक सर्वथा नई शक्ल इख्तियार करता है, जिसमें सदियों के साथ-साथ वर्तमान सदी और आने वाली सदियों की चिंताएँ बड़े मार्मिक रूप से सामने आती हैं।”<sup>2</sup>

कमलेश्वर ने ‘कितने पाकिस्तान’ को अन्तर्वस्तु के आधार पर 42 दृश्यों में विभाजित किया है। इसमें कोई नायक-नायिका, वृत्तान्त, घटना या प्लॉट नहीं है। इस उपन्यास का शिल्प नया है। इसमें कालक्रम की कोई बंदिश नहीं है। विष्णु प्रभाकर ‘कितने पाकिस्तान’ की रचना प्रक्रिया के संबंध में लिखते हैं—

“कमलेश्वर ने उपन्यास के बने बनाए ढाँचे को तोड़ दिया है और लेखकीय अभिव्यक्ति के लिए सब कुछ सम्भव बनाने का दुर्लभ द्वार खोल कर एक नया रास्ता दिखाया है।”<sup>3</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ की रचना प्रक्रिया पर सुरेश कोहली से बातचीत के दौरान कमलेश्वर कहते हैं—

“पिछले 30 वर्षों में करीब-करीब मैं इस उपन्यास के साथ रहता आया हूँ। इस विषय ने हमेशा मुझे परेशान किया है। इस विषय के साथ मैं कैसे पेश आऊँ जो न सांस्कृतिक तौर पर उचित है, और न ही भौगोलिक स्तर पर। इस सोच ने मुझे समय-समय पर कुरेदा है। ....एक सोच, एक कल्पना, एक ख़लिश लगातार चलती रही है, सिर्फ़ यह एक भौगोलिक टुकड़े का बँटवारा भर नहीं है इसके साथ ही साथ बँटवारा सांस्कृतिक सभ्यता और अलग-अलग परम्पराओं को लेकर भी है। सत्ता के लोलुप लोगों द्वारा सत्ता में बने रहने के लिए यह बँटवारा हुआ, जबकि भौतिक, आध्यात्मिक व पारलौकिक आधार से उनका कोई वास्ता नहीं था। ये तमाम बातें लगातार मुझे परेशान करती रहीं। अंततः मैंने इस उपन्यास को लिखना प्रारम्भ किया। मेरे पास इन चीज़ों की एक धुँधली याद थी और इसकी शुरुआत कैसे की जाए वास्तव में मुझे पता नहीं था। मेरे लिए कितने पाकिस्तान या पाकिस्तान सिर्फ़ एक प्रतीक है। पिछली शताब्दियों में विभाजन होते रहे हैं। और आगे भी संभवतः होते रहेंगे, यदि हमने सभ्यता, संस्कृति और इतिहास को लेकर अपने विचार नहीं बदले।”<sup>4</sup>

कमलेश्वर के उपर्युक्त कथन से ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास की रचना प्रक्रिया एवं रचना का कारण स्पष्ट हो जाता है। कमलेश्वर ने उपन्यास में ‘पाकिस्तान’ शब्द एक प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है। लगभग 30 वर्षों के निरंतर गहन चिंतन एवं मनन के पश्चात् इस उपन्यास की रचना हुई।

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास में पाँच हज़ार वर्षों की समय सीमा को समेटने का प्रयास किया गया है। इसमें सभ्यता, संस्कृति, युद्ध, प्रेम तथा सभ्यताओं का उत्थान-पतन आदि को कलात्मक ढंग से चित्रित किया गया है। यह उपन्यास रचनाकार की आंतरिक घुटन और बाहर की ज़हरीली हवा से परेशान मानसिक कशमकश की प्रस्तुति है। यह कथा अतीत की न होकर वर्तमान की लगती है, जो हमें निरंतर भविष्य की ओर इंगित करता रहता है। कमलेश्वर इस उपन्यास में खोए हुए सत्य को तलाश करने का प्रयास करते दिखाई देते हैं।

कमलेश्वर ने बहुत ही भावुक ढंग से इस उपन्यास को उस रुमाल की खोज में बदल दिया, जिसे प्रारम्भ में विद्या ने कानपुर स्टेशन की सीढ़ियों पर गिराया था। उसी पहले प्रेम की कसक के साथ उपन्यास प्रेम विरोधी उन्माद जैसी शक्तियों के साथ गुँथ जाता है जिससे अदीब अपनी अदालत में बहस करता है।

‘कितने पाकिस्तान’ में युद्ध के विरुद्ध शान्ति और मृत्यु के विरुद्ध जीवन की खोज की गई है। उपन्यास के प्रारम्भ में अदीब प्रधानमंत्री के नाम एक पत्र लिखकर कारगिल युद्ध और उसके परिणामों के संबंध में आगाह करता हुआ दिखाई देता है। उसके पश्चात उपन्यास संसार की प्राचीनतम कथाओं में से एक गिलगमेश की कथा को लेकर आगे बढ़ता है जो अट्टाइसवीं शताब्दी ईसा पूर्व में दक्षिणी ईराक के राज्य युरुक का बादशाह था और अंतहीन जीवन पाने का इच्छुक था। कमलेश्वर लिखते हैं कि वह अपने मित्र के लिए मृत्यु से मुक्ति की औषधि की खोज में गया और समुंद्र की गहराइयों से अभी तक वापस नहीं लौटा है।

कमलेश्वर ने ‘कितने पाकिस्तान’ में फ़ैक्ट को फ़िक्शनलाइज़ करके बिल्कुल नया प्रयोग किया है। उनकी पहली समस्या यह है कि आज के विषाक्त वातावरण में पक्षी कहाँ जाएँ? कहाँ साँस लें? क्योंकि चारों ओर रक्तपात हो रहा है। जो हमारे वर्तमान और भविष्य दोनों को प्रभावित कर रहा है। उपन्यासकार ने अप्राकृतिक मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए जीवन की खोज जैसा आवश्यक कार्य करने का प्रयास किया है। कमलेश्वर उपन्यास में एक जगह लिखते हैं—

“ग़ैर ज़रूरी मौत से निजात पाने के लिए ज़िन्दगी की सार्थक तलाश में हिंती सभ्यता का गिलगमेश निकल चुका है।”<sup>5</sup>

जब इंसानियत को तबाही व बर्बादी की खाई में ढकेल दिया गया और आकाशीय देवताओं ने मनुष्यों को नष्ट करने के लिए षड़यन्त्र शुरू किए। तब ही से मनुष्यों में विरोध की भावना ने जन्म लिया। उसी समय गिलगमेश ने यह घोषणा की, कि मैं दर्द से लडूँगा, पीड़ा सहूँगा, कुछ भी हो लेकिन मृत्यु को पराजित करूँगा। गिलगमेश की घोषणा उपन्यासकार की घोषणा बन जाती है। एक सच्चा रचनाकार जो मौत के अन्धेरों में ज़िन्दगी की रौशनी तलाश करता है। गिलगमेश की आवाज़ को एक लेखक, एक अदीब ही जीवित रख सकता है।

कमलेश्वर का कहना है कि पाकिस्तान 15 अगस्त 1947 ई0 को अस्तित्व में नहीं आया था, बल्कि उसका इतिहास पुराना है। जब—जब धरती पर युद्ध होते हैं, तब—तब एक नफ़रत जन्म लेती है और पूरी दुनिया में पाकिस्तान बनते हैं, विभाजन होता है। अगर अप्राकृतिक मृत्यु का क्रम इसी प्रकार चलता रहा तो एक दिन संपूर्ण



संसार नष्ट हो जाएगा और ब्रह्माण्ड में कोई भी मनुष्य जीवित नहीं रहेगा। समय की अदालत में सभी अपराधी उपस्थित होते हैं जिन्होंने धरती पर घृणा और रक्त का व्यवसाय किया।

“कमलेश्वर मज़हब का नाम लेकर इंसान को गुलाम बनाने वाली ताकतों, नफ़रत सिखाने वाली ताकतों और कत्लों खून लाजमी कर देने वाली शक्तियों को लोगों के सामने लाए हैं कि लोग जागें और धरती टूटने से बच जाए। नहीं तो जाने कहाँ कहाँ और कितने पाकिस्तान बनते रहेंगे.....”<sup>6</sup>

कमलेश्वर ‘कितने पाकिस्तान’ में यह बताना चाहते हैं कि सच क्या है और झूठ क्या है? समय की अदालत में सभी ऐतिहासिक पुरुष उपस्थित हैं जो अतीत की उन घटनाओं पर बहस करके सत्य को तलाश कर रहे हैं। सत्य से अनभिज्ञ होने के कारण लोगों के दिलों में घृणा, नफ़रत, भय खौफ़ ने जन्म ले लिया है और लोग एक दूसरे के शत्रु बन बैठे हैं। कमलेश्वर यह बताना चाहते हैं कि संस्कृतियों को विभाजित करने वाले ही मानव जाति के दुश्मन हैं। संस्कृतियों के बँटवारे ने ही पूरे संसार में अप्राकृतिक मृत्यु का साइंसी फॉर्मूला प्रदान किया और जिसको लगातार प्रयोग में लाया जा रहा है।

सत्ता प्राप्त करने के लिए धर्म और संस्कृति का दुरुपयोग किया गया तथा मानव मूल्यों के ह्रास एवं अविश्वास के कारण अनेक त्रासदियों का जन्म हुआ। जिनमें से सबसे बड़ी त्रासदी देश का विभाजन और पाकिस्तान का निर्माण था। पूरे उपन्यास में जगह-जगह कमलेश्वर की यही चिन्ता अभिव्यक्त हुई है कि धर्म और संस्कृति के दुरुपयोग करने से विभाजन होते रहेंगे और पाकिस्तान बनते रहेंगे।

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास के माध्यम से कमलेश्वर ‘मज़हब’ और ‘कौम’ के अन्तर को स्पष्ट करते हैं। उपन्यास में सलमा, नईम से कहती है—

“कौम तो मज़हब के पहले भी मौजूद थीं। मज़हब के नाज़िल होनेसे पहले भी लोग किसी न किसी मज़हब, किसी और अकीदे, किसी उसूल के तहत समाज चला रहे थे।.....पाक नबी हज़रत मुहम्मद के आने और पाक कुरआन के नाज़िल होने के बावजूद अरब, अरब ही रहा, मिस्र, मिस्र ही रहा, लेकिन पाकिस्तान भारत या हिन्दुस्तान नहीं रहा।....मज़हब ख़त्म हो जाते हैं पर कौम ख़त्म नहीं होती।”<sup>7</sup>

कौम या जाति की कल्पना संस्कृति से जुड़ी है और संस्कृति में उत्पन्न हुई फाँक संस्कृति को खण्डित कर देती है—

“तहज़ीब अगर टूटती और फिरकावाराना टुकड़ों में बँटती गयी तो फिर वह एक दिन आएगा, तब हर अकेले आदमी की एक हिंसक तहज़ीब होगी।”<sup>8</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास उन क्षणों की कथा है, जिनके कारण सदियाँ सज़ा पा रही हैं। जब राजनीति निजी स्वार्थ का साधन बन जाती है तब मनुष्य के उन जीवन मूल्यों का क्षरण होने लगता है, जिनके आधार पर यह समूची मानवीय सभ्यता टिकी है। यह समस्या चाहे बोस्निया या ईरान की हो अथवा भारत की हिन्दू-मुस्लिम समस्या हो। इसमें क़त्ल केवल जीवन मूल्यों का हुआ है।

औपनिवेशिक काल में अँग्रेज़ों के द्वारा हिन्दुस्तान पर हुए अत्याचारों से सभी परिचित हैं उपन्यास में इस बात पर जोर दिया गया है कि किस प्रकार औपनिवेशिक काल में अँग्रेज़ों ने अपने स्वार्थ के लिए झूठा इतिहास गढ़ा और भारतीय संस्कृति में फाँक पैदा कर दी। उपन्यास में अदीब की अदालत में ए. फ़्यूहरर उपस्थित है। जो अपनी नीतियों के संबंध में बताते हुए कहता है कि—

“हमारी पॉलीसीज़ बदलीं और तब यह तय किया गया कि हिन्दू और मुसलमान, जो 1857 ई० में एक हुए थे, उन्हें अलग रखा जाए.....नहीं तो अँग्रेज़ी हुकूमत चल नहीं पाएगी। इसीलिए मैंने बाबरी मस्जिद पर लगा इब्राहीम लोदी का जो शिलालेख पढ़ा था, उसे जानबूझ कर मिटाया गया...अँग्रेज़ एच. आर. नेविल ने फ़ैज़ाबाद गज़ेटियर तैयार करते समय उसमें यह दर्ज किया कि बाबर अयोध्या में एक हफ़्ते ठहरा और उसी ने प्राचीन राम मन्दिर मिसमार किया।”<sup>9</sup>

हमें औपनिवेशिक काल में लिखे गए इतिहास को समझने के साथ साथ यह भी याद रखना आवश्यक है कि इतिहास की वस्तुनिष्ठता की बहस बहुत पुरानी है। मध्यकाल में दाराशिकोह की मौत को सही ठहराने के लिए औरंगज़ेब द्वारा प्रचारित किये गए फ़तवों के माध्यम से यह उपन्यास सत्ता द्वारा गढ़े जा रहे झूठ और सामान्य जनता में एक समझ विकसित करने का प्रयास है। यह उपन्यास इतिहास की समकालीन प्रासंगिकता एवं मानव मूल्यों की वकालत करता है।

यदि इस दृष्टि से उपन्यास को देखा जाए तो इतिहास का आख्यान प्रासंगिक होने के साथ-साथ तर्कसंगत भी लगता है कमलेश्वर ने इस उपन्यास में इतिहास की तहों में जाकर बाबर, मीर बाकी, ए. फ़्यूहरर तथा अँग्रेज़ इतिहासकार एच. आर. नेविल आदि को भी कटघरे में लाकर खड़ा कर दिया है।

उपन्यास में कमलेश्वर ने दारा को भारतीय संस्कृति का सही प्रतिनिधि मानते हुए उसके पराभव की कथा को वर्णित किया है कि किस प्रकार सत्ता पाने के लिए औरंगज़ेब ने इस्लाम का सहारा लेकर दारा की हत्या करवा दी और हिन्दुस्तान की उस सामासिक संस्कृति को नष्ट कर दिया, जिसकी नींव अकबर ने डाली थी। उपन्यासकार ने दारा और उसके बेटे के कत्ल की घटना को उपन्यास में पूरी संवेदना के साथ चित्रित किया—

“सिपिहर की बाँह से टपके हुए खून की अंदर आती काली लकीर देखकर दारा दहल गया था...दीवार के उस पार से सिपिहर शिकोह की भयावनी चीखें आ रही थीं.... मेरे बेटे पर यह जुल्म मत करो..... जाकर उस ज़ालिम आलमगीर को बताओ कि वह नमाज़ी नहीं ढोंगी है।”<sup>10</sup>

कमलेश्वर ने इसके साथ-साथ सभी समकालीन मुद्दों को उठाया। उन्होंने उपन्यास में स्त्री की स्थिति का मुद्दा भी उठाया है। उपन्यासकार ने सलमा और नईम की बहस को बड़ी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। नईम, सलमा का एक हिन्दू अदीब के साथ रहना पसन्द नहीं करता। वह कहता है—

“इस्लाम ने औरत के लिए एक दर्जा बनाया है वह किसी और मज़हब के पास नहीं।...इस्लाम मानने वालों के पास कुरआन है, हदीस है।”

इसके जवाब में सलमा व्यंग्यात्मक ढंग से कहती है—

“लेकिन वो तो अरबों के पास है...उनकी ओरिजनल कॉपियाँ, जो उन्होंने अब तक किसी को नहीं दीं।”<sup>11</sup>

देश के विभाजन का प्रभाव स्त्रियों पर किस प्रकार पड़ा, उपन्यास में सलमा इस ओर संकेत करती हुई कहती है—

“हाँ अदीब...मैं तुम्हारे साथ सलमा और सोहराब के साथ मम्मा बन कर जी सकूँगी...लेकिन मेरा सच हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की तरह विभाजित ही रहेगा! शायद यही हिन्दुस्तानी मुसलमान औरत का नसीब बन गया है.....इस तक्सीम ने उसे आधे से भी आधा बनने पर मजबूर कर दिया है।”<sup>12</sup>

कमलेश्वर ने उपन्यास में सलमा के माध्यम से एक स्त्री की मार्मिक स्थिति का जीवंत चित्रण किया है। किस प्रकार एक स्त्री अलग-अलग रिश्तों में बँटकर जीवन व्यतीत करती है।

यह उपन्यास अनेक जीवन तत्वों के अन्वेषण की कथाओं के माध्यम से उन मूल्यों को स्थापित करता है जिनकी समाज को आवश्यकता होती है। रुना की कथा के माध्यम से प्रेम की भावना को स्त्री में तलाशने का प्रयत्न किया गया है। दूसरी गिलगमेश की और एंकिदू की कहानी में ‘मित्रता का तत्व’ मनुष्य ने ही खोजा था। जो देवताओं और सत्ताधारियों के लिए विकराल साबित हो सकती है। पूरे उपन्यास में कमलेश्वर मनुष्य के जीवन मूल्यों को बचाए रखने का प्रयत्न करते हैं। अदीब का सलमा के पास बार-बार जाना प्रेम और मित्रता के तत्वों को सहेज कर रखने का ही प्रयास है।

उपन्यास में विद्या का गिरता रुमाल और गिलगमेश की मृत्यु से मुक्ति की औषधि के लिए अंतहीन यात्रा कहानी के दोनों किनारों अतीत एवं वर्तमान को निरंतर पकड़े रहने का प्रयास है। यही तत्व जैनब और बूटा सिंह तथा दाराशिकोह की कहानी में भी मिलते हैं। विद्या शादी के बाद पाकिस्तान में परी के रूप में सामने आती है। सलमा अदीब से अपना ख़्वाब बाँटती है। अश्रुवैध अभी तक मनुष्यों के दुखों का कारण ढूँढने का प्रयास कर रहा है। अंधा कबीर बोधिवृक्ष का पौधा लेकर उसे रोपने के लिए पोखरन और चगाई की यात्रा पर निकल जाता है। इस प्रकार पूरा उपन्यास एक सकारात्मक सोच को आगे बढ़ाता है।

उपन्यास में कोई एक कथा नहीं है और न ही इस उपन्यास में देशकाल और समय की कोई सीमा है। इसमें हड़प्पा, मोहन जोदड़ो, दज़ला फ़रात, मेसोपोटामिया, बेबीलोन, डैन्यूब, हित्ती सभ्यता का गिलगमेश, प्राचीन सुमेरी तथा चीनी सभ्यताओं से लेकर मुग़ल सल्तनत, भारत विभाजन, बाबरी मस्जिद विध्वंस,

पोखरन और चगाई परमाणु विस्फोटों तक की देशकाल अवधि को उपन्यासकार ने समेटने का प्रयास किया है।

कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में केवल हिन्दुस्तानी इतिहास एवं संस्कृति के सन्दर्भ से ही नहीं बल्कि पूरे मानव समाज के इतिहास के सन्दर्भ से बात की है। एक सच्चा रचनाकार किसी भौगोलिक सरहद में सीमित नहीं होता है। इसीलिए उपन्यास में उठाई गयी समस्या, दुख और संत्रास केवल हिन्दुस्तान का नहीं रह जाता बल्कि पूरे विश्व का बन जाता है। पूरे विश्व को दुखों और मृत्यु से मुक्त करने की इच्छा, भाईचारे, मैत्री और सद्भावना का प्रसार करने की उत्कट लालसा पूरे उपन्यास की कथा में व्याप्त है।

### 'आग का दरिया' उपन्यास का कथ्य :

कुर्रतुलऐन हैदर ने 'आग का दरिया' में 'शऊर की रौ' ( stream of consciousness ) की तकनीक का प्रयोग किया है। जबकि उनका यह कहना है कि उपन्यास की तकनीक की योजना वह नहीं बनाती हैं। इस संबंध में कुर्रतुलऐन हैदर एक इंटरव्यू में कहती हैं—

"जब हम लिखने बैठते हैं तो टेकनीक खुद ब खुद सामने आ जाती है। इसके लिए आवश्यक नहीं कि लिखने वाला उस पर पहले से सोचे। एक संगीतकार के साथ तो यह मुश्किल है कि एक राग के लिए वह टेकनीक में परिवर्तन करे लेकिन बुनियादी नियमों से अलंग करना मुमकिन नहीं, लेकिन मेरे लिए यह मुश्किल नहीं है। कोई भी संक्षिप्त दृश्य या कोई इमेज जो मेरी यादों में मौजूद हो मुझे प्रेरित करता है और मैं लिखना शुरू कर देती हूँ। टेकनीक खुद ब खुद पैदा हो जाती है।"<sup>13</sup>

इससे यह स्पष्ट होता है कि कुर्रतुलऐन हैदर ने 'आग का दरिया' लिखने से पहले उसकी तकनीक के बारे में पहले से नहीं सोचा था। उपन्यास की रचना के साथ उसमें 'शऊर की रौ' की टेकनीक उभर कर सामने आई।

शिल्प की दृष्टि से 'आग का दरिया' का बहुत महत्व है। इसकी टेकनीक के संबंध में डॉ. बेग एहसास अपने एक लेख 'आग का दरिया की तकनीक का तज्जियाती मुताला' में लिखते हैं—

"कुरुतुलऐन हैदर ने 'वक्त्त' के साथ जो प्रयोग किया है वह उर्दू उपन्यास लेखन में पहला सफल प्रयास है।"<sup>14</sup>

अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य में इससे पूर्व 'समय' को नायक बनाकर बहुत से उपन्यास लिखे जा चुके हैं। 'शऊर की रौ' की तकनीक का प्रयोग भी बहुत किया जा चुका है जिनमें हेनरी जेम्स, जेम्स ज्वाइस, डोर्थी रिचर्डसन, वर्जीनिया वुल्फ़ तथा विलियम विलक्स आदि मुख्य हैं। उनके बाद माइकल बुटर, गर्टरियूड, सेरिन, रौबे ग्रिल्ट आदि ने नए प्रयोग किये तथा उपन्यास के पारम्परिक ढाँचे को तोड़ा। डॉ. बेग एहसास ने अपने एक लेख में लिखा है—

"रॉबर्ट हेम्फरी ने शऊर की रौ को प्रस्तुत करने के लिए चार महत्वपूर्ण तरीके बताए हैं— प्रत्यक्ष आन्तरिक कथन (**direct interior monologue**), अप्रत्यक्ष आन्तरिक कथन (**indirect interior monologue**), समग्र ज्ञान के रूप में लेखक का वर्णन (**omniscient author's description**), तथा स्वयं वार्तालाप (**soliloquy**)।"<sup>15</sup>

'आग का दरिया' उपन्यास में कुरुतुलऐन हैदर ने इन तरीकों का कलात्मक ढंग से प्रयोग किया है। विशेष रूप से समग्र ज्ञान के रूप में लेखक का वर्णन वाली तकनीक (**omniscient author's description**) का प्रयोग किया है। इसमें लेखक किसी भी तरीके से वर्णन कर सकता है। **omniscient** का अर्थ है 'सब कुछ जानना'। इस तकनीक में लेखक अपने वेग में पात्रों की 'शऊर की रौ' का वर्णन करता है तथा अप्रत्यक्ष आन्तरिक कथन में वह केवल पात्रों की 'शऊर की रौ' को प्रस्तुत करता है। इस तकनीक के लिए **third person** का प्रयोग होता है। जिसको हम चम्पा की दृष्टि से कॉलेज की गहमा गहमी को इस उदाहरण में देख सकते हैं—

"शाम को वह कुछ कागज़ात लेने के लिए सरल के कॉलेज गई। रात की ट्रेन से बहुत से साथी अपने देशों को लौट रहे थे। सीनोर

कार्लोस ब्राज़ील जा रहा था। उससे उसकी तकरार रोमन कैथोलिक दर्शन पर होती थी। लड़कियाँ और लड़के बारिश से बचने के लिए फाटक के अन्दर खड़े थे। फाटक का भारी पन्द्रहवीं सदी का चौबी दरवाज़ा अब आखिरी बार खुलकर बन्द हो गया। उसके बाद जब वह यहाँ आएँगे तो सब कुछ बदल चुका होगा। बारिश और ज़ोर से होने लगी। लड़कों ने बरसातियों के कॉलर कान तक उठा लिए थे। लड़कियाँ छतरियाँ खोल रही थीं। सब ख़ामोश थे।<sup>16</sup>

स्वयं वार्तालाप (soliloquy) का अर्थ है— अपने आप से बातें करना। इसमें अपने विचारों या अनुभवों का ऊँची आवाज़ के साथ प्रकटन होता है। खुद कलामी (स्वयं वार्तालाप) एक प्रकार से पात्र के मन की live commentary है। 'आग का दरिया' का एक उदाहरण इस प्रकार है—

“आज का दिन एक और दिन है। पुल पर से इंसानों के समूह यूनिवर्सिटी लाकोर्ट्स सिटी को जा रहे हैं। मैं कौन होती हूँ कि इस में शामिल रहने से मना करूँ। हाँ यह बिल्कुल सही है मुझे डर लगता है..... रौशन ने सोचा। देवदार का जंगल शफक की सुर्ख रौशनी में छुप गया। इस जंगल से मैं भी गुज़री हूँ। हम सब गुज़रे हैं। मैंने इसमें हेरर की छोटी-छोटी कली इकट्ठी की थीं। (तलत ने कहा)।”<sup>17</sup>

‘आग का दरिया’ कुर्रतुलऐन हैदर की कालजयी रचना है। यह उपन्यास उनके चिन्तन—मनन और अध्ययन की गहराई को अभिव्यक्त करता है। इसका कथ्य हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास से लेकर आधुनिक युग और विभाजन के बाद के कई वर्षों तक फैला हुआ है। इसमें हिन्दुस्तान की उस आत्मा को प्रस्तुत किया गया है जिसकी परवरिश सदियों में हुई।

‘आग का दरिया’ में हिन्दुस्तान के विभाजन का दुख है। जो विभाजन 1947 ई० में हुआ, उस विभाजन में जो संस्कृति विभाजित हुई। वह किस प्रकार क्षण—क्षण निर्मित हुई थी, उस पूरी प्रक्रिया को दिखाने का प्रयत्न किया गया है। हिन्दुस्तान में विभिन्न युगों में विभिन्न जातियाँ यहाँ आयीं जैसे पारसी, मुग़ल, तथा अँग्रेज़, उनकी संस्कृतियाँ यहाँ किस प्रकार घुल मिल गईं और एक नई संस्कृति अस्तित्व में आई जिससे हिन्दुस्तान एक जीवंत देश बनकर उभरा।

उपन्यास को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है जैसे कुर्रतुलऐन हैदर हिन्दुस्तान की संस्कृति की आत्मा को समझना और पहचानना चाहती हैं। वह यह जानना चाहती हैं कि वर्तमान युग के मनुष्यों के जीवन और उस जीवन में छुपे हुए दुख दर्द के कारण क्या हैं ? और उसका प्रारम्भ कहाँ से हुआ। इसकी तलाश के लिए उन्होंने हिन्दुस्तान के सांस्कृतिक इतिहास को अपना विषय बनाया और एक निश्चित योजना और घटनाक्रम के साथ मनुष्य, समाज, युग, देश, जाति, प्रेम, जीवन, कला और दर्शन, प्रकृति तथा आत्मा के संबंध में अपने अधिकतर विचारों और अनुभवों को अभिव्यक्त कर दिया है।

कुर्रतुलऐन हैदर ने उपन्यास में यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि मुसलमानों के आगमन के पश्चात् यहाँ की संस्कृति ने किस प्रकार एक नया रूप ग्रहण किया। उसी प्रकार अँग्रेजों के देश में आने के बाद पाश्चात्य सभ्यता ने जो प्रभाव डाला उसका सुंदर विवेचन किया है। उपन्यास के चौथे युग में उच्च मध्य वर्ग को दिखाया गया है जो लंदन, कैम्ब्रिज और पेरिस में दिखाई देता है। उपन्यास का पाँचवा युग विभाजन के बाद के हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी समाज से संबंधित है। इन पाँचों युगों का चित्रण उपन्यासकार ने उपन्यास की पृष्ठभूमि बनाने के लिए किया है। उपन्यास के प्रारम्भ में ईलियट की कविता का कुछ अंश दिया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उपन्यास का विषय समय की वह धारा है जो मनुष्य के जीवन को चारों ओर से घेरे हुए है।

काल का चक्र बहुत क्रूर होता है। लेकिन महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि समय के दुष्चक्र से पिसता हुआ मनुष्य फिर भी जीवित रहता है। यह उपन्यास दुख और दर्द को अपने अस्तित्व का एक हिस्सा बना कर आशाओं और आकांक्षाओं के एहसास के साथ मनुष्य के व्यक्तित्व की व्याख्या करता है। हर युग में जीवन की कठिनाइयों, असफलताओं को झेलते हुए गौतम, हरिशंकर, कमाल और चम्पा जन्म लेते हैं। वे समय के आगे नहीं झुके। समय के साथ-साथ जीवन भी निरंतर वजूद में आता रहा है। अतः 'समय' या इतिहास मनुष्य के अस्तित्व से भी कभी खाली नहीं रहा है। मनुष्य का अस्तित्व भी 'समय' की गति के साथ आगे बढ़ता रहता है। 'आग का दरिया' के प्रारम्भ में कुर्रतुलऐन हैदर ने टी० एस० ईलियट की कविता



का कुछ अंश दिया है जिसकी अंतिम पंक्तियों से यह पता चलता है कि मनुष्य का अस्तित्व समय के साथ आगे बढ़ता रहता है—

“समय जो बर्बाद करने वाला है, कायम भी रखता है।  
और मुसाफिरोँ और मल्लाहों!  
तुम, जिनके जिस्म समुंद्र के फ़ैसले सहेंगे  
या जो कुछ भी तुम पर बीतेगी यह तुम्हारी मन्ज़िल है।  
कृष्ण ने अर्जुन से मैदाने जंग में कहा  
अलविदा नहीं, बल्कि आगे बढ़ो  
मुसाफिरोँ!”<sup>18</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर के ‘आग का दरिया’ के कथ्य पर ईलियट की इस कविता का प्रभाव दिखाई देता है जो निरंतरता का संदेश देता है।

उपन्यास के प्रारम्भ में ही हमारा परिचय गौतम नीलम्बर से होता है, जो सरजू नदी की लहरों से मुकाबला करता हुआ निरंतर बढ़ रहा है। समय के दरिया में मनुष्य के अस्तित्व के डूबने और उभरने की कथा यहीं से प्रारम्भ हो जाती है। इस दृश्य को कुर्रतुलऐन हैदर ‘आग का दरिया’ में इस प्रकार चित्रित करती हैं—

“गौतम नीलम्बर को नदी तैर कर पार करना थी। उसने तेजी से पानी में छलाँग लगा दी और दूसरे किनारे की तरफ़ तैरने में व्यस्त हो गया।”<sup>19</sup>

प्राचीन युग का गौतम नीलम्बर हिन्दुस्तान के सांस्कृतिक इतिहास के एक युग का प्रतिनिधि है। वह एक ब्राह्मण विद्यार्थी है। वह ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करने के बावजूद दिल का चैन नहीं पा सका। उसके दिल की बेचैनी उसे रोज़ एक नया प्रयोग करने पर मजबूर करती है। एक ओर वह पानी में एक पैर पर खड़ा होकर घण्टों तपस्या करता है, वहीं दूसरी ओर चम्पक से प्रेम भी करता है। एक रात वह उसके साथ नाचता है, शराब पीता है। उस रात के बाद चम्पक उसे नहीं मिलती है। कुर्रतुलऐन हैदर गौतम के संबंध में लिखती हैं—

“उस रात में वह बड़ा हो गया था। उसने दिल की कायनात की यात्रा की थी। उसने माया का तजुर्बा किया था, और वह उससे निश्चिन्त था।”<sup>20</sup>

चम्पक की याद गौतम के दिल में एक चिराग की तरह टिमटिमाती रही। उसके बाद चन्द्रगुप्त की फौज श्रावस्ती पर आक्रमण करती है। गौतम नीलम्बर जो एक चित्रकार और नर्तक था, युद्ध में शामिल होता है। उस युद्ध में उसकी उँगलियाँ कट जाती हैं। वह अपने एहसासों और विचारों को प्रकट करने से मजबूर हो जाता है। वह अपने दर्द और दुख को छुपाने के लिए अभिनय में पनाह लेता है। एक दिन उसे नाटक के मंडप में तमाशाइयों के साथ चम्पक बैठी दिखाई देती है। उसकी माँग में सिन्दूर और गोद में बच्चा था। नाटक खत्म होने के बाद वह अनजान मन्जिल की ओर चल दिया। नदी को तैर कर पार करते हुए वह लहरों के निशाने में आ जाता है। वह किनारे के एक पत्थर को अपने हाथों से पकड़ता है लेकिन बहुत देर तक वह उसे पकड़ नहीं सका, क्योंकि उसके हाथों की उँगलियाँ कटी हुई थीं। वह नदी की लहरों में गुम हो जाता है—

“वक्त का रेला पानी को बहाए लिए जाता था। चारों ओर फैलाव था लेकिन उसके हाथों की उँगलियाँ कटी हुई थीं और वह पल भर से ज्यादा पत्थर को अपनी गिरफ्त में न रख सका। सरजू की मौजें गौतम नीलम्बर के ऊपर से गुज़रती चली गई।”<sup>21</sup>

गौतम नीलम्बर की कटी हुई उँगलियाँ इस सच्चाई की ओर इशारा करती हैं कि एक कलाकार, चित्रकार जो शान्ति प्रिय था और दिल का चैन चाहता था। वह ‘समय’ के अन्याय को रोक नहीं पाता है। उपन्यास के अंत में यह पता चलता है कि गौतम नीलम्बर की बनी हुई मूर्ति दिल्ली म्यूज़ियम में मौजूद है। यह बात इस सच्चाई को प्रस्तुत करती है कि कला जीवित रहती है जबकि कलाकार खत्म हो जाता है—

“यह श्रावस्ती की खुदाई से इसी साल निकली है। सुर्ख मिट्टी की इस मूर्ति की सन् चौथी शताब्दी ईसा पूर्व है।”<sup>22</sup>

उपन्यास का दूसरा युग हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति के मिलन का युग है। इस युग का प्रतिनिधि अबुलमंसूर कमालउद्दीन है। वह अपनी संस्कृति के साथ ईराक से हिन्दुस्तान आता है। वह धीरे-धीरे हिन्दुस्तानी संस्कृति और यहाँ के वातावरण से परिचित होता है, और फिर हिन्दुस्तान को ही अपना वतन समझने लगता है और ऐसे ही लोगों के कारण हिन्दुस्तान में सामासिक संस्कृति अस्तित्व में आई।

वह जौनपुर के शाह हुसैन शर्की के पुस्तकालय का निदेशक था। वह युद्धों में भाग लेता है। युद्धों में इंसानों के बहते खून को देखकर वह चिन्तित और भयभीत हो जाता है। उसके दिल में यह सवाल आता है कि कब तक युद्धों में इंसानों का खून बहता रहेगा। वह बेचैन होकर अनजान यात्रा पर निकल जाता है और भटकता हुआ काशी पहुँचता है। यह सूफी और भक्ति आंदोलन का युग था। वह कबीर की शिक्षा से बहुत प्रभावित हुआ। उसने विभिन्न धर्मों और दर्शनों का अध्ययन किया और अंत में इस परिणाम पर पहुँचा कि प्रेम धर्म का मूल तत्व है। इसके पश्चात् वह एक शूद्र लड़की से शादी करके अपना सारा जीवन गीत और कहानियाँ लिखने में गुज़ारता है।

कमालउद्दीन हिन्दुस्तान को अपना वतन मानकर यहाँ की संस्कृति और सभ्यता में पूरी तरह से रंग जाता है। हिन्दुस्तानी भाषा में शायरी करता है और कहानियाँ लिखता है लेकिन शेरखान के सिपाही उस पर ग़द्दारी का इल्ज़ाम लगाकर उसे मार डालते हैं क्योंकि उसके लड़कों ने दिल्ली जाकर मुग़ल दरबार में नौकरी कर ली थी, जबकि वास्तविकता यह है कि—

“उसे अफ़ग़ानों और मुग़लों के युग से कोई दिलचस्पी नहीं। वह सिर्फ़ यह चाहता है कि यहाँ उसे अमन से रहने दिया जाए। यह उसका वतन है। यहाँ उसके बच्चे पैदा हुए हैं। यहाँ उसकी बीबी की कब्र है। उसने इस भाषा में गीत लिखे हैं, वह यहीं रहेगा। उसे ग़द्दार कहने का हक़ किसी को नहीं है।”<sup>23</sup>

एक शान्ति प्रिय व्यक्ति को ग़द्दार बताकर मार डाला जाता है। यहाँ भी युद्ध का कारण सत्ता का लालच है। युद्ध जिसमें एक दूसरे को ग़द्दार बताकर मार डाला जाता है उनमें केवल राजनीतिक शक्तियों को लाभ होता है। इसमें धर्म की कोई भूमिका नहीं होती है। इस प्रकार एक शान्ति प्रेमी गीतकार, कहानीकार भी गौतम नीलम्बर की तरह समय के अन्याय का शिकार हो जाता है।

उपन्यास के तीसरे युग में हिन्दुस्तान पर अँग्रेज़ों का शासन स्थापित हो चुका है। सरल हार्ड ऐशले से हमारा परिचय होता है, वह हिन्दुस्तान की दौलत को लूट रहा है और हिन्दुस्तानी जनता का शोषण कर रहा है। इस युग में लखनऊ की संस्कृति भी अपने गुणों एवं अवगुणों के साथ कलात्मक ढंग से प्रस्तुत हुई है।

हिन्दुस्तान में एक नया ऐंग्लो इण्डियन वर्ग उभरकर सामने आता है। मारिया टेरेज़ा से सरल हार्ड ऐशले हिन्दुस्तान आकर मिलता है और फिर उसे हमेशा के लिए छोड़कर चला जाता है। यह दुर्भाग्य पूरे ऐंग्लो इण्डियन वर्ग का दुर्भाग्य है।

उपन्यास में चौथा युग हिन्दुस्तान के विभाजन से पूर्व और बाद का है। 1947 ई० के विभाजन का प्रभाव इस युग के सभी लोगों पर पड़ता है। इस युग के नौजवान वर्ग का प्रतिनिधि पात्र आमिर रज़ा और कौम परस्त हिन्दुस्तानी मुसलमानों का प्रतिनिधि पात्र कमाल रज़ा आर्थिक समस्याओं से मुक्ति की आशा में हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान जाते हैं। वहाँ कमाल की स्वामिभक्ति पर शक किया जाता है और हिन्दुस्तान आने पर उसको पाकिस्तानी जासूस समझा जाता है। वह वफ़ादारियों के दोराहे पर खड़ा होता है, समझ नहीं पाता कि किधर जाए। इस कशमकश से वह बेचैन हो जाता है। मुसलमानों की आर्थिक विवशता और बेचारगी का सवाल भी उपन्यास में गूँजता है। कुर्रतुलऐन हैदर ने यहाँ ऐसे मुसलमान का चित्रण किया है जो हिन्दुस्तान की समस्याओं से ऊबकर पाकिस्तान जाता है लेकिन पाकिस्तान जाकर उसका भ्रम टूट जाता है और जिस सम्मान को प्राप्त करने की लालसा उसे वहाँ ले जाती है वह तो उसे प्राप्त होती नहीं, उसके विपरीत उसे वहाँ मुहाजिर कहा जाता है। इस पीड़ा से त्रस्त होकर वह पुनः अपने देश हिन्दुस्तान वापस लौटता है लेकिन अब उस पर पाकिस्तानी का ठप्पा लग चुका है। उस पर विश्वास नहीं किया जाता और उसे पाकिस्तानी जासूस समझ लिया जाता है। कुर्रतुलऐन हैदर ने मुसलमानों की इस पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया है।

‘आग का दरिया’ की संपूर्ण कथा सरजू नदी के इर्द गिर्द घूमती है। उपन्यास में सरजू नदी का विशेष महत्व है। श्रावस्ती जाते समय नदी को पार करते हुए, गौतम नीलम्बर की मुलाकात हरिशंकर से होती है। उपन्यास के प्रारम्भ और अंत में दोनों साथी सरजू नदी के पास बात करने में व्यस्त हैं। जिसका चित्रण इस प्रकार किया गया है—

“नदी के बीच में पहुँचा तो बारिश की दूसरी बूँद गौतम के सिर पर आन गिरी। बरसात की वजह से सरजू का पाट बेहद चौड़ा हो गया था.... किनारे पर पहुँचकर गौतम ने अपने कपड़े निचोड़े और पत्थरों

से बने हुए मन्दिर में गया.....वह मन्दिर की दीवार से पीठ टिका कर बैठ गया सामने दरिया पर बहुत अँधेरा हो चुका था...मन्दिर की दीवार पर से किसी ने झाँका। अँधेरे में गौतम को उसकी सूरत दिखाई नहीं दी।

‘तुम कौन हो भाई’ नीचे से किसी ने पूछा

‘मैं हूँ’ गौतम ने लेटे-लेटे जवाब दिया

‘तुम्हारा क्या नाम है?’

‘मैं का कोई नाम नहीं होता।’

‘भिन्नता के लिए नाम जरूरी है।’

‘श्रावस्ती के जिन पण्डितों के घराने में पैदा हुआ, वहाँ दूसरे पण्डितों से ‘पूछकर मेरा नाम गौतम रखा गया था।’

‘भाई गौतम नीचे आ जाओ।’

‘तुम खुद ऊपर क्यों नहीं आते।’

‘ऊँचाई और नीचाई केवल दिमागों के फर्क से होती है।’

‘हूँ’

‘तुम को क्या मालूम जिसे तुम ऊँचाई समझ रहे हो वह पाताल से भी गहरी है।’

‘नहीं, मगर तुम मन्दिर से नीचे नहीं उतरोगे।’<sup>24</sup>

इस दार्शनिक बातचीत के माध्यम से कुर्तुलऐन हैदर अहं भावना पर प्रहार करना चाहती हैं। जिससे वशीभूत होकर व्यक्ति खुद को महान और दूसरों को तुच्छ समझता है। ढाई हजार वर्षों की विस्तृत यात्रा के बाद उपन्यास के अंत में आधुनिक हिन्दुस्तान में गौतम और हरिशंकर इसी नदी और मन्दिर के पास बातचीत करते हुए दिखाई देते हैं—

‘बारिश खत्म हो चुकी थी और हवा बन्द थी। दरिया के किनारे पहुँचकर वह एक खण्डहर मन्दिर की सीढ़ियों पर जा बैठा.....वह दोनों खामोश हो गए। सीढ़ियाँ उतरकर वह नदी के किनारे आए और पानी को देखते रहे। शायद वह दोनों इकट्ठे सोच रहे थे कि अबुलमंसूर कमालउद्दीन किस तरह हिन्दुस्तान आया था और किस तरह हिन्दुस्तान से निकल गया। नदी गतिशील रही। दोनों झुक कर उसमें अपना अक्स देखने लगे.....।’<sup>25</sup>

इस प्रकार कुर्तुलऐन हैदर ने ‘आग का दरिया’ में जगह-जगह सरजू नदी को दिखाया है। यह उपन्यास ‘समय’ की निरंतरता या गतिशीलता को आधार बनाकर लिखा गया है। टी. एस. ईलियट की कविता का यह अंश विभिन्न पक्षों को सामने लाता है—

“दरिया हमारे अन्दर है, समुंद्र ने हमें घेर रखा है,  
 खात्मा कहाँ है.....बे आवाज़ चीखों का,  
 पतझड़ में खामोशी से मुरझाते फूलों का,  
 .....खात्मा कहीं नहीं है। केवल वृद्धि है।  
 अधिक दिनों और घंटों की घिसटती हुई निरंतरता।  
 लाशों और घासफूस को अपनी मौजों में बहाते हुए दरिया की भाँति  
 समय जो नष्ट करने वाला है, स्थिर भी रहता है।”<sup>26</sup>

इस कविता में ‘दरिया’ समय की निरंतरता का प्रतीक है। वह समय जो हमारे भूतकाल का साक्षी है तथा भविष्य का साथी। समय, जो उपस्थित क्षण का प्रमाण है तथा जो संपूर्ण उन्नतिकार्य को अपने अंदर समेटे हुए है। जिसके प्रवाह को रोकना संभव नहीं है। कुर्रतुलऐन हैदर ने ‘आग का दरिया’ में समय की इसी कल्पना को प्रस्तुत किया है।

‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ के कथ्य का तुलनात्मक अध्ययन:

कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर दोनों उपन्यासकारों के कथ्य का अलग-अलग विवेचन करने के पश्चात् दोनों का तुलनात्मक दृष्टि से विवेचन अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है।

कमलेश्वर के उपन्यास ‘कितने पाकिस्तान’ का प्रारम्भ इस शेर से होता है—

“इन बंद कमरों में मेरी साँस घुटी जाती है  
 खिड़कियाँ खोलता हूँ तो ज़हरीली हवा आती है।”<sup>27</sup>

इस शेर से उपन्यास के कथ्य का अंदाज़ा आसानी से लगाया जा सकता है। यदि निरंतर विभाजन होता रहा, पाकिस्तान बनते रहे तो युद्ध होना लाज़मी है और युद्ध हुए तो मौत लाज़मी है। उपन्यासकार समाज में फैली हुई नफ़रत की ज़हरीली हवा से दुखी और चिन्तित है। हर ओर घृणा, लड़ाई, झगड़े और मौत का तांडव हो रहा है जिससे हवा भी प्रदूषित हो गई है। कमलेश्वर ने अपने अंदर की घुटन को इस उपन्यास के माध्यम से बाहर निकाला है तथा समाज में फैले हुए दुख-दर्द, घुटन और संत्रास को अपना विषय बनाया है। कमलेश्वर का यह विचार है कि

साम्प्रदायिक वैमनस्य को हम अनदेखा नहीं कर सकते बल्कि उसकी जड़ों तक पहुँचकर उसके कारण को नष्ट करने की ज़रूरत है।

कुर्रतुलऐन हैदर ने 'आग का दरिया' के प्रारम्भ में टी. एस. ईलियट की कविता 'Four Quartet' का कुछ अंश दिया है, जिसका प्रारम्भ उपन्यास में इन पंक्तियों से होता है—

“मैं देवताओं के मुताल्लिक ज़्यादा नहीं जानता,  
लेकिन मैं समझता हूँ कि दरिया एक शक्तिशाली मटियाला देवता है,  
तुन्द मिज़ाज, गुस्सीला अपने मौसमों और अपने ग़ैज़—ओ ग़ज़ब का  
मालिक, तबाह कुन। वह उन चीज़ों की याद दिलाता रहता है,  
जिन्हें इंसान भूल जाना चाहते हैं।  
वह मुन्तिज़र है और देखता है, और मुन्तिज़र है  
दरिया हमारे अंदर है, समुंद्र ने हमें घेर रखा है।  
खात्मा कहाँ है ?..... बेआवाज़ चीखों का।  
पतझड़ में ख़ामोशी से मुरझाते फूलों का।  
जो चुपचाप अपनी पँखुड़ियाँ गिराते हैं।  
जहाज़ के बहते हुए शिकस्ता टुकड़ों का खात्मा कहाँ है ?  
खात्मा कहीं नहीं है, सिर्फ़ इज़ाफ़ा है  
मज़ीद दिनों और घंटों का घिसटता हुआ तसलसुल  
हमने कर्ब के लम्हों को ढूँढ़ निकाला।  
यह क्षण स्थायी है, जिस प्रकार समय स्थायी है।.....  
लोग बदल जाते हैं, मुस्कुराते भी हैं मगर कर्ब मौजूद रहता है  
लाशों और खसो खाशाक को अपनी मौजों में बहाते हुए दरिया की  
भाँति वक़्त जो तबाह कुन है, कायम भी रखता है।  
इस लम्हे के दोनों किनारों के दरमियान वक़्त मुअत्तिल है।  
मुस्तक़िबल और माज़ी पर समान ध्यान करो।.....  
कर्म के फल का ख़याल न करो, आगे चलो।.....  
मुसाफ़िरों।”<sup>28</sup>

ईलियट की कविता का उपर्युक्त अंश उपन्यास के विषय की ओर संकेत करता है। 'समय' की धारा मनुष्य के नश्वर जीवन को चारों ओर से घेरे हुए है। टी० एस० ईलियट की कविता के उद्धरित अंशों के माध्यम से कुर्रतुलऐन हैदर यह कहना चाहती हैं कि निरंतर आगे बढ़ते रहना ही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। जीवन में दुख तो आते रहते हैं परन्तु सुख की तलाश में लगे रहना निरन्तर कर्म करते हुए फल की चिन्ता न करते हुए आगे बढ़ते रहना ही जीवन का लक्ष्य होना

चाहिए। कुर्रतुलऐन हैदर ने मनुष्य के अब तक के विकास की मन्जिलों में से कुछ विशेष बिन्दुओं को चुन कर उपन्यास में उसका चित्रण किया है।

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास में कोई विशेष घटना नहीं है। जो घटनाएँ अतीत में घट चुकी हैं कमलेश्वर ने उन्हीं को कथा का रूप दे दिया है। इसमें अतीत की रक्तपात घटनाएँ तथा वर्तमान युग का दुख उपस्थित है जिसने हमारे वर्तमान और भविष्य दोनों को प्रभावित किया है। जबकि कुर्रतुलऐन हैदर ने ‘आग का दरिया’ में बड़े कलात्मक ढंग से हिन्दुस्तान के विशेष सांस्कृतिक इतिहास को विभिन्न युगों में प्रस्तुत किया और प्रत्येक युग का मनुष्य किस पीड़ा से गुज़र रहा है उसका चित्रण किया है।

‘कितने पाकिस्तान’ और ‘आग का दरिया’ दोनों ही उपन्यासों में समय के चक्र में पिसते हुए लोग और मौत की आशंका में जीते हुए मनुष्य तथा समय से पहले होने वाली मौत के दुख से पीड़ित व्यक्ति का चित्रण बड़े कलात्मक ढंग से किया गया है। मृत्यु शाश्वत सत्य है, जिसने जन्म लिया है उसे मृत्यु भी जरूर आयेगी परन्तु इन दोनों उपन्यासों में ही अप्राकृतिक मृत्यु की पीड़ा को अभिव्यक्त किया गया है जो घृणा और यृद्ध का परिणाम है।

विभाजन की त्रासदी दोनों ही उपन्यासों के कथ्य के मूल में है। निरंतर फैलती हिंसा, नफ़रत, अशान्ति तथा लगातार बँटती हुई मानव जाति का कलात्मक ढंग से चित्रण किया है। उपन्यास में कमलेश्वर कहते हैं—

“पाकिस्तान एक नफ़रत का नाम है।

.....तक़सीम न होता तो पूरी कायनात बहुत ख़ूबसूरत होती।”<sup>29</sup>

‘आग का दरिया’ में विभाजन का दुख इन शब्दों में अभिव्यक्त होता है—

“सन् 1947 ई० ने ज़हनों की दुनिया हिला कर रख दी थी। गौतम और कमाल बदली हुई स्थितियों, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक अपराधों तथा भ्रष्टाचार के इस उच्च वर्तमान युग से समझौता नहीं कर सकते थे। गौतम के सेक्युलर विचारों के कारण महासभाई दृष्टिकोण के लोग उससे नाराज़ थे। कमाल की देशभक्ति और स्पष्टवादिता ने उसे कहीं का न रखा। उसके अधिकतर मुसलमान दोस्त और



रिश्तेदार पाकिस्तान जा चुके थे लेकिन उसे ज़िद थी कि इंगलिस्तान से सीधे हिन्दुस्तान ही वापस जाएगा।<sup>30</sup>

उपन्यास में गौतम और कमाल विभाजन को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। वे अपनी सच्चाई, ईमानदारी और देशप्रेम के बावजूद संदिग्ध समझे जाते हैं।

‘कितने पाकिस्तान’ में कोई एक कथा नहीं है और न ही इसमें देशकाल और समय की कोई सीमा है। इसकी तुलना में ‘आग का दरिया’ में मनुष्य के अस्तित्व, उसके उतार-चढ़ाव की कहानी को हिन्दुस्तान के ढाई हजार साल के सांस्कृतिक इतिहास के साथ प्रस्तुत किया गया है। ‘कितने पाकिस्तान’ का आरम्भ विद्या की कहानी से होता है। विद्या का गिरता रुमाल जिसको अदीब उठा नहीं पाया—

“पुल पर पहुँचकर, अपने प्लेटफ़ॉर्म की तरफ़ मुड़ने से पहले विद्या ने अपना रुमाल ऊपर से गिराया था।”<sup>31</sup>

उपन्यास के अंत में भी रुमाल का ही प्रसंग आता है—

“परी कुर्सी से उठी तो उसका रुमाल नीचे गिर गया था। अदीब ने देखा, रुमाल फिर गिरा था। उसने इशारा करते हुए कहा—

—आपका रुमाल.....

—शुक्रिया.... कहते हुए परी ने रुमाल उठाया, खुदा हाफ़िज़ कहा और बटे परवेज़ के साथ बाहर चली गई।”<sup>32</sup>

इसी प्रकार ‘आग का दरिया’ में भी कहानी के प्रारम्भ में गौतम नीलम्बर तैर कर सरजू नदी के पार श्रावस्ती में पहुँचता है—

“गौतम नीलम्बर ने चलते-चलते ठिठक कर पीछे देखा। रास्ते की धूल बारिश की वजह से कम हो चुकी थी, उसके पाँव मिट्टी से अटे थे। बरसात की वजह से घास और दरख़्त ज़मरुद के रंग के दिखलाई पड़ रहे थे।”<sup>33</sup>

और आख़िर में यही गौतम नीलम्बर इसी सरजू नदी के किनारे एक बार फिर श्रावस्ती में ही दिखाई देता है—

“गौतम नीलम्बर ने चलते-चलते ठिठक कर पीछे देखा रास्ते की धूल बारिश की वजह से कम हो चुकी थी, उसके पाँव मिट्टी से अटे थे। बरसात की वजह से घास और दरख़्त ज़मरुद के रंग के दिखलाई पड़ रहे थे।”<sup>34</sup>

कहानी के दोनों सिरों पर मन्दिर भी वही है और पात्र भी वही है—हरिशंकर। वातावरण और बातों में भी समानता है। भिन्नता केवल युग, काल, पड़ाव और समस्या की है। इससे साफ पता चलता है कि एक जीवन के मार्ग पर यात्री एक मन्जिल से चला और दूसरी मन्जिल तक पहुँचा। उपन्यास के प्रारम्भ और अंत में वातावरण की समानता है। उपन्यास के प्रारम्भ में वातावरण का चित्रण इस प्रकार किया गया है—

“सामने दूसरे किनारे पर दरियाई घास और नीले फूलों की घनी बेलें पानी की सतह पर झुक आई थीं। बरगद के साए अँधेरे हो चले थे। सारस पर मोर सिमटे सिमटाए उदास खड़े थे।”<sup>35</sup>

इसी प्रकार वातावरण और शब्दों की समानता को हम उपन्यास के अंत में भी देख सकते हैं—

“बादल अब दरिया पर बहुत नीचे झुक आए थे.....बढ़ते हुए अँधेरे पर नज़र डाली, घास की भीनी खुशबू, पत्थरों की खनक और मिट्टी की शक्ति उसने अपने तलवों के नीचे महसूस की।”<sup>36</sup>

उपन्यास के आरम्भ में अँधेरा फैलता जा रहा है लेकिन चारों ओर उदासी और निराशा का भाव व्याप्त है। यहाँ तक की पक्षी भी उदास हैं परन्तु उपन्यास के अंत में अँधेरा तो बढ़ रहा है लेकिन चारों ओर उदासी और निराशा का भाव व्याप्त नहीं है बल्कि एक खुशबू एक खनक और एक ऐसा भाव मौजूद है जो व्यक्ति को एक मज़बूती प्रदान करता है। ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास के आरम्भ में घुटन, दुख और मृत्यु की पीड़ा व्याप्त है परन्तु अन्त में उस दुख, पीड़ा और घुटन से समाज और व्यक्ति को निजात दिलाने की उत्कट इच्छा व्यक्त हुई है।

**‘कितने पाकिस्तान’ के पात्र :**

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास का केन्द्रीय पात्र अगर कोई है तो वह अदीब है। उसकी चिंताएँ सहज मानवीय चिंताओं के रूप में सामने आती हैं। अदीब या समय की अपनी एक अदालत है। उसकी अदालत में हिन्दुस्तान से लेकर दक्षिण अमेरीका तक के पात्र सामने आते हैं जो अपना अपना पक्ष प्रस्तुत करते हैं। अदीब की अदालत—

“सच्चाई की पैरोकार है और सारी सच्चाइयाँ यहाँ कहानियाँ बनके खड़ी हैं।”<sup>37</sup>

कमलेश्वर संसार के प्रमुख ऐतिहासिक पुरुषों पर लगाए गए उन आरोपों को निर्मूल सिद्ध करना चाहते हैं जो साम्प्रदायिक वैमनस्य का कारण बना हुआ है। उन्होंने समय को ही नायक और महानायक के रूप में प्रस्तुत किया है।

‘कितने पाकिस्तान’ में अदीब का अर्दली महमूद भी एक महत्वपूर्ण पात्र के रूप में हमारे सामने आता है। वह अदीब के कहने पर उपन्यास की माँग के अनुसार संसार के अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियों को उनकी कब्रों से निकालकर समय की अदालत में प्रस्तुत करता है और प्रारम्भ से अंत तक सत्य की तलाश करने में अदीब की सहायता करता है। और समय-समय पर अदीब या लेखक को उसकी जिम्मेदारियों का एहसास भी कराता है। वह एक जगह कहता है—

“अगर आप जिंदा या अधमरों की बात नहीं सुनेंगे तो मरने वालों की तदाद बढ़ती जाएगी.....खून बटोरने से काम नहीं चलेगा.....खून का खुला हुआ नल बंद कीजिए।”<sup>38</sup>

इन ऐतिहासिक पात्रों में दाराशिकोह मुख्य है उसके व्यक्तित्व और जीवन संघर्ष को विस्तार के साथ परखा गया है। दाराशिकोह के संबंध में कमलेश्वर उपन्यास में लिखते हैं—

“अकबर ने इस्लामी साम्राज्य को नहीं, राष्ट्रीय साम्राज्य को जन्म दिया था.....और वही दारा जारी रखना चाहता था..... दारा धर्म और मन की तौहीद.....एकत्व का रास्ता रहा था.... वह शरीयत को इस्लाम के बन्दों तक सीमित नहीं रखना चाहता था। वह इस्लाम को सिर्फ मुसलमानों के धर्म के रूप में ही नहीं, एक विराट मानव धर्म के रूप में फैलाना चाहता था।”<sup>39</sup>

कमलेश्वर इस उपन्यास में यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि दाराशिकोह की पराजय ही विभाजन या अलगाववाद का कारण बन जाती हैं। औरंगज़ेब ने इस्लाम धर्म का सहारा लेकर दारा की हत्या करवा दी और एक राष्ट्रीय साम्राज्य का रास्ता बंद कर दिया और पाकिस्तान भी धर्म के नाम पर ही अस्तित्व में आया। रौशन आरा औरंगज़ेब से हिन्दुस्तानी प्रजा की धर्मभीरुता का लाभ उठाने की बात करती है—

“हिन्दुस्तानी प्रजा की मज़हब परस्ती और मज़हब के लिए उसकी आधार भूत कमज़ोरी का फ़ायदा उठाओ। तुम दाराशिकोह के खिलाफ़ काफ़िर और अनेकेश्वरवादी होने का इल्ज़ाम लगाकर उलेमाओं से उसकी सज़ाए मौत का फतवा जारी करवा दो।”<sup>40</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ के पात्रों के संबंध में कुँवरपाल सिंह अपने लेख—‘कितने पाकिस्तान’ : इतिहास के व्यापक संदर्भ’ में लिखते हैं—

“इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके चरित्र पूर्णतः ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिवेश से जुड़े हुए हैं। उनमें मानवीय कमज़ोरियाँ हैं, परिस्थितियों का सही मूल्यांकन और मुकाबला नहीं कर पाते, लेकिन खलनायक नहीं हैं जिन्ना भारतीय जनमानस में एक खलनायक के रूप में परिचित है। कमलेश्वर ऐसा नहीं मानते। जिन्ना की नसों में ख़ालिस हिन्दुस्तानी खून था। उसके अहंकार, ईर्ष्या और शिखर पर रहने की चाह ने उसे ब्रिटिश साम्राज्य का मोहरा बना दिया।”<sup>41</sup>

इस प्रकार कमलेश्वर एक खलनायक माने जाने वाले जिन्ना को परिस्थिति का दास समझते हैं वह उनकी नीयत पर शक नहीं करते और स्थिति को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं—

“वक्त गवाह है—जिन्ना की नसों में बहता ख़ालिस हिन्दुस्तानी खून जम गया था और उन्होंने एकाएक महसूस किया था कि आपसी ज़िदों, छोटे-छोटे अपमानों और प्रतिस्पर्धात्मक अहंकार से जन्मी ख़लिश कैसे एक चुनौती बन जाती है और वह कौम के सपने को तोड़कर जाती मुकाबले को छुपाते हुए, अपने तरफ़दारों को कैसे एक विकलांग और धर्मान्ध सपना साँप देती है।”<sup>42</sup>

माउंटबेटन ने हिन्दुस्तान को विभाजित करने के लिए पूर्व योजना बनाई थी। जिसमें उसने जिन्ना को मोहरे की तरह इस्तेमाल किया। माउंटबेटन जिन्ना से कहता है—

“आप अगर अपने एकाएक जाग उठे ज़मीर की आवाज़ की वजह से खुले शब्दों में पार्टीशन मंज़ूर न कर सकें, हाँ न कह सकें, तो आप किसी भी अंदाज़ में अपने सिर को थोड़ी सी जुम्बिश दे दें.....उस जुम्बिश के मायनी क्या हैं यह मैं तय कर दूँगा.....

“जिन्ना साहब ने माउंटबेटन की तरफ़ देखा और महसूस किया कि शतरंज की अपनी बाज़ी में वह अँग्रेज़ी साम्राज्य की सत्ता के मोहरे बन गए हैं। उन्हें उन्हीं का शब्द साँपा जा रहा था।..... पाकिस्तान!”<sup>43</sup>

इस प्रकार कमलेश्वर ने यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है कि सत्ता और वर्चस्व की लालसा ने जिन्ना को बँटवारे के लिए प्रेरित किया और जिसका लाभ अँग्रेजों ने उठाया।

बाबरी मस्जिद ध्वंस के कारण देश में उत्पन्न तनाव और साम्प्रदायिक दंगों ने एक नयी स्थिति पैदा कर दी और एकाएक बाबर एक खलनायक के रूप में उभर कर सामने आया। ऐतिहासिक साक्ष्यों को देखने के बाद कमलेश्वर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बाबर भी सत्ता का लोलुप सम्राट था, इस्लाम का प्रचारक नहीं और वह बाबर से यही कहलवाते भी हैं—

“मैं हिन्दुस्तान को खुद के लिए फ़तह करने आया था। इस्लाम के लिए नहीं।....मैंने तो कभी तुलसीदास का नाम तक नहीं सुना, जिसने हिन्दुओं के राम को भगवान बनाया। मेरे दौर में राम भगवान थे ही नहीं, तो मैं उनका मन्दिर क्यों तोड़ता।?”<sup>44</sup>

ए. फ़्यूहरर ब्रिटिश शासन के आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इण्डिया का डायरेक्टर जनरल था। लेखक ने उसे अदीब की अदालत में प्रस्तुत करके सत्य तलाश करने का प्रयास किया है। बाबरी मस्जिद के शिलालेख के संबंध में ए. फ़्यूहरर अदीब की अदालत में बताता है—

“करीब 17 सितंबर सन् 1523 ई० में इब्राहीम लोदी ने उस मस्जिद की नींव रखवाई थी और जो 10 सितंबर 1524 में बनकर तैयार हुई, जिसे अब बाबरी मस्जिद कहा जाता है।”<sup>45</sup>

इससे यह बात साफ़ है कि बाबरी मस्जिद इब्राहीम लोदी ने बनवाई थी। गुलबदन बेगम जो बाबर की बेटी थी। अदीब की अदालत में अपने पिता की सच्चाई को प्रमाणित करते हुए कहती है—

“अब्बा हुजूर ने हमें हिन्दुस्तान बुलवाया था। अब्बा हुजूर हमें लेने के लिए 7 अप्रैल 1528 से पहले आगरा पहुँच चुके थे। अप्रैल 10 से लेकर 10 जुलाई 1528 तक अब्बा हुजूर ने आगरा में मेरी माँ और मेरे साथ बिताए।”<sup>46</sup>

जिस बाबर नामा के कुछ पृष्ठों को गायब कर दिया गया है। उसमें यह लिखा था कि बाबर कभी अयोध्या गया ही नहीं था।

उर्दू-हिन्दी विवाद को भी अँग्रेजों ने हवा दी। फोर्ट विलियम कालेज में अलग-अलग उर्दू-हिन्दी विभाग को स्थापित करने का यही लक्ष्य था। कमलेश्वर गिलक्रिस्ट के इस बयान के माध्यम से इसे स्पष्ट करते हैं—

“फोर्ट विलियम कॉलेज में हमने मुंशी सदासुखलाल और मौलवी मीर अम्मन को बुलाकर इनकी सम्मिलित भाषा की रीढ़ तोड़ दी थी।”<sup>47</sup>

मैकाले ने हिन्दुस्तान में एक नवीन शिक्षा प्रणाली बनाई। उसने अँग्रेजी शिक्षा को अनिवार्य करके हिन्दुस्तानी बुद्धिजीवियों और एक पढ़े लिखे वर्ग को अनपढ़ बना दिया था। उपन्यास में लार्ड कर्ज़न भी एक ऐतिहासिक पात्र के रूप में मौजूद है। वह हिन्दुस्तान के विभाजन के संबंध में कहता है—

“जो काम आज माउंटबेटन ने किया है, उसकी शुरुआत मैंने सन् 1905 ई० में ही कर दी थी। मैंने हिन्दू मुसलमानों का बँटवारा करके तभी बंगाल को विभाजित कर दिया था।”<sup>48</sup>

ऐतिहासिक पात्रों में सिरिल रेडक्लिफ भी सामने आता है जिसको माउंटबेटन ने हिन्दुस्तान के विभाजन की जिम्मेदारी सौंपी थी। जिसको इसके संबंध में कोई जानकारी नहीं थी। कमलेश्वर उपन्यास में लिखते हैं—

“माउंटबेटन ने उस वकील को सरहदें खींचने का काम सौंपते हुए कहा था —पंजाब और बंगाल का विभाजन आपको करना है..... इण्डिया और पाकिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा आपको तय करनी है.....लेकिन मैं इस काम के योग्य नहीं हूँ! सिरिल ने कहा—यह पंजाब और बंगाल हैं कहाँ ?”<sup>49</sup>

ऐसे लोगों ने हिन्दुस्तान का विभाजन किया जो यह भी नहीं जानते थे कि कौन सा शहर कहाँ है। प्रो० मुशीर-उल-हक कश्मीर यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर थे। जिनको किसी ने मार दिया था। वह भी अदीब की अदालत में दस्तक देते हैं—

“मैं कश्मीर यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर था.....इससे पहले जामिया मिलिया दिल्ली में था। मैं इस्लामिक इस्टीज़ का प्रोफ़ेसर हूँ.....मुझे आज शाम श्रीनगर के पादशिया बाग़ इलाके में मार दिया गया।”<sup>50</sup>

मोहम्मद बिलाल भी एक पात्र के रूप में हमारे सामने आता है जो अमीरात की सामाजिक समस्याओं का ओहदेदार था। मोहम्मद बिलाल को बिलकीस के ऊपर अरब में हुए अत्याचार के जवाब देने के लिए बुलाया गया था। उसको धोखा दिया गया, ब्याहता के नाम पर वैश्यावृत्ति के गंदे पेशे में डाल दिया गया। उपन्यास में बिलाल अदीब से कहता है—

“ओह बिलकीस! लेकिन एक हिन्दुस्तानी औरत की ज़िन्दगी इतनी कीमती नहीं कि उसके बारे में मुझसे जवाब माँगा जाए। खुद तुम्हारे मुल्क के दंगों में कितनी बिलकीस रोज़ मरती हैं.....तब तुम ख़ामोश रहते हो।”<sup>51</sup>

बिलाल के माध्यम से यहाँ कमलेश्वर ने भारतीय स्त्रियों की स्थिति पर व्यंग्य किया है। कॉमरेड इमाम नाज़िश भी एक ऐसे पात्र के रूप में सामने आता है। जिसे भारत छोड़कर पाकिस्तान जाने का दुख और पश्चाताप दोनों हैं। वह कहता है—

“मैं अच्छा नहीं हूँ। ज़िंदा भी हूँ, मुर्दा भी!  
मैं तो पाकिस्तान गया था जम्हूरियत के लिए.....  
ग़रीबों की लड़ाई लड़ने के लिए.....मैं पाकिस्तान गया था,  
अपनी बीवी, अपना घर, अमरोहा में छोड़कर।”<sup>52</sup>

पाकिस्तान का समर्थन करना नफ़रत के एक सैलाब का समर्थन करना था। वह कहता है—

“अब मेरे पास पछतावे के सिवा कुछ नहीं है.....नफ़रत के जिस सैलाब का हमने समर्थन किया था, उसने किसी को कहीं नहीं पहुँचाया.....मैं नफ़रत के सैलाब का हिस्सा बना, पर मेरी बीवी एक नई तामीर के सैलाब का हिस्सा बनी!.....”<sup>53</sup>

ज़ैनब और बूटा सिंह भी महत्वपूर्ण पात्र हैं। सोलह सत्रह साल की मुस्लिम लड़की ज़ैनब देश के बँटवारे में अपने परिवार वालों से बिछड़ कर एक हिंसक नौजवान से अपनी इज़्ज़त बचाते हुए भागते समय एक पचास पचपन साल के बूटा सिंह को मिलती है। बूटा सिंह पन्द्रह सौ रुपये देकर उसकी इज़्ज़त बचा लेता है। गाँव ढाणी के लोग ज़ैनब की इज़्ज़त करते हैं और उन दोनों की शादी करवा देते हैं। विद्या और सलमा अदीब की प्रेमिका के रूप में हमारे सामने आती हैं। विद्या जो अदीब के कालेज के दिनों में मिली थी। अदीब और विद्या दोनों इलाहाबाद से

कानपुर तक साथ-साथ जाते थे। सलमा और अदीब एक दूसरे से प्रेम करते हैं लेकिन दोनों के बीच में धर्म की दीवार आती है। सलमा, अदीब से कहती है—

“आप ऐसा करो.....कि सिर्फ जीने के लिए मैं हिन्दू बन जाऊँ और आप मुसलमान हो जाओ। क्यों न हम सिर्फ अपनी ज़िन्दगी जी सकने के लिए अपने मज़हबों को बदल लें।”<sup>54</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास का एक पात्र अश्रुसागर में डूबा रहने वाला अश्रुवैध है। वह अदीब की अदालत में आता है और अदीब को अपना परिचय देता है—

“मैं तुम्हारी ही तरह एक आम आदमी हूँ.....तुम लिखते हो, मैं लिखता नहीं, पर मैं भी उसी तरह का काम करता हूँ। मेरी एक प्रयोगशाला है। मैं हर अभावग्रस्त, शोषणग्रस्त मनुष्य के आँसू एकत्रित करता हूँ..... अदीब ने पूछा तो आप मुझसे क्या चाहते हैं। ‘तुम्हारे आँसू! वृद्ध बोला। मेरे आँसू! हाँ.....मनुष्य के आँसुओं से पवित्र कुछ भी इस दुनिया में नहीं है अदीब!.....मैं उन आँसुओं का अध्ययन करता हूँ..... उनके संताप, दुख, यातना और पीड़ा के ताप की पहचान करता हूँ....।”<sup>55</sup>

उपन्यास के अंत में यही पात्र अश्रुवैध एक बार फिर सामने आता है और कहता है—

“मैं आँसुओं की जगह पसीना इकट्ठा करने लगा हूँ.....खंडित आधे अधूरे सपने।”<sup>56</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ के संबंध में देवनारायण आरोपा अपने एक लेख में लिखते हैं—

“कितने पाकिस्तान’ के लेखक कमलेश्वर ने नूतन प्रयोग करते हुए समय को ही नायक, महानायक और खलनायक के रूप में प्रस्तुत किया है।”<sup>57</sup>

कमलेश्वर ने अपने उपन्यास में विश्व की ऐतिहासिक विभूतियों को पात्र के रूप में अदीब की अदालत में प्रस्तुत किया है। जिन ऐतिहासिक पुरुषों को लोग खलनायक के रूप में याद करते हैं उनकी मनः स्थिति का चित्रण करवा के उनके बयान द्वारा वास्तविकता को उजागर किया है। अनेक विदेशी पात्रों (अंग्रेज़) के मुख से आरोप को स्वीकार करवा कर सच्चाई को सबके सामने प्रकट किया है।



### ‘आग का दरिया’ के पात्र :

कुर्तुलऐन हैदर ने अपने उपन्यासों में पश्चिमी उपन्यासों की नई तकनीक के सफल प्रयोग किए हैं। उनके यहाँ चरित्र—चित्रण की पारम्परिक कल्पना नहीं मिलती है। किसी भी उपन्यास में पात्रों के बगैर कहानी की कल्पना नहीं की जा सकती और पात्र ही कहानी को जन्म देते हैं। इसलिए उनके उपन्यासों में इस तत्व का प्रयोग एक विशेष रचनात्मक ढंग से किया है। प्रोफ़ेसर वकार अज़ीम ‘दास्तान से अफ़साने तक’ में उनके उपन्यास लेखन के संबंध में लिखते हैं—

“उर्दू के उपन्यासकारों में कुर्तुलऐन हैदर ने तकनीक के पश्चिमी ढंग को अपनाया और उसके तत्वों को बड़ी खूबी से पूर्वी परम्परा में समोया है।”<sup>58</sup>

कुर्तुलऐन हैदर ने ‘आग का दरिया’ में जिन पात्रों की रचना की है, वह अधिकतर प्रतीकात्मक हैं। गौतम नीलम्बर प्राचीन हिन्दुस्तान के आश्रम का ब्रह्मचारी विद्यार्थी है। हरिशंकर की भी यही स्थिति है। दोनों का आमना—सामना आरम्भ से अन्त तक कई बार होता है।

कुर्तुलऐन हैदर ने अपने अधिकतर उपन्यासों में फ़लैशबैक और शऊर की री की तकनीक को अपनाया है। इसलिए उनके पात्र भी इसी तकनीक के साँचे में ढलकर सामने आते हैं। वह अपनी सोच के द्वारा अपनी पहचान बनाते हैं। ‘आग का दरिया’ में उपन्यासकार ने हिन्दुस्तानी संस्कृति के इतिहास को विभिन्न पात्रों की सहायता से प्रस्तुत किया है। हर युग में दुख—दर्द, वेदना मौजूद है।

‘आग का दरिया’ उपन्यास में प्रमुख पात्र केवल पाँच हैं—गौतम, हरिशंकर, चम्पा, कमाल और सरल ऐशले। यह पात्र नामों के थोड़े से अंतर के साथ विभिन्न युगों में रूप बदलकर उपमहाद्वीप की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक कड़ियों को निरंतरता प्रदान करते हैं और पाठक के मन पर एक अलग छाप छोड़ते हैं। गौतम और हरिशंकर का अक्स ‘समय’ के आइने में लहरों के बीच फैला हुआ है। यह लहरें समय के हर युग की विभिन्न स्थितियों और अवस्थाओं की व्याख्या करती हैं। कुर्तुलऐन हैदर ने इस उपन्यास में इतिहास को कहानी में बदलने का प्रयास किया

है। इसके लिए उन्होंने बहुत से दार्शनिक विचारों का प्रयोग किया है और उन्हीं विचारों से कुछ चिन्ह बनाए, कुछ प्रतीक बनाए हैं। इस उपन्यास का पात्र गौतम नीलम्बर हिन्दुस्तानी संस्कृति का प्रतीक बनकर सामने आता है। उसके चरित्र में दर्शन भी है। वह एक ऐसा हिन्दुस्तानी है जो हिन्दू धर्म, बुद्धमत, इस्लाम और इसाई धर्म से प्रभावित होता है। उपन्यास के प्रारम्भ में गौतम नीलम्बर समय की धारा के विरुद्ध किसी अनजान दिशा में हाथ पाँव मारता दिखाई देता है। इस स्थिति को यथार्थ जीवन का एक दृश्य मान सकते हैं और प्रतीकात्मक शैली भी—

“उसने पूरी शक्ति से हाथ पाँव मारने शुरू कर दिये मगर पानी में उससे ज़्यादा शक्ति थी। इसी कशमकश में उसे एक चट्टान ऐसी दिखाई दी, जो पानी के ऊपर झुकी हुई थी.....उसने जल्दी से पकड़ लिया.....लेकिन उसके हाथों की उँगलियाँ कटी हुई थीं। और वह पल भर से ज़्यादा पत्थर को अपनी गिरफ्त में न रख सका। सरजू की मौजें गौतम नीलम्बर के ऊपर से गुज़रती चली गई।”<sup>59</sup>

गौतम नीलम्बर आदिकाल मानव का प्रतीक है। उसकी पत्थर पर पकड़ मनुष्य के संघर्ष को दिखाती हैं और दरिया की लहरें मनुष्य के जीवन में आने वाली बाधाओं की ओर संकेत करती हैं। सरजू की लहरों का गौतम नीलम्बर के ऊपर से गुज़रना इंसान के नष्ट हो जाने और समय से हार जाने की कहानी कहता है। ‘समय’ एक निरंतर और गतिशील शक्ति है। उसका आगे बढ़ जाना सच्चाई है।

हरिशंकर बौद्ध धर्म का प्रतिनिधि पात्र है और गौतम एक बेचैन आत्मा का नाम है, जो आदमी को समझने के लिए बेचैन है। अखिलेश वैराग्य को पसंद करता है और गौतम को सांसारिक मोह से निकालकर आश्रम की ओर ले जाना चाहता है। चम्पक, निर्मला, सरोजनी सांसारिक आकांक्षाओं और सांसारिक कमज़ोरियों की व्याख्या करती हैं। कमालउद्दीन नामक पात्र सुल्तान हुसैन शर्की के युग में भी है और बीसवीं शताब्दी में भी। प्रारम्भ और अंत दोनों युगों के कमालउद्दीन को इतिहासकार बनने की आकांक्षा है जिसे सुल्तान ने इतिहास लिखने के लिए नियुक्त कर रखा है। बीसवीं शताब्दी के कमालउद्दीन को देश के विभाजन में स्वदेश त्यागना पड़ता है, जो देश निकाला के बराबर है। वह हिन्दुस्तान में रहकर पाकिस्तानी है और पाकिस्तान में हिन्दुस्तानी चम्पा से जुड़ाव महसूस करता है।

कमाल रज़ा इंग्लैण्ड से कई डिग्रियों के साथ समाज सेवा के भाव से हिन्दुस्तान वापस आता है लेकिन यहाँ की साम्प्रदायिक मानसिकता से उसको निराशा होती है।

‘आग का दरिया’ के पात्रों में कई स्तर हैं, उनके अनुभव और उनकी समस्याओं का संसार बहुत बड़ा है। उन पात्रों में आध्यात्मिक या मानसिक समानता है। जिसका प्रतीकात्मक चित्रण उनके नामों की समानता से हुआ है। नामों की इस समानता के कारण पात्रों का बार बार आना आवागमन को प्रस्तुत करता है। इसीलिए बीसवीं शताब्दी गौतम, कमाल और चम्पा के जीवन में कई गौतम, कमाल और चम्पा के चिन्ह सामने आ जाते हैं। लेकिन इन पात्रों का अलग-अलग व्यक्तिगत महत्व भी है। बदलता हुआ इतिहास और समय उनकी समस्याओं और उनकी मानसिकता में परिवर्तन उत्पन्न करता है।

आधुनिक युग के गौतम नीलम्बर दत्त की आत्मा भी प्यासी है। उसके जीवन में सब कुछ होते हुए भी, कभी-कभी वह अपने आपको अकेला महसूस करता है। वह एक समय में दो-दो लड़कियों की ओर आकर्षित हो जाता है। वह अपने दिल की बेचैनी को समझना चाहता है लेकिन असफल रहता है।

‘आग का दरिया’ में चम्पा एक महत्वपूर्ण पात्र के रूप में सामने आती है। यह पात्र उपन्यास के हर युग में उपस्थित है। चम्पा भारतीय स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है। चम्पक से लेकर चम्पा अहमद तक वह कई रूप धारण करती है। प्राचीन युग की चम्पक उच्चवर्गीय एक कुलीन और प्रतिष्ठित परिवार में पैदा होती है। वह एक राजगुरु की विवकेशील और पढ़ी लिखी बेटी है। वह गौतम से प्रेम करती है लेकिन ‘समय’ के आगे मजबूर हो जाती है। उसकी शादी उसकी इच्छा के विरुद्ध एक पचास वर्षीय ब्राह्मण से कर दी जाती है।

दूसरा युग जो हिन्दू-मुस्लिम सामासिक संस्कृति के सम्मिश्रण का युग है। उस युग की ब्राह्मण लड़की चम्पावती, कमालउद्दीन से प्रेम करने लगती है। लेकिन जब कमालउद्दीन युद्धों में फँसकर चम्पावती को भूल जाता है तो वह उसे शहरों और वीरानों में ढूँढती फिरती है। एक योगी कमालउद्दीन को बताता है—

“जब तुम गोड़ के दरबार में रंगरलियाँ मना रहे थे। वह जंगलो में तुम्हारे इन्तिज़ार में रोती फिरती थी, लेकिन कोई राज हंस उसका पैगाम तुम तक न पहुँचा सका।”<sup>60</sup>

यहाँ एक स्त्री चम्पावती के भाग्य की विवशता और एकाकीपन सामने आता है। उपन्यास के तीसरे युग में चम्पक लखनऊ की तवायफ़ ‘चम्पाबाई’ के रूप में हमारे सामने आती है। उस समाज में एक औरत अपनी योग्यताओं के बावजूद भी मजबूर है। वह अपनी इच्छानुसार अपना जीवन व्यतीत नहीं कर सकती। उसका कोई भविष्य नहीं होता है, रंग-बिरंगे लिबासों और संगीत की धुन पर जीवन व्यतीत करने के बाद बुढ़ापे में उनका कोई सहारा नहीं होता और उन्हें भिखारन का जीवन व्यतीत करना पड़ता है। चम्पाबाई लखनऊ के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पतन के रूप में सामने आती है।

उपन्यास के चौथे युग की चम्पा अहमद महत्वपूर्ण स्त्री पात्र के रूप में सामने आती है। यह एक मध्यवर्गीय लड़की है जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने लखनऊ जाती है और फिर वहाँ से इंग्लैण्ड जाती है। वह आधुनिक मध्यवर्ग की मानसिक एवं भावनात्मक कशमकश का प्रतीक बन जाती है। इस युग में अन्य पात्रों में आमिर रज़ा, तहमीना, तलत, निर्मला, गौतम, हरिशंकर और कमाल भी महत्वपूर्ण पात्रों के रूप में सामने आते हैं। चम्पा, आमिर रज़ा से प्रेम करने के बावजूद यह नहीं कह सकती कि वह उससे प्रेम करती है।

नवाब कम्मन, पतनशील नवाबों का प्रतिनिधि पात्र है। सरल ऐशले एक पादरी का लड़का है जो ईस्ट इण्डिया कंपनी के साथ हिन्दुस्तान को लूटने के लिए आया था। इसका रहन-सहन और चाल-चलन बिगड़े हुए नवाबों का सा था। आधुनिक युग की निर्मला, गौतम से प्रेम करती है। गौतम, चम्पा की तरफ़ आकर्षित हो जाता है। यह देखकर निर्मला उनके बीच नहीं आती है। अन्त में तपेदिक के रोग से ग्रस्त होकर मर जाती है।

तलत सामासिक संस्कृति की प्रतिनिधि है। वह एक पढ़ी लिखी संवेदनशील लड़की है। उसके अतिरिक्त ‘आग का दरिया’ में रेखा, शान्ता, रौशन आरा, शाहरुख़, सुल्तान नामक पात्र भी किसी न किसी रूप में सामने आते हैं। ‘आग का

‘दरिया’ के पात्रों में जीवन के दुख-दर्द हैं। सामाजिक परिवर्तन की एक लालसा भी उनमें दिखाई देती है। कुर्तुलऐन हैदर ने अपने उपन्यासों के पात्रों को गहरे अनुभव एवं ज्ञान की रौशनी में प्रस्तुत किया है।

‘आग का दरिया’ पर इतिहास और दर्शन का गहरा प्रभाव है। जो इस उपन्यास के पात्रों पर भी साफ़ दिखाई देता है। उनके पात्र दुख के कारण पर विमर्श करते हैं। ऊँच-नीच की भावना के खोखलेपन को उजागर करते हैं। अहं भावना के विस्फोट को दुख का कारण मानकर अपने विचारों में परिवर्तन लाने की सीख देते हैं।

**‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ के पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन :**

‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ के पात्रों का अलग-अलग विश्लेषण करने के बाद जब हम तुलनात्मक दृष्टि से देखते हैं तो कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलकर सामने आते हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि दोनों ही उपन्यासों के पात्रों और चरित्र-चित्रण संबंधी तकनीक नई है। कमलेश्वर ने पारम्परिक ढाँचे को तोड़कर उपन्यास साहित्य में एक नए शिल्प का प्रयोग किया। कितने पाकिस्तान में परम्परागत उपन्यासों की भाँति पात्र दिखाई नहीं देते। कोई केन्द्रीय पात्र यदि उपन्यास में दिखाई देता है तो वह अदीब या समय ही है। कमलेश्वर इस उपन्यास के नायक के संबंध में लिखते हैं—

“कोई नायक या महानायक सामने नहीं था, इसलिए मुझे समय को ही नायक-महानायक और खलनायक बनाना पड़ा।”<sup>61</sup>

कुर्तुलऐन हैदर के उपन्यास ‘आग का दरिया’ के पात्रों के संबंध में डॉ० असलम आज़ाद एक जगह लिखते हैं—

“कुर्तुलऐन हैदर के पात्रों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उनके पात्रों में रूखापन नहीं है और न ही उनके जीवन के किसी एक पहलू पर विशेष ध्यान दिया गया है। उनके पात्रों में अवलोकन की गहराई है। उन्होंने उर्दू उपन्यासों के लिए नये तकनीकी प्रयोगों के रास्ते खोल दिये हैं।”<sup>62</sup>

कमलेश्वर और कुर्तुलऐन हैदर ने उपन्यास लेखन में शिल्प के नए प्रयोग किये। 'कितने पाकिस्तान' और 'आग का दरिया' दोनों ही उपन्यासों में 'समय' को विशेष महत्व प्राप्त है। कमलेश्वर ने अदीब या समय की अदालत में अतीत के गर्भ से ऐसे-ऐसे ऐतिहासिक पात्रों को सामने लाकर खड़ा कर दिया, जिनके जवाब हमारे उलझते हुए वर्तमान समाज की समस्याओं को सुलझाने के लिए आवश्यक हैं। जिनमें बाबर, ब्रिटिश शासन के आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया का डायरेक्टर जनरल ए० फ़्यूहरर, बाबर की बेटी गुलबदन बेगम, कश्मीर यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफ़ेसर मुशीर उल हक़, अरब अमीरात की सामाजिक समस्याओं का ओहदेदार मोहम्मद बिलाल, मोहम्मद अली जिन्ना, हिन्दुस्तान को विभाजित करने वाला माउंटबेटन, हिन्दुस्तान की भाषाओं को विभाजित करने वाला जॉन गिलक्रिस्ट, अंग्रेज़ी शिक्षा लागू करने वाला मैकाले आदि पात्रों के माध्यम से कमलेश्वर ने तद्युगीन समस्याओं की ओर संकेत करते हुए महत्वपूर्ण मुद्दों को सुलझाने का प्रयत्न किया है। इनके अतिरिक्त दाराशिकोह और औरंगज़ेब की आपसी लड़ाई, सत्ता के लिए संघर्ष, राजनीतिक षड़यन्त्र, रौशन आरा की दाराशिकोह के विरुद्ध की गई कूटनीतिक चालों के माध्यम से कमलेश्वर ने औरंगज़ेब, रौशन आरा तथा दाराशिकोह के चरित्र की व्याख्या की है। कमलेश्वर ने इन पात्रों के माध्यम से अपने मन की ऊहापोह, सामाजिक समस्याओं के प्रति अपनी चिन्ताओं तथा अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी है।

'आग का दरिया' में कुर्तुलऐन हैदर ने जिन पात्रों की रचना की वह प्रतीकात्मक हैं। गौतम नीलम्बर, हरिशंकर, चम्पक और कमाल यह चारों पात्र हर युग में सिर्फ़ नामों के थोड़े से परिवर्तन के साथ हमारे सामने आते हैं। कुर्तुलऐन हैदर ने इन पात्रों के माध्यम से हिन्दुस्तानी संस्कृति तथा प्रत्येक युग के दुख-दर्द, मनुष्य के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत कर दिया है।

'कितने पाकिस्तान' का पात्र अदीब स्वयं उपन्यासकार ही लगता है। उसकी चिन्ताएँ सहज मानवीय चिन्ताएँ हैं। वह मनुष्य जाति के हित की बात करता है। उपन्यास में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की आपसी लड़ाई के संबंध में चिन्ता व्यक्त करते हुए लिखता है—

“अगर यह हमला युद्ध में बदल गया तो, दोनों मुल्कों में नुकसान सिर्फ अवाम का है।”<sup>63</sup>

‘आग का दरिया’ के पात्र उच्च वर्ग के सभ्य और बुद्धिमान हैं, जो विभिन्न दर्शनों पर बातें करते हैं। हरिशंकर, गौतम से ‘समय’ के दर्शन पर बात करता हुआ कहता है—

“अपार समुद्र के किनारे मैंने द्वारिका के दर्शन किये। मैं मथुरा गया, ब्रह्मव्रत में हस्तिनापुर के खण्डहर मैंने देखे। गौतम मैंने अन्दाज़ा लगाया कि ‘वक्त’ बहुत खौफ़नाक चीज़ है। क्या तुम कभी वक्त के खौफ़ से डरे हो।”<sup>64</sup>

कमलेश्वर और कुर्रतुलऐन हैदर दोनों के उपन्यासों में ‘वक्त’ को बहुत महत्व दिया गया है। दोनों उपन्यासों की कहानी किसी एक मनुष्य की नहीं बल्कि एक पूरे समाज की है। ‘कितने पाकिस्तान’ में ‘समय’ की अपार शक्ति का विवेचन इन शब्दों में किया गया है—

“रास्ते की तलाश उसे खुद करनी थी और अपने समय में करनी थी। समय को वह फैला सकता था। समय को वह सिकोड़ सकता था।”<sup>65</sup>

“समय रेत की धारा की तरह बह रहा था। समय को इस तरह बहते देखना उसके लिए अजीब सा अनुभव था।”<sup>66</sup>

“.....वतन परस्ती से ज़्यादा ज़रूरी है मज़हब परस्ती! यह जुमला सुनकर वक्त ने सदमें भरी गहरी सांस ली...”<sup>67</sup>

समय निरंतर गतिशील होता है, वह किसी के लिए नहीं रुकता। कमलेश्वर अपने युग की समस्याओं से चिंतित थे और अपनी उन्हीं चिन्ता तथा समाज के प्रति अपने सरोकार को अभिव्यक्त किया।

कोई भी अदीब या लेखक अपने समय को अपनी रचनाओं में चित्रित करके उसे कैद कर लेता है। ‘समय’ बहुत शक्तिशाली होता है और जो हमेशा किसी न किसी रूप में कायम रहता है। कमलेश्वर ने ‘समय’ को एक शक्तिशाली, हस्सास तथा संवेदनशील पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। उस पर हर अच्छी और बुरी चीज़ का प्रभाव पड़ता है। मज़हब परस्ती का नाम सुनकर ‘समय’ को सदमा पहुँचा

क्योंकि मज़हब परस्ती ही अलगाववाद के दुख का कारण बनती है। इस प्रकार कमलेश्वर ने 'समय' का मानवीकरण करके उसे पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है।

'आग का दरिया' में कुर्रतुलऐन हैदर 'समय' की शक्ति का विवेचन इन शब्दों में करती हैं—

".....वक्त ने कहा, मुझे पहचानो। मैं तुम्हारा पीछा कभी नहीं छोड़ूँगा। तुम्हारा ख्याल था क्षण अपनी जगह कायम रहेंगे। लेकिन तुम्हारा यह ख्याल भी ग़लत था। मुझे देखो और जानो मैं जा रहा हूँ। पल-पल, छन-छन, पर्दों के पीछे ग़ायब होता जा रहा हूँ.....मुझे पहचानो मैं बराबर तुम्हारे साथ चलता रहूँगा। मैं तुमको कभी नहीं छोड़ूँगा। सारे इरादे मेरी वजह से खुद ब खुद पूरे होते चले जाते हैं। अभी तुम पर और मुसीबतें आएंगी। लेकिन मैं तुमको उनका मुकाबला करना भी सिखा दूँगा। अब मुझसे मेल कर लो मैं अब भी मौजूद हूँ"<sup>68</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर अपने उपन्यास में यह स्पष्ट करना चाहती हैं कि 'समय' के अनुरूप चलना ही समझदारी है। 'समय' ही दुख देता है फिर वही सुख देता है और प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति भी देता है। अतः समय के साथ चलते रहने वाले ही उन्नति के शिखर पर पहुँचते हैं, अपने लक्ष्य पर पहुँचते हैं।

'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने अनेक ऐतिहासिक व्यक्तित्वों को उनके मूल नाम के साथ अदालत में प्रस्तुत किया और वास्तविकता से लोगों को रूबरू कराके कशमकश और चिंता को दूर करने का प्रयत्न किया है।

कुर्रतुलऐन हैदर ने जिन पात्रों की रचना की वह एक युग और उस समाज का नमूना बनकर हमारे सामने आते हैं और अपने विशेष समाज का नेतृत्व करते हैं। गौतम नीलम्बर और अबुलमंसूर कमालउद्दीन क्रमशः प्राचीन हिन्दुस्तान और मध्यकाल के हिन्दुस्तान के प्रतीक हैं। प्राचीन युग हिन्दू धर्म और बुद्धमत और इस्लाम धर्म की पेचीदगियों से गुज़रते हुए मानवतावादी धर्म के प्रति आस्था व्यक्त करते हैं।



## ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास की भाषा :

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास में कमलेश्वर की भाषा किस प्रकार उभरी है, इसका अनुशीलन भी महत्वपूर्ण है। कमलेश्वर ने यथार्थ एवं प्रामाणिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए सूक्ष्म, अर्थगर्भित, ऊर्जायुक्त एवं अभिव्यंजनात्मक भाषा का प्रयोग किया है। कमलेश्वर की भाषा के संबंध में राजेन्द्र यादव अपने एक लेख ‘कितने पाकिस्तान : विशिष्ट योजना’ में इस प्रकार लिखते हैं—

“कमलेश्वर अपनी भाषा के लिए तो जाने ही जाते हैं। वो भाषा शान्ति से पढ़वाती है, नाटकीय है और बहुत ही **visual** है, वरना इतने गमगीन उपन्यास को पढ़ते चले जाना बहुत ही मुश्किल काम है। इस उपन्यास को कमलेश्वर सिर्फ अपनी भाषा के बल पर भी पढ़वा लेते हैं। इसे उपन्यास की सफलता ही कहा जाएगा।”<sup>69</sup>

भाषा की दृष्टि से यह उपन्यास उत्कृष्ट है क्योंकि कमलेश्वर ने इसमें विश्व की अनेक संस्कृतियों की व्याख्या करने के साथ-साथ विभिन्न ऐतिहासिक पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है। हरीश त्रिवेदी ‘कितने पाकिस्तान’ के संबंध में अपने लेख ‘विलक्षण और अद्भुत रचना’ में लिखते हैं—

“कितने पाकिस्तान ने शिल्प, शैली और भाषा के सभी सांचों को तोड़कर रचना की ऊर्जा को मुक्त किया है।”<sup>70</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ की भाषा में सांकेतिकता और प्रतीकात्मकता है। कमलेश्वर ने उपन्यास में स्थिति, समस्या तथा पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया। जिसमें उर्दू, अवधी, पंजाबी, तथा अँग्रेजी शब्द जगह-जगह आते हैं।

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास में कमलेश्वर ने संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, दर्शन, राजनीतिक दृष्टिकोण तथा मनुष्य जाति की समस्याओं का सफलतापूर्वक चित्रण किया है, जिसमें उनकी भाषा प्रभावपूर्ण दिखाई देती है।

उपन्यासकार ने उपन्यास के प्रारम्भ में अपने बीते हुए समय का चित्रण किया है। कस्बाई मानसिकता रूढ़ियों और बंदिशों में जकड़े हुए अरमान और पूरे होने से पहले टूट जाने वाले सपनों का उल्लेख कलात्मक भाषा में इस प्रकार करते हैं—

“मन ही मन कुछ अरमान करवटें लेते हैं। अनबूझी इच्छाएँ आती और चली जाती हैं.....और कस्बाई सपने छतों पर फैले कपड़ों की तरह धूप उतरते ही बटोर लिए जाते हैं। कुछ अनकहे धुँधले से अक्स स्मृतियों में उलझे रह जाते हैं, जो न घटते हैं न बढ़ते हैं। बस पानी के दाग की तरह वजूद के लिबास पर नक्श हो जाते हैं। उसके कस्बे का पूरा मुहल्ला, मोहल्ले की कई खिड़कियाँ भी उसे मौन हसरत से देखती दिखाई दी थीं।.....कभी—कभी बरसात के दिनों में लौटते हुए पावों के निशान दिखाई पड़ जाते थे। ज्यादा बारिश हुई तो निशान पहले तो डबडबाते, फिर देखते—देखते मिट जाते थे। वापस गए पैर फिर नज़र नहीं आते थे। कुछ आँखे थीं, जो कहना तो बहुत कुछ चाहती थीं, पर उन्होंने कभी कुछ कहा नहीं था। कहीं कोई काजल लगी आँख उलझी थी। किसी खिड़की में हल्की सी कोई परछाई।..... अजीब दिन थे। नीम के झरते हुए फूलों के दिन। कनेर में आती पीली कलियों के दिन। न बीतने वाली दोपहरियों के दिन। और एक के बाद एक, लगातार बीतते हुए दिशाहीन दिन।”<sup>71</sup>

इस उदाहरण में कमलेश्वर ने काव्यात्मक ढंग से किया है। अपने गुज़रे हुए दिनों और जहाँ से वह आया है उस वातावरण का चित्रण विभिन्न सटीक उपमाओं के माध्यम से किया है। उनकी भाषा की कलात्मकता का एक चित्र इस प्रकार है—

“चारों तरफ़ बियाबान रेगिस्तान..... उड़ती गर्म रेत के बगुले और बालू की लहरों से बनते और बिगड़ते टीले.....चलना अपनी जगह है और पहुँचना अपनी जगह..... इसका सबूत हैं यह ठहरी हुई सदियाँ, जो लाखों करोड़ों बरस पहले चली थीं.....बीच—बीच में उन्हें मज़हब के पड़ाव मिले और उन पड़ावों ने फिर उन्हें उसी बियाबान रेगिस्तान में पहुँचा दिया.....।”<sup>72</sup>

धर्म के नाम पर होने वाले द्वन्द्व, द्वेष ने किस तरह तपते हुए रेगिस्तान में पहुँचा दिया है जहाँ प्रेम सौहार्द की शीतलता नाम को नहीं है, उसका प्रतीकात्मक चित्रण किया गया है। जो उनकी भाषा में कलात्मकता पैदा करती है। कमलेश्वर ने उपन्यास में पात्रों के मनोभावों जैसे टूटन, चिंता, दर्द तथा अकेलेपन आदि की सफल अभिव्यंजना की है।

कमलेश्वर ने उपन्यास में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग जगह—जगह किया है। राम मन्दिर विवाद को लेकर पूरा देश घृणा की आग में जलता रहा है परन्तु वह भूमि जिसे रामजन्म भूमि घोषित किया गया, उस फैज़ाबाद में जन जीवन किस

तरह सामान्य दिखाई देता है, उसका चित्रण कमलेश्वर व्यंग्यात्मक शब्दों में इस प्रकार करते हैं—

“खून से नहाई या गोलियों की बौछार से छिदी कोई दीवार कराहते हुए अपनी कहानी सुनाने नहीं आई।.....सब बच्चों के खिलौने एक से थे। रबर की छोटी-छोटी चप्पलें वह नीली, हरी या बादामी। उनकी ज़िंदों के ढंग भी एक से थे। सब उसी तरह पत्ते पर चाट खा रहे थे और पान खाके बुर्के वाली सुंदरियों के ओंठ उसी तरह हल्के गुलाबी से रचे हुए थे जैसे गुड़हल के फूलों के।”<sup>73</sup>

उपर्युक्त उदाहरण में व्यंग्य की ध्वनियों को सुना जा सकता है। इसके अतिरिक्त उपन्यास में आक्रोश की स्थिति को भी देखा जा सकता है जब एक स्थान पर अदीब अपनी अदालत में केवल मुर्दों की फरियाद सुनता है और ज़िन्दा या अधमरे लोगों की बातें नहीं सुनता है, तब अर्दली गुस्से में कहता है—

“अर्दली तमतमा उठा— अगर आप ज़िन्दा या अधमरों की बात नहीं सुनेंगे तो मरने वालों की तादाद बढ़ती जाएगी....खून बटोरने से काम नहीं चलेगा.....खून का खुला हुआ नल बंद कीजिए।”<sup>74</sup>

उपन्यास में बाबरी मस्जिद विवाद पर अदीब की अदालत में एक त्रिशूलधारी आक्रोशित होकर कहता है—

“बाबर बर्बर था। दरिदा था..... उसने आते ही अयोध्या में हमारा राम जन्म भूमि मन्दिर तोड़ा था और वहाँ बाबरी मस्जिद बनवाई थी। पाकिस्तान बनना तो उसी दिन से शुरू हो गया था! त्रिशूलधारी भभक पड़ा।”<sup>75</sup>

इन उदाहरणों में कमलेश्वर ने आक्रोश की भावना को अभिव्यक्त करने के लिए आक्रामक भाषा का प्रयोग किया है।

कमलेश्वर ने उपन्यास के प्रत्येक दृश्य को जिन शब्दों पर ख़त्म किया है, उन्हीं शब्दों से अगला दृश्य प्रारंभ किया है। इससे कथा में तारतम्यता उत्पन्न होती है, उदाहरण के लिए प्रथम दृश्य के अन्त में आए हुए शब्द और दूसरे दृश्य का प्रारंभ एक जैसे शब्दों से हुआ है—

“हुआ यह था कि.....।”<sup>76</sup>

“हुआ यह था नहीं.....सर! पहले यह सुनिए कि हुआ क्या है.....।”<sup>77</sup>

छठे दृश्य को सातवें दृश्य से जोड़ने के लिए कमलेश्वर अद्भुत कौशल से काम लेते हैं—

“.....प्रेम की शाश्वत कहानी तब से साँस ले रही है!”<sup>78</sup>

“उसी कहानी में शामिल है बूटा सिंह और रेत परी की यह कहानी।”<sup>79</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास में कमलेश्वर की भाषा कई जगह रोमानी भी हो गई है। जैनब और बूटा सिंह के संबंध में इस रोमानियत को देखा जा सकता है—

“लड़की ने उसे एक बार भरपूर नज़रों से देखा। बूटा सिंह ने भी कंधे से दाढ़ी खुजलाने का बहाना करते हुए, उसे उसी तरह भरपूर नज़रों से देखा। आखिर लड़की के ओठों पर हल्की सी मुस्कान आई और उसने आँखें नीची कर लीं। गर्दन तक रेत में दबी वह रेतपरी सी लग रही थी।”<sup>80</sup>

कमलेश्वर की भाषा की एक मुख्य विशेषता उसकी सूत्रात्मकता है। उपन्यास में अनेक ऐसे वाक्य हैं, जिनमें अर्थ की अनेक पतें हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

“अदीब तो सदियों का फ़ासला तय करता है.....।”<sup>81</sup>

एक अदीब एक लेखक सदियों को जीता है, वह दूरदर्शी होता है और अपनी रचनाओं के माध्यम से भूतकाल को भविष्य से जोड़कर वर्तमान की व्याख्या करता है। उपन्यासकार ने उपन्यास में ग़रीबी और शोषण का भी मुद्दा उठाया है। लेखक का मानना है कि ग़रीब और शोषित लोग तो हर जाति और हर नस्ल में मौजूद हैं, ग़रीबी कोई जाति या नस्ल देखकर नहीं आती। उपन्यास में अदीब एक स्थान पर कहता है—

“ग़रीबी और भूख की कोई नस्ल नहीं होती!”<sup>82</sup>

इसी प्रकार कमलेश्वर ने उपन्यास में बड़ी-बड़ी बातों को सूक्तियों के माध्यम से बड़े आकर्षक ढंग से पाठक के सामने रख दिया है। लेखक ने उपन्यास में ‘पाकिस्तान’ शब्द को ‘नफ़रत’ और ‘घृणा’ के अर्थ में जगह-जगह प्रयुक्त किया है। वह कहता है—

“पाकिस्तान एक नफ़रत का नाम है।”<sup>83</sup>

हिन्दुस्तान के विभाजन का जिम्मेदार मोहम्मद अली जिन्नाह को ठहराया जाता है। लेकिन कमलेश्वर इतिहास का अध्ययन करके, ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर इस परिणाम पर पहुँचे हैं, कि—

“जिन्ना ने इतिहास नहीं बनाया....साम्राज्यवादी ताकतों के इतिहास ने जिन्ना को बनाया।”<sup>84</sup>

हिन्दुस्तान के विभाजन की घटना अपने साथ दुख और अशान्ति का श्राप लेकर आयी। विभाजन के कारण ही आपसी प्रेम घृणा में बदल गया, खुशी दुख में परिवर्तित हो गई। एक दूसरे के प्रति घृणा, आक्रोश चारों ओर फैल रहा है। उपन्यास में सलमा अदीब से कहती हैं—

“तक्सीम न होता तो पूरी कायनात बहुत खूबसूरत होती!”<sup>85</sup>

कमलेश्वर की सूत्रात्मक भाषा उनकी कड़वाहट, विवशता, चिंतन—मनन को अभिव्यक्त करती है। वे कहीं—कहीं व्याख्यात्मक, कहीं व्यंग्यपरक तो कहीं चरित्र की पहचान करने के लिए प्रयोग में लायी गयी हैं। अप्रत्यक्ष रूप से वे लेखक की उपस्थिति का एहसास दिलाती हैं। यह सूत्र उपन्यास में कहीं—कहीं दार्शनिक तत्त्व भी उत्पन्न करते हैं।

कमलेश्वर ने ‘कितने पाकिस्तान’ में ‘समय’ को गतिशीलता का प्रतीक माना है, जो किसी के लिए नहीं ठहरता। ‘समय’ को गतिशील बताते हुए वह लिखते हैं—

“.....समय रेत की धारा की तरह बह रहा था।”<sup>86</sup>

कमलेश्वर समय को रेत की धारा की तरह बहता हुआ कहते हैं जो अशान्त वातावरण का प्रतीक है। ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास में अदीब ‘समय’ से कहता है—

“ऐ समय..... तुम कहाँ हो ?

— बोलो ! वक्त ने कहा।

जब तुमने मुझे इतिहास में दाखिल होने का वरदान दे ही दिया है तो

मेरी एक मदद करो.....

— या ? वक्त ने कहा

— यही कि इतिहास के नीचे जो इतिहास दबा है,.....

उस अमूर्त, अदृश्य, आकारहीन सत्य को मैं कैसे देखूँ ?

— अदीब ! मैं तो अंदेखा सिलसिला भर हूँ जिसे तुम्ही ने महाकाल जैसा सर्वशक्तिशाली नाम दिया है.....तुम्ही ने मुझे सर्वशक्तिमान और सतत् बनाया है।<sup>87</sup>

इस प्रकार 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने 'समय' को फैंटेसी के रूप में प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में हिन्दी भाषा के साथ-साथ उर्दू अंग्रेजी तथा पंजाबी भाषा के शब्दों का भरपूर प्रयोग किया है। पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग कमलेश्वर की विशेषता है। पंजाबी पात्रों के मुख से पंजाबी सुनने को मिल जाती है—

“ओंकार.....ओंकार.....सत्नाम’

“जो बोले सो निहाल, सत्सिरी अकाल,”<sup>88</sup>

अवधी बोलने वाले पात्रों के मुख से अवधी भाषा भी सुनायी देती है—

“कउन मीरबाकी तासकंदी ? ई सनेहुआ गाँव है.....पूछना होय “ते तासकंद गाँव में जाके पूछो। इहाँ का पूछते हो!” ई कौनउ गलत काम नाहीं करिहें.....अब बात ई है साहब कि हम यहाँ चैन से रहते हैं.....पूरा गाँव मुसलमानन का है.....इसमें शिया भी हैं और सुन्नी भी.....।”<sup>89</sup>

इस प्रकार 'कितने पाकिस्तान' की भाषा सहज, गत्यात्मक, प्रतीकात्मक, विषयानुकूल और पात्रानुकूल कला के उच्च शिखर को छूती हुई दिखाई देती है।

**‘आग का दरिया’ उपन्यास की भाषा :**

‘आग का दरिया’ उपन्यास में कुर्तुलऐन हैदर की भाषा और शिल्प का श्रेष्ठ रूप देखने को मिलता है। भावानुकूल-पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग उनके उपन्यास को रचनात्मक सौन्दर्य प्रदान करता है। इसकी शैली यथार्थवादी, रोमांटिक वातावरण और भाषा की काव्यात्मकता एवं रचनात्मक प्रयोग आदि उसकी कई नई तकनीकें हैं, जो एक जगह किसी एक उपन्यास में मौजूद हैं। भाषा और तकनीक की इस नवीनता के कारण ही उपन्यास को प्रसिद्धि मिली। इसकी भाषा शैली दिलचस्प और आकर्षक है क्योंकि इसमें प्राचीन और आधुनिक हिन्दुस्तान की

सामासिक संस्कृति का सुन्दर चित्रण किया गया है। कुर्तुलऐन हैदर की भाषा काव्यात्मकता से परिपूर्ण है। उन्होंने मनुष्य की आन्तरिक बेचैनी, मानसिक पीड़ा को कलात्मकता के साथ उपन्यास में प्रस्तुत किया है। विभिन्न मतवाद, धर्म, दर्शन और सम्प्रदाय किस तरह व्यक्ति को खण्ड-खण्ड करते हैं इस उदाहरण में कलात्मक ढंग से इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं—

“बासठ विभिन्न दृष्टिकोण और जीवन एक है और इंसान अकेला है।”<sup>90</sup>

“किनारे पर पत्थर बिखरे थे। समय गतिशील था। समय पत्थर में जमा हुआ था।”<sup>91</sup>

पत्थर ठोस और कठोर होता है इसलिए उपन्यासकार ने उसे अतीत का प्रतीक माना है। इन उदाहरणों में काव्यात्मकता दिखाई देती है। ‘आग का दरिया’ की भाषा में प्रतीकात्मकता है। कुर्तुलऐन हैदर ने उपन्यास में युग, समय, स्थिति, पात्रों तथा उपन्यास की मॉग के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है।

‘आग का दरिया’ में कुर्तुलऐन हैदर ने प्राचीन युग को दिखाने के लिए कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जिससे वह पूरा वातावरण अपने युग तथा समय के साथ हमारी आँखों के सामने मूर्त हो जाता है। जैसे—

“.....घाट पर कश्तियाँ खड़ी थीं और बरगद के नीचे किसी मनचले मल्लाह ने ज़ोर-ज़ोर से सावन अलापना शुरू कर दिया था....।”

“.....कोई विद्यार्थी जान पड़ता है.....।”

“.....किसी नए धर्म का अविष्कार कर लेते हैं या किसी नए फलसफ़े का प्रचार शुरू कर देते हैं.....।”<sup>92</sup>

उपन्यास का प्रारम्भ एक ऐसे दृश्य से होता है, जहाँ नदी के पास घाट पर कश्तियाँ खड़ी थीं, क्योंकि प्राचीन युग में लोग नदी को पार करने के लिए कश्तियों का प्रयोग करते थे। लेकिन शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को नदी तैर कर पार करना पड़ती थी। प्राचीन युग में विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करना पड़ता था। उन्हें भिक्षा पर गुज़ारा करना पड़ता था। उपन्यास में गौतम भिक्षा लेने के लिए एक घर में जाता है। उस दृश्य का वर्णन कुर्तुलऐन हैदर इन शब्दों में करती हैं—

“मन्दिर बहुत पुराना था.....कोई पिरोहित या पुजारी भी दिखाई न दिया.....एक लिपे पुते कच्चे मकान के द्वार पर रौशनी जल रही थी।’

“अधेड़ उम्र का गृहस्त गौतम की आवाज़ सुनकर उसे शाक्यमुनि का कोई भिक्षु समझा।....गृहस्त ने चिराग बरामदे की मुन्डेर पर रखा और अपनी बीबी को आवाज़ दी.....रुक्मणी एक ब्राह्मण ब्रह्मचारी हमारे द्वार पर आए हैं।”<sup>93</sup>

प्राचीन युग में किताबें भोजपत्र, रेशम और ताँबे की तख्तियों पर लिखी जाती थीं, जिसका चित्रण कुर्तुलऐन हैदर इन शब्दों में करती हैं। जिससे हमारे सामने प्राचीन युग का वातावरण जीवंत हो जाता है—

“भोजपत्र, रेशम और ताँबे की तख्तियों पर लिखी हुई किताबों का जो अंबार चारों तरफ बिखरा पड़ा था उसे समेट कर एक कोने में रखा।”<sup>94</sup>

इसी प्रकार मध्य युग का चित्रण करने के लिए कुर्तुलऐन हैदर ने कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जिससे हमारा जेहन सीधे मध्य युग में पहुँच जाता है। मध्य युग भक्ति काल कहलाता है इस युग में विभिन्न भक्ति की परम्पराएँ चल रही थीं। कुर्तुलऐन हैदर ने इस युग के वर्णन में कुछ इस प्रकार के शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया है—

“सच्चाई साबित करने वाले हम और तुम कौन हैं वह तो सत्य पीर है जो सब झूट सच का फैसला करता है— कहे कबीर इक राम जपोरी, हिन्दू तुर्क न कोई।”<sup>95</sup>

‘कहे कबीर इक राम जपोरी’ इस वाक्य से हमें भक्ति काल का अंदाज़ा होता है। इस समय कबीर की निर्गुण भक्ति का प्रभाव छाया हुआ था। अधिकतर लोग इस ओर आकर्षित हो रहे थे। अबुलमंसूर कमालउद्दीन भी कबीर के विचारों से प्रभावित होता है। कमालउद्दीन चम्पा से पूछता है—

“उधर झोपड़ियों में कौन रहता है?”  
उनमें सूफी लोग रूहते हैं— भक्त।”<sup>96</sup>

कुर्तुलऐन हैदर कबीर की निर्गुण भक्ति की प्रसिद्धि का चित्रण इन शब्दों में करती हैं—



“सारे में मियाँ कबीर की शोहरत फैली थी। उनकी बानियाँ किसानों और जहिलों की ज़बान पर थीं। दूर-दराज़ से लोग उनकी ओर खिंचे चले आते थे।”<sup>97</sup>

‘आग का दरिया’ उपन्यास में कुर्रतुलऐन हैदर ने बंगाल का चित्रण करने के लिए पात्र का नाम भी बंगला भाषा के उच्चारण के अनुरूप कर दिया है। अबुलमंसूर कमालउद्दीन के मरने के बाद अबुलमंशूर कमालउद्दीन सामने आता है—

“ओ आदमी— क्या नाम है तुम्हारा ?  
अबुलमंशूर— साहब !”<sup>98</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने पात्रों के मनोभावों की अभिव्यंजना के लिए भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उपन्यास में जब चम्पक, गौतम नीलम्बर को मिलती है, उस समय उसकी शादी हो चुकी थी। उसकी भावनाओं को कुर्रतुलऐन हैदर इस प्रकार व्यक्त करती हैं—

“वह आप ही आप चुपके-चुपके आँसू पीती रही। एक इंसान ने दुनिया त्यागी फिर भी उसकी याद दिल से न हटा सका।”<sup>99</sup>

उपन्यास में जब कमाल रज़ा दोबारा पाकिस्तान जाता है, उस समय उसकी मानसिक कशमकश, अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके वतन छोड़ने के दर्द का इस प्रकार चित्रण किया है—

“मैं अब पाकिस्तान में हूँ। हिन्दुस्तान से आया हूँ।

मुहाजिर, यू. पी. का मुसलमान।

मुहाजिर शरणार्थी.....जब ट्रेन ने बॉर्डर क्रॉस किया तो वह जो इतने दिनों से अपनी सारी हिम्मत खर्च करके अपने आँसू रोक रहा था, खम्बे के पास एक सरदार जी को बन्दूक ताने खड़े देख कर बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगा। फिर उसने महसूस किया कि उसका सहात्री, जो पुलिस अफसर था और अमृतसर से वापस जा रहा था, उसे गौर से देख रहा है।.....उसे महसूस हुआ जैसे सारी दुनिया की आँखें उसकी तरफ़ लगी हैं—तुम हिन्दुस्तानी हो, हिन्दुस्तानी जासूस.....जासूस...ग़द्दार....।”<sup>100</sup>

‘आग का दरिया’ की भाषा में चित्रात्मकता का गुण भी देखने को मिलता है। प्राचीन युग में जब गौतम नीलम्बर एक प्राचीन मन्दिर के पास पहुँचता है, उसका चित्रण कुर्रतुलऐन हैदर इस प्रकार करती हैं—

“मन्दिर बहुत पुराना था। आस पास गौतम को कोई पिरोहित या पुजारी भी दिखाई न दिया। मन्दिर की सीढ़ियाँ उतरकर वह गाँव की ओर बढ़ा सरजू के पार अयोध्या की रौशनियाँ जुगनू की तरह झिलमिला रही थीं। बारिश की धुँध में सारा दृश्य नीला और ऊदा सा दिखलाई देता था जिसमें नारंगी रंग की धारियाँ फैल गयी थीं।”<sup>101</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर प्रयाग जाने वाले एक जहाज़ का चित्र इन शब्दों में खींचती हैं—

“दरिया पर रौशनियाँ जगमगा उठीं। लंगर उठाया गया। मल्लाह तेज़ आवाज़ों में गा रहे थे। कमाल एक कोने में बैठा रहा। वह जहाज़ प्रयाग जा रहा था। प्रयाग जो काशी से आगे था। पवित्र गंगा बहुत दूर से बहती हुई आ रही थी। उसके एक सिरे पर अथाह समुंद्र था। कमाल ने आँखें बन्द कर लीं। दिन गुज़रते गए, कश्ती गंगा की सतह पर आगे बढ़ती रही। मुसाफ़िरों से भरी हुई कश्ती में बड़ी चहल-पहल थी। भागलपुर के करीब एक गाँव से बाराती दुल्हन का सुर्ख़ डोला लेकर कश्ती में सवार हुए। दूल्हे ने पीला जोड़ा पहन रखा था। दुल्हन लम्बा सा घूँघट काढ़े थी। उसके पैरों में चाँदी के बिछुए थे और उसके मेहंदी से रचे हाथों में चूड़ियाँ और हाथी दाँत के कड़े खन-खन बोलते थे और वह चहकू-पहकू रो रही थी। बाराती हल्लड़ मचा रहे थे।”<sup>102</sup>

यहाँ किस सुन्दरता के साथ कुर्रतुलऐन हैदर ने गंगा, उसमें चलती हुई एक कश्ती और यात्रियों का चित्रण किया है। उनकी भाषा में सजीवता का गुण भी विद्यमान है। उनकी भाषा की सजीवता को हम निम्न उदाहरण में देख सकते हैं—

“मद्धम सी रौशनी सारे में फैल गयी। पूर्णिमा का चाँद खण्हर की टूटी हुई छत में से नीचे झाँक रहा था और उसकी किरणों ने लाल पत्थर के टूटे फ़र्श पर अजीब-अजीब कोण बना दिये थे। फ़र्श पर तरह-तरह के अस्पष्ट चिन्ह बने थे, जिनको सैकड़ों बरसातों ने मिटाकर बहुत धुँधला कर दिया था।”<sup>103</sup>

‘आग का दरिया’ की भाषा में सूत्रात्मकता तथा प्रतीकात्मकता है। भाषा की प्रतीकात्मकता को हम इस उदाहरण में देख सकते हैं—

“वक्त का रेला पानी को बहाए लिए जाता था। चारों ओर फैलाव था। पत्थर को अपनी पकड़ में लेकर उसे एक क्षण के लिए अपनी सुरक्षा का एहसास हुआ क्योंकि पत्थर, जिसका अतीत से संबंध है, आने वाले समय में भी ऐसा ही रहेगा।”<sup>104</sup>

यहाँ पत्थर अतीत का प्रतीक है जो ठोस और कठोर है इसलिए अपरिवर्तनशील है और पानी वक्त का प्रतीक है जो तरल होता है और निरंतर गतिशील रहता है। उपन्यास में कुरतुलऐन हैदर ने 'समय' को शक्तिशाली और जानदार पात्र के रूप में लिया है। 'आग का दरिया' में कुरतुलऐन हैदर ने 'दरिया' को 'समय' के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। वह कहती हैं—

**"दरिया बहता हुआ वक्त है।"<sup>105</sup>**

'आग का दरिया' में कुरतुलऐन हैदर ने सूत्रात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। बड़ी से बड़ी बातों को सूत्र के माध्यम से प्रस्तुत कर देती हैं—

**"नाम मिट जाते हैं इंसान जिंदा रहता है।"<sup>106</sup>**

उपन्यास में एक पण्डित कमाल को हिन्दुस्तान के गुजरे हुए राजाओं के बारे में बताता है। वह कहता है कि यहाँ अनगिनत चक्रवर्ती राजा हुए हैं चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक प्रिय दर्शन लेकिन उनसे भी पहले बड़े-बड़े चित्रकार, संगतराश रहते थे। जिनके नाम मालूम नहीं, क्योंकि नाम मिट जाते हैं केवल इंसान अपनी आने वाली नस्लों के रूप में जिन्दा रहते हैं।

उपन्यास में कमाल सूफियों से बहुत प्रभावित होता है। वह सोचता है कि धर्म जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन प्रेम धर्म से ऊपर है क्योंकि इसमें सुकून है, शान्ति है। वह कहता है—

**"मुहब्बत असल शै है।"<sup>107</sup>**

कमाल को चम्पा की याद आती है, लेकिन उसने एक शूद्र लड़की शीला से शादी कर ली थी। उसके साथ वह सुकून से रहता था, क्योंकि उसकी नज़र में सुकून और शान्ति ही असल चीज़ है। कमाल को चम्पा नहीं मिली, लेकिन उसकी याद उसको निरंतर सताती रहती है। कुरतुलऐन हैदर लिखती हैं—

**"याद जिन्दगी का सबसे बड़ा अज़ाब है।"<sup>108</sup>**

'आग का दरिया' में कुरतुलऐन हैदर ने नदी को विशेष महत्व दिया है। जिस प्रकार समय गतिशील है, उसी प्रकार नदी भी गतिशील है। वह लिखती हैं—

“नदी ने अपनी यात्रा जारी रखी।”<sup>109</sup>

‘आग का दरिया’ में कुर्तुलऐन हैदर ने मनुष्य की स्वाभाविक अनुभूतियों, उनके भावों और प्रेम का भी चित्रण किया है। इसका चित्रण करने में उनकी भाषा भी रोमानी हो जाती है—

“सुनो चम्पावती मुझसे ब्याह कर लो।

.....क्या कोई लड़की किसी आदमी को खुद पसन्द नहीं कर सकती?  
चम्पा ने आश्चर्य से पूछा। और फिर उसने कहा था—अच्छा  
यह बताओ तुम हमसे बड़ी मुहब्बत करते हो न।’  
करता क्यों नहीं हूँ।’ तो फिर इतनी घबराहट काहे की।”<sup>110</sup>

इस प्रकार हमें कुर्तुलऐन हैदर की भाषा में रोमानियत के गुण भी देखने को मिलते हैं। ‘आग का दरिया’ उपन्यास की भाषा विषयानुकूल, पात्रानुकूल और भावानुकूल है। युग, समय, तथा पात्र और स्थिति के अनुकूल शब्दों का चुनाव किया है। उर्दू भाषा की उपन्यासकार होते हुए भी अँग्रेजी और हिन्दी शब्दों पर उनकी गहरी पकड़ दिखाई देती है जो उनके भाषा ज्ञान का परिचायक है।

‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन :

कुर्तुलऐन हैदर का उपन्यास ‘आग का दरिया’ उर्दू साहित्य की क्लासिकल कृति है तो कमलेश्वर का ‘कितने पाकिस्तान’ हिन्दी साहित्य का चर्चित उपन्यास है। दोनों ही उपन्यासों की भाषा पात्रानुकूल, भावानुकूल, विषयानुकूल तो है ही प्रतीकात्मक और सांकेतिक भाषा का भी सर्वोत्तम उदाहरण है।

दोनों ही उपन्यास पारम्परिक उपन्यासों से भिन्न हैं। कमलेश्वर तथा कुर्तुलऐन हैदर दोनों ही उपन्यासकारों ने अपने-अपने स्तर पर शिल्प का नया प्रयोग किया है। ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास के संबंध में विष्णु प्रभाकर कहते हैं—

“कमलेश्वर ने उपन्यास के बने-बनाए ढाँचे को तोड़ दिया है और लेखकीय अभिव्यक्ति के लिए सब कुछ सम्भव बनाने का दुर्लभ द्वार खोल कर एक नया रास्ता दिखाया है।”<sup>111</sup>

कुर्रतुलऐन हैदर ने पश्चिमी उपन्यासों की नवीन तकनीक को अपने उपन्यासों में प्रयोग किया है। उर्दू आलोचक वकार अज़ीम उनकी इस तकनीक की ओर इस प्रकार संकेत करते हुए कहते हैं—

“उनके उपन्यासों का शिल्प उपन्यास लेखन की आधुनिक शैली का सफल उदाहरण है, जिसमें घटनाओं और उनके विकास से अधिक इन्सान के जीवन और उसकी मानसिक और जज़्बाती कैफ़ियतों के चित्रण को कहानी समझा जाता है। इस शिल्प ने प्लाट की वह कल्पना बाकी नहीं रखी जिसमें घटनाओं की एक कड़ी से जुड़कर एक पूर्ण जंजीर बन जाती है।”<sup>112</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ में कमलेश्वर ने देश के विभाजन को विश्व मानवता के विभाजन के दुख के प्रतीक के रूप में अभिव्यक्त किया है। विभाजन की मंजूरी के समय में वक्त भी थम गया था। कमलेश्वर लिखते हैं—

“इतिहास रूका हुआ था, उसे कोई पछतावा नहीं था। पछताता तो इंसान है, इतिहास नहीं।”<sup>113</sup>

‘आग का दरिया’ उपन्यास के पात्र दार्शनिक हैं। उनकी वार्तालाप में दर्शन सजीव हो उठता है। गौतम नीलम्बर और हरिशंकर की वार्तालाप इसका प्रमाण है—

“हरिशंकर कहता रहा, भाषा और शब्द वादे करते हैं जो निभाए नहीं जाते। विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं, जिनका कोई अर्थ नहीं।”<sup>114</sup>

आधुनिक युग में एक बार फिर यही गौतम और हरिशंकर ‘शब्द’ के दर्शन पर बात करते हैं—

“शब्द, दुख भुलाते नहीं, दुख और गहरा करते हैं—गौतम ने जवाब दिया। ‘ख़ामोशी सबसे बेहतर है। इसी लिए लोग मुनि हो जाते हैं। ख़ामोश रहते हैं’—हरिशंकर ने कहा।”<sup>115</sup>

‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ दोनों की भाषा में प्रतीकात्मकता दिखाई देती है।

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास में ‘पाकिस्तान’ ‘नफ़रत’ का प्रतीक है। वह कहते हैं—

“पाकिस्तान एक नफ़रत का नाम है।”<sup>116</sup>

तो कुर्रतुलऐन हैदर के यहाँ विभाजन का दुख 'आग का दरिया' का प्रतीक है। 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने 'समय' को गति का प्रतीक माना है, क्योंकि समय हमेशा गतिमान रहता है। वह किसी के लिए नहीं रुकता। वह कहते हैं—

“समय रेत की धारा की तरह बह रहा था।”<sup>117</sup>

'आग का दरिया' में भी कुर्रतुलऐन हैदर ने 'दरिया' को 'समय' का प्रतीक माना है। वह कहती हैं—

“दरिया बहता हुआ वक्त है।”<sup>118</sup>

जो कभी रुकता नहीं, जो कभी किसी के लिए ठहरता नहीं—

“समय को विभिन्न भागों में कैंद कर लिया गया है मगर वह पल-पल छिन-छिन इस कैंद को तोड़ता हुआ चुप-चाप आगे निकलता जाता है।”<sup>119</sup>

इस प्रकार कमलेश्वर और कुर्रतुलऐन हैदर दोनों के उपन्यासों में भाषा की प्रतीकात्मकता में शब्दों की समानता है। कमलेश्वर ने 'समय' को पानी की धारा की तरह बहता देखा तो 'आग का दरिया' में वह कैंद को तोड़ता हुआ चुप-चाप आगे निकलता जाता है।

'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' दोनों ही उपन्यासों की भाषा में भावात्मकता भी दिखाई देती है। 'कितने पाकिस्तान' में एक जगह सलमा अदीब से कहती है—

“मेरा सुख और मेरा पूरापन यही है.....यह अगर आपको नहीं बता पाऊँगी तो किसे बताऊँगी.....शायद इतना हक् तो मुझे है.....कि मैं खुद के लिए, खुदा के लिए और सोहराब के लिए ईमानदारी से जीती रहूँ.....गुनाह वहाँ हैं जहाँ फरेब या बेईमानी है। मैं आपके साथ सोहराब के लिए और खुदा के सामने एक खुली ज़िन्दगी जीना चाहती हूँ..... कहते हुए वह उठी, उसकी आँखों में जुगनू से चमक रहे थे।”<sup>120</sup>

इसी प्रकार 'आग का दरिया' में विभाजन के बाद कमाल पाकिस्तान से हिन्दुस्तान लौटता है और चम्पा से मिलने मुरादाबाद जाता है। तब उसे वहाँ अजनबीपन महसूस होता है। दुख के दरिया में डूबकर वह भरपूर कोशिश के बाद बाहर निकल

आया है। पीड़ा के साथ हालात ने उसे जीना सिखा दिया है। उसकी इस मनोदशा का चित्रण उपन्यास में इस प्रकार किया गया है कि भाषा भावात्मक हो उठी है—

“वह इस समय एक अजनबी शहर में एक नीम तारीक जीने पर बैठा था। दरिया पर से आती हुई हवा उसके बालों को परेशान कर रही थी। वतन की बरसात, मगर यह वतन नहीं था। उसके वीजे की अवधि ख़त्म होने वाली थी। कल सवेरे वह यहाँ से अपने देश खाना हो जाएगा। मुरादाबाद, कठघर, सह जीना, चम्पा अहमद, ज़ेबा, मरियम, चा अब्बा सब यहीं रह जाएंगे क्या इस सच्चाई पर उसे आँसू बहाना चाहिए ? लेकिन अब उसे महसूस हुआ .....कि उसमें ज़ब्त आ गया है.....।”<sup>121</sup>

इस प्रकार ‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ दोनों उपन्यासों की भाषा में भावात्मकता, प्रतीकात्मकता, दार्शनिकता, चित्रात्मकता तथा सजीवता है। इन दोनों ही उपन्यासों का शिल्प नवीन है। कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर दोनों ने ही अपने-अपने उपन्यासों में ‘समय’ के साथ नए प्रयोग किये हैं। दोनों ने ही ‘समय’ को एक जीवंत और शक्तिशाली पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है

## सन्दर्भ सूची :

1. संपा० प्रदीप माँडव, विरासत के अलम्बरदार, यश पब्लिकेशन, गाँधी नगर, दिल्ली, पृष्ठ 275
2. वही, पृष्ठ 285
3. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2007 ई०
4. संपा०, प्रदीप माँडव, विरासत के अलम्बरदार, यश पब्लिकेशंस, गाँधी नगर, दिल्ली, पृष्ठ 175—176
5. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2007 ई०, पृष्ठ 23
6. संपा० प्रदीप माँडव, विरासत के अलम्बरदार, यश पब्लिकेशंस, गाँधी नगर, दिल्ली, पृष्ठ 264
7. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2007 ई०, पृष्ठ 122
8. वही, पृष्ठ 225
9. वही, पृष्ठ 73
10. वही, पृष्ठ 244
11. वही, पृष्ठ 121
12. वही, पृष्ठ 139
13. सकरेता पाल, तुलुए आफ़कार, कुर्तुलऐन हैदर से इंटरव्यू कराँची, मई, 1988 ई०, पृष्ठ 11
14. प्रो० मुहीउद्दीन बम्बईवाला, कुर्तुलऐन हैदर एक मुताला, मॉडर्न पब्लिशिंग हाउस, दरिया गंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 56, 1999 ई०
15. वही, पृष्ठ 57
16. हैदर, कुर्तुलऐन, आग का दरिया, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 484—485



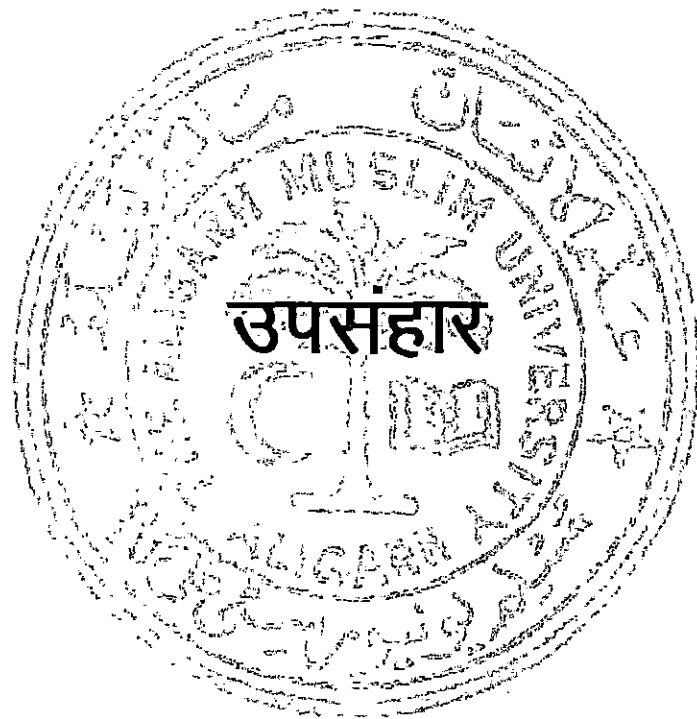
17. वही, पृष्ठ 402
18. हैदर, कुर्रतुलऐन, आग का दरिया, ऐजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 12
19. वही, पृष्ठ 13
20. वही, पृष्ठ 90
21. वही, पृष्ठ 116
22. वही, पृष्ठ 630
23. वही, पृष्ठ 165—166
24. वही, पृष्ठ 10—15
25. वही, पृष्ठ 782—784
26. वही, पृष्ठ 11—12
27. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2007, पृष्ठ 1
28. हैदर, कुर्रतुलऐन, आग का दरिया, ऐजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 11—12
29. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 106—107
30. आग का दरिया, पृष्ठ 429
31. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2007, पृष्ठ 9
32. वही, पृष्ठ 361
33. आग का दरिया, पृष्ठ 13
34. वही, पृष्ठ 637
35. वही, पृष्ठ 14
36. वही, पृष्ठ 641
37. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 285
38. वही, पृष्ठ 63—64

39. वही, पृष्ठ 213
40. वही, पृष्ठ 240
41. विरासत के अलम्बरदार, पृष्ठ 273
42. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 56
43. वही, पृष्ठ 56
44. वही, पृष्ठ 70
45. वही, पृष्ठ 72
46. वही, पृष्ठ 75
47. वही, पृष्ठ 325
48. वही, पृष्ठ 325
49. वही, पृष्ठ 316
50. वही, पृष्ठ 63
51. वही, पृष्ठ 88
52. वही, पृष्ठ 92
53. वही, पृष्ठ 94
54. वही, पृष्ठ 127—128
55. वही, पृष्ठ 22
56. वही, पृष्ठ 358
57. विरासत के अलम्बरदार, पृष्ठ 289
58. अजीम, वकार, दास्तान से अफ़साने तक, ऐजुकेशनल बुक हाउस, अलीगढ़, 1980 ई० पृष्ठ 130
59. आग का दरिया, पृष्ठ 115—116
60. वही, पृष्ठ 143
61. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 3
62. आज़ाद, डा० असलम, उर्दू नाविल आज़ादी के बाद, निखार पब्लिकेशंस, मऊ, 1981 ई० पृष्ठ 212

63. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 13
64. आग का दरिया, पृष्ठ 19
65. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 66
66. वही, पृष्ठ 95
67. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 144
68. आग का दरिया, पृष्ठ 201
69. संपा0 प्रदीप माँडव, विरासत के अलम्बरदार, यश पब्लिकेशन, गाँधी नगर, दिल्ली, पृष्ठ 284
70. वही, पृष्ठ 285
71. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 7
72. वही, पृष्ठ 91—92
73. वही, पृष्ठ 79
74. वही, पृष्ठ 63
75. वही, पृष्ठ 66
76. वही, पृष्ठ 11
77. वही, पृष्ठ 12
78. वही, पृष्ठ 36
79. वही, पृष्ठ 37
80. वही, पृष्ठ 39
81. वही, पृष्ठ 80
82. वही, पृष्ठ 97
83. वही, पृष्ठ 106
84. वही, पृष्ठ 106
85. वही, पृष्ठ 107

86. वही, पृष्ठ 95
87. वही, पृष्ठ 194—195
88. वही, पृष्ठ 50—51
89. वही, पृष्ठ 81—82
90. हैदर, कुर्रतुलऐन, आग का दरिया, ऐजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 18
91. वही, पृष्ठ 230
92. वही, पृष्ठ 13—14
93. वही, पृष्ठ 15
94. वही, पृष्ठ 43
95. वही, पृष्ठ 119
96. वही, पृष्ठ 119
97. वही, पृष्ठ 147
98. वही, पृष्ठ 167
99. वही, पृष्ठ 108
100. वही, पृष्ठ 635—636
101. वही, पृष्ठ 15
102. वही, पृष्ठ 140
103. वही, पृष्ठ 130
104. वही, पृष्ठ 116
105. वही, पृष्ठ 329
106. वही, पृष्ठ 124
107. वही, पृष्ठ 148
108. वही, पृष्ठ 163
109. वही, पृष्ठ 259
110. वही, पृष्ठ 140—141
111. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 1

112. अजीम, वकार,दास्तान से अफ़साने तक, ऐजूकेशनल बुक हाउस, अलीगढ़,पृष्ठ 130
113. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 54
114. हैदर, कुर्रतुलऐन, आग का दरिया, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग . हाउस, दिल्ली,2008, पृष्ठ 22
115. वही, पृष्ठ 342
116. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 106
117. वही, पृष्ठ 95
118. हैदर, कुर्रतुलऐन, आग का दरिया, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 329
119. वही, पृष्ठ 201
120. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 139
121. हैदर, कुर्रतुलऐन, आग का दरिया, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,2008, पृष्ठ 615



## उपसंहार

बीसवीं शताब्दी का प्रगतिशील आंदोलन हिन्दी-उर्दू साहित्य का एक प्रमुख आंदोलन था। इस युग के अधिकतर कवि और लेखक इस आंदोलन से प्रभावित हुए। इस आंदोलन ने रचना एवं आलोचना में विचारात्मक रूप में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रगतिशील साहित्यिक आंदोलन ने हिन्दी-उर्दू साहित्य में यथार्थवाद की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया।

प्रगतिशील उपन्यासों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि प्रगतिशील लेखकों ने अपने उपन्यासों में सामाजिक यथार्थवाद और किसान मजदूर तथा कठिन परिश्रम करने वाले वर्ग के जीवन को अपना विषय बनाया और पूँजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ उठाई। इसके साथ-साथ प्रगतिशील उपन्यासकारों ने मध्यवर्ग के चित्रण पर भी विशेष बल दिया है क्योंकि मध्यवर्ग ही समाज और संस्कृति के प्रति अधिक जागरूक होता है। वह परम्परा के प्रति आस्था भी रखता है और परिवर्तन भी चाहता है। अतः जीवन के दुहरे मानदण्ड को ढोना उनकी नियति बन जाती है।

हिन्दी साहित्य में यशपाल, रांगेय राघव, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, राहुल सांकृत्यायन, अमृत राय, भैरव प्रसाद गुप्त, भीष्म साहनी, सतीश जमाली, जगदम्बा प्रसाद दीक्षित तथा जगदीश चन्द्र आदि प्रमुख प्रगतिशील उपन्यासकार हैं। दूसरी ओर उर्दू साहित्य में सज्जाद ज़हीर, अजीज़ अहमद, कृष्ण चन्द्र, इस्मत चुगताई, हयात उल्लाह अंसारी, जीलानी बानो, ख़दीजा मस्तूर तथा ख़्वाजा अहमद अब्बास आदि प्रगतिशील उपन्यासकारों ने महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना की। हिन्दी तथा उर्दू साहित्य के प्रगतिशील उपन्यासकारों की इसी कड़ी में दो महत्वपूर्ण नाम कमलेश्वर एवं कुर्रतुलऐन हैदर का भी है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रगतिशील साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।

कमलेश्वर का उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' सन् 2000 ई० में तथा कुर्रतुलऐन हैदर का उपन्यास 'आग का दरिया' सन् 1959 ई० में प्रकाशित हुआ। दोनों उपन्यासों के रचनाकाल में 41 वर्ष का अन्तर होते हुए भी दोनों उपन्यासकारों के दृष्टिकोण तथा में काफी हद तक समानता दिखाई देती है और यह भी कहा जा

सकता है कि कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' पर कुर्रतुलऐन हैदर के उपन्यास 'आग का दरिया' का भी प्रभाव दिखाई देता है।

कमलेश्वर के प्रमुख उपन्यासों में 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ', 'तीसरा आदमी', 'डाक बंगला', 'समुँद्र में खोया हुआ आदमी', 'लौटे हुए मुसाफ़िर', 'काली आँधी', 'आगामी अतीत', 'वही बात', 'सुबह..दोपहर..शाम', 'रेगिस्तान' तथा 'कितने पाकिस्तान' हैं।

कुर्रतुलऐन हैदर के प्रमुख उपन्यासों में 'मेरे भी सनम खाने', 'सफ़ीनए-ग़मे दिल', 'आग का दरिया', 'आख़िर शब के हमसफ़र', 'कारे जहाँ दराज़ है', 'गर्दिशे रंगे चमन', तथा 'चाँदनी बेगम' प्रमुख हैं।

कमलेश्वर का उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' तथा कुर्रतुलऐन हैदर का उपन्यास 'आग का दरिया' दोनों ही उपन्यासों विभाजन की त्रासदी अभिव्यक्त हुई हैं। 'कितने पाकिस्तान' में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच होने वाले युद्ध, संघर्ष तथा तनाव के साथ-साथ संपूर्ण संसार में हो रहे विभाजन और उसके परिणामस्वरूप होने वाले युद्ध और इन युद्धों के परिणामस्वरूप हो रहे मानव जाति के विनाश को बड़े मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है और उसके प्रति चिन्ता अभिव्यक्त की गयी है। उपन्यास में 'पाकिस्तान' शब्द एक प्रतीक के रूप में आया है जो विभाजन, घृणा और अलगाववाद का प्रतीक है। पूरे संसार में जहाँ कहीं भी विभाजन हुआ है, कमलेश्वर उसे 'पाकिस्तान' के रूप में देखते हैं।

'आग का दरिया' में भी कुर्रतुलऐन हैदर विभाजन की पीड़ा को ही अभिव्यक्त करती हैं। हिन्दुस्तान की ढाई हजार साल की संस्कृति के बनने, बिखरने, बँटने और टूटने का दुख उन्हें बहुत है। कुर्रतुलऐन हैदर ने उपन्यास में बड़े मार्मिक ढंग से यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का विभाजन देश को सिर्फ़ दो टुकड़ों में ही नहीं बाँटता बल्कि वैदिक काल से आधुनिक काल तक जो संस्कृति कण-कण से निर्मित हुई थी, उस संस्कृति का स्वरूप रेशा-रेशा करके बिखेर देता है। वैदिक संस्कृति का क्या स्वरूप था फिर मुग़लों के आने के बाद हिन्दुस्तान में एक सामासिक संस्कृति किस तरह उभर कर सामने आयी और फिर



अँग्रेजों के साथ-साथ आधुनिक इण्डिया किस तरह अस्तित्व में आया जिसने औपनिवेशिक भारत की रूप रेखा निर्मित की और किस तरह यहाँ के लोगों ने उपनिवेश का जुआ अपने कंधों से उतार कर फेंका और आज़ादी की साँस लेते हुए विभाजन की त्रासदी को झेला। इन सबका जो कल्पनालोक निर्मित किया गया है। वह वास्तविकता के निकट पहुँचा हुआ दिखाई देता है।

‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ दोनों ही उपन्यासों में ‘समय’ को एक पात्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास के प्रकाशन के बाद कुछ आलोचकों ने इस उपन्यास को ‘आग का दरिया’ की पद्धति पर लिखा गया उपन्यास बताया। इस संबंध में प्रो० शमीम हन्फी का कहना है कि इस प्रकार के विचार उचित नहीं हैं। यह एक सरसरी राय है इसमें गहराई नहीं है लेकिन यह तो अवश्य ही कहा जा सकता है कि दोनों रचनाएँ एक सी न होते हुए भी उसमें बहुत सी समानताएँ दिखाई देती हैं। दोनों ही उपन्यासों में हिन्दुस्तान के विभाजन और उसकी विभाजित संस्कृति का दुख है। कमलेश्वर ने ‘कितने पाकिस्तान’ में एक जगह कुर्रतुलऐन हैदर के उपन्यास ‘आग का दरिया’ का उल्लेख भी किया है, जब परी उर्फ विद्या और नदीम पाकिस्तान में अपने वतन हिन्दुस्तान की यादों में बेचैन हो जाते हैं, तब कमलेश्वर लिखते हैं— “कुर्रतुलऐन हैदर का आग का दरिया तब उसे सामने बहता नज़र आया था।

उपर्युक्त प्रमाण के आधार पर यह कहा जा सकता है ‘कितने पाकिस्तान’ की रचना के समय कमलेश्वर के दिमाग में ‘आग का दरिया’ उपन्यास उपस्थित था जिसका प्रभाव उपन्यास पर साफ़ दिखाई देता है।

कुर्रतुलऐन हैदर ने सन् 1947 ई० में हुए विभाजन और उसमें बँटी हिन्दुस्तान की ढाई हजार साल की सामासिक संस्कृति के दुख को ‘आग का दरिया’ में अभिव्यक्त किया है। कमलेश्वर ने ‘कितने पाकिस्तान’ में हिन्दुस्तान के विभाजन के फलस्वरूप उपजे दुख और पीड़ा को अभिव्यक्त किया है, क्योंकि विभाजन की त्रासदी ने एक नासूर का रूप ले लिया है जो सदैव पीड़ित करता रहता है।

42 अध्यायों पर आधारित 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में पाँच हजार वर्ष के इतिहास तथा अनादिकाल से लेकर वर्तमान युग की स्थितियों को दिखाने का प्रयत्न किया गया है। इसमें कोई कथानक या प्लॉट नहीं है। इसे समूची मानव जाति का आख्यान कहा जा सकता है। 'आग का दरिया' में कुर्रतुलऐन हैदर ने हिन्दुस्तान के ढाई हजार वर्षों के सांस्कृतिक इतिहास को प्रस्तुत करने के लिए चार पात्रों को नामों के थोड़े से अंतर के साथ प्रस्तुत किया है। ये पात्र—गौतम, हरिशंकर, चम्पा और कमाल हैं। 'कितने पाकिस्तान' में मुख्य पात्र अदीब या समय, विद्या और सलमा हैं।

'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने अदीब या 'समय' की अदालत में विश्व की अनेक सभ्यताओं में चलने वाले संघर्ष तथा उनकी समस्याओं को उठाया है। 'आग का दरिया' में कुर्रतुलऐन हैदर ने बँटवारे के परिणामस्वरूप समाज में फैले दुख, मनुष्य के अकेलेपन तथा सांस्कृतिक क्रान्तियों को प्रस्तुत किया है।

कमलेश्वर ने मनुष्यों को देवताओं से उच्च माना है क्योंकि उनके पास प्रेम तथा मित्रता जैसे तत्व हैं। देवताओं के पास केवल वासना है। उन्होंने अदीब की अदालत में अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियों को उनकी कब्रों से निकाल कर हाज़िर किया है, जिनमें बाबर, अकबर, शाहजहाँ, औरंगज़ेब, दाराशिकोह, शुजा और मुराद आदि हैं। जो इतिहास को एक रूपाकार प्रदान करते हैं। इन ऐतिहासिक हस्तियों पर इतिहासकारों ने जो आक्षेप लगाए हैं वह कितने वास्तविक और कितने आरोपित हैं, इसे कमलेश्वर ने बड़े कलात्मक ढंग से अदीब की अदालत में इन हस्तियों को हाज़िर करके स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। कमलेश्वर का यह अंदाज़ उपन्यास कला को एक अनूठा रूप प्रदान करता है। इसके साथ-साथ मैकाले और रेडक्लिफ़ तथा पोखरन और हिरोशिमा भी 'समय की अदालत' में अपना सच बोलने के लिए मजबूर हैं। समय की अदालत में उग्र जिरह होती है। इस उपन्यास में जो भी समस्याएँ उठाई गई हैं वह सभी समस्याएँ केवल मनुष्य के कल्याण और उसके अस्तित्व से जुड़ी हुई हैं। 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने पाकिस्तान शब्द को 'नफरत' का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया है, जबकि 'आग का दरिया' में 'दरिया' 'समय' का प्रतीक बनकर आया है। लेकिन वह साधारण दरिया नहीं है आग का

दरिया है। कुर्रतुलऐन हैदर भी मानव जाति के कल्याण की बात करती हैं और उसकी जीजिविषा की कायल दिखाई देती हैं। उसके अंदर आशा और उत्साह का संचार करना चाहती हैं।

कमलेश्वर ने मनुष्य के विनाश का कारण विश्व में हो रहे युद्धों को माना है। उन्हीं के कारण चारों ओर कोहराम तथा दुख-दर्द फैलता है। 'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने अप्राकृतिक मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए जीवन की खोज की है। जब से मानव जाति पर अन्याय और अत्याचार हुए, उसके जीवन को समाप्त करने के प्रयास किये गए। तब से मनुष्य ने विद्रोह करना प्रारंभ किया। 'आग का दरिया' में ढाई हजार साल की संस्कृति में आए उतार-चढ़ाव, खुशी और दुख, तथा जिन्दगी और मौत इन सबको सरजू नदी देखती है, महसूस करती है, बुराई, कड़वाहट तथा हर बुरी चीज़ को अपने अन्दर समेट लेती है और हमेशा अच्छाई, खुशी और मिठास देती है। सरजू नदी को हिन्दुस्तान का प्रतीक माना जा सकता है, जिसकी सरज़मीं सबको पनाह देती है।

'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' दोनों ही उपन्यासों का कैनवास बहुत विस्तृत है। कमलेश्वर ने इस उपन्यास में हिन्दुस्तान के विभाजन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले युद्धों में मानव जाति के विनाश को उठाया है। उनका मानना है अब यह विनाश वैज्ञानिक अविष्कारों के परिणामस्वरूप हो रहा है। वैज्ञानिकों ने एटमी निर्माण के द्वारा मनुष्य जाति को विनाश के रास्ते पर खड़ा कर दिया है। कमलेश्वर ने उपन्यास में मानवतावादी संस्कृति एवं इतिहास के बँटवारों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है तथा संस्कृति बाँटने वालों को मनुष्य जाति का शत्रु माना है। 'आग का दरिया' में हिन्दुस्तान के हजारों साल पुराने इतिहास, संस्कृति, दर्शन तथा रीति-रिवाजों का जीवंत चित्रण हुआ है। इसमें कुर्रतुलऐन हैदर ने इतिहास का सहारा लेकर सदियों पुरानी संस्कृति, त्याग तथा धार्मिक रीतियों को तलाश करने का प्रयास किया है।

किसी भी उपन्यास का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, उस समाज की स्थिति तथा उसकी संस्कृति, वहाँ के रीति-रिवाज और परम्परा, तीज-त्यौहार,

रहन—सहन एवं जीवन शैली, धर्म एवं दर्शन, साहित्य, जीवन तथा मूल्यों आदि के द्वारा किया जाता है। 'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' दोनों ही उपन्यासों में संस्कृति के अनेक रूप तथा रंग देखने को मिलते हैं।

'कितने पाकिस्तान' में हिन्दुस्तानी समाज, उसके रहन—सहन, जीवन शैली, रीति—रिवाजों एवं परम्पराओं का चित्रण करने के साथ—साथ संसार की विभिन्न संस्कृतियों का सांकेतिक रूप में चित्रण किया गया है। 'आग का दरिया' में भी हिन्दुस्तानी संस्कृति, सामासिक संस्कृति, अँग्रेजी साम्राज्य, पूँजीवादी व्यवस्था, राष्ट्रीय आंदोलन, देश का विभाजन, स्वतन्त्रता तथा आधुनिक हिन्दुस्तानी तथा पाकिस्तानी समाज का जीवंत चित्रण किया गया है।

'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने वर्ण व्यवस्था के प्रति रोष व्यक्त किया है। कुर्रतुलऐन हैदर भी 'आग का दरिया' में वर्णव्यवस्था पर प्रहार करती दिखाई देती हैं। वह एक सैयद युवक कमाल का विवाह एक दलित कन्या से करवाती हैं। इसके साथ ही कबीर आदि संत कवियों को अछूतों के उद्धारक के रूप में देखकर उनकी प्रशंसा करती हैं।

'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' दोनों ही उपन्यास अतीत और वर्तमान के दृश्यों का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में प्राचीन युग, आर्य युग तथा मुगल युग की रक्त रंजित कथाओं को उपन्यास में बड़ी कलात्मकता से ढाला है। 'आग का दरिया' में कुर्रतुलऐन हैदर ने प्राचीन युग से देश के विभाजन तक हिन्दुस्तान का सांस्कृतिक वातावरण जिन पड़ावों से गुज़रा है, उसका चित्रण बड़ी बारीकी और कारीगरी से किया करती हैं।

'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' इन दोनों ही उपन्यासों में उपन्यासकारों ने राजनीति के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले युद्ध और युद्ध के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली मौत के प्रश्न को उठाया है। अँग्रेजों के द्वारा दिया गया द्विराष्ट्रवाद का सिद्धान्त किस प्रकार सफल हुआ और परिणामस्वरूप विभाजन की त्रासदी उत्पन्न हुई इसका मार्मिक चित्रण दोनों ही उपन्यासों में किया गया है।

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास शिल्प की दृष्टि से नया प्रयोग है इसमें कोई प्लॉट, वृत्तान्त या घटना नहीं है और कालक्रम की भी कोई बंधिशा नहीं है। इसमें पाँच हजार वर्षों की समय सीमा को लिया गया है, जिसमें सभ्यता, संस्कृति, युद्ध, प्रेम के साथ-साथ सभ्यताओं के उत्थान पतन को केवल संकेत के कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। ‘आग का दरिया’ उपन्यास भी शिल्प की दृष्टि से एक नया प्रयोग है जिसे शऊर की रौ (चेतना प्रवाह) कहा जाता है और इसमें ढाई हजार वर्षों को बहुत ही विस्तार के साथ समेटने का सफल प्रयास किया गया है।

‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ इन दोनों ही उपन्यासों का शिल्प पारम्परिक उपन्यासों से हटकर है। ‘कितने पाकिस्तान’ में कमलेश्वर ने फ़्लैश बैक एवं फ़ैन्टेसी का प्रयोग किया है जबकि ‘आग का दरिया’ की तकनीक में ‘शऊर की रौ’ (stream of consciousness) का प्रयोग किया गया है। इसलिए इसमें प्लॉट और कथा पर बल न देकर पात्रों के मानसिक विश्लेषण पर बल दिया गया है।

‘कितने पाकिस्तान’ उपन्यास आंतरिक घुटन और मानसिक कशमकश की प्रस्तुति है। इसमें उपन्यासकार ने अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के चित्र प्रस्तुत किये हैं। इस उपन्यास में कमलेश्वर ने खोए हुए सत्य को तलाश करने का प्रयास किया है। इसके साथ-साथ युद्ध के विरुद्ध शान्ति और मृत्यु के विरुद्ध जीवन की इच्छा व्यक्त की है। ‘आग का दरिया’ उपन्यास के प्रारंभ में टी. एस. ईलियट की कविता का कुछ अंश दिया गया है जिससे यह स्पष्ट होता है कि उपन्यास का विषय समय की वह धारा है जो मनुष्य के जीवन को चारों ओर से घेरे हुए है। कुर्रतुलऐन हैदर ने टी. एस. ईलियट की भाँति ‘दरिया’ को रूपक के रूप में प्रस्तुत किया है। ‘दरिया’ की लहरें ‘समय’ की तरह गतिशील हैं और उसकी लहरों में निरंतरता है। अर्थात् ‘समय’ और पानी की मौजें एक ही गति से प्रवाहित हैं। दोनों की धाराएँ किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं और अपने साथ असंख्य चीजों को बहा ले जाती हैं।

‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ दोनों ही उपन्यासों में ‘समय’ मुख्य एवं शक्तिशाली पात्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कमलेश्वर ने ‘कितने

पाकिस्तान' में अदीब की अदालत में 'समय' की दस्तकों को सुनने और अपने युग के आघात को अनुभव करने का रचनात्मक प्रयास किया है। कुर्रतुलऐन हैदर ने 'आग का दरिया' में दिखाया है कि समय के सामने इंसान बेबस है। 'समय' इंसान के जीवन में एक 'आग का दरिया' है, जिसमें डूब के पार जाना सरल कार्य नहीं है। लेकिन मनुष्य संसार का एक ऐसा प्राणी है जो परिस्थितियों को अपने वश में कर लेता है और दुखों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' में संस्कृति एवं इतिहास के बँटवारों को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। संस्कृतियों के विभाजन के कारण ही संसार में अप्राकृतिक मृत्यु का खेल खेला जा रहा है। उपन्यासकार ने पूरे उपन्यास में विभाजन का कारण धर्म और संस्कृति के दुरुपयोग को बताया गया है। 'आग का दरिया' संपूर्ण हिन्दुस्तान की वेदना की कथा है।

'कितने पाकिस्तान' तथा 'आग का दरिया' दोनों ही उपन्यासों की भाषा में सांकेतिकता, भावात्मकता, सजीवता और प्रतीकात्मकता है। कमलेश्वर ने उपन्यास में स्थिति समस्या तथा पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया, जिसमें उर्दू, अवधी, पंजाबी तथा अँग्रेज़ी भाषा के शब्दों का जगह-जगह प्रयोग किया है। 'आग का दरिया' की भाषा प्रभावपूर्ण है। उसकी भाषा में उपमा और रूपक के प्रयोग से कलात्मकता उभरती है। कुर्रतुलऐन हैदर ने 'दरिया' को 'समय' का प्रतीक माना है, जिस प्रकार दरिया हमेशा बहता रहता है उसी प्रकार समय भी किसी के लिए नहीं रुकता। इसी के साथ-साथ उनकी भाषा में चित्रात्मकता, सजीवता, सूत्रात्मकता तथा रोमानियत है। कमलेश्वर तथा कुर्रतुलऐन हैदर दोनों ही उपन्यासकारों ने सूत्रात्मक भाषा का भी प्रयोग किया है। उन्होंने बड़ी से बड़ी बातों को अपने उपन्यासों में सूत्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास का आरंभ इस शेर से होता है—

"इन बंद कमरों में मेरी साँस घुटी जाती है।  
खिड़कियाँ खोलता हूँ तो ज़हरीली हवा आती है।"

इस शेर की प्रतिध्वनि पूरे उपन्यास में गूँजती हुई महसूस होती है। घृणा और शत्रुता से पनाह के लिए यदि कमरों में बंद हो जाएँ तो समस्या समाप्त नहीं होती बल्कि यह पलायन होगा और खिडकियाँ खोलने पर स्वच्छ हवा की आशा करना बेकार है क्योंकि हालात बहुत बिगड़ चुके हैं। इस प्रकार उपन्यास में एक द्वन्द्व की स्थिति दिखाई देती है। कमलेश्वर ने इस उपन्यास में उन सभी घटनाओं की गुत्थियों को खोलने का प्रयास किया है, जिनके कारण मनुष्य के भाग्य में केवल दुख और अँधेरा लिख दिया गया है और मनुष्य कोई फैसला नहीं कर पाता है और न ही सच और झूठ में अंतर कर पाता है। कमलेश्वर ने कई गुप्त सच को सामने लाने का प्रयास किया है।

कुर्रतुलऐन हैदर के उपन्यास 'आग का दरिया' का शीर्षक जिगर मुरादाबादी के मशहूर शेर से लिया है—

"यह इश्क नहीं आसाँ, इतना ही समझ लीजे  
इक आग का दरिया है और डूबके जाना है।"

कुर्रतुलऐन हैदर जिस समाज की कल्पना करती हैं, वर्तमान समाज उसके विपरीत है। वह एक अच्छे समाज की तलाश अतीत में करती हुई वर्तमान तक पहुँचती हैं। कुर्रतुलऐन हैदर ने दुख और नफ़रत से अलग सुख, प्रेम और सौहार्द फैलाने वाले समाज की कल्पना की थी। 'आग का दरिया' उनकी संवेदना और शिल्प का उत्कृष्ट नमूना है।

'कितने पाकिस्तान' में कमलेश्वर ने भी इसी प्रकार के समाज की कल्पना की है। कमलेश्वर एक अदीब के रूप में हमें जिस दुनिया से परिचित कराना चाहते हैं, वह केवल हमारी दुनिया नहीं है। बल्कि इस धरती पर बसने वाले भाँत-भाँत के लोगों की दुनिया है। कमलेश्वर एक सुखी, समृद्ध और शान्तिपूर्ण समाज की कल्पना और आशा करते हैं।

इस प्रकार 'कितने पाकिस्तान' की कहानी वर्तमान से भविष्य की ओर यात्रा करती है, उस दुनिया की ओर जहाँ दुख नहीं सुख होगा, नफ़रत नहीं प्रेम होगा।

उपन्यास के अन्त में बोधिवृक्ष के पौधा जो विष पीने में सक्षम है, को रोपने की इच्छा कमलेश्वर के उद्देश्य को स्पष्ट करने में सक्षम है।

‘कितने पाकिस्तान’ तथा ‘आग का दरिया’ दोनों ही उपन्यास कला की दृष्टि से उच्च स्थान रखते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि कुर्रतुलऐन हैदर एक श्रेष्ठ उर्दू उपन्यासकार हैं और उनकी कृति ‘आग का दरिया’ विश्व की कालजयी कृतियों में शुमार की जाती है लेकिन कमलेश्वर का उपन्यास ‘कितने पाकिस्तान’ भी अपना कुछ कम महत्व नहीं रखता और कला के उच्च शिखर तक पहुँचने का प्रयास सराहनीय रहा है।



परिशिष्ट  
सहायक ग्रन्थ-सूची

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची

### आधार ग्रंथ सूची (हिन्दी)

कमलेश्वर के उपन्यास :

1. एक सड़क सत्तावन गलियाँ, राजकमल प्रकाशन, 1982 ई०
2. तीसरा आदमी, राजपाल एंड संस, 1984 ई०
3. डाक बंगला, राजकमल प्रकाशन, 1985 ई०
4. समुद्र में खोया हुआ आदमी, राजपाल एंड संस, 1982 ई०
5. लौटे हुए मुसाफिर, राजपाल एंड संस, 1982 ई०
6. काली आँधी, राजपाल एंड संस, 1981 ई०
7. आगामी अतीत, राजकमल प्रकाशन, 2004 ई०
8. वही बात, राजकमल प्रकाशन, 2006 ई०
9. सुबह...दोपहर..शाम, राजपाल एंड संस, 1982 ई०
10. रेगिस्तान, राजपाल एंड संस, 1988 ई०
11. कितने पाकिस्तान, राजपाल एंड संस, 2007 ई०

## आधार ग्रंथ सूची (उद्घ)

कुर्तुलऐन हैदर के उपन्यास :

1. मेरे भी सनम खाने, मकतबा जदीद लाहौर, अप्रैल, 1949 ई०
2. सफीनए गुमे दिल, मकतबा जदीद लाहौर, अप्रैल, 1952 ई०
3. आग का दरिया, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2008 ई०
4. आखिर शब के हमसफ़र, चौधरी एकेडमी, लाहौर, 1979 ई०
5. कारे जहाँ दराज़ है, प्रथम और द्वितीय भाग, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1985 ई०
6. गर्दिशे रंगे चमन, मकतबा दानियाल कराँची, 1987 ई०
7. चाँदनी बेगम, ऐजूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1990 ई०

### सहायक ग्रंथ सूची (हिन्दी)

1. कमलेश्वर, गायत्री, मेरे हमसफ़र कमलेश्वर, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2005 ई०
2. किशोर, नवल, 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवत्ता', संस्थान प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977 ई०
3. खोसला, माधुरी, 'हिन्दी के लघु उपन्यासों का शिल्प', विजयन्त प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973 ई०
4. गणेशन, एस०, एन०, 'हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन', राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, प्रथम, 1962 ई०।
5. चन्द्र, जगदीश, 'धरती धन न अपना', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1972 ई०।
6. चौहान, शिवदान सिंह, साहित्य की समस्याएँ, आत्मा राम एण्ड संस, दिल्ली, प्रथम, 1959 ई०
7. जया, के० पी०, 'कथाकार कमलेश्वर', जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक मथुरा, उ० प्र०, 2008 ई०।
8. टण्डन, प्रेम नारायण, 'भाषा अध्ययन के आधार', हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ, नवंबर, 1958
9. डाँगे, श्रीपाद अमृत, जनजीवन और साहित्य, नेहा प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम, 1985 ई०
10. दत्त, रजनीपाम, आज का भारत, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम, 1977 ई०
11. दिनकर, रामधारी सिंह, रसवन्ती (भूमिका), अजन्ता प्रेस, पटना, 1955 ई०
12. देसाई, डा० मंजुला, कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन, क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, 2002 ई०

13. दंगल, झाल्टे, 'उपन्यास समीक्षा के नए प्रतिमान', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम, 1987 ई०।
14. धवन, सुषमा, हिन्दी उपन्यास प्रेमचन्द तथा उत्तर प्रेम चन्द काल, राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1955 ई०
15. धवन, सुषमा, 'हिन्दी उपन्यास', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1960 ई०।
16. पट्टाभिषीतारमय्या, काँग्रेस का इतिहास, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1948 ई०
17. प्रेमचन्द, 'कुछ विचार', इलाहबाद, सरस्वती प्रेस, 1965 ई०
18. बेचन, 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास', सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम, 1971 ई०।
19. मदान, इन्द्रनाथ, 'आज का हिन्दी उपन्यास', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1966 ई०।
20. माँडव, प्रदीप, अजय बिसारिया ( सम्पा० ), विरासत के अलम्बरदार कमलेश्वर, यश पब्लिकेशन, दिल्ली, प्रथम, 2009 ई०।
21. मिश्र, शिवकुमार, प्रगतिवाद, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम 1966 ई०
22. मिश्र, रामदरश, हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम, 1968 ई०।
23. मिश्रा, कृष्ण मुरारी, 'आद्यबिम्ब और गोदान', राधाकृष्ण प्रकाशन , नई दिल्ली, 1992 ई०।
24. मोहन, नगेन्द्र, 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास (प्र० सं०), मैकमिलन, दिल्ली, 1975 ई०।
25. यादव, राजेन्द्र, कमलेश्वर श्रेष्ठ कहानियाँ, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली 1995 ई०

26. रहबर, हंसराज, प्रगतिवादी पुनर्मूल्यांकन, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम 1966 ई०
27. रवीन्द्रनाथ, एन०, 'मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास', वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम, 1979 ई०।
28. शर्मा, सुशीला, 'हिन्दी उपन्यास में प्रतीकात्मक शिल्प', सिद्धुराम पब्लिकेशन, दिल्ली, प्रथम, 1982 ई०।
29. शुक्ल, रामचन्द्र, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 2034
30. सिन्हा, सुरेश, हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1965 ई०।
31. सिंह, बच्चन, 'आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास', लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1978 ई०।
32. सिंह, त्रिभुवन, हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद', हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, चतुर्थ, वि० 2022
33. सिंह, त्रिभुवन, 'हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग', हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, प्रथम, 1973 ई०।
34. सुहेल, डॉ० तसनीम, पूर्व प्रेम चन्द युगीन हिन्दी-उर्दू उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़, 2001 ई०।
35. त्रिवेदी, रामप्रसाद, 'प्रगतिवादी समीक्षा', ग्रन्थम राम बाग, कानपुर, नवम्बर, 1934 ई०।

## सहायक ग्रंथ सूची (उर्दू)

1. आजमी, मन्ज़र, उर्दू अदब के इतिहास में अदबी तहरीकों और रुज्जानों का हिस्सा, उ० प्र० उर्दू अकादमी, लखनऊ, 1996 ई०
2. अशरफ़, ख़ालिद, 'बर्रे सगीर में उर्दू नॉवेल', ऐजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1994 ई०
3. अहमद अज़ीज़, 'तरक्की पसन्द अदब', मन्ज़र पब्लिकेशन्स, कराँची, 1983 ई०।
4. अज़ीम, वकार, दास्तान से अफ़साने तक, ऐजुकेशनल बुक हाउस, अलीगढ़, 1980 ई०।
5. अनवर, खुर्शीद, 'क़ुरतुलऐन हैदर के नाविलों में तारीख़ी शऊर', अन्जुमन तरक्की उर्दू, नई दिल्ली, 1993 ई०।
6. अफ़राहीम, सगीर, 'उर्दू फ़िक्शन तन्कीद और तज्ज़िया', मुस्लिम ऐजुकेशनल प्रेस, अलीगढ़, 2003 ई०।
7. अब्दुस्सलाम, 'उर्दू नाविल बीसवीं सदी में', उर्दू अकेडमी सिन्ध, कराँची, 1973 ई०।
8. अब्दुस्सलाम, 'क़ुरतुलऐन हैदर और नाविल का जदीद फ़न', एजाज़ पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1983 ई०।
9. अरशद, मोहम्मद, 'मालिक राम हयात और कारनामे', उ० प्र० उर्दू अकादमी, लखनऊ, 2010।
10. करीम, इतिज़ा, 'क़ुरतुलऐन हैदर एक मुताला', पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2001, ई०।
11. ख़लीलुर्रहमान, आजमी, 'उर्दू तरक्की पसन्द अदबी तहरीक', ऐजुकेशनल बुक हाउस, अलीगढ़, 1975 ई०।

12. जैदी, हुमायूँ, ज़फ़र आलम, मोहम्मद महफूज़, 'कुर्रतुलऐन हैदर फ़न और शख़्सियत', लिबर्टी आर्ट प्रेस, 2007 ई०
13. नारंग, गोपीचन्द्र, कृश्नचंद्र, मशमूला ऐवाने उर्दू, दिल्ली, 1970 ई०
14. फ़रज़ाना, नीलम, 'उर्दू अदब की अहम ख़्वातीन नाविल निगार', ऐज़ूकेशनल बुक हाउस अलीगढ़, 1994 ई०।
15. फ़ारूकी, मोहम्मद अहसन, 'उर्दू अदब की तन्कीदी तारीख़', इदाराये फ़रोगे उर्दू, लखनऊ, 1976 ई०।
16. बी, ज़ाहिदा, 'राजेन्द्र सिंह बेदी की तख़लीकात में निस्वानी किरदारों का तज्जियाती मुताला', उ० प्र० उर्दू अकादमी, लखनऊ।
17. बम्बईवाला, मुहीउद्दीन, 'कुर्रतुलऐन हैदर एक मुताला, गाँधी नगर साहित्य अकादमी, गुजरात, 1999 ई०।
18. बुख़ारी, सुहेल, 'उर्दू नाविल निगारी, मक्ताबा जदीद, लाहौर, 1960 ई०।
19. मिर्ज़ा, शहंशाह, 'कुर्रतुलऐन हैदर की नाविल निगारी', नुसरिफ़ पब्लिशर्स, लखनऊ, 1989 ई०।
20. मुग़नी, अब्दुल, 'कुर्रतुलऐन हैदर का फ़न', ऐज़ूकेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1990 ई०।
21. सरमस्त, यूसुफ़, 'बीसवीं सदी में उर्दू नाविल', नेशनल बुक हाउस, हैदराबाद, 1973 ई०।
22. सूरुर, आल अहमद, उर्दू विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, 1973 ई०।
23. सुल्ताना, अख़्तर, 'कुर्रतुलऐन हैदर तहरीरों के आईने में', मक्ताबा शेरोहिक्मत, 2005 ई०।



## पत्र-पत्रिकाएँ (हिन्दी)

1. आजकल, प्रकाशन विभाग दिल्ली, 1948 ई०।
2. आलोचना, राजकमल प्रकाशक दिल्ली, 1975 ई०।
3. आलोचना, (उपन्यास विशेषांक), अक्टूबर, 1954 ई०।
4. उत्तरगाथा, जनवरी, फरवरी, अप्रैल,, 1982 ई०।
5. उत्तरार्द्ध, (जनवरी विशेषांक), 1982 ई०।
6. वर्तमान साहित्य, सितम्बर, 2007 ई०
7. समालोचना, फरवरी,, 1959 ई०।
8. सरस्वती, 1920 ई०।
9. हंस, अक्टूबर, 1944 ई०।

## पत्र-पत्रिकाएँ (उद्)

1. अल्फ़ाज़, मार्च-अप्रैल, अलीगढ़, 1981 ई०।
2. आजकल, जनवरी एवं जून, दिल्ली, 1981 ई०।
3. इज़हार, अगस्त, बंबई, 1978 ई०।
4. गुफ़्तुगू, अंक-11, बंबई, 1980 ई०।
5. नया दौर, कुर्रतुलऐन हैदर विशेषांक, रिज़्वी, वज़ाहत हुसैन, फरवरी-मार्च, 2009 ई०।
6. मदार, बंबई, 1962 ई०।
7. सौगात, अयाज़, महमूद, बैंगलौर, 1993 ई०।
8. हमारी ज़बान, जनवरी, अलीगढ़, 1966 ई०।

**English Sources :**

1. James Henry, 'The Art Of Novel: Critical Prifaces', New York, 1965.
2. Stevick Philip, 'The Theory Of novel', The Free Press, New York, 1966.
3. Rolf Fork, 'The novel and the people', Oxford University Press, London, 1973.
4. Journal Of South Asian Literature, vol. 21, no 2, 1986.
5. Dictionary Of Literary Terms, Macgraw Hill Book Company, New Delhi, 1972.

## शब्दकोश /कोश

1. तिवारी, भोलानाथ, कोश विज्ञान, दिल्ली शब्दकार, तुर्कमान गेट, 1979 ई०
2. वर्मा, धीरेन्द्र, (संपादक), हिन्दी साहित्य कोश, खण्ड-1, ज्ञान मण्डल लिमि०, वाराणसी, 1985 ई०
3. दास,श्याम सुन्दर, हिन्दी शब्द सागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1971 ई०
4. बाहरी, हरदेव, हिन्दी शब्द कोश, राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1999 ई०